ख़ात्मा

बेहम्दो लिल्लाह इस किताबे शरीफ में जो कुछ लिखने का इरादा था वह सब तमाम हो गया और सोमवार के दिन १० ज़िलकादा १३४४ हिजरी की शाम को जो शबे विलादते बसआदत हज़रत सामिनुल आइम्मा इमामे रज़ा (अ.स.) है और क्योंकि आज ही इत्तेफ़ाक़ से मेरी वालेदा के इन्तेक़ाल का ख़त पहुँचा है लेहाज़ा बिरादरे इमानी से जो इस किताब से फ़ायदा उठाएं इल्तेमासे दुआ व ज़ियारत है उन मरहूमा के लिए और अपने लिए और अपने वालिदे मरहूम के लिए अपनी ज़िन्दगी में भी और मरने के बाद भी.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ख़ुदाए महरबान और बख्शनेवाले के नाम से शुरू करता हूँ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى

सारी हम्द अल्लाह के लिए है???

बंद-ए-गुनाहगार रूसिया अब्बासे क़ुम्मी (अल्लाह उसे माफ़ करे) अर्ज़ परदाज़ है के खुदाए तआला की इमदाद से किताबे मफ़ातीहुल जिनान की तालीफ़ मुकम्मल हो चुकी और किताब मुख़तलिफ़ अतराफ़ में मुन्तशिर हो चुकी तो मुझे ख़याल आया के दूसरे एडीशंन में दुआ विदा माहे रमज़ान, खुतबा ईदुल फ़ित्र और ज़ियारते जामेआ आइम्मा मासूमीन और दुआ अल्लाहुम्म इन्नी ज़ुरतो हाज़ल इमाम जो ज़ियारत के बाद पढ़ी जाती है। और ज़ियारत विदा आइम्मा मासूमीन जिसके ज़रिए से उन्हें रूख़सत किया जाता है और दुआए ग़ैबते इमामे अस्र और आदाबे ज़ियारते नियाबत का भी इज़ाफ़ा कर दिया जाए के इसकी लोगों को ज़्यादा ज़रूरत होती है। लेकिन फिर यह सोचा के अगर दरमियान में इन चीज़ों का इज़ाफ़ा कर दिया गया तो किताबे मफ़ातीह में

तसर्रुफ़ात का दरवाज़ा खुल जाएगा और बाज़ फ़ुज़ूल लोग इसके बाद किताब में और दीगर दुआओं का इज़ाफा कर देंगे। या कम कर देंग और उसे मफ़ातिहुल जिनान के नाम से लोगों में राएज कर देंगे। जो हश्र मिफ़ताहुल जिनान का हुआ है। लेहाज़ा मैंने अस्ल किताब को उसी हाल पर रखा और यह आठ मतालिब किताब के बाद बाउनवाने मुलहिक़ात इज़ाफ़ा कर दिये और मेरी तरफ़ से खुदा व रसूल और आइम्मए अत्हार (अ.स.) की लअनत है उस व्यक्ति पर जो किताबे मफ़ातीह में तसर्रुफ़ करे। उन आठ मतालिब का आगाज़ यूँ होता है:

पहला मतलब

दुआ विदा माहे मुबारक रमज़ान

दुआ विदा माहे मुबारक रमज़ान में है जिसे शेख़ कुलैनी ने किताबे काफ़ी में अबू बसीर के हवाले से इमाम सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के इस दुआ को माहे रमज़ान को विदा करने के लिए पढ़ा जाए।

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ قُلْتَ فِي كِتَابِكَ الْمُنْزَلِ: "شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِى

ऐ खुदा तूने अपनी इस किताब मे जो रमज़ान के महिने मे नाज़ल की है फ़रमाया है के ये वो महिना है जिस

اُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ." وَهٰذَا شَهْرُ رَمَضَانَ وَقَدْ تَصَرَّمَ فَاسْأَلُكَ

मे क़ुआर्न नाज़ल किया गया है। और अब ये रमज़ान का महीना ख़त्म हो रहा है तो मैं सवाल करता हूँ

بِوَجْهِكَ الْكَرِيمِ وَكَلِمَاتِكَ التَّامَّةِ اِنْ كَانَ بَقِيَ عَلَيَّ ذَنْبٌ لَمْ

तेरी करीम ज़ात के वास्ते से और तेरे मुकम्मल कलेमात के वास्ते से के अगर अब तक मेरे जिम्मे गुनाह

تَغْفِرْهُ لِي اَوْ تُرِيدُ اَنْ تُعَذِّبَنِي عَلَيْهِ اَوْ تُقَايِسَنِي بِهِ اَنْ لَا يَطْلَعَ

बाक़ी हो जिसको तूने न बख़्शा हो या जिस पर अज़ाब का तूने इरादा किया है या उसपर हिसाब करने का

فَجْرُ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ اَوْ يَتَصَرَّمُ هٰذَا الشَّهْرُ اِلَّا وَقَدْ غَفَرْتَهُ لِي يَا اَرْحَمَ

इरादा है तो इस रात की फ़जर ताले न हो या ये महीना ख़त्म न हो मगर ये के तू उसको बख़्श दे ऐ सबसे

الرَّاحِمِينَ اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ بِمَحَامِدِكَ كُلِّهَا اَوَّلِهَا وَآخِرِهَا مَا

ज़्यादा रहमकरने वाले। खुदाया तेरे ही लिए हम्द है तेरे तमाम सिफ़ाते कमाल के साथ अव्वल व आख़िर

قُلْتَ لِنَفْسِكَ مِنْهَا وَمَا قَالَ الْخَلَائِقُ الْحَامِدُونَ الْمُجْتَهِدُونَ

मे। जो तूने खुद अपने बारे मे कहा है और जो हम्द करनेवाली काशिश करनेवाली शुमार करनेवाली

الْمَعْدُودُونَ الْمُوَقِّرُونَ ذِكْرَكَ وَالشُّكْرَ لَكَ الَّذِينَ اَعَنْتَهُمْ

मख़लूक ने कहा है जो तेरा जिक्र व शुक्र करनेवाले हैं जिनकी तूने मदद की है अपने हक़ की अदाएगी पर

عَلٰى اَدَاءِ حَقِّكَ مِنْ اَصْنَافِ خَلْقِكَ مِنَ الْمَلَائِكَةِ الْمُقَرَّبِينَ

अपनी मख़लूक की ाक़िसमो मे से जो मलाएका मुक़र्रेबीन हैं और अंबिया व मुर्सलीन हैं और तेरा ज़िक्र

وَالنَّبِيِّينَ وَالْمُرْسَلِينَ وَاَصْنَافِ النَّاطِقِينَ وَالْمُسَبِّحِينَ لَكَ

करनेवालों और तेरी तसबीह करनेवालों मे से तमाम आलमीन मे इस बात पर के तूने हमको माहे रमज़ान

مِنْ جَمِيعِ الْعَالَمِينَ عَلٰى اَنَّكَ بَلَّغْتَنَا شَهْرَ رَمَضَانَ وَعَلَيْنَا مِنْ

तक पहुँचाया और हमको अपनी ज़्यादा नेमत अता की और हमारे पास तेरी राज़ी के हिस्से और तेरे एहसान

نِعَمِكَ وَعِنْدَنا مِنْ قِسَمِكَ وَاِحْسَانِكَ وَتَظَاهُرِ اِمْتِنَانِكَ

और तेरे करम के मज़ाहिर सब मौजूद हैं तो उसके लिए तेरी इन्तेहाई हम्द है जो हमेशा रहनेवाली साबित

فَبِذٰلِكَ لَكَ مُنْتَهَى الْحَمْدِ الْخَالِدِ الدَّائِمِ الرَّاكِدِ الْمُخَلَّدِ

व क़ाएम और सरमदी है और जिसको हिदायत का तूल ख़त्म नही कर सकता है ऐ खुदा तेरी सना अज़ीम

السَّرْمَدِ الَّذِى لَا يَنْفَدُ طُولَ الابَدِ جَلَّ ثَنَاؤُكَ اعَنْتَنا عَلَيْهِ

है तूने हमारी मदद की इस माहे मुबारक पर यहाँ तक के तूने हमको उसके राज़े और नमाज़ मे क़याम और

حَتّٰى قَضَيْنَا صِيَامَهُ وَقِيَامَهُ مِنْ صَلَاةٍ وَمَا كَانَ مِنَّا فِيهِ مِنْ بِرٍّ

जो उसमे नेकी और आमाले ख़ैर व शुक्र व ज़िक्र हो सकते थे उसकी तूने तैफ़ीक़ दी और अदा करा दिया

اَوْ شُكْرٍ اَوْ ذِكْرٍ اَللّٰهُمَّ فَتَقَبَّلْهُ مِنَّا بِاَحْسَنِ قَبولِكَ وَتَجاوُزِكَ

खुदाया उसको क़ुबूल कर अपनी बेहतरीन क़ुबूलियत के साथ और हुस्न तजावुज़, हुसने अफ़ू और हुस्न

وَعَفْوِكَ وَصَفْحِكَ وَغُفْرَانِكَ وَحَقِيقَةِ رِضْوَانِكَ حَتّٰى تُظْفِرَنا

बख़्श और व ग़ुफ़रान के साथ और अपनी हक़ीक़ी खुशनूदी क़रार दे ताके हमको इस महीने मे अता करदे

فِيهِ بِكُلِّ خَيْرٍ مَطْلوبٍ وَجَزِيلِ عَطَاءٍ مَوهُوبٍ وَتُوَقِّيَنا فِيهِ

तमाम मतलूब नेकी और कसीर अताया और हमको बचादे इस महीने मे हर ख़तर-नाक चीज़ से और हर

مِنْ كُلِّ مَرْهُوبٍ اَوْ بَلَاءٍ مَجْلُوبٍ اَوْ ذَنْبٍ مَكْسُوبٍ اَللّٰهُمَّ اِنِّى

खिच के आनेवाली बलासे और कसब किए हुए गुनाह से। खुदाया मैं तुझ से सवाल करता हूँ उस अज़ीम

اَسْأَلُكَ بِعَظِيمِ مَا سَأَلَكَ بِهِ اَحَدٌ مِنْ خَلْقِكَ مِنْ كَرِيمِ

चीज के वास्ते से जिस के ज़रिए तेरी मख़लूक मे से किसीने सवाल किया है तेरे करीम नामों के ज़रिए और

اَسْمَائِكَ وَجَمِيلِ ثَنَائِكَ وَخَاصَّةِ دُعَائِكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ

तेरी बेहतरीन सनाके ज़रिए और तेरी मख़सूस दुआके ज़रिए के तू दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद और आले

وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاَنْ تَجْعَلَ شَهْرَنَا هٰذَا اَعْظَمَ شَهْرِ رَمَضَانَ مَرَّ عَلَيْنَا

मोहम्मद पर और हमारे इस माह को क़रार दे अज़ीमतरीन रमज़ान का महिना जो हमपर गुज़ारा है जिस वक़्त

مُنْذُ اُنْزِلْنَا اِلَى الدُّنْيَا بَرَكَةً فِي عِصْمَةِ دِينِي وَخَلَاصِ نَفْسِي

से के हमको इस दुनिया मे भेजा है मेरे दीन की हिफ़ाज़त मे बरकत और मेरे नफ़्स की नजात मे बरकत और

وَقَضَاءِ حَوَائِجِي وَتُشَفِّعَنِي فِي مَسَائِلِي وَتَمَامِ النِّعْمَةِ عَلَيَّ

मेरी हाजतों के पूरा करने मे बरकत और मेरे सवालों के बारे मे तू मेरी शिफ़ाअत कर व नेमतके कमाल मे

وَصَرْفِ السُّوءِ عَنِّي وَلِبَاسِ الْعَافِيَةِ لِي فِيهِ وَاَنْ تَجْعَلَنِي

मुझ पर और मुझ से बुराईयों के दूर करने मे और लिबासे आाफ़ियत के लिए उस मे और तू मुझ को क़रार

بِرَحْمَتِكَ مِمَّنْ خِرْتَ لَهُ لَيْلَةَ الْقَدْرِ وَجَعَلْتَهَا لَهُ خَيْرًا مِنْ اَلْفِ

दे अपनी रहमत से उन लोगों मे जिन के लिए तूने शबे क़द्र को इख़तेयार किया है जिस को तूने हजार माह से

شَهْرٍ فِي اَعْظَمِ الاَجْرِ وَكَرَائِمِ الذُّخْرِ وَحُسْنِ الشُّكْرِ وَطُولِ

बेहतर बनाया है अज़ीम तरीन अज्र मे और करीमतरीन ज़ख़ीरे मे और हुस्ने शक्र और तुले उम्र और दाएमी

الْعُمُرِ وَدَوَامِ الْيُسْرِ اَللّٰهُمَّ وَاسْأَلُكَ بِرَحْمَتِكَ وَطَوْلِكَ

असाईश मे। खुदाया मैं तुझ से सवल करता हूँ तेरी रहमते वासे के ज़रिए और एहसान के ज़रिए और अफ़ू

وَعَفْوِكَ وَنَعْمَائِكَ وَجَلَالِكَ وَقَدِيمِ اِحْسَانِكَ وَامْتِنَانِكَ اَنْ

और नेमतों और जलालत और तेरे क़दीम एहसान व इम्तेनान के ज़रिए के तू उसको हमारे लिए आख़री

لَا تَجْعَلَهُ آخِرَ الْعَهْدِ مِنَّا لِشَهْرِ رَمَضَانَ حَتّٰى تُبَلِّغَنَاهُ مِنْ قَابِلٍ

माहे रमज़ान न क़रार देना यहाँ तक के तू उसको हम तक पहुँचा दे आनेवाले साल मे बेहतरीन हालत मे और

عَلٰى اَحْسَنِ حَالٍ وَتُعَرِّفَنِى هِلَالَهُ مَعَ النَّاظِرِينَ اِلَيْهِ

तू मुझ को हलाल माहे रमज़ान को पहुँचवा दे देखने वालों के साथ और उस का एतेराफ़ करनेवालों के साथ

وَالْمُعْتَرِفِينَ لَهُ فِى اَعْفَى عَافِيَتِكَ وَاَنْعَمِ نِعْمَتِكَ وَاَوْسَعِ

अपनी कामिल तरीन आफ़ियत और मुकम्मल नेमत और वसी तरीन रहमत और अज़ीम तरीन तक़सीम मे

رَحْمَتِكَ وَاَجْزَلِ قِسَمِكَ يَا رَبِّىَ الَّذِى لَيْسَ لِى رَبٌّ غَيْرُهُ لَا يَكُونُ

ऐ मेरे परवरदिगार जिसके अलावा मेरा कोई परवरदिगार नही है ये माहे मुबारक के लिए मेरा विदाए फ़ना का

هٰذَا الْوَدَاعُ مِنِّى لَهُ وَدَاعَ فَنَاءٍ وَلَا آخِرَ الْعَهْدِ مِنِّى لِلِّقَاءِ حَتّٰى

वेदा न हो और न मुलाक़ाते माहे मुबारक का ये आख़री ज़माना हो ताके मुझ को आईन्दा फिर माहे रमजान

تُرِيَنِّيهِ مِنْ قَابِلٍ فِى اَوْسَعِ النِّعَمِ وَاَفْضَلِ الرَّجَاءِ وَاَنَا لَكَ عَلٰى

को दिखाए वसातरीन नेमतों मे और अफ़ज़लतरीन उम्मीदों मे और मैं तेरे लिए बेहतरीन वफ़ादार हूँ, बेशक

احسَنِ الوَفاءِ اِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ اَللّٰهُمَّ اسمَع دُعَائِي وَارحَم

तू दुआओं का सुनने वाला है। खुदाया तू सुने मेरी दुआ को और मेरे तज़र्रो व ज़ारी पर रहम फ़र्मा और मेरी

تَضَرُّعِي وَتَذَلُّلِي لَكَ وَاستِكَانَتِي وَتَوَكُّلِي عَلَيكَ وَانَا لَكَ مُسَلِّمٌ

ज़िल्लत पर और मेरा एतेमाद व तवक्कुल तो बस तुझ पर ही है और मैं तेरे लिए सर तसलीम को ख़म किए

لَا ارجُو نَجَاحًا وَلَا مُعَافَاةً وَلَا تَشرِيفًا وَلَا تَبلِيغًا اِلَّا بِكَ

हुए हूँ। न मैं कामयाबी की उम्मीद करता हूँ न माफ़ी और शरफ और न मक़सद तक पहुँचने की मगर तेरे

وَمِنكَ فَامنُن عَلَيَّ جَلَّ ثَنَاؤكَ وَتَقَدَّسَت اسمَاؤكَ بِتَبلِيغِي

ही ज़रिए और तुझही से और मुझ पर एहसान कर (के तेरी सना जलील है और तेरे नाम पाकीज़ा हैं) के मुझ

شَهرَ رَمَضَانَ وَانَا مُعَافًى مِن كُلِّ مَكرُوهٍ وَمَحذُورٍ وَمِن جَمِيعِ

को माहे मुबारक आईन्दा तक पहुँचा दे इस हाल मे के मैं हर नापसंददीदा और हराम और तमाम हलाकतों

البَوَائِقِ اَلحَمدُ لِلّٰهِ الَّذِي اعَانَنَا عَلٰى صِيَامِ هٰذَا الشَّهرِ وَقِيَامِهِ

से महफ़ूज़ रहूँ। हम्द उस खुदा के लिए है जिसने हमारी मदद की इस माह के राज़े पर और नमाज़ अदा करने

حَتّٰى بَلَّغَنِي آخِرَ لَيلَةٍ مِنهُ

पर यहाँ तक के हमको उसकी आख़री रात तक पहुँचा दिया।

दूसरा मतलब

खुतबए ईदे फ़ित्र

जिसे इमामे जमात को ईद की नमाज़ के बाद अदा करना है। जिस तरह से शेख़ सदूक़ (र.अ.) ने किताब मन ला यहज़ोरोहुल फ़क़ीह में अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से नक़्ल किया है:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمَاتِ

हम्द उस खुदा के लिए है जिस ने आसमानों और ज़मीनों को पैदा किया है और तरीकियों और रौशनी को

وَالنُّوْرَ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ لَا نُشْرِكُ بِاللّٰهِ شَيْئًا

बनाया है फिर वो लोग जिन्होंने कुफ़्र किया वो अपने रब के साथ शरीक बनानेलगे हम अल्लाह के लिए किसी

وَلَا نَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِهٖ وَلِيًّا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَهٗ مَا فِى السَّمَاوَاتِ

को शरीक नही करते और उसके अलावा किसी को वली नही बनाते हैं और हम्द खुदा के लिए है जिसकी

وَمَا فِى الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِى الْاٰخِرَةِ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ يَعْلَمُ

मिलकियत मे वो तमाम च़ीजें हैं जो आसमान और ज़मीन मे है और आख़िरत मे भी उसी के लिए हम्द है

مَا يَلِجُ فِى الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا

वो हकीम व ख़बीर है वो जानता है उसको जो ज़मीन मे दाख़िल होती है और ज़मीनसे निकलती है और जो

يَعْرُجُ فِيْهَا وَهُوَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ كَذٰلِكَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيْهِ

आसमान से नाज़ल होती है और जो आसमान मे बुलंद होती है वो रहीमो ग़फ़ूर है। ऐसा ही है ख़ुदाया उसके

الْمَصِيرُ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِى يُمْسِكُ السَّمَاءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الاَرْضِ

अलावा कोई माबूद नही है उसी की तरफ़ सब को लौटना है और हमद ख़ुदा के लिए जो आसमान को ज़मीन

اِلَّا بِاِذْنِهِ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَؤُوفٌ رَحِيمٌ اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنَا

पर गिरने से रोकता है मगर ये के उसी का हुकम हो बेशक ख़ुदा लोगों पर मेहेरबानी और रहम करनेवाला

بِرَحْمَتِكَ وَاعْمُمْنَا بِمَغْفِرَتِكَ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ وَالْحَمْدُ

है। ख़ुदाया हम पर रहम कर अपनी रहमत के ज़रिए और हमारे लिए आम कर अपनी मग़फ़ेरत को बेशक तू

لِلّٰهِ الَّذِى لَا مَقْنُوطٌ مِنْ رَحْمَتِهِ وَلَا مَخْلُوٌّ مِنْ نِعْمَتِهِ وَلَا مُؤْيِسٌ

बड़ा और बुलंद है और हम्द है ख़ुदाके लिए जिसकी रहमत से मायूस नही हुआ जाता और न उसकी नेमत

مِنْ رَوْحِهِ وَلَا مُسْتَنْكَفٌ عَنْ عِبَادَتِهِ بِكَلِمَتِهِ قَامَتِ

और बुलंदी से खाली हुआ जाता हे और उसकी इनायत से ना उम्मीद नही हुआ जाता और न उस की बन्दगी

السَّمَاوَاتُ السَّبْعُ وَاسْتَقَرَّتِ الاَرْضُ الْمِهَادُ وَثَبَتَتِ

से सरकशी की जाती है उसके कलमे से सातों आसमान क़ाएम हैं और ज़मीन का गहवारा इसतक़रार पाए

الْجِبَالُ الرَّوَاسِى وَجَرَتِ الرِّيَاحُ اللَّوَاقِحُ وَسَارَ فِى جَوِّ السَّمَاءِ

है और मुसतहकम पहाड़ सबित हैं और हामला करनेवाली हवाएं चली हैं और फ़िजए आसमान मे बादल ने

السَّحَابُ وَقَامَتْ عَلَى حُدُودِهَا الْبِحَارُ وَهُوَ اِلٰهٌ لَهَا وَقَاهِرٌ

गरदिश की है और दरया अपने हुदूद मे क़ाएम है वो उन का ख़ुदा है और वो क़ाहिर है के तमाम इज़्ज़तदार

يَذِلُّ لَهُ الْمُتَعَزِّزُونَ وَيَتَضَاءَلُ لَهُ الْمُتَكَبِّرُونَ وَيَدِينُ لَهُ

उसकी बारगाह मे सर झुकाए हैं और तमाम मुतकब्बिर उसके मुक़ाबले मे ज़लील हैं और तमाम अलम रज़ा

طَوْعاً وَكَرْهاً الْعَالَمُونَ نَحْمَدُهُ كَمَا حَمِدَ نَفْسَهُ وَكَمَا هُوَ اَهْلُهُ

मंदी या नाराज़ी से उसके हुकुम के ताबे हैं हम उस की हम्द करते हे जैसा के उसने ख़ुद अपनी हम्द की है

وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ وَنَسْتَهْدِيهِ وَنَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

और जिसका वो अहेल है और हम उससे मदद चाहते हैं उस से इस्तेग़फ़ार करते हैं और उसी से हिदायत के

وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ يَعْلَمُ مَا تُخْفِي النُّفُوسُ وَمَا تُجِنُّ الْبِحَارُ

तालीब हैं और हम गवाही देते हैं के अल्लाह के अलावा कोई ख़ुदा नही है वो एक है उसका कोई शरीक नही

وَمَا تَوَارَى مِنْهُ ظُلْمَةٌ وَلَا تَغِيبُ عَنْهُ غَائِبَةٌ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ

है वो नफ़सों मे छुपे उमूर को जानता है और दरयाओं की तहों मे जो हैं और जिसे तारीकी ने छिपाया है उसे

وَرَقَةٍ مِنْ شَجَرَةٍ وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلْمَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَلَا

जानता है और कोई ग़ालिब उस से पोशिदा नही है और दरख़त से कोई पत्ता नही गिरता है और न कोई दाना

رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ اِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ وَيَعْلَمُ مَا يَعْمَلُ

तारीकिए ज़मीन मे है मगर ये के वो उसे जानता है कोई ख़ुदा नही है मगर वो कोई ख़ुश्क व तर ऐसा नही है

الْعَامِلُونَ وَاَيَّ مَجْرًى يَجْرُونَ وَاِلٰى اَيِّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ

जो किताबे मुबीन मे न हो और वो अमल करनेवालों के अमल को जानता है और जिस तरीक़ पर चलते हैं

وَنَسْتَهْدِى اللهَ بِالْهُدىٰ وَنَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَنَبِيُّهٗ وَرَسُولُهٗ

और जिसकी तरफ़ वापस होते हैं और हम अल्लाह से हिदायते कामिल के तलबगार हैं और हम गवाही देते हैं

اِلىٰ خَلْقِهٖ وَاَمِينُهٗ عَلىٰ وَحْيِهٖ وَاَنَّهٗ قَدْ بَلَّغَ رِسَالَاتِ رَبِّهٖ وَجَاهَدَ

के मोहम्मद अल्लाह के बन्दे और उसके नबी हैं और रसूल हैं उसकी मख़लूक की तरफ़ और उसकी वही के

فِى اللهِ الْحَائِدِينَ عَنْهُ الْعَادِلِينَ بِهٖ وَعَبَدَ اللهَ حَتّىٰ اَتَاهُ الْيَقِينُ

अमीन हैं और उन्होंने अपने परवरदिगार के पैग़ाम को पहुँचा दिया और राहे ख़ुदा मे गुम्राहों और मुश्रिकों से

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّمَ اُوصِيكُمْ بِتَقْوىٰ اللهِ الَّذِى لَا

जिहाद किया और अल्लाहकी इबादत की यहाँ तकके मौत आ गई। (उनपर और उनकी आल पर सलवात व

تَبْرَحُ مِنْهُ نِعْمَةٌ وَلَا تَنْفَدُ مِنْهُ رَحْمَةٌ وَلَا يَسْتَغْنِى الْعِبَادُ عَنْهُ

सलाम हो) मैं तुमको तक़्वए इलाही की वसीयत करता हूँ जिसकी नेमत ख़त्म नही होती और जिसकी रहमत

وَلَا يَجْزِى اَنْعُمَهُ الْاَعْمَالُ الَّذِى رَغَّبَ فِى التَّقْوىٰ وَزَهَّدَ فِى

तमाम नही होती और बन्दे जिससे मुसतग़ना नही होते और बन्दों के आमाल जिसकी नेमतोंकी जज़ा नही

الدُّنْيَا وَحَذَّرَ الْمَعَاصِى وَتَعَزَّزَ بِالْبَقَاءِ وَذَلَّلَ خَلْقَهُ بِالْمَوْتِ

होसकते। वो ख़ुदा जिसने तकवे की तरग़ीब दी और ज़ोहदे दुनिया का हुक्म दिया और गुनाहों से डराया और

وَالْفَنَاءِ وَالْمَوْتُ غَايَةُ الْمَخْلُوقِينَ وَسَبِيلُ الْعَالَمِينَ

ख़ुद बक़ा के ज़रिए साहेबे इज़्ज़त हुआ और अपनी मख़लूक को मौत के ज़रिए राम किए हुए है और मौत

وَمَعْقُودٌ بِنَوَاصِى الْبَاقِينَ لَا يُعْجِزُهُ اِبَاقُ الْهَارِبِينَ وَعِنْدَ

मख़लूक की इन्तेहा और आलमीन का रास्ता है और बाक़ी रहनेवालों की पेशानी से बन्धी है। भागनेवालों

حُلُولِهِ يَاسِرُ اَهْلَ الْهَوَىٰ يَهْدِمُ كُلَّ لَذَّةٍ وَيُزِيلُ كُلَّ نِعْمَةٍ

का फ़रार उसको आजिज़ नही कर सकता और मौत आ जाने के बाद सारे अहेल हवा व हवस असीर हो

وَيَقْطَعُ كُلَّ بَهْجَةٍ وَالدُّنْيَا دَارٌ كَتَبَ اللّٰهُ لَهَا الْفَنَاءَ وَلِاَهْلِهَا

जाते हैं। वो हर लज़्ज़त को ख़त्म और हर नेमत को ज़ाएल और हर निशात को मुनक़ता कर देती है और

مِنْهَا الْجَلَاءَ فَاَكْثَرُهُمْ يَنْوِى بَقَاءَهَا وَيُعَظِّمُ بِنَاءَهَا وَهِىَ

दुनिया वो घर है जिसके लिए ख़ुदाने फ़ना लिख दी है और दुनियावालों के लिए जिलावतनी तय है। अकसर

حُلْوَةٌ خَضِرَةٌ قَدْ عُجِّلَتْ لِلطَّالِبِ وَالْتَبَسَتْ بِقَلْبِ النَّاظِرِ

दुनियावाले दुनियामे बक़ा का क़सद करते हैं और बड़ी बड़ी इमारतों की तामीर मे मसरूफ़ रहते हैं के ये

وَيُضْنِى ذُو الثَّرْوَةِ الضَّعِيفَ وَيَجْتَوِيهَا الْخَائِفُ الْوَجِلُ

मिठी और सर सबज है लेकिन तलबगार को जल्दी हासिल हो जाती है और देखनेवाले के दिल को मुश्तबा

فَارْتَحِلُوا مِنْهَا يَرْحَمُكُمُ اللّٰهُ بِاَحْسَنِ مَا بِحَضْرَتِكُمْ وَلَا تَطْلُبُوا

करती है और मालदार लोग कमज़ोर को थका देते हैं और ख़ाफ़े ख़ुदा रखनेवाले उससे मुतनि०प०फर हैं तो

مِنْهَا اَكْثَرَ مِنَ الْقَلِيلِ وَلَا تَسْاَلُوا مِنْهَا فَوْقَ الْكَفَافِ وَارْضَوْا

इस दुनियासे कूच कर जाओ अल्लाह तुमपर रहम करे उस बेहतरीन चा०rज के साथ जो तुम्हारे पास है और

مِنْهَا بِالْيَسِيرِ وَلَا تُمُدُّنَّ اَعْيُنَكُمْ مِنْهَا اِلٰى مَا مُتِّعَ الْمُتْرَفُونَ

दुनिया के क़लील के मुक़ाबले मे कसीर को न तलब करो और न सवाल करो दुनियाका काफ़ी होने से ज़्यादा

بِهِ وَاسْتَهِينُوا بِهَا وَلَا تُوَطِّنُوهَا وَاضِرُّوا بِاَنْفُسِكُمْ فِيهَا

ओर थोड़ी सी दुनिया पर राज़ी हो जाओ व न डालो अपनी आँखोको दुनियाकी उन चा०rजों की तरफ़ जिस से

وَاِيَّاكُمْ وَالتَّنَعُّمَ وَالتَّلَهِّيَ وَالْفَاكِهَاتِ فَاِنَّ فِي ذٰلِكَ غَفْلَةً

मालदार लोग मालामाल हैं। दुनियाको हक़ीर समझो व उसको अपना वतन न समझो व दुनिया मे जिसमानी

وَاغْتِرَارًا اَلَا اِنَّ الدُّنْيَا قَدْ تَنَكَّرَتْ وَاَدْبَرَتْ وَاحْلَوْلَتْ

ज़रर को बरदाश्त करो व तन परवरी, लहवो लअब व ख़ुश गुज़रानीसे परहेज़ करो इस लिए के इसमे ग़फ़लत

وَآذَنَتْ بِوَدَاعٍ اَلَا وَاِنَّ الْاٰخِرَةَ قَدْ رَحَلَتْ فَاَقْبَلَتْ وَاَشْرَفَتْ

और ग़रूर है। आगाह हो जाओ के दुनिया ने बेवफ़ाई की रूख़ फिरा लिया व बेगानगी की है और रूख़सत

وَآذَنَتْ بِاطِّلَاعٍ اَلَا وَاِنَّ الْمِضْمَارَ الْيَوْمَ وَالسِّبَاقَ غَدًا اَلَا

वेदा तलब किया है। आगाह हो जाओ के आख़िरत तुम्हारी तरफ़ रहलत कर चुकी है व तुम्हारी तरफ़ आरही

وَاِنَّ السُّبْقَةَ الْجَنَّةُ وَالْغَايَةَ النَّارُ اَلَا اَفَلَا تَائِبٌ مِنْ خَطِيئَتِهِ

है व आने की इत्तेला देचुकी है। आगाह हो जाओ के आजका दिन इम्तेहान का है व कल नतीजा मिलनेवाला

قَبْلَ يَوْمِ مَنِيَّتِهِ؟ اَلَا عَامِلٌ لِنَفْسِهِ قَبْلَ يَوْمِ بُؤْسِهِ وَفَقْرِهِ؟

है। आगाह हो जाओ के इताअत मे सबक़त करनेका इनाम जन्नत है वरना इन्सान का आख़री अंजाम जहन्नम

جَعَلَنَا اللّٰهُ وَاِيَّاكُمْ مِمَّنْ يَخَافُهُ وَيَرْجُو ثَوَابَهُ اَلَا اِنَّ هٰذَا الْيَوْمَ

है क्या कोई अपनी मौत से क़ब्ल अपने गुनाह से तौबा करनेवाला है, क्या कोई अपने लिए अमल अंजाम देने

يَوْمٌ جَعَلَهُ اللّٰهُ لَكُمْ عِيدًا وَجَعَلَكُمْ لَهُ اَهْلًا فَاذْكُرُوا اللّٰهَ

वाला है सख़ती और ग़ुरबत के दिन से क़ब्ल, ख़ुदा वन्दे आलम हम को और तुम को उन मे से क़रार दे जो

يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَادُّوا فِطْرَتَكُمْ فَاِنَّهَا سُنَّةُ

ख़ुदा से डरते हैं और सवाब की उम्मद लगाए हैं। आगाह हो जाओ ये वो दिन है जिस को ख़ुदा ने क़रार दिया

نَبِيِّكُمْ وَفَرِيضَةٌ وَاجِبَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ فَلْيُؤَدِّهَا كُلُّ امْرِءٍ مِنْكُمْ

है। तुम्हारे लिए राज़े ईद और तुम को उसका अहेल क़रार दिया हे पस ख़ुदा को याद करो तावे वो तुम्हें याद

عَنْهُ وَعَنْ عِيَالِهِ كُلِّهِمْ ذَكَرِهِمْ وَاُنْثَاهُمْ وَصَغِيرِهِمْ

करे और उस से वादा करो वो क़ुबूल करेगा। और ाफ़ितरे को अदा करो क्यों के ये तुम्हारे नबी की सुन्नत

وَكَبِيرِهِمْ وَحُرِّهِمْ وَمَمْلُوكِهِمْ عَنْ كُلِّ اِنْسَانٍ مِنْهُمْ صَاعًا

और वाजिब फ़रा◌rजा है तुम्हारे रब की तरफ़ से तो तुम मे से हर एक को ाफ़ितरा अदा करना चाहिए अपनी

مِنْ بُرٍّ اَوْ صَاعًا مِنْ تَمْرٍ اَوْ صَاعًا مِنْ شَعِيرٍ وَاَطِيعُوا اللّٰهَ فِي مَا

तरफ़ से और अपने कुल अयाल की तरफ़ से मर्द हो या औरत, छोटे हो या बड़े, आज़ाद हो या ग़ुलाम हर

فَرَضَ عَلَيْكُمْ وَاَمَرَكُمْ بِهِ مِنْ اِقَامِ الصَّلَاةِ وَاِيتَاءِ الزَّكَاةِ

एक की तरफ़ से एक साआ गन्दुम या एक साआ खजूर या एक साआ जौ और अल्लाह की इताअत करो उस

وَحَجِّ الْبَيْتِ وَصَوْمِ شَهْرِ رَمَضَانَ وَالامْرِ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّهْيِ

अम्र मे जो उसने तुम पर फ़र्ज़ किया है और जिसका तुम्हें हुक्म दिया हे जैसे नमाज़ का अदा करना, ज़कात

عَنِ الْمُنْكَرِ وَالاِحْسَانِ اِلٰى نِسَائِكُمْ وَمَا مَلَكَتْ ايْمَانُكُمْ

का देना और हज्जे बैतुल्लाह और माहे रमज़ान का रोज़ा और अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुनकर और

وَاطِيعُوا اللهَ فِي مَا نَهَاكُمْ عَنْهُ مِنْ قَذْفِ الْمُحْصَنَةِ وَاِتْيَانِ

औरतों के साथ हुस्ने सुलूक और कनीज़ों के साथ अच्छा बरताओ और अल्लाह की इताअत करो उस अम्र

الْفَاحِشَةِ وَشُرْبِ الْخَمْرِ وَبَخْسِ الْمِكْيَالِ وَنَقْصِ الْمِيزَانِ

मे जिस से उसने तुम को रोका है जैसे पाका०rजा औरतों पर ज़िना का इज़ाम लगाना और बदकारी करना,

وَشَهَادَةِ الزُّورِ وَالْفِرَارِ مِنَ الزَّحْفِ عَصَمَنَا اللهُ وَاِيَّاكُمْ

शराब पीना, नापने और तौलने मे कमी करना और झूठी गवाही देना अैर मैदाने जंगसे भाग जाना अल्लाह

بِالتَّقْوٰى وَجَعَلَ الاٰخِرَةَ خَيْرًا لَنَا وَلَكُمْ مِنَ الْاُوْلٰى اِنَّ احْسَنَ

हमको और तुम को तक़वा के ज़रिए महफ़ूज़ रखे और आख़िरत को तुम्हारे और हमारे लिए बेहतर बना दे

الْحَدِيثِ وَابْلَغَ مَوْعِظَةِ الْمُتَّقِينَ كِتَابُ اللهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

यक़ीनन बेहतर हदीस और मुत्तक़ीन का मौस्सिर तरीन मोएज़ा अल्लाह ग़ालीब व हकीम की किताब है। मैं

اعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ «بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह की पनाह चाहता हूँ मरदूद शैतान से ख़ुदा के नाम से शुरू करता हूँ जो मेहेबान रहम वाला है ऐ रसूल

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ. اَللّٰهُ الصَّمَدُ. لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ. وَلَمْ يَكُنْ لَهُ

कह दो के अल्लाह एक है अल्लाह बेनियाज़ है, न कोई उसका बेटा है और न वो किसी का बेटा है। और कोई

كُفُوًا اَحَدٌ.»

उसका मिस्ल नही है।

उसके बाद थोड़ी देर बैठ जाए इस तरह जैसे फिर उठना चाहता है और उठकर दूसरा ख़ुतबा पढ़े और ख़ुतबा भी वही है जिसको अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) जुमे के दिन बतौर दूसरा ख़ुतबा पढ़ा करते थे:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنُؤْمِنُ بِهِ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَشْهَدُ

तमाम हम्द ख़ुदाके लिए है हम उसकी हम्द करते हैं व उससे मदद तलब करते हैं व उसपर ईमान लाते हैं

اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

व उसी पर तवक्कुल करते हैं व गवाही देते हैं के कोई ख़ुदा नही सिवाए अल्लाह के वो एक है उसका कोई

صَلَوَاتُ اللّٰهِ وَسَلَامُهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَمَغْفِرَتُهُ وَرِضْوَانُهُ اَللّٰهُمَّ

शरीक नही और बेशक मोहम्मद अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। अल्लाह का दुरूद व सलाम हो

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُولِكَ وَنَبِيِّكَ صَلَاةً تَامَّةً نَامِيَةً

उनपर और उनकी आल पर ओर उसकी मग़फ़ेरत और उसका रिज़वान हो। ख़ुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा

زَاكِيَةً تَرْفَعُ بِهَا دَرَجَتَهُ وَتُبَيِّنُ بِهَا فَضِيلَتَهُ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

अपने बन्दे अपने रसूल और अपने नबी मोहम्मद पर ऐसा दुरूद जो बराबर बड़नेवाला और पाका०rजा हो

وَآلِ مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ وَبَارَكْتَ

जिस के ज़रिए तू उनके दरजे को बुलंद करता है और जिसके ज़रिए तू उनकी फ़ज़ीलत को ज़ाहिर करता

وَتَرَحَّمْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيمَ وَآلِ اِبْرَاهِيمَ اِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ اَللّٰهُمَّ

है और दुरूद नाज़िल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और बरकत अता कर मोहम्म्द व आले मोहम्मद

عَذِّبْ كَفَرَةَ اَهْلِ الْكِتَابِ الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِكَ

को जिस तरह तूने दुरूद भेजा और बरकत दी है और रहमत नाज़िल की है इब्राहीम और आले इब्राहीम

وَيَجْحَدُونَ آيَاتِكَ وَيُكَذِّبُونَ رُسُلَكَ اَللّٰهُمَّ خَالِفْ بَيْنَ كَلِمَتِهِمْ

पर बेशक तू पसंदीदा सिफ़त और बुज़ुर्गवार है। ख़ुदाया अहले किताब मे काफ़िरों पर अज़ाब नाज़ल कर

وَالْقِ الرُّعْبَ فِي قُلُوبِهِمْ وَاَنْزِلْ عَلَيْهِمْ رِجْزَكَ وَنَقِمَتَكَ وَبَاسَكَ

जिन्होनें तेरे दीन की राह को बन्द कर दिया है और जो तेरी आयतों का इन्कार करते हैं और तेरे रसूलों

الَّذِى لَا تَرُدُّهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ اَللّٰهُمَّ انْصُرْ جُيُوشَ

की तकजीब करते हैं। उनके दरमियान इख़्तेलाफ़े कलेमा पैदा कर और उनके दिलों मे मुसलमान का

الْمُسْلِمِينَ وَسَرَايَاهُمْ وَمُرَابِطِيهِمْ فِي مَشَارِقِ الارْضِ

रोब डालदे और उनपर नाज़लकर ऐसा अज़ाब ओ इक़ाब और सखती को जिसको तू मुजरिम कौमों से

وَمَغَارِبِهَا اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُؤْمِنِينَ

वापस न ले जाए। ख़ुदाया मुसलमान लश्करों, सिपाहों और सरहदी मुहाफ़ज़ों की मदद फ़रमा, ज़मीन के

وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ اَللّٰهُمَّ اجْعَلِ التَّقْوىٰ

मश्रिक़ और उसके मग़रिब मे बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है। ख़ुदाया तू मग़फ़ेरत फ़र्मा मोमिनीन और

زَادَهُمْ وَالْإِيمَانَ وَالْحِكْمَةَ فِي قُلُوبِهِمْ وَاَوْزِعْهُمْ اَنْ يَشْكُرُوا

मोमिनात की और मुसलेमीन और मुसलेमात की। ख़ुदाया तकवे को उन का ज़ादे राह क़रारदे और उन

نِعْمَتَكَ الَّتِي اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ وَاَنْ يُوفُوا بِعَهْدِكَ الَّذِى

के दिला मे ईमान व हिकमत क़रार दे और उनको हौसला दे दे के वो तेरी उस नेमतका शुक्र करें जो तूने

عَاهَدْتَهُمْ عَلَيْهِ إِلٰهَ الْحَقِّ وَخَالِقَ الْخَلْقِ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِمَنْ تُوُفِّيَ

उन्हें दी है और तेरे उस अहेद को वफ़ा करदे जो तूने उनसे लिया है ऐ परवर-दिगारे बरहक़ और तमाम

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَلِمَنْ هُوَ

मख़लूकात का ख़ालिक़। ख़ुदाया उन्हे बख़्श दे जो मोमिनीन व मोमिनात मौत से वाबसता हो गए और जो

لَاحِقٌ بِهِمْ مِنْ بَعْدِهِمْ مِنْهُمْ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ «اِنَّ

मुसलमान मर्द व औरत मर चुके हैं और उन्हें बख़्शदे जो उनसे उनके बाद मुलहक़ हुए बेशक तू ग़ालिब

اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيتَاءِ ذِى الْقُرْبىٰ وَيَنْهىٰ عَنِ

हिकमतवाला है। ख़ुदावन्दे आलम अदालत और नेकी का हुक्म देता है और क़राबतदारों को अता

الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ.» اُذْكُرُوا

करनेका हुक्म देता है और रोकता है ता के वे भी तुम्हें याद करें वो उसका याद करनेवाला है जो उसे याद

اللہَ یَذۡ کُرۡکُمۡ فَاِنَّہُ ذَا کِرٌ لِمَنۡ ذَکَرَہُ وَاسۡاَلُوا اللہَ مِنۡ رَحۡمَتِہِ

करता है और ख़ुदासे रहमतो फ़ज़्ल तलब करो क्योंके कोई दुआ करने वाला उसकी बारगाहसे ख़ाएब व

وَفَضۡلِہِ فَاِنَّہُ لَا یَخِیبُ عَلَیۡہِ دَاعٍ دَعَاہُ رَبَّنَا آتِنَا فِی الدُّنۡیَا

ख़ासर नही पलटा। हमारे परवरदिगार हमको दुनिया मे नेकी और आख़िरत मे नेकी अताकर ओर हमको

حَسَنَۃً وَفِی الآخِرَۃِ حَسَنَۃً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

जहन्नम के अज़ाब से महफ़ूज़ रख।

तीसरा मतलब

ज़ियारते जामेआ

ज़ियारते जामेआ आइम्मतुल मासूमीन है जिसके ज़रिए हर समय और हर ज़माने में हर इमाम की ज़ियारत की जा सकती है। इस ज़ियारत को सय्यद इब्ने ताऊस ने मिस्बाहुज़ ज़ाएर में आइम्मा अलैहेमुस्सलाम से रिवायत की है। चंद मक़ामात के साथ जिनमें दुआ व नमाज़ वक़्ते सफ़र शामिल है। उसके बाद फ़रमाया है के गुस्ले ज़ियारत करते समय यह दुआ पढ़ो:

بِسۡمِ اللہِ وَبِاللہِ وَفِی سَبِیلِ اللہِ وَعَلٰی مِلَّۃِ رَسُولِ اللہِ اَللّٰھُمَّ اغۡسِلۡ

अल्लाह के नाम से और ख़ुदा की ज़ात से राहे ख़ुदा मे और मिल्लते रसूले ख़ुदा पर मैं शुरू करता

عَنِّی دَرَنَ الذُّنُوبِ وَوَسَخَ الۡعُیُوبِ وَطَھِّرۡنِی بِمَاءِ التَّوۡبَۃِ وَالۡبِسۡنِی

हूँ ख़ुदाया मुझ से गुनाहों की गन्दगी और ऐबों के मैल को धो दे और मुझको पाक करदे आबे

رِدَاءَ الْعِصْمَةِ وَاَيِّدْنِي بِلُطْفٍ مِنْكَ يُوَفِّقُنِي لِصَالِحِ الْاَعْمَالِ اِنَّكَ

तौबा से और मुझको रिदाए इसमत पिन्हा व मेरी ताईद कर अपने लुतफ़ो करमसे के मुझे नेक

ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

आमालकी तौफ़ीक़ कराम्त हो बेशक तू अज़ीम फ़ज़्लो करमवाला है

उसके बाद जब हरमे मुतÔहर के नज़दीक पहुँचे तो कहे:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي وَفَّقَنِي لِقَصْدِ وَلِيِّهِ وَزِيَارَةِ حُجَّتِهِ وَاَوْرَدَنِي

हम्द ख़ुदाके लिए जिसने मुझको तौफ़ीक़ दी अपने वली के आसताने के क़स्द की और अपनी हुज्जत की

حَرَمَهُ وَلَمْ يَبْخَسْنِي حَظِّي مِنْ زِيَارَةِ قَبْرِهِ وَالنُّزُولِ بِعَقْوَةِ

ज़ियारत की और मुझको पिन्हा दिया उनके हरम मे और मेरे हिस्सा मे कोई कमी नही की उनकी क़ब्र मे और

مُغَيَّبِهِ وَسَاحَةِ تُرْبَتِهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي لَمْ يَسِمْنِي بِحِرْمَانِ

उनकी पाकीज़ा चौखट पर हाज़र होने मे और उनकी तुरबते मुक़द्दस तक पहुँचने मे, हम्द उस ख़ुदा की है

مَا اَمَّلْتُهُ وَلَا صَرَفَ عَنِّي مَا رَجَوْتُهُ وَلَا قَطَعَ رَجَائِي فِيمَا

जिसने मुझको मेरी उम्मीद से महरूम नही क़रार दिया और न उस को हटाया मुझसे जिसकी मैं ने आरज़ू की

تَوَقَّعْتُهُ بَلْ اَلْبَسَنِي عَافِيَتَهُ وَاَفَادَنِي نِعْمَتَهُ وَآتَانِي

और न मेरी उम्मीद को मुनक़ता किया जिसकी मैंने तवक़्क़ो की बल्के उसने मुझको अपनी आफ़ियत का

كَرَامَتَهُ

लिबास पिन्हाया व मुझको अपनी नेमत का फ़ाएदा दिया व अपनी करामत अता की।

फिर इसके बाद जब वारिदे हरम हो जाए तो ज़रीह के सामने खड़े हो कर यूँ कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ ائِمَّةَ الْمُؤْمِنِينَ وَسَادَةَ الْمُتَّقِينَ وَ كُبَرَاءَ

सलाम तुमपर ऐ मोमिनों के इमाम और मुत्तक़ीयों के सरदार और सिद्दिक़ीन के बुज़ुर्ग और सालेहीन

الصِّدِّيقِينَ وَاُمَرَاءَ الصَّالِحِينَ وَقَادَةَ الْمُحْسِنِينَ وَاعْلَامَ

के अमीन और नेकी करनेवालों के क़ाएद और तालिबाने हिदायत के परचम और अहले मारेफ़त के

الْمُهْتَدِينَ وَانْوَارَ الْعَارِفِينَ وَوَرَثَةَ الانْبِيَاءِ وَصَفْوَةَ الاوْصِيَاءِ

नूर और अंबियाके वारिस व मुनताख़िब बंदो में मुन्ताख़ित और मुत्तक़ीयो क आफ़ताब और ख़ुल्फ़ा के

وَشُمُوسَ الاتْقِيَاءِ وَبُدُورَ الْخُلَفَاءِ وَعِبَادَ الرَّحْمٰنِ وَشُرَكَاءَ

माहेताब और रहमान के बन्दों और क़ुआर्ना के शरीकों और ईमान के रास्तों और हक़ाएक़ के ख़जानों

الْقُرْآنِ وَمَنْهَجَ الاِيمَانِ وَمَعَادِنَ الْحَقَائِقِ وَشُفَعَاءَ الْخَلَائِقِ

और मख़लूक़ की शिफ़ाअत करनेवालों और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों । मैं गवाही देता

وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ اشْهَدُ انَّكُمْ ابْوَابُ اللهِ وَمَفَاتِيحُ رَحْمَتِهِ

हूँ के आप लोग ख़ुदा के दरवाज़े और उसकी रहमत की कलीद हैं और उसकी मग़फ़ेरत का वसीला व

وَمَقَالِيدُ مَغْفِرَتِهِ وَسَحَائِبُ رِضْوَانِهِ وَمَصَابِيحُ جِنَانِهِ وَحَمَلَةُ

उसकी रज़ामंदी के अबर और उसकी जन्नत के चिराग़ और उसके इल्म फ़ुरक़ान के हामिल, उसके इल्म

فُرْقَانِهِ وَخَزَنَةُ عِلْمِهِ وَحَفَظَةُ سِرِّهِ وَمَهْبِطُ وَحْيِهِ وَعِنْدَكُمْ

के ख़ज़ाने, उसके राज़ के मोहाफ़ज़ और उसकी वही की मनिज़ल हैं और आप लोगों के पास नबुव्वत की

امَانَاتُ النُّبُوَّةِ وَوَدَائِعُ الرِّسَالَةِ انْتُمْ اُمَنَاءُ اللهِ وَاحِبَّاؤُهُ

अमानतें और रिसालत के वदीयतें है आप अल्लाह के अमीन और उसके पसंदीदा हैं और उसके बन्दे और

وَعِبَادُهُ وَاصْفِيَاؤُهُ وَانْصَارُ تَوْحِيدِهِ وَارْكَانُ تَمْجِيدِهِ وَدُعَاتُهُ

ख़ालिस दोस्त हैं और उसकी तौहीद के मददगार हैं और उसकी बुजुर्गा के रूखऔर उसकी किताबों की

اِلٰى كُتُبِهِ وَحَرَسَةُ خَلَائِقِهِ وَحَفَظَةُ وَدَائِعِهِ لَا يَسْبِقُكُمْ ثَنَاءُ

तरफ़ दावत देनेवाले और उसकी मख़लूक़ के निगराँ और उसकी अमानतों के निगेहबान हैं मलाएका की

الْمَلَائِكَةِ فِي الْاِخْلَاصِ وَالْخُشُوعِ وَلَا يُضَادُّكُمْ ذُو ابْتِهَالٍ

तारिफ़ इख़लास और ख़ुशु बारगाहे ख़ुदा मे आप का मुक़ाबिल नही हो सकता हे और कैसे हो सकता है

وَخُضُوعٍ انّٰى وَلَكُمُ الْقُلُوبُ الَّتِي تَوَلَّى اللهُ رِيَاضَتَهَا بِالْخَوْفِ

जब के आपके पास वो दिल है जिसकी तरबियत का ज़िम्मेदार ख़ुदा हुआ है ख़ाफ़ और उम्मीद के ज़रिए

وَالرَّجَاءِ وَجَعَلَهَا اوْعِيَةً لِلشُّكْرِ وَالثَّنَاءِ وَآمَنَهَا مِنْ عَوَارِضِ

और उसको शुक्र और तारीफ़ के लिए ज़र्फ़ बनाया और उसको महफ़ूज़ किया है ग़फ़लत के अवारिज़ से

الْغَفْلَةِ وَصَفَّاهَا مِنْ سُوءِ شَوَاغِلِ الْفَتْرَةِ بَلْ يَتَقَرَّبُ اَهْلُ

और उसको पाका◌rजा किया है फ़ुतूर की बुराई से बल्के आसमान के लोग भी क़राबत हासिल करते हैं

السَّمَاءِ بِحُبِّكُمْ وَبِالْبَرَاءَةِ مِنْ اَعْدَائِكُمْ وَتَوَاتُرِ الْبُكَاءِ عَلٰى

आपकी मोहब्बत के ज़रिए और आपके दुश्मनों से बराएत के ज़रिए और आपके मसाएब पर मुसलसल

مُصَابِكُمْ وَالْاِسْتِغْفَارِ لِشِيعَتِكُمْ وَمُحِبِّيكُمْ فَاَنَا اُشْهِدُ اللّٰهَ

गिरया के ज़रिए और आपके शियों और मोहब्बों के लिए इस्तेग़फ़ार के ज़रिए। पस मैं गवाह बनाता हूँ

خَالِقِي وَاُشْهِدُ مَلَائِكَتَهُ وَاَنْبِيَاءَهُ وَاُشْهِدُكُمْ يَا مَوَالِيَّ اَنِّي مُؤْمِنٌ

अपने ख़ालिक ख़ुदाको और उसके मलाएका व अंबिया को और आपको ऐ मेरे मौला के मैं आप की

بِوِلَايَتِكُمْ مُعْتَقِدٌ لِاِمَامَتِكُمْ مُقِرٌّ بِخِلَافَتِكُمْ عَارِفٌ

विलायत पर ईमन रखनेवाला और आपकी एमानत का मोतिक़द और आप की ख़िलाफ़त का इक़रार

بِمَنْزِلَتِكُمْ مُوقِنٌ بِعِصْمَتِكُمْ خَاضِعٌ لِوِلَايَتِكُمْ مُتَقَرِّبٌ اِلَى اللّٰهِ

करनेवाला और आपके मरतबे का आरिफ़ और आपकी इस्मत का यक़ीनवाला और आपकी सलतनत

بِحُبِّكُمْ وَبِالْبَرَاءَةِ مِنْ اَعْدَائِكُمْ عَالِمٌ بِاَنَّ اللّٰهَ قَدْ طَهَّرَكُمْ مِنَ

का ख़ाजे और अल्लाह से क़ुरबत हासिल करनेवाला आपकी मोहब्बत के ज़रिए और आप के दुश्मनों से

الْفَوَاحِشِ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَمِنْ كُلِّ رِيبَةٍ وَنَجَاسَةٍ وَدَنِيَّةٍ

बराएत के ज़रिए हूँ। मैं जानता हूँ के ख़ुदाने आपको पाक रखा है तमाम ज़ाहिरी और बातिनी ख़राबियों से

وَرِجَاسَةٍ وَمَنَحَكُمْ رَايَةَ الْحَقِّ الَّتِي مَنْ تَقَدَّمَهَا ضَلَّ وَمَنْ تَأَخَّرَ

और हर शक व शुबा और नजासत और पस्ती और रिज्स से और आप को इल्मे हक़ अता किया है जिससे

عَنْهَا زَلَّ وَفَرَضَ طَاعَتَكُمْ عَلٰى كُلِّ اَسْوَدٍ وَاَبْيَضٍ وَاَشْهَدُ اَنَّكُمْ

जो आगे बढ़ गया वो गुम्राह हो गया और जो उस से पीछे रह गया वो लगिज़श खा गया और आप की

قَدْ وَفَيْتُمْ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَذِمَّتِهِ وَبِكُلِّ مَا اشْتَرَطَ عَلَيْكُمْ فِي كِتَابِهِ

इताअत को फ़र्ज़ किया हर सिया व सफ़ेद पर और मैं गवाही देता हूँ के आप ने अल्लाह का वादा पूरा किया

وَدَعَوْتُمْ اِلٰى سَبِيلِهِ وَاَنْفَذْتُمْ طَاقَتَكُمْ فِي مَرْضَاتِهِ وَحَمَلْتُمُ

और ज़िम्मेदारी को मुकम्मल किया और हर उस चा०rज को जिसकी आप से शर्त की गई है किताब मे

الْخَلَائِقَ عَلٰى مِنْهَاجِ النُّبُوَّةِ وَمَسَالِكِ الرِّسَالَةِ وَسِرْتُمْ فِيهِ

और आप ने राहे ख़ुदा की तरफ़ बुलाया और अपनी मुकम्मल ताक़त को लगा दिया उसकी मर्ज़ी मे और

بِسِيرَةِ الْاَنْبِيَاءِ وَمَذَاهِبِ الْاَوْصِيَاءِ فَلَمْ يُطَعْ لَكُمْ اَمْرٌ وَلَمْ

मख़लूक को नबुव्वत के तरीके और रिसालत के रासते पर चलाया और उस सिलसिले मे अंबिया की

تُصْغَ اِلَيْكُمْ اُذُنٌ فَصَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلٰى اَرْوَاحِكُمْ وَاَجْسَادِكُمْ بِاَبِي

सीरतों और वसीयों के तरीकों पर चलते रहे लेकिन आप की इताअत नही की गई और आप की बातों पर

اَنْتَ وَاُمِّي يَا حُجَّةَ اللّٰهِ لَقَدْ اُرْضِعْتَ بِثَدْيِ الْاِيمَانِ وَفُطِمْتَ بِنُورِ

कान नही धरा गया पस अल्लाह का दुरूद हो आप की रूहों और जिस्मों पर। मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों

الْإِسْلَامِ وَغُذِّيتَ بِبَرْدِ الْيَقِينِ وَأُلْبِسْتَ حُلَلَ الْعِصْمَةِ

ऐ हुज्जते ख़ुदा आपने ईमान के सीने से दुध पिया और नूरे इस्लाम से शैर ख़ुरानी हुई और यक़ीन की ख़ुनकी

وَاصْطُفِيتَ وَوُرِّثْتَ عِلْمَ الْكِتَابِ وَلُقِّنْتَ فَصْلَ الْخِطَابِ

की ग़िज़ा ली और इस्मत के हुल्ले पिन्हाए गए और मुनत-ख़िब किए गए और इल्मे किताब के वारिस बनाए

وَأُوضِحَ بِمَكَانِكَ مَعَارِفُ التَّنْزِيلِ وَغَوَامِضُ التَّأْوِيلِ وَسُلِّمَتْ

गए और फ़स्लुल ख़िताब की तलक़ीन की गई और आप के मक़ामे इल्म की वजह से तनज़ील के मारिफ़

إِلَيْكَ رَايَةُ الْحَقِّ وَكُلِّفْتَ هِدَايَةَ الْخَلْقِ وَنُبِذَ إِلَيْكَ عَهْدُ الْإِمَامَةِ

और तावील के मुश्किलात वाज़ेह किए गए और आप को इल्मे हक़ अता किया गया और हिदायते ख़ल्क

وَأُلْزِمْتَ حِفْظَ الشَّرِيعَةِ وَأَشْهَدُ يَا مَوْلَايَ أَنَّكَ وَفَيْتَ بِشَرَائِطِ

की ज़िम्मादारी दी गई और आप की तरफ़ अमानत का अहेद पहुँचा और शरीयत की हिफ़ाज़त आप पर

الْوَصِيَّةِ وَقَضَيْتَ مَا لَزِمَكَ مِنْ حَدِّ الطَّاعَةِ وَنَهَضْتَ بِأَعْبَاءِ

लाज़म की गई और मैं गवाही देता हूँ ऐ मेरे मौला के आपने वसीयत की शरतों को पूरा कर दिया और

الْإِمَامَةِ وَاحْتَذَيْتَ مِثَالَ النُّبُوَّةِ فِي الصَّبْرِ وَالْاِجْتِهَادِ

आपने पूरी करदी जो आप के लिए अमानत की हद लाज़म थी और आपने मक़ामे अमानत के वाज़ीफ़े

وَالنَّصِيحَةِ لِلْعِبَادِ وَكَظْمِ الْغَيْظِ وَالْعَفْوِ عَنِ النَّاسِ وَعَزَمْتَ

के साथ क़याम किया और आप नबुव्वत के क़दम ब क़दम चलते रहे सब्र और कोशिश और बन्दों की

عَلَى الْعَدْلِ فِي الْبَرِيَّةِ وَالنَّصَفَةِ فِي الْقَضِيَّةِ وَوَكَّدْتَ الْحُجَجَ عَلَى

नसीहत करने मे कज़ायए आलम मे इन्साफ़ किया और हुज्ज़तों को मवक्किद किया उम्मत क ऊपर सच्ची

الْأُمَّةِ بِالدَّلَائِلِ الصَّادِقَةِ وَالشَّرِيعَةِ النَّاطِقَةِ وَدَعَوْتَ إِلَى اللّٰهِ

दलीलों के साथ और नातिक़ शरीयतों के साथ और आपने मख़लूक़ को बुलाया ख़ुदा की तरफ़ हिकमते

بِالْحِكْمَةِ الْبَالِغَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ فَمَنَعْتَ مِنْ تَقْوِيمِ الزَّيْغِ

कामील और मोएज़ा हसना के ज़रिए लेकिन आप रोक दिए गए कजी को दुरूस्त करने, रख़ने को बन्द

وَسَدِّ الثُّلَمِ وَإِصْلَاحِ الْفَاسِدِ وَكَسْرِ الْمُعَانِدِ وَإِحْيَاءِ السُّنَنِ

करने और फ़ासिद की इस्लाह और दुश्मनों के नाबूद करने और सुन्नतों के ज़िन्दा करने और बिदअत के

وَإِمَاتَةِ الْبِدَعِ حَتَّى فَارَقْتَ الدُّنْيَا وَأَنْتَ شَهِيدٌ وَلَقِيتَ رَسُولَ

ख़त्म करने से यहाँ तक के आपने दुनिया को छोड़ दिया इस हालत मे के आप शहीद हो गए और रसूले

اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَأَنْتَ حَمِيدٌ صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَيْكَ تَتَرَادَفُ

ख़ुदा(स.अ.व.व.)से मुलाक़ात की दर हाँलाके आप पसंदीदा थे आपपर अल्लाह का मुसलसल और मज़ीद

وَتَزِيدُ

दुरूद हो।

उसके बाद पाईंती की तरफ़ जाकर यूँ कहे:

يَا سَادَتِي يَا آلَ رَسُولِ اللهِ اِنِّي بِكُمْ اَتَقَرَّبُ اِلَى اللهِ جَلَّ وَعَلَا

ऐ मेरे आक़ा, ऐ आले रसूले ख़ुदा, मैं आपके ज़रिए अल्लाहे बुज़ुर्ग व बरतर से क़रीब होता हूँ उन दुश्मनों

بِالْخِلَافِ عَلَى الَّذِينَ غَدَرُوا بِكُمْ وَنَكَثُوا بَيْعَتَكُمْ وَجَحَدُوا

की मुख़ालेफ़त के वास्तेसे जिन्होंने आपसे ग़द्दारी की और आप की बैअत को तोड़ दिया और आपकी

وِلَايَتَكُمْ وَاَنْكَرُوا مَنْزِلَتَكُمْ وَخَلَعُوا رِبْقَةَ طَاعَتِكُمْ وَهَجَرُوا

विलायत का इन्कार किया और आपके दरजेको नही माना और आपकी इताअतके रिश्तों को उतार

اَسْبَابَ مَوَدَّتِكُمْ وَتَقَرَّبُوا اِلَى فَرَاعِنَتِهِمْ بِالْبَرَاءَةِ مِنْكُمْ

फेंका और आपकी मोहब्बत के असबाब छोड़ दिए और क़रीब हुए अपने फ़राएना से आप से बराअत

وَالْاِعْرَاضِ عَنْكُمْ وَمَنَعُوكُمْ مِنْ اِقَامَةِ الْحُدُودِ وَاسْتِيصَالِ

के ज़रिए और आप से अग़राज के ज़रिए और आपको रोक दिया ख़ुदको क़ाएम करने से और मुनकरों

الْجُحُودِ وَشَعْبِ الصَّدْعِ وَلَمِّ الشَّعَثِ وَسَدِّ الْخَلَلِ وَتَثْقِيفِ

के ख़त्म करनेसे और तफ़र्रेक़े के दूर करने और परागन्दगी के जमा करने और ख़लल को बन्द करने

الْاَوَدِ وَاِمْضَاءِ الْاَحْكَامِ وَتَهْذِيبِ الْاِسْلَامِ وَقَمْعِ الْآثَامِ

और कजी को ठीक करने और ख़ुदा के एहकाम को जारी करने और इस्लाम के आरासता करने और

وَاَرْهَجُوا عَلَيْكُمْ نَقْعَ الْحُرُوبِ وَالْفِتَنِ وَاَنْحَوْا عَلَيْكُمْ سُيُوفَ

गुनाहों के तोड़ देने से और आपके ख़िलाफ़ बराबर जंग व ाफ़ितने के ग़ुब्बार उड़ाए और आप के ख़िलाफ़

الاحْقَادِ وَهَتَكُوا مِنْكُمُ السُّتُورَ وَابْتَاعُوا بِخُمْسِكُمُ الْخُمُورَ

कीनों की तलवार को खींचा और आप के परदए जलालत व हुरमत को चाक किया और आप के ख़ुम्स

وَصَرَفُوا صَدَقَاتِ الْمَسَاكِينِ اِلَى الْمُضْحِكِينَ وَالسَّاخِرِينَ

से शराब को ख़रीदा और मिसकीनो के सदक़ात को मसख़रों और मज़ाहेका उड़ानेवाले लोगों पर ख़र्च

وَذٰلِكَ بِمَا طَرَّقَتْ لَهُمُ الْفَسَقَةُ الْغُوَاةُ وَالْحَسَدَةُ الْبُغَاةُ اَهْلُ

किया और ये उस दिन से हुआ के उन के लिए गुम्राह फ़ासिक़ों और सरकश हासिदों और बेवफ़ाई और

النَّكْثِ وَالْغَدْرِ وَالْخِلَافِ وَالْمَكْرِ وَالْقُلُوبِ الْمُنْتِنَةِ مِنْ قَذَرِ

मक्कारी वालों और बदबुदार दिलों ने शिर्क की गन्दगी से और कुफ़्र की गन्दगी पर इस्तेवार जिस्मो ने

الشِّرْكِ وَالاجْسَادِ الْمُشْحَنَةِ مِنْ دَرَنِ الْكُفْرِ الَّذِينَ اَضَبُّوا

जो निफ़ाक़ की आदत पर क़ाएम रहे और बदबख़्ती के रिश्तों पर औंधे मूह पड़े रहे पस जब मुस्तफ़ा

عَلَى النِّفَاقِ وَاَكَبُّوا عَلٰى عَلَائِقِ الشِّقَاقِ فَلَمَّا مَضَى الْمُصْطَفٰى

(स.अ.व.व.) चले गए तो माक़े को उचक लिया और फ़ुरसत को ग़नीमत जाना और बैअत के तोड़ने मे

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ اخْتَطَفُوا الْغِرَّةَ وَانْتَهَزُوا الْفُرْصَةَ

जल्दी की और मुवक्केदा वादों की मुख़ालेफ़त मे और उन अमानतोंकी ख़यानत मे जो मुस्तहकम पहाड़ों

وَانْتَهَكُوا الْحُرْمَةَ وَغَادَرُوهُ عَلٰى فِرَاشِ الْوَفَاةِ وَاَسْرَعُوا لِنَقْضِ

पर पेश की गई तो उसके उठाने से इन्कार किया और इन्सान ज़ालिम व जाहिल ने उसे उठा लिया के

الْبَيْعَةِ وَمُخَالَفَةِ الْمَوَاثِيقِ الْمُؤَكَّدَةِ وَخِيَانَةِ الامَانَةِ

सब लोग शिक़ाक़ व निफ़ाक़ वाले और तकला०rफ दे गुनाहों को इज़्ज़त समझने वाले और बेहतरीन

الْمَعْرُوضَةِ عَلَى الْجِبَالِ الرَّاسِيَةِ وَابَتْ اَنْ تَحْمِلَهَا وَحَمَلَهَا

अंजाम के लिए इताअत से ग़ुरूर करने वाले थे पस एराब पस्त तबियत और बकाया गरोह नबुव्वत

الْاِنْسَانُ الظَّلُومُ الْجَهُولُ ذُو الشِّقَاقِ وَالْعِزَّةِ بِالْآثَامِ الْمُولِمَةِ

और रिसालत के घर और वही और मलाएका के नुज़ूल की जगह पर हुजूम कर आए और विलायत

وَالانَفَةِ عَنِ الِانْقِيَادِ لِحَمِيدِ الْعَاقِبَةِ فَحُشِرَ سِفْلَةُ الاعْرَابِ

के सुलतान की बारगाह और मादने वसीयत व ख़िलाफ़त व इमामत की बारगाह मे हुजूम कर आए।

وَبَقَايَا الاحْزَابِ اِلَى دَارِ النُّبُوَّةِ وَالرِّسَالَةِ وَمَهْبِطِ الْوَحْيِ

यहाँ तक के अहेदे मुस्तफ़ा (स.अ.व.व.) को उनके भाई की ख़िलाफ़त के बारे मे तोड़ दिया जो परचमे

وَالْمَلَائِكَةِ وَمُسْتَقَرِّ سُلْطَانِ الْوِلَايَةِ وَمَعْدِنِ الْوَصِيَّةِ

हिदायत और नेता की राह के ज़ाहिर करनेवाले गुम्राही की राहों से थे और उन्होंने बेहतर मख़लूक़ के

وَالْخِلَافَةِ وَالْاِمَامَةِ حَتَّى نَقَضُوا عَهْدَ الْمُصْطَفَى فِي اَخِيهِ عَلَمِ

जिगर को ज़ख़्मी किया उन की पाराए जिगर पर ज़ुल्म कर के ओर उनकी पसंदीदा बेटी पर सितम करके

الْهُدَى وَالْمُبَيِّنِ طَرِيقَ النَّجَاةِ مِنْ طُرُقِ الرَّدَى وَجَرَحُوا كَبِدَ

ओर उनकी अज़ा०rज लख़्ते जिगर का हक़ ग़स्ब कर के जो उनका पारए गोश्त और जिगर का टुकड़ा

خَيْرِ الْوَرَىٰ فِي ظُلْمِ ابْنَتِهِ وَاضْطِهَادِ حَبِيبَتِهِ وَاهْتِضَامِ

है और उनके शौहर की मदद नही की और उनकी इज़्ज़त को घटाया और उनकी हतके हुरमत की और

عَزِيزَتِهِ بَضْعَةِ لَحْمِهِ وَفِلْذَةِ كَبِدِهِ وَخَذَلُوا بَعْلَهَا وَصَغَّرُوا قَدْرَهُ

क़ते रहेम किया और उनकी उख़ूवत का इन्कार किया और उनकी मोहब्बत को तर्क किया और उनकी

وَاسْتَحَلُّوا مَحَارِمَهُ وَقَطَعُوا رَحِمَهُ وَانْكَرُوا اُخُوَّتَهُ وَهَجَرُوا

इताअत को तोड़ दिया और उनकी विलायत का इन्कार किया यहाँ तक के ग़ुलामों ने उनकी ख़िलाफ़त

مَوَدَّتَهُ وَنَقَضُوا طَاعَتَهُ وَجَحَدُوا وِلَايَتَهُ وَاَطْمَعُوا الْعَبِيدَ فِي

की लालच किया और उनको बैअत के लिए ज़बरदस्ती खींच कर लाए तलवार को चमकाते हुए और

خِلَافَتِهِ وَقَادُوهُ اِلَىٰ بَيْعَتِهِمْ مُصْلِتَةً سُيُوفَهَا مُقْذِعَةً اَسِنَّتَهَا

नेज़ों को बुलंद किए हुए दर हालाँके वो दिल से नाराज़ थे ग़ुस्से मे थे सब्र की सिल रखे हुए थे और ग़ुस्से

وَهُوَ سَاخِطُ الْقَلْبِ هَائِجُ الْغَضَبِ شَدِيدُ الصَّبْرِ كَاظِمُ الْغَيْظِ

को ज़ब्त किए हुए थे लोग उनको उन लेगों की बैअत की तरफ़ दावत दे रहे थे जिनकी बदबख़्ती ने

يَدْعُونَهُ اِلَىٰ بَيْعَتِهِمُ الَّتِي عَمَّ شُومُهَا الْاِسْلَامَ وَزَرَعَتْ فِي

आलमे इस्लाम को घेर रखा था और जिन्होनें बुराईयों के बीज मुसलमानों के दिलों मे बोए थे ऐसी बैअत

قُلُوبِ اَهْلِهَا الْآثَامَ وَعَقَّتْ سَلْمَانَهَا وَطَرَدَتْ مِقْدَادَهَا

की तरफ़ जिसने सलमान को रोक दिया और मिक़दाद को बाज़ रखा और अबूज़र से इन्कार कराया

وَنَفَتْ جُنْدُبَهَا وَفَتَقَتْ بَطْنَ عَمَّارِهَا وَحَرَّفَتِ الْقُرْآنَ وَبَدَّلَتِ

और अम्मारे यासिर के शिकम को ज़ख़्मी कर दिया और जिस बैअत ने क़ुआर्न को बदल दिया अहकाम

الْاَحْكَامَ وَغَيَّرَتِ الْمَقَامَ وَاَبَاحَتِ الْخُمُسَ لِلطُّلَقَاءِ وَسَلَّطَتْ

मे तबदीली कर दी, मक़ामे ख़िलाफ़त मे तग़य्युर कर दिया और ख़ुम्स को ग़ुलाम ज़ादों के लिए मुबाह

اَوْلَادَ اللُّعَنَاءِ عَلَى الْفُرُوجِ وَالدِّمَاءِ وَخَلَّطَتِ الْحَلَالَ بِالْحَرَامِ

कर दिया और लानती लोगों की औलाद को मुसलमानों के ख़ून और आबरू पर हाकिम बना दिया

وَاسْتَخَفَّتْ بِالْاِيمَانِ وَالْاِسْلَامِ وَهَدَمَتِ الْكَعْبَةَ وَاَغَارَتْ

और हलाल को हराम से महफ़ूज़ कर दिया और इमान व इस्लाम को ख़ार व ख़फ़ा◌rफ कर दिया और

عَلَى دَارِ الْهِجْرَةِ يَوْمَ الْحَرَّةِ وَاَبْرَزَتْ بَنَاتِ الْمُهَاجِرِينَ

काबे को ढा दिया और दारूल हिजरत मदीना पर यौमे हर्रा मे ग़ारत गिरी की और मुहाजिर व अनसार

وَالْاَنْصَارِ لِلنَّكَالِ وَالسَّوْرَةِ وَاَلْبَسَتْهُنَّ ثَوْبَ الْعَارِ وَالْفَضِيحَةِ

की लड़कियों को ज़ुल्मो सितम के लिए बे पर्दा कर दिया और उन्हें ाज़िल्लत व रूसवाई का लिबास पिन्हा

وَرَخَّصَتْ لِاَهْلِ الشُّبْهَةِ فِي قَتْلِ اَهْلِ بَيْتِ الصَّفْوَةِ وَاِبَادَةِ

दिया और निफ़ाक़ व शुबह वालों को पाक व पाका◌rजा अहलेबैत के क़त्ल और उन की नस्ल को

نَسْلِهِ وَاسْتِيصَالِ شَافَتِهِ وَسَبْيِ حَرَمِهِ وَقَتْلِ اَنْصَارِهِ وَكَسْرِ

हलाक़ करने और उनकी ज़ुर्रा◌rयत के इस्तेहसाल और उनके हरमकी असीरी और उनके अन्सार के

مِنْبَرِهِ وَقَلْبِ مَفْخَرِهِ وَاِخْفَاءِ دِينِهِ وَقَطْعِ ذِكْرِهِ يَا مَوَالِيَّ فَلَوْ

क़त्ल और उनके मिंबर के तोड़ने और उनके मफ़ाख़िर के बदलने और उसके दीन को महव करने और

عَايَنَكُمُ الْمُصْطَفٰى وَسِهَامُ الْاُمَّةِ مُغْرَقَةٌ فِي اَكْبَادِكُمْ

उनके ज़िक्रके ख़त्म करने की इजाज़त दे दी ऐ मेरे मौला अगर मोहम्मदे मुस्तफ़ा (स.अ.व.व.) ने आप

وَرِمَاحُهُمْ مُشْرَعَةٌ فِي نُحُورِكُمْ وَسُيُوفُهَا مُولَغَةٌ فِي دِمَائِكُمْ

की हालत को देखा होता दर हालाँकें उम्मत के तीर आप के सिनों मे पैवस्त थे और उनके नेज़े आप के

يَشْفِي اَبْنَاءُ الْعَوَاهِرِ غَلِيلَ الْفِسْقِ مِنْ وَرَعِكُمْ وَغَيْظَ الْكُفْرِ

गलों के पार थे और उन की तलवारें आप के ख़ून मे डुबी हुई थीं और औलादे ज़िना अपने फ़िस्क की

مِنْ اِيمَانِكُمْ وَاَنْتُمْ بَيْنَ صَرِيعٍ فِي الْمِحْرَابِ قَدْ فَلَقَ السَّيْفُ

प्यास को आप के वरा से और कुफ़्र के ग़ुस्से को आप के ईमान से बुझा रही है और आप लोगों मे से

هَامَتَهُ وَشَهِيدٍ فَوْقَ الْجَنَازَةِ قَدْ شُكَّتْ اَكْفَانُهُ بِالسِّهَامِ

बाज़ मेहराब मे तेग़े ज़ुल्म से मक़तूल थे के तलवार ने उनके सर को शिगाफ़ता कर दिया था और बाज़

وَقَتِيلٍ بِالْعَرَاءِ قَدْ رُفِعَ فَوْقَ الْقَنَاةِ رَاْسُهُ وَمُكَبَّلٍ فِي السِّجْنِ

ऐसे शहीद थे के जनाज़े के ऊपर से उनके कफ़न को तीरों ने छलनी कर दिया था और बाज़ क़ैदे सितम मे

قَدْ رُضَّتْ بِالْحَدِيدِ اَعْضَاؤُهُ وَمَسْمُومٍ قَدْ قُطِّعَتْ بِجُرَعِ السُّمِّ

थे जिन के आज़ा को लोहे की ज़न्जीर ने ज़ख़्मी कर दिया था और बाज़ को ज़हेर दिया गया था जिन की

اَمْعَاؤُهُ وَشَمْلُكُمْ عَبَادِيدُ تُفْنِيهِمُ الْعَبِيدُ وَاَبْنَاءُ الْعَبِيدِ

आँतें जहेर की वज्ह से टुकड़े टुकड़े हो गई थीं और आपको इस तरह मुन्तशिर कर दिया था के ग़ुलाम

فَهَلِ الْمِحَنُ يَا سَادَتِي اِلَّا الَّتِي لَزِمَتْكُمْ وَالْمَصَائِبُ اِلَّا الَّتِي

और ग़ुलाम ज़ादा फ़ना करने पर आमादा थे पस क्या कोई मुसीबत है ऐ मेरे आक़ा व सरदार इसके

عَمَّتْكُمْ وَالْفَجَائِعُ اِلَّا الَّتِي خَصَّتْكُمْ وَالْقَوَارِعُ اِلَّا الَّتِي

सिवा जो आप को पहुँची व क्या कोई तकला०rफ है इसके अलावा जो आपको शामिल हुई व कोई रंज

طَرَقَتْكُمْ صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَعَلٰى اَرْوَاحِكُمْ وَاَجْسَادِكُمْ

है इसके अलावा जो आपसे मख़सूस हुआ व कोई अम्र नागवार है इसके अलावा आपको पहुँचा ख़ुदा

وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ

का दुरूद हो आप लोगों पर व आपकी रूहों व आपके जिस्मों पर व अल्लाह की रहमत व बरकात हों।

उसके बाद क़ब्रे मुनव्वर को बोसा दे और यूँ कहे:

بِاَبِي اَنْتُمْ وَاُمِّي يَا آلَ الْمُصْطَفٰى اِنَّا لَا نَمْلِكُ اِلَّا اَنْ نَطُوفَ حَوْلَ

मेरे माँ बाप क़ुर्बान हों ऐ आले मुस्तफ़ा हम इस के अलावा कोई और इख़्तेयर नही रखते के

مَشَاهِدِكُمْ وَنُعَزِّيَ فِيهَا اَرْوَاحَكُمْ عَلٰى هٰذِهِ الْمَصَائِبِ

आपके रौज़े के गिर्द तवाफ़ करे और इसमे आपकी रूहों को तसल्ली व ताज़यत दें उन अजीम

الْعَظِيمَةِ الْحَالَّةِ بِفِنَائِكُمْ وَالرَّزَايَا الْجَلِيلَةِ النَّازِلَةِ

मसाएब के लिए जो उम्मत की तरफ़ से आप के साहते कुद्स तक पहुँचे और न आजार व

بِسَاحَتِكُمُ الَّتِي اَثْبَتَتْ فِي قُلُوبِ شِيعَتِكُمُ الْقُرُوحَ

तकाला◦rफ पर जो आप ा पाकीज़ा बारगाह तक आए जिन्होने आपके शियों के दिलों को ज़ख़्मों

وَاَوْرَثَتْ اَكْبَادَهُمُ الْجُرُوحَ وَزَرَعَتْ فِي صُدُورِهِمُ الْغُصَصَ

से भर दिया है और उन के सीनों को ज़ख़्म से पुर कर दिया है और जिन्होंने ग़म व अन्दोह का

فَنَحْنُ نُشْهِدُ اللهَ اَنَّا قَدْ شَارَكْنَا اَوْلِيَاءَكُمْ وَاَنْصَارَكُمُ

दरख़्त उनके दिलों मे बिठा दिया है। पस हम अल्लाह को गवाह बनाते हैं के हम आप के दोस्तों

الْمُتَقَدِّمِينَ فِي اِرَاقَةِ دِمَاءِ النَّاكِثِينَ وَالْقَاسِطِينَ

और नासिरों मे उन के शरीक हैं जो नाकेसीन, क़ासेतान और मारेक़ीन को ख़ून बहाने मे पेश पेश

وَالْمَارِقِينَ وَقَتَلَةِ اَبِي عَبْدِ اللهِ سَيِّدِ شَبَابِ اَهْلِ الْجَنَّةِ عَلَيْهِ

थे और अबू अब्दुल्लाह सरदारे जवानाने जन्नत इमाम हुसैन (अ.स.) के क़ातिलों का ख़ून बहाने

السَّلَامُ يَوْمَ كَرْبَلَاءَ بِالنِّيَّاتِ وَالْقُلُوبِ وَالتَّاَسُّفِ عَلَى

मे करबला के राज़ दिल और नियत के साथ और अफ़सोस है उन मवाक़िफ़ के फ़ौत होने पर

فَوْتِ تِلْكَ الْمَوَاقِفِ الَّتِي حَضَرُوا لِنُصْرَتِكُمْ وَعَلَيْكُمْ مِنَّا

जिन मे वो लोग हाज़र हुए आप की मदद के लिए और हमारी तरफ़ से आप सब पर सलाम और

السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

अल्लाह की रहमत व बरकात हों।

उसके बाद क़ब्रे शरीफ़ को अपने और क़िबले के दरमियान क़रार देकर यूँ कहे:

اَللّٰهُمَّ يَا ذَا الْقُدْرَةِ الَّتِي صَدَرَ عَنْهَا الْعَالَمُ مُكَوَّنًا مَبْرُوءًا

ख़ुदाया ऐ वो साहेबे क़ुदरत जिसकी वजहसे आलमे तकवीन वजूद मे आया और जिसकी अज़मत

عَلَيْهَا مَفْطُورًا تَحْتَ ظِلِّ الْعَظَمَةِ فَنَطَقَتْ شَوَاهِدُ صُنْعِكَ

के साए मे ख़िलक़त का लिबास पहना जिसमे तेरी सनअत के शवाहिद गोया हैं के बेशक तू ख़ुदा

فِيهِ بِأَنَّكَ أَنْتَ اللهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ مُكَوِّنُهُ وَبَارِئُهُ وَفَاطِرُهُ

है तेरे अलावा कोई माबूद नही है तू ख़ालिके बारी और एजाद करनेवाला है। तूने उसको पैदा किया

ابْتَدَعْتَهُ لَا مِنْ شَيْءٍ وَلَا عَلَىٰ شَيْءٍ وَلَا فِي شَيْءٍ وَلَا لِوَحْشَةٍ

बग़ैर किसी चा०rज के, बग़ैर किसी चीज़ मे क़रार दिए हुए और बग़ैर किसी वहशत के जो तूझ पर

دَخَلَتْ عَلَيْكَ إِذْ لَا غَيْرُكَ وَلَا حَاجَةٍ بَدَتْ لَكَ فِي تَكْوِينِهِ وَلَا

दाख़िल हो इस लिए के तेरे अलावा कोई न था और बग़ैर किसी एहतेयाज के उस के वजूद बख़्शने मे

لِاسْتِعَانَةٍ مِنْكَ عَلَى الْخَلْقِ بَعْدَهُ بَلْ أَنْشَأْتَهُ لِيَكُونَ دَلِيلًا

और न तुझको उस के बाद भा कोई ज़रूरत है बल्के तूने उसको पैदा किया ताके वो तेरे ऊपर दलील

عَلَيْكَ بِأَنَّكَ بَائِنٌ مِنَ الصُّنْعِ فَلَا يُطِيقُ الْمُنْصِفُ لِعَقْلِهِ

बने के तू सनअत से जुदागाना है। पस कोई इन्साफ़ पसंद अक़्ल तेरा इन्कार नही कर सकती है और

إِنْكَارَكَ وَالْمَوْسُومُ بِصِحَّةِ الْمَعْرِفَةِ بِجُحُودِكَ أَسْأَلُكَ بِشَرَفِ

किसी सही मारेफत वाले शख़्श की समझ तेरी मुनकर नही हो सकती। मैं तुझ से सवाल करता हूँ तेरी

الْإِخْلَاصِ فِي تَوْحِيدِكَ وَحُرْمَةِ التَّعَلُّقِ بِكِتَابِكَ وَأَهْلِ بَيْتِ

तौहीद मे इख़लास के शरफ़ के वास्ते से और तेरी किताब और तेरे नबी के अहलेबैत की हुरमत के

نَبِيِّكَ أَنْ تُصَلِّيَ عَلَىٰ آدَمَ بَدِيعِ فِطْرَتِكَ وَبِكْرِ حُجَّتِكَ وَلِسَانِ

वास्ते से के दुरूद नाज़ल फ़र्मा आदम पर जो तेरी बेहतरीन मख़लूक़ और तेरे बेमिस्ल हुज्ज़त और तेरी

قُدْرَتِكَ وَالْخَلِيفَةِ فِي بَسِيطَتِكَ وَعَلَىٰ مُحَمَّدٍ الْخَالِصِ مِنْ

क़ुदरत की ज़ुबान और ज़मीन पर तेरे ख़लीफ़ा हैं और मोहम्मद पर जो तेरे ख़ालिस मुन्ताख़िब बन्दे हैं

صَفْوَتِكَ وَالْفَاحِصِ عَنْ مَعْرِفَتِكَ الْغَائِصِ الْمَأْمُونِ عَلَىٰ

और तेरी मारेफ़त मे हदे कमाल तक पहुँचे हुए हैं, दरयाए मारेफ़त के गवाह और अमीन हैं तेरे पोशीदा

مَكْنُونِ سَرِيرَتِكَ بِمَا أَوْلَيْتَهُ مِنْ نِعْمَتِكَ بِمَعُونَتِكَ وَعَلَىٰ مَنْ

राज़ों के जो तूने उनको दिए हैं अपनी नेमत अपनी मदद के ज़रिए और उनपर दुरूद भेज जो उन दोनों

بَيْنَهُمَا مِنَ النَّبِيِّينَ وَالْمُكَرَّمِينَ وَالْأَوْصِيَاءِ وَالصِّدِّيقِينَ

के दरमियान नबी और मुकर्रम और वसी और सिद्दीक़ है और तु अता फ़र्मा मेरे उस इमाम के तुफ़ैल

وَانْ تَهَبَنِي لِاِمَامِي هٰذَا

जिसकी ज़ियारत मे हूँ।

उसके बाद रूख़सारों को ज़रीह से मस कर के यूँ कहे:

اَللّٰهُمَّ بِمَحَلِّ هٰذَا السَّيِّدِ مِنْ طَاعَتِكَ وَبِمَنْزِلَتِهِ عِنْدَكَ لَا

ख़ुदाया इस आक़ा व सरदार वे मरतबेका वास्ता तेरी इताअत मे और जो तेरे नज़दीक उन की मनज़ेलत

تُمِتْنِي فُجَاءَةً وَلَا تَحْرِمْنِي تَوْبَةً وَارْزُقْنِي الْوَرَعَ عَنْ مَحَارِمِكَ دِينًا

है मुझको नागहानी मौत ने देना और मुझको तवज्ञो से महरूम न करना और मुझको अपने हराम से

وَدُنْيَا وَاشْغَلْنِي بِالْآخِرَةِ عَنْ طَلَبِ الْاُولَىٰ وَوَفِّقْنِي لِمَا تُحِبُّ

बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाना दीन व दुनिया मे और तलबे दुनिया के मुक़ाबले मे आख़िरत के उमूर मे

وَتَرْضَىٰ وَجَنِّبْنِي اتِّبَاعَ الْهَوَىٰ وَالْاغْتِرَارَ بِالْاَبَاطِيلِ وَالْمُنَىٰ

मशग़ूल क़रार देना और इस बात की तौफ़ीक़ देना जिससे तू मोहब्बत करता है और राज़ी होता है और

اَللّٰهُمَّ اجْعَلِ السَّدَادَ فِي قَوْلِي وَالصَّوَابَ فِي فِعْلِي وَالصِّدْقَ

मुझको बचाए रखना ख़्वाहिशात के इत्तेबाह और बातिल कामों और लंबी आरज़ुओं पर धोका खाने से।

وَالْوَفَاءَ فِي ضَمَانِي وَوَعْدِي وَالْحِفْظَ وَالْاِينَاسَ مَقْرُونَيْنِ

ख़ुदाया मेरे क़ौल मे रास्ती और मेरे फ़ेल मे दुरूस्तगी और मेरे वादे व मीसाक़ मे सदाक़त और वफ़ादारी

بِعَهْدِی وَوَعْدِی وَالْبِرَّ وَالاِحْسَانَ مِنْ شَانِی وَخُلُقِی وَاجْعَلِ

और हिफ़ाज़त व तवज्ज़ो और निगरानी मेरे अहेद और वादे मे क़रार दे और नेकी और एहसान मेरी हालत

السَّلَامَةَ لِی شَامِلَةً وَالْعَافِيَةَ بِی مُحِيطَةً مُلْتَفَّةً وَلَطِيفَ صُنْعِكَ

और आदत मे क़रार दे। और सलामती को मेरे शामिले हाल कर और आफ़ियत को मेरे गिर्द क़रार

وَعَوْنَكَ مَصْرُوفًا اِلَیَّ وَحُسْنَ تَوْفِيقِكَ وَيُسْرِكَ مَوْفُورًا عَلَیَّ

दे और अपनी लता०rफ तरीन तक़दीर और मदद को मेरी तरफ़ मोड़ दे और अपनी बेहतरीन तौफ़ीक़

وَاحْيِنِی يَا رَبِّ سَعِيدًا وَتَوَفَّنِی شَهِيدًا وَطَهِّرْنِی لِلْمَوْتِ وَمَا

और आसानी को मुझ पर ज़्यादा फ़र्मा और मुझको परवदिगार सआदतमंदी की ज़िन्दगी दे और शहादत

بَعْدَهُ اَللّٰهُمَّ وَاجْعَلِ الصِّحَّةَ وَالنُّورَ فِی سَمْعِی وَبَصَرِی وَالْجِدَةَ

की मौत अता कर और मुझको पाक कर मौत के वक़्त और मौत के बाद। ख़ुदाया सेहत और नूर मेरी

وَالْخَيْرَ فِی طُرُقِی وَالْهُدَیٰ وَالْبَصِيرَةَ فِی دِينِی وَمَذْهَبِی وَالْمِيزَانَ

समाअत और मेरी बसारत मे क़रार दे और ख़ुबी और ख़ैर गवाहा मेरे रास्ता मे क़रार दे और मेरे दीन व

اَبَدًا نَصْبَ عَيْنِی وَالذِّكْرَ وَالْمَوْعِظَةَ شِعَارِی وَدِثَارِی وَالْفِكْرَةَ

मज़ाहिब मे हिदायत और बसीरत क़रार दे और मिज़ाने शरीअत को मेरा नस्बुल अैन क़रार दे। ज़िक्रे ख़ुदा

وَالْعِبْرَةَ اُنْسِی وَعِمَادِی وَمَكِّنِ الْيَقِينَ فِی قَلْبِی وَاجْعَلْهُ اَوْثَقَ

और मोएज़ा को मेरा शेआर व आदत क़रार दे और ाफ़िक्र और इबरत को मेरे लिए उन्स और मक़ामे

الاشْيَاءِ فِي نَفْسِي وَاغْلِبْهُ عَلىٰ رَايِي وَعَزْمِي وَاجْعَلِ الاِرْشَادَ فِي

एतेमाद क़रार दे और यक़ीन को मेरे दिल मे मुसतक़र कर दे और उस को मेरे नफ़्स मे सब से ज़्यादा

عَمَلِي وَالتَّسْلِيمَ لامْرِكَ مِهَادِي وَسَنَدِي وَالرِّضَا بِقَضَائِكَ

मोतबर क़रार दे दे और उसको मेरी राए और अज़्म पर ग़ालिब करदे और मेरे अमलमे सदाक़त क़रार

وَقَدَرِكَ اقْصَىٰ عَزْمِي وَنِهَايَتِي وَابْعَدَ هَمِّي وَغَايَتِي حَتَّىٰ لَا اتَّقِيَ

दे और तेरे अम्र के सामने सर तसलीम झुकानेको मरकज़े एतेमाद व इत्मेनान क़रार दे और तेरे क़ज़ा व

احَدًا مِنْ خَلْقِكَ بِدِينِي وَلَا اطْلُبَ بِهِ غَيْرَ آخِرَتِي وَلَا اسْتَدْعِيَ

क़दर पर राज़ी रहने को मेरा आख़िर अज़्म और इन्तेहाई बुलंदतरीन सेहत व हौसला और मक़सद क़रार

مِنْهُ اِطْرَائِي وَمَدْحِي وَاجْعَلْ خَيْرَ الْعَوَاقِبِ عَاقِبَتِي وَخَيْرَ

दे ताके अपने दीन के बारे मे किसी मख़लूक से भी न डरूँ और उसके ज़रिए अपनी आख़िरत के अलावा

الْمَصَايِرِ مَصِيرِي وَانْعَمَ الْعَيْشِ عَيْشِي وَافْضَلَ الْهُدَىٰ

किसी को तलब न करूँ और उसके बाद लोगों की मदद सराई का ख़्वाहिश मंद नही हूँ और मेरे अंजाम

هُدَايَ وَاوْفَرَ الْحُظُوظِ حَظِّي وَاجْزَلَ الاقْسَامِ قِسْمِي وَنَصِيبِي

को बेहतरीन बना दे और मेरी बाज़गश्त को अच्छा बना और मेरी ज़िन्दगी को ख़ुशगवार बनादे और मेरे

وَكُنْ لِي يَا رَبِّ مِنْ كُلِّ سُوءٍ وَلِيًّا وَاِلىٰ كُلِّ خَيْرٍ دَلِيلًا وَقَائِدًا

नसीब को बेहतरीन नसीब क़रार दे और मेरे परवरदिगार हर बुराई के लिए मेरे लिए निगराँ हो जा और

وَمِنْ كُلِّ بَاغٍ وَحَسُودٍ ظَهِيرًا وَمَانِعًا اَللّٰهُمَّ بِكَ اعْتِدَادِى

हर नेकी की जानिब रहनुमा और क़ाएद हो जा और हर बाग़ी और ज़ालिम के मुक़ाबले मे मदद फ़र्मा

وَعِصْمَتِى وَثِقَتِى وَتَوْفِيقِى وَحَوْلِى وَقُوَّتِى وَلَكَ مَحْيَاىَ وَمَمَاتِى وَفِى

और रूकावट बन जा। ख़ुदाया बस तेरे ऊपर एतेमाद मेरी हिफ़ाज़त, मेरा भरोसा, मेरी तौफ़ीक़, क़ुव्वत

قَبْضَتِكَ سُكُونِى وَحَرَكَتِى وَاِنَّ بِعُرْوَتِكَ الْوُثْقَىٰ اسْتِمْسَاكِى

व ताक़त व सरमाया है और तेरे ही लिए मेरी ज़िन्दगी और मौत है और मेरा सुकून व हरकत तेरे क़ब्ज़े

وَوُصْلَتِى وَعَلَيْكَ فِى الْاُمُورِ كُلِّهَا اعْتِمَادِى وَتَوَكُّلِى وَمِنْ عَذَابِ

मे है और तेरे उरवतुल वुसक़ा से मेरा मुस्तहकम ताअल्लुक है और तमाम तर उमूर मे मेरा एतेमाद और

جَهَنَّمَ وَمَسِّ سَقَرَ نَجَاتِى وَخَلَاصِى وَفِى دَارِ اَمْنِكَ وَكَرَامَتِكَ

तवक्कुल सिर्फ़ और सिर्फ़ तुझ पर है के तू जहन्नम के अज़ाब से बचानेवाला और सक़र मे जाने से नजात

مَثْوَاىَ وَمُنْقَلَبِى وَعَلٰى اَيْدِى سَادَتِى وَمَوَالِىَّ آلِ الْمُصْطَفٰى

देने वाला है और तेरा अमन व करामत के घर मे मेरा ठिकाना और मक़ाम है और मेरे सरदारों, आक़ाओं

فَوْزِى وَفَرَجِى اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاغْفِرْ لِلْمُؤْمِنِينَ

आले पैग़ांम्बर मुस्तफ़ा (अ.स.) के क़ब्ज़े मे मेरी कामयाबी और कुशादगी है। ख़ुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा

وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَاغْفِرْ لِى وَلِوَالِدَىَّ وَمَا

मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.स.) पर और मोमिनीन व मोमिनात और मुसलेमीन व मुसलेमात की

وَلَدًا وَاهْلِ بَيْتِي وَجِيرَانِي وَلِكُلِّ مَنْ قَلَّدَنِي يَدًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ

बिख़्शश फ़र्मा और मेरी, मेरे वालेदैन, मेरी औलाद और घर वालों और तमाम पड़ोसियों और हर उस

وَالْمُؤْمِنَاتِ اِنَّكَ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

शख़्स को जिस के लिए मेरी गरदन पर हक़ है मोमिनीन व मोमिनात मे से सब को बख़्श दे तू अज़ीम

وَبَرَكَاتُهُ

फ़ज़्ल व एहसान वाला है।

चौथा मतलब: दुआ बुलंदतरीन मज़ामीन

वह दुआ है जो बुलंदतरीन मज़ामीन पर मुश्तमिल है और हर इमाम की ज़ियारत के बाद पढ़ी जाती है। इस को सय्यद इन्बे ताऊस ने मिस्बाहुज़ ज़ाएर में ज़ियारते जामेआ के बाद नक़्ल किया है। दुआ यह है:

اَللّٰهُمَّ اِنِّي زُرْتُ هٰذَا الْاِمَامَ مُقِرًّا بِاِمَامَتِهِ مُعْتَقِدًا لِفَرْضِ

ख़ुदाया मैंने ज़ियारत की उस इमाम की, उनकी इमामत का इक़रार करते हुए और उनकी इताअत के

طَاعَتِهِ فَقَصَدْتُ مَشْهَدَهُ بِذُنُوبِي وَعُيُوبِي وَمُوبِقَاتِ آثَامِي وَ

फ़रीजे का अक़्द रखते हुए मैंने उनके रौज़े का क़सद किया अपने गुनाहों ऐबों और गुनाहों के महलेक़ात

كَثْرَةِ سَيِّئَاتِي وَخَطَايَايَ وَمَا تَعْرِفُهُ مِنِّي مُسْتَجِيرًا بِعَفْوِكَ

के साथ ग़लतियों और बुराईयों की कसरत के साथ और उन बेशुमार बुराईयों के साथ जिन को तू मेरे

مُسْتَعِيْذًا بِحِلْمِكَ رَاجِيًا رَحْمَتَكَ لَاجِيًا اِلٰى رُكْنِكَ عَائِذًا

बारे मे जानता है तेरी माफ़ी की पनाह चाहते हुए, तेरे हिल्म की पनाह चहते हुए तेरी रहमत की उम्मीद के

بِرَأْفَتِكَ مُسْتَشْفِعًا بِوَلِيِّكَ وَ ابْنِ اَوْلِيَائِكَ وَ صَفِيِّكَ وَ ابْنِ

साथ, तेरे किले इज़्ज़त की पनाह लेते हुए और तेरी महेरबानी की पनाह के साथ तेरे वली, फ़रज़ंदे वली

اَصْفِيَائِكَ وَ اَمِيْنِكَ وَ ابْنِ اُمَنَائِكَ وَ خَلِيْفَتِكَ وَ ابْنِ خُلَفَائِكَ

की शिफ़ाअत चाहते हुए और तेरे मुन्ताख़िब बन्दे और उन मुन्ताख़िब बन्दों के फ़रज़ंद से शिफ़ाअत

الَّذِيْنَ جَعَلْتَهُمُ الْوَسِيْلَةَ اِلٰى رَحْمَتِكَ وَ رِضْوَانِكَ وَ الذَّرِيْعَةَ

और तेरे अमीन और फ़रज़ंदे अमीन और तेरे ख़ला०rफा इब्ने ख़ला०rफा की शिफ़ाअत चाहते हुए

اِلٰى رَأْفَتِكَ وَ غُفْرَانِكَ اَللّٰهُمَّ وَ اَوَّلُ حَاجَتِىْ اِلَيْكَ اَنْ تَغْفِرَ لِىْ

जिनको तूने वसीलए रहमत व रिज़वान बनाया है और ज़रिए रहमत व बख़शिश क़रार दिया है। ख़ुदाया

مَا سَلَفَ مِنْ ذُنُوْبِىْ عَلٰى كَثْرَتِهَا وَ تَعْصِمَنِىْ فِيْمَا بَقِىَ مِنْ عُمُرِىْ وَ

मेरी पहली हाजत ये है के तू मेरे कसीर गुनाहों को बख़्श दे और मेरी बाक़ी उम्र मे तू मुझको गुनाहों से

تُطَهِّرَ دِيْنِىْ مِمَّا يُدَنِّسُهٗ وَ يَشِيْنُهٗ وَ يُزْرِىْ بِهٖ وَ تَحْمِيَهٗ مِنَ الرَّيْبِ

महफ़ूज़ फ़र्मा और मेरे दीन को उन चीज़ों से पाक रख जो गन्दा करती हों और ऐबदार करती हों और

وَ الشَّكِّ وَ الْفَسَادِ وَ الشِّرْكِ وَ تُثَبِّتَنِىْ عَلٰى طَاعَتِكَ وَ طَاعَةِ

ख़राब करती हैं और उसको शक व शुबह, फ़साद व शिर्क से बचा ले और हमको अपनी इताअत और

رَسُولِكَ وَ ذُرِّيَّتِهِ النُّجَبَاءِ السُّعَدَاءِ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِمْ وَ

अपने रसूल की इताअत और उनकी पाक व पाका०rजा जुर्राrयत की इताअत पर साबित क़दम रख

رَحْمَتُكَ وَ سَلَامُكَ وَ بَرَكَاتُكَ وَ تُحْيِيَنِي مَا اَحْيَيْتَنِي عَلٰى

तेरा दुरूद हो उनपर और तेरी रहमत व सलाम और बरकात हो उनपर और मुझको ऐसी ज़िन्दगी दे

طَاعَتِهِمْ وَ تُمِيتَنِي اِذَا اَمَتَّنِي عَلٰى طَاعَتِهِمْ وَ اَنْ لَا تَمْحُوَ مِنْ

के मैं उनकी इताअत करता रहूँ और जब तू मौत दे तो उनकी इताअत पर मौत दे और उनकी मवद्दत

قَلْبِي مَوَدَّتَهُمْ وَ مَحَبَّتَهُمْ وَ بُغْضَ اَعْدَائِهِمْ وَ مُرَافَقَةَ

व मोहब्बत और उनके दुश्मनां की अदावत और उनके दोस्तों की दोस्ती और नेकी को मेरे दिल से

اَوْلِيَائِهِمْ وَبِرَّهُمْ وَاَسْاَلُكَ يَارَبِّ اَنْ تَقْبَلَ ذٰلِكَ مِنِّي وَ تُحَبِّبَ

महव न कर और मैं तुझसे सवाल करता हूँ ऐ मेरे परवरदिगार के मेरी दुआ को क़ुबूल कर ले और

اِلَيَّ عِبَادَتَكَ وَ الْمُوَاظَبَةَ عَلَيْهَا وَ تُنَشِّطَنِي لَهَا وَ تُبَغِّضَ اِلَيَّ

अपनी इबादत और उस की पाबंदी को महबूब क़रार दे और मुझको उसके लिए निशात अता कर और

مَعَاصِيَكَ وَ مَحَارِمَكَ وَ تَدْفَعَنِي عَنْهَا وَ تُجَنِّبَنِي التَّقْصِيرَ فِي

अपने गुनाहों और महारिम को मेरे लिए ना पसंसदीदा बना दे और मुझको उससे दूर रख और मुझको

صَلَاتِي وَ الْاِسْتِهَانَةَ بِهَا وَ التَّرَاخِي عَنْهَا وَ تُوَفِّقَنِي لِتَاْدِيَتِهَا

मेरी नमाज़ मे कोताही और इस्तेहानत और तख़ीर से दूर रख और मुझको इस तरह उसे अदा करने

كَمَا فَرَضْتَ وَ اَمَرْتَ بِهٖ عَلٰى سُنَّةِ رَسُوْلِكَ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَ

की तौफ़ीक़ अता कर जिस तरह तू ने फ़र्ज़ किया है और हुकुम दिया है अपने रसूल की सुन्नत पर (तेरा

اٰلِهٖ وَ رَحْمَتُكَ وَ بَرَكَاتُكَ خُضُوْعًا وَ خُشُوْعًا وَ تَشْرَحَ صَدْرِىْ

दुरूद हो उनपर और रहमत हो और बरकात हो) ख़ुज़ू व ख़ुशू के साथ और मेरे दिल को कुशादा कर दे

لِاِيْتَاءِ الزَّكَاةِ وَ اِعْطَاءِ الصَّدَقَاتِ وَ بَذْلِ الْمَعْرُوْفِ وَ

ज़कात अदा करने, सदका देने और नेकी व एहसान करने के लिए आले मोहम्मद (अ.स.) के शियों के

الْاِحْسَانِ اِلٰى شِيْعَةِ اٰلِ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَ مُوَاسَاتِهِمْ وَ

साथ और उन से हमदर्दा करने की और मुझवो मौत न दे मगर उसके बाद के अपने मोहतरम घर का

لَا تَتَوَفَّانِىْ اِلَّا بَعْدَ اَنْ تَرْزُقَنِىْ حَجَّ بَيْتِكَ الْحَرَامِ وَ زِيَارَةِ قَبْرِ

हज और अपने नबी की क़ब्र की ज़ियारत और आइम्मा (अ.स.) की क़ब्रों की ज़ियारत की तौफ़ीक़ दे

نَبِيِّكَ وَ قُبُوْرِ الْاَئِمَّةِ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَ اَسْاَلُكَ يَا رَبِّ تَوْبَةً

दे और मैं सवाल करता हूँ ऐ परवरदिगार तूझ से क़ुबूल शुदा तौबा का जिसको तू पसंद करता हो और

نَصُوْحًا تَرْضَاهَا وَ نِيَّةً تَحْمَدُهَا وَ عَمَلًا صَالِحًا تَقْبَلُهٗ وَ اَنْ تَغْفِرَ

उन नियत का जिसकी तू तारीफ़ करे और नेक अमल का जिसवा तू क़ुबूल करे और ये के तू बख़्श दे

لِىْ وَ تَرْحَمَنِىْ اِذَا تَوَفَّيْتَنِىْ وَ تُهَوِّنَ عَلَىَّ سَكَرَاتِ الْمَوْتِ وَ

मुझको और मुझ पर रहेम कर जब मैं मर जाऊँ और मुझ पर एहतेजार का वक़्त आसान कर दे और

تَحْشُرَنِي فِي زُمْرَةِ مُحَمَّدٍ وَ اٰلِهٖ صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْهِ وَ عَلَيْهِمْ وَ

मुझको महशुर कर मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.स.) के ज़ुमरे मे और मुझको अपनी रहमत से जन्नत

تُدْخِلَنِي الْجَنَّةَ بِرَحْمَتِكَ وَ تَجْعَلَ دَمْعِي غَزِيْرًا فِي طَاعَتِكَ وَ

मे दाख़िल कर दे और मेरी आँख के आँसू को अपनी इताअत मे जारी कर और मुसलसल जारी कर

عَبْرَتِي جَارِيَةً فِيمَا يُقَرِّبُنِي مِنْكَ وَ قَلْبِي عَطُوْفًا عَلَى اَوْلِيَائِكَ وَ

उस अम्र मे जो मुझको तुझ से क़ुर्बत दे और मेरे दिल को मेहेरबान फ़रमा अपने दोस्तों पर और मुझको

تَصُوْنَنِي فِي هٰذِهِ الدُّنْيَا مِنَ الْعَاهَاتِ وَ الْاٰفَاتِ وَ الْاَمْرَاضِ

बचा ले इस दुनिया मे बलाओं, आफ़तों और शदीद बिमारियों और अमराज़ मज़मना और बला और

الشَّدِيْدَةِ وَ الْاِسْقَامِ الْمُزْمِنَةِ وَ جَمِيْعِ اَنْوَاعِ الْبَلَاءِ وَ

हादसा की तमाम ाक़िसमों से और मेरे दिल को हराम से मोड़ दे और मेरे लिए अपनी मासायत्‌ को

الْحَوَادِثِ وَ تَصْرِفَ قَلْبِي عَنِ الْحَرَامِ وَ تُبَغِّضَ اِلَيَّ مَعَاصِيَكَ وَ

नापसंददीदा बना दे और हलाल को पसंददीदा कर दे और हलाल के दरवाज़ों को मेरे लिए खोल दे और

تُحَبِّبَ اِلَيَّ الْحَلَالَ وَ تَفْتَحَ اِلَيَّ اَبْوَابَهٗ وَ تُثَبِّتَ نِيَّتِي وَ فِعْلِي عَلَيْهِ

मेरी नियत और फेल को उसपर साबित करदे और मेरे अम्र मे इज़ाफ़ा करदे और तकलीफ़ों के दरवाज़े

وَ تَمُدَّ فِي عُمُرِي وَ تُغْلِقَ اَبْوَابَ الْمِحَنِ عَنِّي وَ لَا تَسْلُبَنِي مَا

मुझपर बन्द करदे और उस नेमत को मुझ से न छीन जिस के ज़रिए तू ने मुझ पर एहसान किया है और

مَنَنْتَ بِهٖ عَلَيَّ وَلَا تَسْتَرِدَّ شَيْئًا مِمَّا اَحْسَنْتَ بِهٖ اِلَيَّ وَلَا تَنْزِعْ

उस करम को तू न वापस ले जो मुझ पर किया है और मुझ से उस नेमत को न ले जिस को तूने मुझको

مِنِّى النِّعَمَ الَّتِيْ اَنْعَمْتَ بِهَا عَلَيَّ وَ تَزِيْدَ فِيْمَا خَوَّلْتَنِيْ وَ تُضَاعِفَهٗ

अता किया है और जिसे तूने मुझको दिया है उस मे इज़ाफ़ा फ़र्मा और उसको कई गुना कर दे बार बार

اَضْعَافًا مُضَاعَفَةً وَ تَرْزُقَنِيْ مَالًا كَثِيْرًا وَاسِعًا سَائِغًا هَنِيْئًا

और मुझेको ज़्यादा माल वुसअत वाला साफ़ सुथरा, मुनासिब, बढ़नेवाला मुकम्मल अता फ़र्मा और

نَامِيًا وَافِيًا وَ عِزًّا بَاقِيًا كَافِيًا وَ جَاهًا عَرِيْضًا مَنِيْعًا وَ نِعْمَةً

ऐसी इज़्ज़त दे जो बाक़ी, काफ़ी हो और क़द्र व मन्ज़ेलत अता कर जो अज़ीम हो और नेमत जो वसी

سَابِغَةً عَامَّةً وَ تُغْنِيَنِيْ بِذٰلِكَ عَنِ الْمَطَالِبِ الْمُنَكَّدَةِ وَ

और आम हो और मुझको ग़नी बना दे उसके ज़रिए जहमत तलब मतालिब और दुश्वार गुज़ार मवारिद

الْمَوَارِدِ الصَّعْبَةِ وَ تُخَلِّصَنِيْ مِنْهَا مُعَافًا فِيْ دِيْنِيْ وَ نَفْسِيْ وَ

से और मुझको उनसे नजात दिला दे आफ़ियत के साथ मेरी दीन व जान, औलाद और जो तूने अता

وُلْدِيْ وَ مَا اَعْطَيْتَنِيْ وَ مَنَحْتَنِيْ وَ تَحْفَظَ عَلَيَّ مَالِيْ وَ جَمِيْعَ مَا

किया है सब मे और जो मरहमत फ़रमाया है उसमे और मेरे माल और जो कुछ दिया है उस सब को

خَوَّلْتَنِيْ وَ تَقْبِضَ عَنِّيْ اَيْدِيَ الْجَبَابِرَةِ وَ تَرُدَّنِيْ اِلٰى وَطَنِيْ وَ

महफ़ूज़ फ़रमा और मुझ से रोक ले जाबिरों के हाथ को और मुझको मेरे वतन लौटा दे और मेरी दुनिया

تُبَلِّغَنِيْ نِهَايَةَ اَمَلِيْ فِيْ دُنْيَايَ وَ اٰخِرَتِيْ وَ تَجْعَلَ عَاقِبَةَ اَمْرِيْ

व आख़िरत की इन्तेहाई आरज़ू को पूरा फ़र्मा दे और मेरे उमूर के अंजाम को पसंददीदा, बेहतरीन,सही

مَحْمُوْدَةً حَسَنَةً سَلِيْمَةً وَ تَجْعَلَنِيْ رَحِيْبَ الصَّدْرِ وَاسِعَ الْحَالِ

व सालिम क़रार देदे और मुझको बना दे कुशादा दिल, वसीउल हाल, एख़लाक हसना वाला, कनजूसी,

حَسَنَ الْخُلْقِ بَعِيْدًا مِنَ الْبُخْلِ وَ الْمَنْعِ وَ النِّفَاقِ وَ الْكِذْبِ وَ

महरूमी, निफ़ाक़, झूठ, बोहतान, झूटी गवाही से दूर, और मेरे दिल मे मोहम्मद व आले मोहम्मद

الْبَهْتِ وَ قَوْلِ الزُّوْرِ وَ تُرْسِخَ فِيْ قَلْبِيْ مَحَبَّةَ مُحَمَّدٍ وَ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ

(अ.स.) की मोहब्बत रासेख़ करदे और उन के शियोंकी और ऐ परवरदिगार मुझको और मेरे अहल

شِيْعَتِهِمْ وَ تَحْرُسَنِيْ يَا رَبِّ فِيْ نَفْسِيْ وَ اَهْلِيْ وَ مَالِيْ وَ وُلْدِيْ وَ

व अयाल, मेरे माल, मेरी औलाद, मेरे ख़ानदान, मेरे भाई, मेरे दोस्त और मेरी ज़ुर्रीयत की हिफ़ाज़त

اَهْلِ حُزَانَتِيْ وَ اِخْوَانِيْ وَ اَهْلِ مَوَدَّتِيْ وَ ذُرِّيَّتِيْ بِرَحْمَتِكَ وَ جُوْدِكَ

फ़र्मा अपने रहम व कर्म से। ख़ुदाया ये मेरी हाजतें तेरी बारगाह मे पेश हैं और मैंने उन हाजतों को ज़्यादा

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ حَاجَاتِيْ عِنْدَكَ وَ قَدِ اسْتَكْثَرْتُهَا لِلُؤْمِيْ وَ شُحِّيْ وَ

समझा है अपनी ख़सासत और पसतीए तबियत की वजह से जब के तेरे लिए वो बहुत कम है और

هِيَ عِنْدَكَ صَغِيْرَةٌ حَقِيْرَةٌ وَ عَلَيْكَ سَهْلَةٌ يَسِيْرَةٌ فَاَسْاَلُكَ بِجَاهِ

हक़ीर है और तेरे लिए उनको पूरा करना आसन है पस मैं तुझ से सवाल करता हूँ मोहम्मद व आले

مُحَمَّدٍ وَ اٰلِ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِ وَ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ عِنْدَكَ وَ بِحَقِّهِمْ

मोहम्मद की उस इज़्ज़त के वास्ते से जो तेरे नज़दीक है और उनके उस हक़ के ज़रिए जो तेरे ऊपर है

عَلَيْكَ وَ بِمَا اَوْجَبْتَ لَهُمْ وَ بِسَائِرِ اَنْبِيَائِكَ وَ رُسُلِكَ وَ

और उसके ज़रिए जो तूने लाज़म किया है उनके लिए और अपनी तमाम अंबिया और मुसर्लान और

اَصْفِيَائِكَ وَ اَوْلِيَائِكَ الْمُخْلَصِيْنَ مِنْ عِبَادِكَ وَ بِاسْمِكَ

मुन्ताख़िब बन्दों और अपने बन्दों मे ख़ालिस वलीयों के लिए और तेरे अज़ीम नाम के वास्ते से के तू उन

الْاَعْظَمِ الْاَعْظَمِ لَمَّا قَضَيْتَهَا كُلَّهَا وَ اَسْعَفْتَنِيْ بِهَا وَ لَمْ

तमाम हाजतों को पूरा कर दे और हाजत बर आवरी के लिए मुझको उम्मीदवार बना और मुझे उम्मीद

تُخَيِّبْ اَمَلِيْ وَ رَجَائِيْ وَ شَفِّعْ صَاحِبَ هٰذَا الْقَبْرِ فِيَّ يَا سَيِّدِيْ يَا

व आरज़ू से महरूमन ना कर। ख़ुदाया इस साहेबे क़ब्र को मेरे लिए शिफ़ाअत करनेवाला क़रार दे ऐ

وَلِيَّ اللّٰهِ يَا اَمِيْنَ اللّٰهِ اَسْاَلُكَ اَنْ تَشْفَعَ لِيْ اِلَى اللّٰهِ عَزَّ وَ جَلَّ فِيْ هٰذِهِ

मेरे आक़ाए वलीए ख़ुदा ऐ अमानत दारे इलाही मैं आप से सवाल करता हूँ के मेरी उन तमाम हाजतों

الْحَاجَاتِ كُلِّهَا بِحَقِّ اٰبَائِكَ الطَّاهِرِيْنَ وَ بِحَقِّ اَوْلَادِكَ

के लिए ख़ुदा की बारगाह मे शिफ़ाअत कीजिए अपने आबा व तहेरीन के हक़ वे वास्ते से और अपनी

الْمُنْتَجَبِيْنَ فَاِنَّ لَكَ عِنْدَ اللّٰهِ تَقَدَّسَتْ اَسْمَاؤُهُ الْمَنْزِلَةَ

औलादे पाकीज़ा के वास्ते से क्योंके आपका ख़ुदा की बारगाह मे (उसके असमाए पाका०rजा हैं) बुलंद

الشَّرِيفَةَ وَالْمَرْتَبَةَ الْجَلِيلَةَ وَالْجَاهَ الْعَرِيضَ اَللّٰهُمَّ لَوْ عَرَفْتُ

मरतबा और अज़ीम मक़ाम और बेहद क़दर है।ख़ुदाया अगर मैं समझता के कोई और ज़्यादा तेरी

مَنْ هُوَ اَوْجَهُ عِنْدَكَ مِنْ هٰذَا الْاِمَامِ وَ مِنْ آبَائِهِ وَ اَبْنَائِهِ

निगाह मे इज़्ज़तदार है इस इमाम से और उनके आबा व औलादे ताहेरीन से (उन पर सलाम व सलवात

الطَّاهِرِينَ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَ الصَّلَاةُ لَجَعَلْتُهُمْ شُفَعَائِيْ وَ

हो) तो मैं उन्हीं को शिफ़ाअत करने वाला बनाता और उन्हीं को अपनी हाजतों और मुरादों के लिए

قَدَّمْتُهُمْ اِمَامَ حَاجَتِيْ وَ طَلِبَاتِيْ هٰذِهِ فَاسْمَعْ مِنِّيْ وَ اسْتَجِبْ

पेश करता तू मेरी दुआ को सूनले और क़ुबूल करले और मेरे साथ वो सुलूक कर जिसका तू अहेल

لِيْ وَافْعَلْ بِيْ مَا اَنْتَ اَهْلُهُ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ اَللّٰهُمَّ وَمَا قَصُرَتْ

है ऐ सब से ज़्यादा रहेम करनेवाले। ख़ुदाया जो मेरे सवाल मे तक़सीर हुई हो और जिससे मेरी क़ुव्वत

عَنْهُ مَسْاَلَتِيْ وَ لَمْ تَبْلُغْهُ فِطْنَتِيْ مِنْ صَالِحِ دِيْنِيْ وَ دُنْيَايَ وَ

आजिज़ हो गई हो और उस तक मेरी समझ न पहुँची हो मेरी दुनिया व दीन व आख़िरत की अच्छाई मे

آخِرَتِيْ فَامْنُنْ بِهِ عَلَيَّ وَاحْفَظْنِيْ وَاحْرُسْنِيْ وَهَبْ لِيْ وَاغْفِرْ لِيْ وَ

तू उसके लिए मुझपर एहसान कर और मुझको महफ़ूज़ कर और मुझे बचा ले, मुझे अता फ़र्मा मुझको

مَنْ اَرَادَنِيْ بِسُوْءٍ اَوْ مَكْرُوْهٍ مِنْ شَيْطَانٍ مَرِيْدٍ اَوْ سُلْطَانٍ

बख़्श दे और जो शख़्श मेरे साथ बुराई का इरादा करे चाहे गुम्राह शैतान हो या सरकश बादशाह या दीन

عَنِيْدٍ اَوْ مُخَالِفٍ فِيْ دِيْنٍ اَوْ مُنَازِعٍ فِيْ دُنْيَا اَوْ حَاسِدٍ عَلَيَّ نِعْمَةً

मे मुख़ालेफ़त या दुनिया मे निज़ा करनेवाला या मेरी नेमत का हासीद या ज़ुल्म करनेवाला या सरकशी

اَوْ ظَالِمٍ اَوْ بَاغٍ فَاقْبِضْ عَنِّيْ يَدَهٗ وَ اصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهٗ وَ اشْغَلْهُ

करनेवाला, उसके हाथों को मुझ सवे रोक दे और उसके मक्र को मुझसे रोक दे तू उसे मुझ से ग़ाफ़िल

عَنِّيْ بِنَفْسِهٖ وَ اكْفِنِيْ شَرَّهٗ وَ شَرَّ اَتْبَاعِهٖ وَ شَيَاطِيْنِهٖ وَ اَجِرْنِيْ

कर दे और मेरे लिए तू काफ़ी हो जा उसके और उसके ताबेईन व शयातीन के शर से और मुझको

مِنْ كُلِّ مَا يَضُرُّنِيْ وَ يُجْحِفُ بِيْ وَ اَعْطِنِيْ جَمِيْعَ الْخَيْرِ كُلِّهٖ مِمَّا اَعْلَمُ

बचा ले हर उस चीज़ से जो नुक़सान पहु@ंचाती हो और हलाकत मे डालती हो और मुझको तमाम

وَ مِمَّا لَا اَعْلَمُ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اغْفِرْ لِيْ وَ

मालूम और ना मालूम नेकियाँ अता कर दे ख़ुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा मेहम्मद व आले मोहम्मद पर व

لِوَالِدَيَّ وَ لِاِخْوَانِيْ وَ اَخَوَاتِيْ وَ اَعْمَامِيْ وَ عَمَّاتِيْ وَ اَخْوَالِيْ وَ

बख़्शदे मुझको, मेरे वालेदैन की म्रेरे भाई बहनो को मेरे चचा और फुफियों को, मेरे मामू और ख़ाला को

خَالَاتِيْ وَ اَجْدَادِيْ وَ جَدَّاتِيْ وَ اَوْلَادِهِمْ وَ ذَرَارِيْهِمْ وَ اَزْوَاجِيْ وَ

मेरे दादा दादी को और उन की औलाद व ज़ुर्राrयत को और मेरे अज़वाज और जुर्राrयत को और मेरे

ذُرِّيَّاتِيْ وَ اَقْرِبَائِيْ وَ اَصْدِقَائِيْ وَ جِيْرَانِيْ وَ اِخْوَانِيْ فِيْكَ مِنْ اَهْلِ

अइज़्ज़ा को, मेरे दोस्ता ंको, मेरे पड़ोसियों को और तेरे दीन मे मेरे भाईयों को चाहे वो मश्रिक़ मे हों या

الشَّرْقِ وَ الْغَرْبِ وَلِجَمِيعِ اَهْلِ مَوَدَّتِي مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَ

मग़रिब मे और तमाम साहेबाने मोहब्बत मोमिनीन व मोमिनात को चाहे वो ज़िन्दा हों या मुर्दा और उन

الْمُؤْمِنَاتِ الْاَحْيَاءِ مِنْهُمْ وَ الْاَمْوَاتِ، وَلِجَمِيعِ مَنْ عَلَّمَنِي

तमाम लोगों को जिन्होंने मुझको ख़ैर की तालीम दी या मुझ से इल्म को सीखा ख़ुदाया उन को शरीक

خَيْرًا اَوْ تَعَلَّمَ مِنِّي عِلْمًا اَللّٰهُمَّ اَشْرِكْهُمْ فِي صَالِحِ دُعَآئِي وَ

कर मेरी नेक दुआ और ज़ियारते क़ब्रे हुज्जत व वली के सिलसिले मे और मुझ को शरीक बना दे उन

زِيَارَتِي لِمَشْهَدِ حُجَّتِكَ وَ وَلِيِّكَ وَ اَشْرِكْنِي فِي صَالِحِ اَدْعِيَتِهِمْ

की सालेह दुआओं मे अपनी रहमत से ऐ सब से ज़्यादा रहेम करने वाले और उन की जानिब से अपने

بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ وَ بَلِّغْ وَلِيَّكَ مِنْهُمُ السَّلَامُ وَ

इस वली को सलाम पहुँचा दे और सलाम आप पर और अल्लाह की रहमत व बरकात हों ऐ मेरे आक़ा व

السَّلَامُ عَلَيْكَ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهُ يَا سَيِّدِي يَا مَوْلَايَ يَا

मौला (ऐ फ़ोलाँ बिन फ़ोलाँ) इमाम और उनके वालिद का नाम ले...अल्लाह का दुरूद हो आप पर और

فُلَانَ بْنَ فُلَانٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ وَ عَلٰى رُوحِكَ وَ بَدَنِكَ اَنْتَ

आपकी रूह पर और आपके बदन पर आप मेरा वसीला हैं अल्लाह की तरफ़ और मेरा ज़रिया हैं उस

وَسِيلَتِي اِلَى اللهِ وَ ذَرِيعَتِي اِلَيْهِ وَلِي حَقُّ مُوَالَاتِي وَ تَأْمِيلِي فَكُنْ

की जानिब और मेरा आप पर मवालात और उम्मीदवारी का हक़ है लेहाज़ा आप मेरे शिफ़ाअत करने

شَفِيعِي إِلَى اللهِ عَزَّ وَجَلَّ فِي الْوُقُوفِ عَلَى قِصَّتِي هٰذِهِ وَصَرْفِي عَنْ

वाले हो जाईए ख़ुदा की जानिब मेरी सूरते हाल पर वक़ूफ के बारे मे और उस मक़ाम से लौटने के बारे

مَوْقِفِي هٰذَا بِالنُّجْحِ بِمَا سَأَلْتُهُ كُلِّهِ بِرَحْمَتِهِ وَ قُدْرَتِهِ اَللّٰهُمَّ

मे कामयाबी के साथ उन तमाम चा०rजों के साथ जिनका मैंने सवाल किया है अपनी रहमत व क़ुदरत

ارْزُقْنِي عَقْلًا كَامِلًا وَلُبًّا رَاجِحًا وَعِزًّا بَاقِيًا وَقَلْبًا زَكِيًّا وَعَمَلًا

से ख़ुदाया मुझको अता कर मुकम्मल अक़ल ज़्यादा ख़िर्दमंदी, बाक़ी रहने वाली इज़्ज़त, पाकीज़ा दिल,

كَثِيرًا وَأَدَبًا بَارِعًا وَاجْعَلْ ذٰلِكَ كُلَّهُ لِي وَلَا تَجْعَلْهُ عَلَيَّ بِرَحْمَتِكَ

ज़्यादा अमल और बुलंद तरीन अदब और ये सब का सब मेरे फ़ाएदा के लिए क़रार दे और मेरे लिए

يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ.

इसमे नुक़सान न क़रार दे अपनी रहमत से, ऐ सब से ज़्यादा रहेम करने वाले।

पाँचवां मतलब: ज़ियारते विदा

ज़िक्रे ज़ियारते विदा जिससे हर इमाम को रूख़सत किया जा सकता है। वाज़ेह रहे के वह तमाम आदाबे ज़ियारत जो अपनी जगह पर ज़िक्र हो चुके हैं उनहीं में से एक विदा भी है के जब शहर से बाहर जाने लगे तो मासूम को रूखसत करे जैसा के आम ज़ियारतों में भी इसका ज़िक्र पाया जाता है और हमने मफ़ातीह में अबवाबे ज़ियारते आइम्मा में हर एक के लिए एक सलवात विदाई भी नक्ल की है और विदाए सय्यदुश शोहदा में इक्तेफ़ा की है।

उस ज़ियारते विदा पर जो आदाबे ज़ाएरे हज़रत के ज़ैल में अदब नं. २० के उनवान से नक़्ल की है।

और यहाँ भी हम ज़ियारते विदा का ज़िक्र कर रहे हैं जिसको शेख मोहम्मद बिन मशहदी ने बाबे विदा मज़ारे कबीर में नक़्ल किया है और सय्यद इब्ने ताऊस ने ज़ियारते जामेआ के बाद नक़्ल किया है। हम इस समय उसको मिसबाहुज़ ज़ाएर से नक़्ल कर रहे हैं के जब किसी भी मासूम के रौज़े से रूख़सत होने लगे तो इस तरह कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ بَيْتِ النُّبُوَّةِ وَمَعْدِنَ الرِّسَالَةِ سَلَامَ

सलाम आप पर ऐ अहलेबैते नबुव्वत और मादने रिसालत विदा करनेवाले का सलाम बेग़ैर मलाल व

مُوَدِّعٍ لَا سَئِمٍ وَلَا قَالٍ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ

ख़स्तगी के और बग़ैर बेज़ारी के और अल्लाह की रहमत व बरकात हों आप पर ऐ अहलेबैत बेशक वो

الْبَيْتِ اِنَّهُ حَمِيدٌ مَجِيدٌ سَلَامَ وَلِيٍّ غَيْرِ رَاغِبٍ عَنْكُمْ وَلَا

हम्द व बुज़ुर्गावाला है ऐसे दोस्त का सलम जो आप से रूगरदान नही है आप से मुनहरिफ़ नही है और

مُنْحَرِفٍ عَنْكُمْ وَلَا مُسْتَبْدِلٍ بِكُمْ وَلَا مُؤْثِرٍ عَلَيْكُمْ وَلَا

किसी ग़ैर को नही क़ुबूल करता है और आप पर किसी को मुक़द्दम नही करता है आप के क़ुर्ब से बे

زَاهِدٍ فِي قُرْبِكُمْ لَا جَعَلَهُ اللهُ آخِرَ الْعَهْدِ مِنْ زِيَارَةِ قُبُورِكُمْ

रग़बती नही करता ख़ुदा उस ज़ियारत को आपकी क़ब्रों की ज़ियारत का आख़री दौर न क़रार दे और न

وَاِتْيَانِ مَشَاهِدِكُمْ وَالسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَحَشَرَنِيَ اللهُ فِي

आप के मशाहिद तक आने का आख़री ज़माना क़रार दे सलाम आप सब पर और ख़ुदा मुझको आपके

زُمْرَتِكُمْ وَاوْرَدَنِي حَوْضَكُمْ وَارْضَاكُمْ عَنِّي وَمَكَّنَنِي فِي

ज़ुमरे मे महशूर करे और मुझको आपके हौज़ पर पहुँचाए और आप को मुझ से राज़ी कर दे और मुझ को

دَوْلَتِكُمْ وَاحْيَانِي فِي رَجْعَتِكُمْ وَمَلَّكَنِي فِي ايَّامِكُمْ وَشَكَرَ

आपकी ख़िदमत मे इक़्तेदार अता करे और मुझको आप की रजअत मे ज़िन्दा करे और मुझको आप

سَعْيِي لَكُمْ وَغَفَرَ ذُنُوبِي بِشَفَاعَتِكُمْ وَاقَالَ عَثْرَتِي بِحُبِّكُمْ

की हुकूमत के ज़माने मे मौक़ा एनायत करे और मेरी कोशिश को क़ुबूल करे और मेरे गुनाह को आपकी

وَاعْلَىٰ كَعْبِي بِمُوَالَاتِكُمْ وَشَرَّفَنِي بِطَاعَتِكُمْ وَاعَزَّنِي بِهُدَاكُمْ

शिफ़ाअत से बख़्शदे और मेरी लगिज़शें को आप की मोहब्बत की वजह से माफ़ कर दे और मेरे मरतबे

وَجَعَلَنِي مِمَّنْ يَنْقَلِبُ مُفْلِحًا مُنْجِحًا سَالِمًا غَانِمًا مُعَافًى غَنِيًّا

को आपकी मोहब्बत के सबब बुलंद करदे और आपकी इताअत का शरफ़ दे और मुझको आपके हिदायत

فَائِزًا بِرِضْوَانِ اللهِ وَفَضْلِهِ وَ كِفَايَتِهِ بِأَفْضَلِ مَا يَنْقَلِبُ بِهِ

की वजह से इज़्ज़त दे और मुझको क़रार दे उन मे से जो कामयाब व कामरान सालिम व ग़ानिम, माफ़

احَدٌ مِنْ زُوَّارِكُمْ وَمَوَالِيكُمْ وَمُحِبِّيكُمْ وَشِيعَتِكُمْ وَرَزَقَنِيَ

शुदा, बेनियाज़, अल्लाह की रज़ा मंदी, फ़ज़्ल व किफ़ालत को हासिल किए वापस होते हैं इस बेहतरीन

اللهُ الْعَوْدَ ثُمَّ الْعَوْدَ ثُمَّ الْعَوْدَ مَا ابْقَانِي رَبِّي بِنِيَّةٍ صَادِقَةٍ

बात के साथ जिसके साथ आप के जवार, दोस्त, मोहिब, शिया वापस होते हैं और अल्लाह मुझको बार बार

وَاِيمَانٍ وَتَقْوىٰ وَاِخْبَاتٍ وَرِزْقٍ وَاسِعٍ حَلَالٍ طَيِّبٍ اَللّٰهُمَّ لَا

लौटा कर आने की तौफ़ीक़ अता करे जबतक मेरा परवरदिगार मुझको बाक़ी रखे सच्ची नियत, ईमान,

تَجْعَلْهُ آخِرَ الْعَهْدِ مِنْ زِيَارَتِهِمْ وَذِكْرِهِمْ وَالصَّلَاةِ عَلَيْهِمْ

तक़वा, ख़ुज़ू, रिज़्के वसी, हलाल, पाक पाकाीrजा के साथ ख़ुदाया उस को उनकी ज़ियारत और तज़केरा

وَاَوْجِبْ لِيَ الْمَغْفِرَةَ وَالرَّحْمَةَ وَالْخَيْرَ وَالْبَرَكَةَ وَالنُّورَ وَالْاِيمَانَ

और उन पर सलवात का आख़री ज़माना न क़रार देना और मेरे लिए बख़शिश, रहमत, ख़ैर व बरकत,

وَحُسْنَ الْاِجَابَةِ كَمَا اَوْجَبْتَ لِاَوْلِيَائِكَ الْعَارِفِينَ بِحَقِّهِمْ

रौशनी, ईमान और बेहतरीन क़ुबूलियत लाज़म कर जैसा के तूने लाज़म किया है अपने उन दोस्तों के लिए

الْمُوجِبِينَ طَاعَتَهُمْ وَالرَّاغِبِينَ فِي زِيَارَتِهِمْ الْمُتَقَرِّبِينَ

जो उनके हुक़ूक़ के आरिफ़ और उनकी इताअत के पाइन्दा और उन की ज़ियारत के शाएक़ हैं और तुझ

اِلَيْكَ وَاِلَيْهِمْ بِاَبِي اَنْتُمْ وَاُمِّي وَنَفْسِي وَاَهْلِي وَمَالِي اجْعَلُونِي

से और उन से क़रीब तर हैं मेरे माँ बाप और जान माल और अहल व अयाल आप पर क़ुर्बान हो मुझको

مِنْ هَمِّكُمْ وَصَيِّرُونِي فِي حِزْبِكُمْ وَاَدْخِلُونِي فِي شَفَاعَتِكُمْ

बुलंद हिम्मती से बहरामंद करे और अपने गरोह मे क़रारदे और अपनी शिफ़ा-अत मे दाख़िल कर ले और

وَاذْكُرُونِي عِنْدَ رَبِّكُمْ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلىٰ مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاَبْلِغْ

ख़ुदा की बारगाह मे मुझ्ो यास रखे। ख़ुदाया दुरूद नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.स.) पर

ارْوَاحِهِمْ وَاجْسَادِهِمْ عَنِّي تَحِيَّةً كَثِيرَةً وَسَلَامًا وَالسَّلَامُ

और मेरी तरफ़ से उन की रूहों और जिस्मोंको ज़्यादा तहय्यतो सलाम पहुँचा और सलाम आपपर और

عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

ख़ुदा की रहमत व बरकात हों।

छटा मतलब: तलबे हाजत की दुआ

तोहफ़तुज़ ज़ाएर में इमाम सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के जब कोई हाजत पेश आ जाए या किसी चीज़ से ख़ाफ़ज़दा और हिरासां हो तो एक काग़ज़ पर ये लिखे। उसके बाद काग़ज़ को लपेट कर मिट्टी के गोले में रख कर आबे जारी या कुएं में डाल दे। परवरदिगार बहुत जल्द वुसअते हाल अता फ़रमाएगा।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ اَللّٰهُمَّ اِنِّي اتَوَجَّهُ اِلَيْكَ بِاحَبِّ الاسْمَاءِ

अल्लाह के नाम से जो बख़्शने वाला और रहीम है ख़ुदाया तेरे पसंदीदा नामो के ज़रिए तेरी तरफ़ मुतवज्ज़े हूँ और

اِلَيْكَ وَاعْظَمِهَا لَدَيْكَ وَاتَقَرَّبُ وَاتَوَسَّلُ اِلَيْكَ بِمَنْ اوْجَبْتَ حَقَّهُ

तेरे अज़ीम नामों के वास्ते से और मैं क़रीब होता हूँ और तेरी तरफ़ वसीला बनाता हूँ उन को जिन के हक़ को

عَلَيْكَ بِمُحَمَّدٍ وَعَلِيٍّ وَفَاطِمَةَ وَالْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ وَعَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ

अपने ऊपर लाज़म किया है मोहम्मद (अ.स.), अली (अ.स.), फ़ातेमा (स.अ.), हसन (अ.स.), हुसैन (अ.स.)

وَمُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ وَجَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ وَمُوسَىٰ بْنِ جَعْفَرٍ وَعَلِيِّ بْنِ مُوسَىٰ

अली बिन हुसैन (अ.स.), मोहम्मद बिन अली (अ.स.), जाफ़र बिन मोहम्मद (अ.स.), मूसा बिन जाफ़र

وَمُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ وَعَلِيِّ بْنِ مُحَمَّدٍ وَالْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ وَالْحُجَّةِ الْمُنْتَظَرِ

(अ.स.), अली बिन मूसा (अ.स.), मेहम्मद बिन अली (अ.स.), अली बिन मोहम्मद (अ.स.), हसन बिन अली

صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ اِكْفِنِيْ...

(अ.स.), और हुज्ज़ते मुन्तिज़र के वास्ते से अल्लाह का दुरूद हो उन सब पर मेरे लिए किफ़ालत फ़र्मा।

सातवां मतलब: दुआए ग़ैबत

सनदे मोतबर से मरवी है के शेख़ अबू अम्र नाएबें अव्वल इमामे अñ (अ.स.) ने यह दुआ मोहम्मद अली बिन हमाम को लिखवाई है और उनसे कहा है के इसे पढ़ो और सय्यद इब्ने ताऊस ने जमालुल उसबूअ में अñ जुमा वारिद होने वाली दुआओं और सलवात के बाद इस दुआ का ज़िक्र किया है।

और फ़रमाया है के अगर तुम उन तमाम दुआओं से माज़ूर हो जो मैंने बयान की हैं तो इस दुआ को बहरहाल नज़र अंदाज़ न करना के मैंने इसको फ़ज़्ले इलाही से पहचाना है जो उसने मेरे शामिले हाल किया है। लेहाज़ा उस पर एतेमाद करो और यह दुआ पढ़ो:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है।

اَللّٰهُمَّ عَرِّفْنِيْ نَفْسَكَ فَاِنَّكَ اِنْ لَّمْ تُعَرِّفْنِيْ نَفْسَكَ لَمْ اَعْرِفْ

ख़ुदाया तू मुझको अपने को पहचँवा दे क्योंके अगर तू अपने को मुझे न पहचनवाएगा तो मैं तेरे रसूल को भी

رَسُوْلَكَ اَللّٰهُمَّ عَرِّفْنِيْ رَسُوْلَكَ فَاِنَّكَ اِنْ لَمْ تُعَرِّفْنِيْ

न पहचान सकूँगा। ख़ुदाया मुझको अपने रसूल को पहचनवा दे क्योंके अगर तू अपने रसुलको मुझे न

رَسُولَكَ لَمْ اَعْرِفْ حُجَّتَكَ اَللّٰهُمَّ عَرِّفْنِىْ حُجَّتَكَ فَاِنَّكَ اِنْ لَّمْ

पहचनवाएगा तो मैं तेरी हुज्ज़त को भी न पहचान सकूँगा ख़ुदाया मुझे अपनी हुज्ज़त को पहचनवा दे के अगर

تُعَرِّفْنِىْ حُجَّتَكَ ضَلَلْتُ عَنْ دِيْنِىْ اَللّٰهُمَّ لاَ تُمِتْنِىْ مِيْتَةً

तू मुझे अपनी हुज्ज़त को न पहचनवाएगा तो मैं दीन से गुमराह हो जाऊँगा ख़ुदाया मुझको जाहिलियत की मौत

جَاهِلِيَّةً وَلاَ تُزِغْ قَلْبِىْ بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنِىْ اَللّٰهُمَّ فَكَمَا هَدَيْتَنِىْ

न देना और मेरे दिलको कज न बना देना हिदायत देने के बाद ख़ुदाया जिस तरह तूने मेरी हिदायत की उनकी

لِوِلاَيَةِ مَنْ فَرَضْتَ عَلَىَّ طَاعَتَهُ مِنْ وِلاَيَةِ وُلاَةِ اَمْرِكَ بَعْدَ

मोहब्बत के लिए जिनकी इताअत को मुझ पर फर्ज किया अपने औलिया अम्र मे से अपने रसूल के बाद (तेरी

رَسُوْلِكَ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ حَتّٰى وَ الَيْتُ وُلاَةَ اَمْرِكَ اَمِيْرَ

सलवात हो उन पर और उनकी आल पर) यहाँ तकके मैं तेरे औलियाए अमर का दोस्त हो गया जो अमीरूल

الْمُؤْمِنِيْنَ عَلِىَّ بْنَ اَبِىْ طَالِبٍ وَ الْحَسَنَ وَ الْحُسَيْنَ وَ عَلِيًّا وَ

मोमिनीन अली बिन तालिब (अ.स.), हसन (अ.स.), हुसैन (अ.स.), अली (अ.स.), मोहम्मद (अ.स.),

مُحَمَّدًا وَ جَعْفَرًا وَ مُوْسٰى وَ عَلِيًّا وَ مُحَمَّدًا وَ عَلِيًّا وَالْحَسَنَ وَ

जाफ़र (अ.स.), मूसा (अ.स.), अली (अ.स.), मोहम्मद (अ.स.), अली (अ.स.), और हसन (अ.स.), और

الْحُجَّةَ الْقَائِمَ الْمَهْدِىَّ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ اَللّٰهُمَّ

हुज़्ज़ते क़ाएम मेहदी (अ.स.), है (तेरा दुरूद हो उन सब पर) ख़ुदाया मुझको अपने दीन पर साबित क़दम रख

فَثَبِّتْنِي عَلٰى دِيْنِكَ وَ اسْتَعْمِلْنِي بِطَاعَتِكَ وَ لَيِّنْ قَلْبِي لِوَلِيِّ

और अपनी इताअत मे मशग़ूल रख और अपने वलीए अम्र के लिए मेरे दिल को नर्म कर दे और उस अम्र

اَمْرِكَ وَعَافِنِي مِمَّا امْتَحَنْتَ بِهٖ خَلْقَكَ وَ ثَبِّتْنِي عَلٰى طَاعَةِ وَ

मे आफ़ियत अता कर जिसके ज़रिए मख़लूक़ का इम्तेहान लिया है० और मुझको अपने उस वलीए अम्र की

لِيِّ اَمْرِكَ الَّذِي سَتَرْتَهٗ عَنْ خَلْقِكَ وَ بِاِذْنِكَ غَابَ عَنْ بَرِيَّتِكَ

इताअत पर साबित क़दम रख जिस को तू ने मख़लूक से छिपा रखा है और जो तेरे हुकम से मख़लूक की

وَ اَمْرَكَ يَنْتَظِرُ وَ اَنْتَ الْعَالِمُ غَيْرُ الْمُعَلَّمِ بِالْوَقْتِ الَّذِي

निगाहों से ग़ाएब हैं और तेरे अम्र का इन्तेज़ार कर रहे हैं और तू ही ऐ ख़ुदा बेग़ैर बताए हुए उस वक़्त का जन्ने

فِيْهِ صَلَاحُ اَمْرِ وَلِيِّكَ فِي الْاِذْنِ لَهٗ بِاِظْهَارِ اَمْرِهٖ وَ كَشْفِ

वाला है जिसमे तेरे वलीए अम्र के लिए सलाह है अपने अम्र के इज़हार का हुक्म देने मे और ग़ैबत को ख़त्म

سِتْرِهٖ فَصَبِّرْنِي عَلٰى ذٰلِكَ حَتّٰى لَا اُحِبَّ تَعْجِيْلَ مَا اَخَّرْتَ وَ لَا

करने मे। पस तू मुझ को सब्र दे उस पर के मैं उसकी उजलत को पसंद न करू जिस मे तूने ताख़ीर की है और

تَاْخِيْرَ مَا عَجَّلْتَ وَ لَا كَشْفَ مَا سَتَرْتَ وَ لَا الْبَحْثَ عَمَّا

न उसमे ताख़ीर को पसंद करूँ जिस मे तूने जल्दी की है और न उसका इन्केशाफ़ पसंदा करूँ जिसे तूने छिपाय

كَتَمْتَ وَ لَا اُنَازِعَكَ فِي تَدْبِيْرِكَ وَ لَا اَقُوْلُ لِمَ وَ كَيْفَ وَ مَا

है और न तलाश उसकी जिसे तूने मख़फ़ी रखा है और न तुझ से निज़ा करूँ तेरे नज़्मे उमूर मे और क्यों और

بَالُ وَلِيِّ الْاَمْرِ لاَ يَظْهَرُ وَ قَدِ امْتَلَاَتِ الْاَرْضُ مِنَ الْجَوْرِ وَ

कैसे और न ये कहूँ के क्यों वलीए अम्र ज़ाहिर नही होता है दर हालाँके ज़मीन ज़ुल्मो जौर से भर गई है और

اُفَوِّضُ اُمُوْرِیْ كُلَّهَا اِلَيْكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ اَنْ تُرِيَنِیْ وَلِیَّ

मैं तमाम उमूर को तेरे हवाला कर दूँ। ख़ुदाया मैं तुझ से सवाल करता हूँ के तू मुझे अपने वलीए अम्र को ज़हूर

اَمْرِكَ ظَاهِرًا نَافِذَ الْاَمْرِ مَعَ عِلْمِیْ بِاَنَّ لَكَ السُّلْطَانَ وَ

दिखा दे इस हाल मे के उसका अम्र नाफ़िज़ हो मेरे इस यक़ीन के साथ के तेरे ही लिए बादशाह, क़ुदरत,

الْقُدْرَةَ وَ الْبُرْهَانَ وَ الْحُجَّةَ وَ الْمَشِيَّةَ وَ الْحَوْلَ وَ الْقُوَّةَ فَافْعَلْ

दलील, हुज्जत, मशीयत, क़ुव्वत व ताक़त है ख़ुदाया ये करम मुझ पर और तमाम मोमिनीन पर फ़र्मा (इमाम

ذٰلِكَ بِیْ وَ بِجَمِيْعِ الْمُؤْمِنِيْنَ حَتّٰى نَنْظُرَ اِلٰى وَلِیِّ اَمْرِكَ صَلَوَاتُكَ

को ज़ाहिर कर दे) ताके हम तेरे वलीए अम्र को देख लें (उन पर तेरा दुरूद हो) जिनकी गुफ़्तुगू ज़ाहिर है और

عَلَيْهِ ظَاهِرَ الْمَقَالَةِ وَ اَوْضَحَ الدَّلَالَةِ هَادِيًا مِنَ الضَّلَالَةِ

उनकी दलालत वाज़ेह है (वो गुमराही से हिदायत देने वाले, जेहालत से शिफ़ा देनेवाले हैं। ख़ुदाया उनके

شَافِيًا مِنَ الْجَهَالَةِ اَبْرِزْ يَا رَبِّ مُشَاهَدَتَهٗ وَ ثَبِّتْ قَوَاعِدَهٗ وَ

मुशहिदे को ज़ाहिर कर दे और उनके अरकान को साबित फ़र्मा और हमको उन मे से क़रार दे जिन की आँख

اجْعَلْنَا مِمَّنْ تَقَرُّ عَيْنُهٗ بِرُؤْيَتِهٖ وَ اَقِمْنَا بِخِدْمَتِهٖ وَ تَوَفَّنَا عَلٰى

ठँडी होती है उनके दीदार से और हम को उनकी ाख़िदमत मे क़ाएम कर दे और हमको उनके ज़रिए पर मौत

مِلَّتِهٖ وَ احْشُرْنَا فِيْ زُمْرَتِهٖ اَللّٰهُمَّ اَعِذْهُ مِنْ شَرِّ جَمِيْعِ مَا خَلَقْتَ

देना और हम को उन के गरोह मे महशूर करना। ख़ुदाया उनको तमाम के शर से महफ़ूज़ रखना जिनको पैदा

وَ ذَرَأْتَ وَ بَرَأْتَ وَ اَنْشَاْتَ وَ صَوَّرْتَ وَ احْفَظْهُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ

किया है, ख़ल्क किया है, बनाया है, ईजाद किया हे और सूरत दी है और उन को महफ़ूज करना उनके आगे,

وَ مِنْ خَلْفِهٖ وَ عَنْ يَمِيْنِهٖ وَ عَنْ شِمَالِهٖ وَ مِنْ فَوْقِهٖ وَ مِنْ تَحْتِهٖ

पिछे, दाहेने और बाँए और उनके ऊपर और नीचे से अपनी उस हिफ़ाज़त के साथ जिस के बाद कोई बरबाद

بِحِفْظِكَ الَّذِيْ لَا يُضِيْعُ مَنْ حَفِظْتَهٗ بِهٖ وَ احْفَظْ فِيْهِ رَسُوْلَكَ

नही होता है और उनके बारे मे अपने रसूल और रसूल के वसी को महफ़ूज़ कर (उन पर ओर उनकी आल

وَ وَصِيَّ رَسُوْلِكَ عَلَيْهِ وَ اٰلِهِ السَّلَامُ اَللّٰهُمَّ وَ مُدَّ فِيْ عُمْرِهٖ وَ

पर सलाम) ख़ुदाया उनकी उम्र मे इज़ाफ़ा फ़र्मा और उनकी ज़िन्दगी बढ़ा दे और जो विलायत और ज़िम्मादारी

زِدْ فِيْ اَجَلِهٖ وَ اَعِنْهُ عَلٰى مَا وَلَّيْتَهٗ وَ اسْتَرْ عَيْتَهٗ وَزِدْ فِيْ

उन्हें दी है उस पर मदद कर और उनके लिए अपनी करामत को ज़्यादा फ़र्मा बेशक वो हादी, महदी और उनके

كَرَامَتِكَ لَهٗ فَاِنَّهُ الْهَادِي الْمَهْدِيُّ وَالْقَائِمُ الْمُهْتَدِيْ وَ

लिए अपनी करामत को ज़्यादा फ़र्मा, बेशक वो हादी, महदी क़ाएम, हिदायत करने वाले, पकीज़ा, मुत्तक़ी,

الطَّاهِرُ التَّقِيُّ الزَّكِيُّ النَّقِيُّ الرَّضِيُّ الْمَرْضِيُّ الصَّابِرُ الشَّكُوْرُ

पाक, ज़ाहिर, पसंदीदा, महबूब, साबिर और शुक्र करनेवाले और कोशिश करनेवाले हैं। ख़ुदाया हमसे उनकी

الْمُجْتَهِدُ اَللّٰهُمَّ وَ لاَ تَسْلُبْنَا الْيَقِيْنَ لِطُوْلِ الْاَمَدِ فِيْ غَيْبَتِهٖ

ग़ैबत की तूलानी मुद्दत और उनकी ख़बर के मुनक़ता होने के बावजूद यक़ीन को हमसे सलब न कर लेना

وَ انْقِطَاعِ خَبَرِهٖ عَنَّا وَ لاَ تُنْسِنَا ذِكْرَهٗ وَ انْتِظَارَهٗ وَ الْاِيْمَانَ

और हमको न भुला देना उनके ज़िक्र, इन्तेज़ार, ईमान, उन के ज़ुहूर मे क़ुव्वते यक़ीन, उनके लिए दुआ और

بِهٖ وَ قُوَّةَ الْيَقِيْنِ فِيْ ظُهُوْرِهٖ وَ الدُّعَآءَ لَهٗ وَ الصَّلٰوةَ عَلَيْهِ حَتّٰى

उन पर दुरूद हो यहाँ तक के हम को उनकी तूलानी ग़ैबत मायूस न करदे उनके क़याम से और उनके बारे मे

لاَ يُقَنِّطَنَا طُوْلُ غَيْبَتِهٖ مِنْ قِيَامِهٖ وَ يَكُوْنَ يَقِيْنُنَا فِيْ ذٰلِكَ

हमारा यक़ीन वैसा ही हो जैसा तेरे रसूल के क़याम के बारे मे (तेरा दुरूद हो उन पर और उनकी आल पर)

كَيَقِيْنِنَا فِيْ قِيَامِ رَسُوْلِكَ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ مَا جَآءَ بِهٖ

ओर ऐसा यक़ीन जो तेरी वही और तनज़ील पर है तू हमारे दिलों को उन पर ईमान के लिए क़वी बनादे ता के

مِنْ وَحْيِكَ وَ تَنْزِيْلِكَ فَقَوِّ قُلُوْبَنَا عَلَى الْاِيْمَانِ بِهٖ حَتّٰى تَسْلُكَ

तू हमको उनके वजूद के ज़रिए हिदायत के तरिके पर चलाए और शाह राहे हक़ीक़त और दरमियानी राह पर

بِنَا عَلٰى يَدَيْهِ مِنْهَاجَ الْهُدٰى وَ الْمَحَجَّةَ الْعُظْمٰى وَ الطَّرِيْقَةَ

चलाए और हमको उनकी इताअत की क़ुव्वत दे और हमको उनकी इत्तेबा पर साबित क़दम रखे और हमको

الْوُسْطٰى وَ قَوِّنَا عَلٰى طَاعَتِهٖ وَ ثَبِّتْنَا عَلٰى مُتَابَعَتِهٖ وَ اجْعَلْنَا فِيْ

उनके गरोह, आवान व अनसार और उनके काम पर राज़ी रहनेवालों मे क़रार दे और उस अतीए को हमसे

حِزْبِهٖ وَ اَعْوَانِهٖ وَ اَنْصَارِهٖ وَ الرَّاضِيْنَ بِفِعْلِهٖ وَ لَا تَسْلُبْنَا ذٰلِكَ

हमारी ज़िन्दगी मे और हमारी मौत के वक़्त न छीन लेना ताके हमको जब मौत दे तो हम उसी पर हों लेकिन

فِيْ حَيَاتِنَا وَ لَا عِنْدَ وَفَاتِنَا حَتّٰى تَتَوَفَّانَا وَ نَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ لَا

न शक करनेवाले हों और न बैअत तोड़नेवाले और न शुबह करनेवाले और न तकज़ीब करनेवाले ख़ुदाया

شَاكِّيْنَ وَ لَا نَاكِثِيْنَ وَ لَا مُرْتَابِيْنَ وَ لَا مُكَذِّبِيْنَ اَللّٰهُمَّ عَجِّلْ

उन के ज़ुहूर मे जल्दी फ़र्मा और मदद के ज़रिए उन की ताईद कर और उनके मदद गारों की मदद फ़र्मा और

فَرَجَهٗ وَ اَيِّدْهُ بِالنَّصْرِ وَ انْصُرْ نَاصِرِيْهِ وَ اخْذُلْ خَاذِلِيْهِ وَ

उनको रूस्वा करने वालों को रूस्वा कर और उनको हलाक कर जो उनकी तकज़ीब करते हैं और उनसे

دَمْدِمْ عَلٰى مَنْ نَصَبَ لَهٗ وَ كَذَّبَ بِهٖ وَ اَظْهِرْ بِهِ الْحَقَّ وَ اَمِتْ

अदावत रखते हैं और उन के ज़रिए हक़ को ज़ाहिर कर दे और ज़ुल्म को फ़ना कर दे और उन के ज़रिए अपने

بِهِ الْجَوْرَ وَ اسْتَنْقِذْ بِهٖ عِبَادَكَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنَ الذُّلِّ وَ انْعَشْ

मोमिन बन्दों को ज़िल्लत से नजात दे दे और शहरों को उनके ज़रिए आबाद कर दे और कुफ़्फ़ार और जाबिर

بِهِ الْبِلَادَ وَ اقْتُلْ بِهٖ جَبَابِرَةَ الْكُفْرِ وَ اقْصِمْ بِهٖ رُؤُوْسَ

लोगों को क़त्ल करा दे और गुमराहों की सरकूबी करदे और जाबिरों को और काफ़रों को रूसवा करदे और

الضَّلَالَةِ وَ ذَلِّلْ بِهِ الْجَبَّارِيْنَ وَ الْكَافِرِيْنَ وَ اَبِرْ بِهِ الْمُنَافِقِيْنَ

उनके ज़रिए हलाक करदे मुनाफ़क़ों अहेद शिकनों, तमाम मुख़ालिफ़ों, बे दिनों को जो ज़मीन के मश्रिक़ मे हों

وَ النَّاكِثِيْنَ وَ جَمِيْعَ الْمُخَالِفِيْنَ وَ الْمُلْحِدِيْنَ فِيْ مَشَارِقِ

या मग़रिब मे, ख़ुशकी मे हों या दरया मे, सेहरा मे हों या पहाड़ पर यहाँ तक के उन मे का कोई रहनेवाला न

الْاَرْضِ وَ مَغَارِبِهَا وَ بَرِّهَا وَ بَحْرِهَا وَ سَهْلِهَا وَ جَبَلِهَا حَتّٰى لاَ

छुटे और न उनका निशान बाक़ी रह जाए उनसे अपने शहरों को पाक करदे और उनकी हलाकत से अपने

تَدَعَ مِنْهُمْ دَيَّارًا وَ لاَ تُبْقِيَ لَهُمْ اٰثَارًا طَهِّرْ مِنْهُمْ بِلاَدَكَ

बन्दों के दिलों को शाद करदे और उनके ज़रिए उसकी तजदीद कर दे जो तेरे दीन मे से महव हो गया है और

وَاشْفِ مِنْهُمْ صُدُوْرَ عِبَادِكَ وَجَدِّدْ بِهٖ مَا امْتَحٰى مِنْ دِيْنِكَ

उनके ज़रिए इस्लाह कर दे जो तेरे अहकाम मे से तबदील कर दिए गए हैं और तेरी सुन्नत मे तग़य्युर हुआ है

وَ اَصْلِحْ بِهٖ مَا بُدِّلَ مِنْ حُكْمِكَ وَ غُيِّرَ مِنْ سُنَّتِكَ حَتّٰى

यहाँ तकके तेरा दीन उनके ज़रिए और उनके हाथों अपनी जगह पर अज सरे नौ वापस आ जाए जिसमे कोई

يَعُوْدَ دِيْنُكَ بِهٖ وَ عَلٰى يَدَيْهِ غَضًّا جَدِيْدًا صَحِيْحًا لاَ عِوَجَ فِيْهِ وَ

कजी न हो और न कोई बिदअत हो यहाँ तक के उनकी अदालत के ज़रिए काफ़िरां की आतिश फ़रोजाँ गुल

لاَ بِدْعَةَ مَعَهٗ حَتّٰى تُطْفِئَ بِعَدْلِهٖ نِيْرَانَ الْكَافِرِيْنَ فَاِنَّهٗ عَبْدُكَ

हो जाए बेशक वो तेरे बन्दे हैं जिन को तूने अपने लिए ख़ालिस किया है और तूने उन को पसंद किया है अपने

الَّذِيْ اسْتَخْلَصْتَهٗ لِنَفْسِكَ وَ ارْتَضَيْتَهٗ لِنَصْرِ دِيْنِكَ وَ

दीन की नूसरत के लिए और उन को मुन्ताख़िब किया है अपने इल्म के लिए और उनको महफ़ूज़ किया है

اصْطَفَيْتَهُ بِعِلْمِكَ وَ عَصَمْتَهُ مِنَ الذُّنُوبِ وَ بَرَّاتَهُ مِنَ

गुनाहों से और उनको बरी किया है ऐबों से और उनको ग़ैब से मुत्तेला किया हे और उनपर नेमत नाज़ल की

الْعُيُوبِ وَ اَطْلَعْتَهُ عَلَى الْغُيُوبِ وَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِ وَ طَهَّرْتَهُ

है और पाक रखा है गन्दगी से और पाकीज़ा बनाया है ख़राबी से ख़ुदाया उन पर दुरूद नाज़ल कर और उन

مِنَ الرِّجْسِ وَ نَقَّيْتَهُ مِنَ الدَّنَسِ اَللّٰهُمَّ فَصَلِّ عَلَيْهِ وَ عَلٰى

के आबा आइम्मए ताहेरीन (अ.स.) पर और उनके मुन्तिख़ब शियों पर और उनकी वो आरज़ूए पूरी करदे

اٰبَآئِهِ الْاَئِمَّةِ الطَّاهِرِيْنَ وَ عَلٰى شِيْعَتِهِ الْمُنْتَجَبِيْنَ وَ بَلِّغْهُمْ

जो वो आरज़ू रखते हैं और उस दुआ को हमारे लिए ख़ालिस हर शक व शुबा, रियाकारी और शोहरत तलबी

مِنْ اٰمَالِهِمْ مَا يَامُلُوْنَ وَ اجْعَلْ ذٰلِكَ مِنَّا خَالِصًا مِنْ كُلِّ

से पाकीज़ा क़रार दे दे ताके हम उसके साथ तेरे ग़ैर का इरादा न करें और उसके ज़रिए सिवाए तेरे किसी और

شَكٍّ وَ شُبْهَةٍ وَ رِيَآءٍ وَ سُمْعَةٍ حَتّٰى لَا نُرِيْدَ بِهِ غَيْرَكَ وَ لَا نَطْلُبَ

को तलब न करें ख़ुदाया मैं तेरी तरफ़ शिकायत करता हूँ अपने नबी के मफ़क़ूद होने, अपने इमाम के ग़ाएब

بِهِ اِلَّا وَجْهَكَ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَشْكُوْ اِلَيْكَ فَقْدَ نَبِيِّنَا وَ غَيْبَةَ

होने, ज़माने की शिद्दत की और फ़ितनों के वाक़े होने और दुश्मनों के अपने ऊपर ग़लबा, दुश्मनों की कसरत,

اِمَامِنَا وَ شِدَّةَ الزَّمَانِ عَلَيْنَا وَ وُقُوْعَ الْفِتَنِ بِنَا وَ تَظَاهُرَ

दोस्तोंकी ाक़िल्लत की ख़ुदाया तू जल्द फ़तह व कशाएश अपनी जानिब से उस ग़म से अता फ़र्मा और बा

الْاَعْدَاءِ عَلَيْنَا وَ كَثْرَةَ عَدُوِّنَا وَ قِلَّةَ عَدَدِنَا. اَللّٰهُمَّ فَافْرُجْ

इज़्ज़त मदद और इमामे आदिल का ज़ुहूर जल्द अता फ़र्मा। ऐ ख़ुदाए बरहक़ हमारी दुआ को क़ुबूल कर ले।

ذٰلِكَ عَنَّا بِفَتْحٍ مِنْكَ تُعَجِّلُهُ وَ نَصْرٍ مِنْكَ تُعِزُّهُ وَ اِمَامِ عَدْلٍ

ख़ुदाया मैं तुझ से सवाल करता हूँ के तू अपने वली को इजाज़त दे दे अपने बन्दों मे अपनी अदालत के ज़ाहिर

تُظْهِرُهُ اِلٰهَ الْحَقِّ اٰمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ اَنْ تَاْذَنَ لِوَلِيِّكَ فِيْ

करने की और अपने दुश्मनों के क़त्ल की अपने शहरों मे यहाँ तक वो ऐ परवरदिगार ज़ुल्म के लिए कोई

اِظْهَارِ عَدْلِكَ فِيْ عِبَادِكَ وَ قَتْلِ اَعْدَائِكَ فِيْ بِلَادِكَ حَتّٰى لَا

सुतून न छोड़ मगर ये के उस को दरहम बरहम कर दे और न किसी ज़ालिम को बाक़ी रख मगर उस को फ़ना

تَدَعَ لِلْجَوْرِ يَا رَبِّ دِعَامَةً اِلَّا قَصَمْتَهَا وَ لَا بَقِيَّةً اِلَّا اَفْنَيْتَهَا

कर दे और न किसी क़ुव्वत को मगर उसको नातवाँ कर दे और न किसी रूक्न को मगर उसको गिरा दे और

وَ لَا قُوَّةً اِلَّا اَوْهَنْتَهَا وَ لَا رُكْنًا اِلَّا هَدَمْتَهُ وَ لَا حَدًّا اِلَّا فَلَلْتَهُ

न किसी तलवार को मगर उसको कुन्द कर दे और किसी असलहे को मगर उस को बेकार कर दे और न

وَ لَا سِلَاحًا اِلَّا اَكْلَلْتَهُ وَ لَا رَايَةً اِلَّا نَكَّسْتَهَا وَ لَا شُجَاعًا اِلَّا

किसी परचम को मगर उस को सरनिगू कर दे और न किसी बहादुर को मगर उस को क़त्ल कर दे और न

قَتَلْتَهُ وَ لَا جَيْشًا اِلَّا خَذَلْتَهُ وَ ارْمِهِمْ يَا رَبِّ بِحَجَرِكَ الدَّامِغِ

किसी लश्कर वो मगर उस को रूसवा करदे ऐ मेरे परवरदिगार अपने अज़ाब के पत्थर से उनको मार दे और

وَ اضْرِبْهُمْ بِسَيْفِكَ الْقَاطِعِ وَ بَأْسِكَ الَّذِىْ لاَ تَرُدُّهُ عَنِ

अपनी शमशीर बुर्राँ से उनको जर्ब लगा और उस अज़ाब से जिसको मुजरिम क़ौमों से नही हटा सकते और

الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ وَ عَذِّبْ اَعْدَآئَكَ وَ اَعْدَاءَ وَلِيِّكَ وَ اَعْدَآءَ

अपने दुश्मनो और अपने वली के दुश्मनों और अपने रसूल के दुश्मनों को अजाअ दे (तेरा दुरूद हो उन पर

رَسُوْلِكَ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ بِيَدِ وَلِيِّكَ وَ اَيْدِىْ عِبَادِكَ

और उन की आल पर) अपने वली के हाथ से और अपने मोमिन बन्दों के हाथ से। ख़ुदाया तू काफ़ी हो जा

الْمُؤْمِنِيْنَ اَللّٰهُمَّ اكْفِ وَلِيَّكَ وَ حُجَّتَكَ فِىْ اَرْضِكَ هَوْلَ عَدُوِّهٖ

अपने वली और हुज्ज़त के लिए अपनी ज़मीन मे उनके दुश्मन के ख़ाफ़ से और जो उनके साथ मक्कारी का

وَ كَيْدَ مَنْ اَرَادَهُ وَ امْكُرْ بِمَنْ مَكَرَ بِهٖ وَ اجْعَلْ دَآئِرَةَ السَّوْءِ

इरादा करे और तू अपनी तकबीर कर जो उनके साथ मकर करे और हवादिसे बद को क़रार दे उस शख़्स पर

عَلٰى مَنْ اَرَادَ بِهٖ سُوْٓءً وَ اقْطَعْ عَنْهُ مَادَّتَهُمْ وَ اَرْعِبْ لَهٗ

जो उनके लिए बुराई का इरादा करे और उनके वजूद के माद्दे को मुनक़ता करदे और उनके दिलों मे वली का

قُلُوْبَهُمْ وَ زَلْزِلْ اَقْدَامُهُمْ وَ خُذْهُمْ جَهْرَةً وَ بَغْتَةً وَ شَدِّدْ

रोब डालदे और उनके क़दमो मे लगिज़श पैदा करदे और आशकारा व नागहानी उनको दस्ते क़हेर से पकड़

عَلَيْهِمْ عَذَابَكَ وَ اَخْزِهِمْ فِىْ عِبَادِكَ وَ الْعَنْهُمْ فِىْ بِلاَدِكَ وَ

ले और उनपर अपने अज़ाब को सख़्त कर दे और उनको अपने बन्दों मे रूस्वा करदे और उनपर लानत कर

اَسْكِنْهُمْ اَسْفَلَ نَارِكَ وَ اَحِطْ بِهِمْ اَشَدَّ عَذَابِكَ وَ اَصْلِهِمْ

अपने शहरों मे और उनको जहन्नमके बदतरीन तबके मे रख और उनपर अपना सख़्त तरीन अज़ाब नाज़ल

نَارًا وَ احْشُ قُبُوْرَ مَوْتَاهُمْ نَارًا وَ اَصْلِهِمْ حَرَّ نَارِكَ فَاِنَّهُمْ

कर और उनको जहन्नम मे डालदे और उनके मुरदों की क़ब्रों को आग से भरदे और उनको अपने जहन्नम की

اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَ اتَّبَعُوا الشَّهَوَاتِ وَ اَضَلُّوا عِبَادَكَ وَ

आग की गर्मा से मिला दे क्योंके उन्होने नमाज़ को बरबाद किया ख़्वाहिशात का इत्तेबा किया, तेरे बन्दों को

اَخْرَبُوْا بِلَادَكَ اَللّٰهُمَّ وَ اَحْيِ بِوَلِيِّكَ الْقُرْاٰنَ وَ اَرِنَا نُوْرَهٗ

गुमराह किया तेरे शहरों को ख़राब किया ख़ुदाया अपने वली के ज़रिए क़ुआर्न को ाज़िन्दा कर और हमको

سَرْمَدًا لَا لَيْلَ فِيْهِ وَ اَحْيِ بِهِ الْقُلُوْبَ الْمَيِّتَةَ وَ اشْفِ بِهِ

नूरे जमालसे मुन्वर फ़र्मा जो नूरे सरमदी है जिसके लिए रात नही और उनके ज़रिए मुर्दा दिलोंको ज़िन्दा कर

الصُّدُوْرَ الْوَغِرَةَ وَ اجْمَعْ بِهِ الْاَهْوَآءَ الْمُخْتَلِفَةَ عَلَى الْحَقِّ وَ اَقِمْ

और उनके ज़रिए ग़मज़दा दिलों को शिफ़ा दे और उनके ज़रिए मुख़्तलिफ़ नज़रयात वालों को हक़ पर जमा

بِهِ الْحُدُوْدَ الْمُعَطَّلَةَ وَ الْاَحْكَامَ الْمُهْمَلَةَ حَتّٰى لَا يَبْقٰى حَقٌّ اِلَّا

कर और उनके ज़रिए मोअत्तिल शुदा हुदूद को क़ाएम कर और मतरूक अहकाम को जारी कर यहाँ तक के

ظَهَرَ وَ لَا عَدْلٌ اِلَّا زَهَرَ وَ اجْعَلْنَا يَا رَبِّ مِنْ اَعْوَانِهِ وَ مُقَوِّيَةِ

कोई हक़ बाक़ी न रहे मगर ज़ाहिर हो जाए और न अद्ल बाक़ी रहे मगर ये के रौशन हो जाए और हम को ऐ

سُلْطَانِهٖ وَ الْمُؤْتَمِرِيْنَ لِاَمْرِهٖ وَ الرَّاضِيْنَ بِفِعْلِهٖ وَ الْمُسَلِّمِيْنَ

परवरदिगार उनके मददगारों और उनकी हुकूमत की ताक़तों और उनके हुक्म के फ़रमान बरदारों, उनके

لِاَحْكَامِهٖ وَ مِمَّنْ لَا حَاجَةَ بِهٖ اِلَى التَّقِيَّةِ مِنْ خَلْقِكَ وَ اَنْتَ يَا

काम पर राज़ी रहनेवालों और अहकाम के तसलीम करने वालों और उन लोगों मे जिन को तक़य्या की

رَبِّ الَّذِىْ تَكْشِفُ الضُّرَّ وَ تُجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاكَ وَ تُنْجِىْ

हाजत नही होती है क़रार दे दे और ऐ परवारदिगार बस तूही वो है जो हर तकलीफ़ को दूर करता है, मुज़तर

مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ فَاكْشِفِ الضُّرَّ عَنْ وَلِيِّكَ وَ اجْعَلْهُ

की दुआ सुनता है जब वो दुआ करे और सख़्त मुसीबत से नजात देता है पस अपने वली से ग़म को दूर करदे

خَلِيْفَةً فِىْ اَرْضِكَ كَمَا ضَمِنْتَ لَهٗ اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْنِىْ مِنْ

और उनको अपनी ज़मीन मे ख़ला०rफा बनादे जबके तू उन का ज़ामिन है। ख़ुदाया हमको आले मोहम्मद से

خُصَمَاۤءِ اٰلِ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَ لَا تَجْعَلْنِىْ مِنْ اَعْدَاۤءِ اٰلِ

निज़ा करने वालों मे न क़रार देना और हमको आले मोहम्मद (अ.स.) के दुश्मनो मे से न क़रार देना और

مُحَمَّدٍ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَ لَا تَجْعَلْنِىْ مِنْ اَهْلِ الْحَنَقِ وَ الْغَيْظِ

मुझको आले मोहम्मद (अ.स.) से कीना व ग़ुस्सा रखने वालों मे से न क़रार देना। मैं उस से तेरी पनाह का

عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ فَاِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ ذٰلِكَ فَاَعِذْ

तालिब हूँ, तू मुझको अपनी पनाह मे लेले और मैं तेरी निगरानी चाहता हूँ तू मेरा निगराँ होजा ख़ुदाया दुरूद

نِیْ وَ اَسْتَجِیْرُ بِكَ فَاَجِرْنِیْ اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ

नाज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.स.) पर और मुझको उनके ज़रिए अपने नज़दीक दुनिया व

اجْعَلْنِیْ بِهِمْ فَائِزًا عِنْدَكَ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ مِنَ

आख़िरत मे कामयाब बना और मुक़र्रा़बे बारगाह क़रार दे ऐ आलमीन के परवरदिगार मेरी दुआ को क़ुबूल

الْمُقَرَّبِیْنَ اٰمِیْنَ رَبَّ الْعَالَمِیْنَ.

फ़र्मा ले।

आठवां मतलब - आदाबे ज़ियारते नियाबत

रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) और आइम्मए हुदा (अ.स.) में हर एक की ज़ियारत का सवाब उनकी रूहे मुक़द्दस को हदिया किया जा सकता है और इस तरह किसी मोमिन की रूह को भी हदिया किया जा सकता है और उनकी नियाबत में ज़ियारत भी की जा सकती है जैसा के सनदे मोतबर के साथ मनक़ूल है के दाऊदे सलमी ने इमाम अली नक़ी (अ.स.) से अर्ज़ किया के मैंने आपके वालिद की ज़ियारत की है और उसका सवाब आपके लिए क़रार दिया है। फ़रमाया तुम्हारे लिए ख़ुदा की तरफ़ से अज्र और सवाबे अज़ीम है और तुम हमारी तरफ़ से क़ाबिले सना व तौसीफ़ हो।

दूसरी हदीस में मनक़ूल है के इमाम अली नक़ी (अ.स.) ने ख़ुद एक व्यक्ति को भेजा हरमे इमाम हुसैन (अ.स.) की तरफ़ ताके हज़रत के लिए ज़ियारत और दुआ करे और सनदे मोतबर के साथ इमाम मूसा बिन जाफ़र (अ.स.) से मनक़ूल है के जब ज़ियारते मरक़दे मुनव्वरे रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) के लिए जाओ और आमाले ज़ियारत से फ़ारिग हो जाओ तो दो रकत नमाज़ पढ़ो और सरहाने खड़े हो कर कहो:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللهِ مِنْ اَبِي وَاُمِّي وَزَوْجَتِي وَوَلَدِي وَحَامَّتِي

सलाम आप पर ऐ अल्लाह के नबी मेरे बाप, माँ, ज़ौजा, औलाद, आईज़्ज़ा और तमाम शहर वालों

وَمِنْ جَمِيعِ اَهْلِ بَلَدِي حُرِّهِمْ وَعَبْدِهِمْ وَاَبْيَضِهِمْ وَاَسْوَدِهِمْ

की तरफ़ से चाहे आज़ाद हों, या ग़ुलाम, चाहे सफ़ेद हों या काले।

तो इसके बाद उन अहले शहर ने जिस से भी कहोगे के मैंने तुम्हारी तरफ़ से रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) पर सलाम किया है तो तुम सच्चे ही रहोगे।
बाज़ रिवायात में वारिद है के बाज़ आइम्मए मासूमीन (अ.स.) से सवाल किया गया उस व्यक्ति के बारे में जो दो रकत नमाज़ पढ़े या एक दिन रोज़ा रखे या हज या उमरा करे या ज़ियारते आइम्मा करे और उसका सवाब अपने माँ बाप या बिरादरे मोमिन को हदिया कर दे। आया ख़ुद उसके लिए कोई सवाब है? फ़रमाया के उस अमल का सवाब उस व्यक्ति को यक़ीनन मिलेगा बग़ैर इसके के उसके सवाब में कोई कमी वाकेअ हो।
शेख़ तूसी (र.अ.) ने तहज़ीब में लिखा है के जो बिरादरे मोमिन की नियाबत में ज़ियारत के लिए उजरत लेकर जाए तो जब ग़ुस्ले ज़ियारत से या अमले ज़ियारत से फ़ारिग़ हो जाए तो यूँ कहे के:

اَللّٰهُمَّ مَا اَصَابَنِي مِنْ تَعَبٍ اَوْ نَصَبٍ اَوْ شَعَثٍ اَوْ لُغُوبٍ

ख़ुदाया मुझको जो भी रंज, सख़्ती या गर्दो ग़ुबार और ख़स्तगी पहुँची है तू फ़लाँ इब्ने फ़लाँ को

فَاْجُرْ ... فِيهِ وَاْجُرْنِي فِي قَضَائِي عَنْهُ

(जिन का मैं नाएब हूँ) उसका अज्र दे और मुझको भी उसकी बजा आवरी का अज्र दे।

उसके बाद जब ज़ियारत पढ़े तो आख़िरे ज़ियारत में यह कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَايَ عَنْ... اَتَيْتُكَ زَائِرًا عَنْهُ فَاشْفَعْ لَهُ

सलाम आप पर ऐ मेरे मौला फ़लाँ बिन फ़लाँ की तरफ़ से मैं आप की ज़ियारत को आया हूँ तो

عِنْدَ رَبِّكَ

आप इसके लिए ख़ुदाकी बारगाह मे शफ़ी हो जाएं

हज़रत ने यह भी फ़रमाया है के जब कोई व्यक्ति चाहे के दूसरे की नियाबत में ज़ियारत करे तो यूँ कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنَّ... اَوْفَدَنِي اِلٰى مَوَالِيهِ وَمَوَالِيَّ لِاَزُورَ عَنْهُ رَجَاءً

ख़ुदाया फोलॉ बिन फ़लाँ ने मुझको भेजा है मेरे और अपने मौला की बारगाह मे ताके मैं उसकी

لِجَزِيلِ الثَّوَابِ وَفِرَارًا مِنْ سُوءِ الْحِسَابِ اَللّٰهُمَّ اِنَّهُ يَتَوَجَّهُ

जान्बि से ज़ियारत करूँ ज़्यादा सवाब की उम्मीद के साथ और हिसाबकी ख़राबी से फ़रार करते हुए।

اِلَيْكَ بِاَوْلِيَائِكَ الدَّالِّينَ عَلَيْكَ فِي غُفْرَانِكَ ذُنُوبَهُ وَحَطِّ

ख़ुदाया वो तेरी तरफ़ मुतवज्ज़े है अपने उन औलिया के ज़रिए जो तेरी जानिब रहनुमा है अपने गुनाहों

سَيِّئَاتِهِ وَيَتَوَسَّلُ اِلَيْكَ بِهِمْ عِنْدَ مَشْهَدِ اِمَامِهِ صَلَوَاتُ

से तेरी बख़शिश के लिए और अपनी बुराईयों को ख़त्म करने के लिए और तेरी तरफ़ उनको वसीला

اللهِ عَلَيْهِ اَللّٰهُمَّ فَتَقَبَّلْ مِنْهُ وَاقْبَلْ شَفَاعَةَ اَوْلِيَائِهِ

बनाया है अपने इमाम (स) की क़ब्र के नज़दीक ख़ुदाया इस अमल को क़ुबूल कर ले और उसके

صَلَوَاتُ اللهِ عَلَيْهِمْ فِيهِ اَللّٰهُمَّ جَازِهِ عَلٰى حُسْنِ نِيَّتِهِ

औलिया (स) की शिफ़ाअत को क़ुबूल कर लेः ख़ुदाया उसको जज़ा दे उसकी नियत की अच्छाई

وَصَحِيحِ عَقِيدَتِهِ وَصِحَّةِ مُوَالَاتِهِ اَحْسَنَ مَا جَازَيْتَ اَحَدًا

की और उस के अक़ीदे की सेहत और मोहब्बत की सेहत की बेहतरीन जज़ा जो तूने अपने किसी

مِنْ عَبِيدِكَ الْمُؤْمِنِينَ وَادِمْ لَهُ مَا خَوَّلْتَهُ وَاسْتَعْمِلْهُ

मोमिन बन्दे को दी है और जो नेमत तूने उसको दी है उसे दाएमी क़रारदे और उस को जो दिया है उसे

صَالِحًا فِيمَا آتَيْتَهُ وَلَا تَجْعَلْنِي آخِرَ وَافِدٍ لَهُ يُوفِدُهُ اَللّٰهُمَّ اَعْتِقْ

अमले सालेह मे इस्तेमाल की तौफ़िक़ दे और मेरी ये आख़री ज़ियारत न क़रार दे। ख़ुदाया उसको

رَقَبَتَهُ مِنَ النَّارِ وَاَوْسِعْ عَلَيْهِ مِنْ رِزْقِكَ الْحَلَالِ الطَّيِّبِ

जहन्नम की आगसे आज़ाद करदे और उसके लिए अपना पाका०rजा हलाल रिज़्क़ वसी करदे और

وَاجْعَلْهُ مِنْ رُفَقَاءِ مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ لَهُ فِي وُلْدِهِ وَمَالِهِ

उस को मोहम्मद व आले मोहम्मद के दोस्तों मे क़रार दे और उसके माल, औलाद और अहेल और

وَاَهْلِهِ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُهُ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ

मिलकियत मे बरकत अता फ़र्मा। ख़ुदाया दुरूद निज़ल फ़र्मा मोहम्मद व आले मोहम्मद (अ.स.) पर

وَحُلْ بَيْنَهُ وَبَيْنَ مَعَاصِيكَ حَتّٰى لَا يَعْصِيَكَ وَاَعِنْهُ عَلٰى

और हाएल हो जा उसके और गुनाहों वे दरमियान ताके वो तेरी मासियत न करे और उस की मदद

طَاعَتِكَ وَطَاعَةِ اَوْلِيَائِكَ حَتّٰى لَا تَفْقِدَهُ حَيْثُ اَمَرْتَهُ وَلَا

कर अपनी इताअत पर ओर अपने औलिया की इताअत पर ताके जब तू हुक्म दे तो वो ग़ाएब न हो

تَرَاهُ حَيْثُ نَهَيْتَهُ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاغْفِرْ لَهُ

और जब तू उसको रोके तो वो हाज़र न हो। ख़ुदाया दुरूद नाज़ल फ़रमा मोहम्म्द व आले मोहम्मद

وَارْحَمْهُ وَاعْفُ عَنْهُ وَعَنْ جَمِيعِ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ

पर और उसको बख़्श दे और उस पर रहेम कर और माफ़ कर द और तमाम मोमिनीन, मोमि-नात

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاَعِذْهُ مِنْ هَوْلِ الْمُطَّلَعِ

को माफ़ करदे। ख़ुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और उसको बचा ले मौत

وَمِنْ فَزَعِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَسُوءِ الْمُنْقَلَبِ وَمِنْ ظُلْمَةِ الْقَبْرِ

की वहशत और रोज़े क़यामत के ख़ाफ़ और बरीए बाज़गश्त और क़ब्र की तारीकी और वहशत से

وَوَحْشَتِهِ وَمِنْ مَوَاقِفِ الْخِزْيِ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ اَللّٰهُمَّ

और दुनिया व आख़िरत मे रूसवाई के मक़ामात से। ख़ुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاجْعَلْ جَائِزَتَهُ فِي مَوْقِفِي هٰذَا

मोहम्म्द पर और उसका इनाम मेरे उस मौक़ूफ मे अपनी बख़्शीश क़रार दे और उसको तोहफ़ा इस

غُفْرَانَكَ وَتُحْفَتَهُ فِي مَقَامِي هٰذَا عِنْدَ إِمَامِي صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ

मक़ाम मे मेरे इमाम (स) के नज़दीक ये क़रार दे के उसकी लगिज़श से दरगुज़र कर और उसकी

انْ تُقِيلَ عَثْرَتَهُ وَتَقْبَلَ مَعْذِرَتَهُ وَتَتَجَاوَزَ عَنْ خَطِيئَتِهِ

माज़ेरत को क़ुबूल कर और उसकी ख़ता को माफ़ कर और तक़्वे को ज़ाद बना दे ओर जो तेरे

وَتَجْعَلَ التَّقْوىٰ زَادَهُ وَمَا عِنْدَكَ خَيْرًا لَهُ فِي مَعَادِهِ وَتَحْشُرَهُ

पास है उसको बेहतर बना दे उस के माद के लिए और उस को मोहम्मद व आले मोहम्मद के ज़ुमरे

فِي زُمْرَةِ مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَتَغْفِرَ لَهُ

मे महशूर कर (ख़ुदा का दुरूद हो उनपर और उन की आल पर) और उसको और उसके वालेदैन

وَلِوَالِدَيْهِ فَإِنَّكَ خَيْرُ مَرْغُوبٍ إِلَيْهِ وَاكْرَمُ مَسْؤُولٍ اعْتَمَدَ

को बख़्श दे। तू वो बेहतरीन ज़ात है जिसकी तरफ़ रग़बत होती है और वो करीम है जिससे सवाल

الْعِبَادُ عَلَيْهِ اَللّٰهُمَّ وَلِكُلِّ مُوفِدٍ جَائِزَةٌ وَلِكُلِّ زَائِرٍ كَرَامَةٌ

किया जाए और जिस पर बन्दों का एतेमाद है। ख़ुदाया हर आने वाले के लिए इनाम है और हर ज़ाएर

فَاجْعَلْ جَائِزَتَهُ فِي مَوْقِفِي هٰذَا غُفْرَانَكَ وَالْجَنَّةَ لَهُ وَلِجَمِيعِ

के लिए करारमत है तू उसका इनाम मेरे इस मौक़ूफ़ मे अपनी बख़्शिश को क़रार दे और उसके

الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ اَللّٰهُمَّ وَانَا عَبْدُكَ الْخَاطِئُ الْمُذْنِبُ

लिए जन्नत क़रार दे और तमाम मोमिनीन व मोमिनात के लिए ख़ुदाया मैं तेरा ख़ताकार, गुनहगार,

الْمُقِرُّ بِذُنُوبِهِ فَاسْأَلُكَ يَا اللهُ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ انْ لَا

इक़रार करनेवाला बंदा हूँ। मैं तुझ से सवाल करता हूँ ऐ ख़ुदा मोहम्मद व आले मोहम्मद के हक़

تَحْرِمَنِي بَعْدَ ذٰلِكَ الاجْرَ وَالثَّوَابَ مِنْ فَضْلِ عَطَائِكَ وَكَرَمِ

के वास्तेसे के तू मुझको उसके बाद अज्र व सवाब से महरूम न करना अपने फ़ज्ल व अता व कर्म

تَفَضُّلِكَ

व तफ़ज़्ज़ुलसे।

उसके बाद ज़रीहे मुक़द्दस के पास जाए और अपने हाथों को आसमान की तरफ़ बुलंद कर के रू ब क़िबला यह कहे:

يَا مَوْلَايَ يَا إِمَامِي عَبْدُكَ... اوْفَدَنِي زَائِرًا لِمَشْهَدِكَ يَتَقَرَّبُ

ऐ मेरे आक़ा, ऐ इमाम आपके ग़ुलाम फ़ुलाँ बिन फ़ुलाँ ने मुझ को आप की क़ब्र का ज़ाएर बना कर भेजा

إِلَى اللهِ عَزَّ وَجَلَّ بِذٰلِكَ وَإِلَى رَسُولِهِ وَإِلَيْكَ يَرْجُو بِذٰلِكَ

है और वो उस के ज़रिए ख़ुदासे क़ुर्ब का तालिब है और अपने रसूल और आपकी क़ुर्बत का तालिब

فَكَاكَ رَقَبَتِهِ مِنَ النَّارِ مِنَ الْعُقُوبَةِ فَاغْفِرْ لَهُ وَلِجَمِيعِ

है। वो उसके ज़रिए जहन्नम की आग की सज़ा से गर्दन को आज़ाद कराने की उम्मीद करता है तू उसको

الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَا اللهُ يَا اللهُ يَا اللهُ يَا اللهُ يَا اللهُ يَا اللهُ يَا

बख़्श दे और तमाम मोमिनीन व मोमिनात को बख़्शदे ऐ अल्लाह, ऐ अल्लाह, ऐ अल्लाह, ऐ अल्लाह, ऐ

اَللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيمُ الْكَرِيمُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ

अल्लाह, ऐ अल्लाह जिसके अलावा कोई माबूद नही है। वो बुर्दबार व करीम है। कोई माबूद नही है सिवाए

اَسْاَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَتَسْتَجِيبَ لِي فِيهِ وَفِي

ख़ुदाए अज़ीम व बरतर के मैं तुझ से सवाल करता हूँ के दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहमद पर

جَمِيعِ اِخْوَانِي وَاَخَوَاتِي وَوَلَدِي وَاَهْلِي بِجُودِكَ وَكَرَمِكَ يَا اَرْحَمَ

और मेरी दुआ उनके बारे मे और तमाम भाई बहनों और औलाद के बारे मे और अहेल के बारे मे क़ुबूल

الرَّاحِمِينَ

कर ले अपने जूदो करम से ऐ सब से ज़्यादा रहेम करने वाले।

मुलहिक़ाते दुव्वम मफ़ातीहुल जिनान

वाज़ेह रहे के यह नुसख़ए शरीफ़ा अपने खत अपनी तबाअत और सेहत के एतेबार से तमाम नुसख़ों से इम्तेयाज़ रखता है। लेकिन इसके मुसन्निफ़ ने मफ़ातीह में चंद दुआओं को तूल की बिना पर मुकम्मल नक़्ल नही किया है और उनके आगाज़ को ज़िक्र कर के बाक़ी को ज़िक्र नही किया है। लेहाज़ा हम इस मक़ाम पर उस बकिया को भी ज़िक्र किए दे रहे हैं ताके जो लोग इस किताब को रखते हैं वह किसी दूसरी किताब के मोहताज न रहें और चूंके मफ़ातीह में इमाम ज़ादों के लिए कोई ज़ियारत नक़्ल नहीं की गई हैं लेहाज़ा इस मक़ाम पर एक ज़ियारत इमामज़ादों के लिए भी नक़्ल किये दे रहे हैं। उम्मीद हे के अहले मारेफ़त के लिए मंज़ूरे नज़र वाक़ेअ होगी और वह फ़ज़्ल को जानकर लेखक व कातिब और बानीए तबाअत का शुक्रिया अदा करेंगे और अल्लाही ताफ़ीक़ देने वाला है। दुआओं में पहली दुआ नमाज़े हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) है जिसका आगाज़ मफ़ातीह में पृष्ठ १४७ (जिल्द १) पर ज़िक्र

किया गया और बाक़ी दुआ यह है:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الَّذِى اسْتَجَبْتَ لِاٰدَمَ وَحَوَّاءَ اِذْ قَالَا «رَبَّنَا

ख़ुदाया तू ही वो है जिसने आदम व हव्वा की दुआ को क़ुबूल कि जब उन्होनें कहा के हमारे परवरदिगार

ظَلَمْنَا اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ

हमने अपने ऊपर ज़ुल्म किया है और अगर तू हम को नही बख़्शेगा और नही रहेम करेगा तो हम घाटा

الْخَاسِرِينَ.» وَنَادَاكَ نُوحٌ فَاسْتَجَبْتَ لَهُ وَنَجَّيْتَهُ وَاَهْلَهُ مِنَ

उठाने वालों मे से हो जाएगें और तुझ को जनाबे नूह (अ.स.) ने पुकारा तो तूने क़ुबूल किया और उनको

الْكَرْبِ الْعَظِيمِ وَاَطْفَأْتَ نَارَ نُمْرُودَ عَنْ خَلِيلِكَ اِبْرَاهِيمَ

उन के अहेल के साथ अज़ीम मुसीबत से नजात दे दी और तूने ही नारे नमरूदी को अपने ख़लील इब्राहीम

فَجَعَلْتَهَا بَرْدًا وَسَلَامًا وَاَنْتَ الَّذِى اسْتَجَبْتَ لِاَيُّوبَ اِذْ نَادَىٰ

(अ.स.) के लिए गुलज़ार किया और उसे ठंडी और सलामती का ज़रिए बनाया और तू ही वो ख़ुदा है

«اِنِّى مَسَّنِىَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ.» فَكَشَفْتَ مَا بِهِ مِنْ

जिस ने अय्यूब की दुआ क़ुबूल की जब उन्होंने पुकारा के ख़ुदाया मुझको सख़्त तकला◌ा◌ूफ है और तू

ضُرٍّ وَآتَيْتَهُ اَهْلَهُ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً مِنْ عِنْدِكَ وَذِكْرَىٰ

सबसे ज़्यादा रहेम करने वाला है तो तूने उनकी तकला◌ा◌ूफ को दूर कर दिया और उनको उनके अहेल

لِأُولِى الاَلْبَابِ وَانْتَ الَّذِى اسْتَجَبْتَ لِذِى النُّونِ حِينَ

के अलावा ओर भी नेमतें अपने पास से इनायत कर दीं जो तेरी रहमत और अक़्लमंदो के लिए नसीहत

نَادَاكَ فِى الظُّلُمَاتِ انْ لَا اِلٰهَ اِلَّا انْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّى كُنْتُ مِنَ

का ज़रिए है और तू ही वो ख़ुदा है जिसने ज़ुवल नून की दुआ क़ुबूल की जब उन्हाने तुझको तारीकियों मे

الظَّالِمِينَ فَنَجَّيْتَهُ مِنَ الغَمِّ وَانْتَ الَّذِى اسْتَجَبْتَ لِمُوسَىٰ

पुकारा के कोई ख़ुदा नही है तेरे अलावा तू पाक है मैं ज़ुल्म करनेवालों मे से हूँ तो तूने नजात दे दी उनको

وَهَارُونَ دَعْوَتَهُمَا حِينَ قُلْتَ «قَدْ اُجِيبَتْ دَعْوَتُكُمَا

ग़मसे और तू ही वो ख़ुदा है जिसने जनाबे मूसा (अ.स.) व हारून (अ.स.) की दुआओं को क़ुबूल किया

فَاسْتَقِيمَا.» وَاغْرَقْتَ فِرْعَوْنَ وَقَوْمَهُ وَغَفَرْتَ لِدَاوُدَ ذَنْبَهُ

जब तुने कहा के तुम्हारी दुआएं क़ुबूल कर ली गई हैं लेहाज़ा राहे मुस्तक़ीम पर साबित क़दम रहो और तूने

وَتُبْتَ عَلَيْهِ رَحْمَةً مِنْكَ وَذِكْرَىٰ وَفَدَيْتَ اِسْمَاعِيلَ بِذِبْحٍ

ही फ़िरऔन और उस की क़ौम को ग़र्क किया और तूने ही दाऊद के तरके ऊला को बख़्शा और तूने ही

عَظِيمٍ بَعْدَمَا اسْلَمَ وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ فَنَادَيْتَهُ بِالْفَرَجِ وَالرَّوْحِ

अपनी रहमत से उनकी तौबा को क़ुबूल किया ताके वे याद करते रहें और तू ने ही जनाबे इस्माईल के लिए

وَانْتَ الَّذِى نَادَاكَ زَكَرِيَّا نِدَاءً خَفِيًّا فَقَالَ «رَبِّ اِنِّى وَهَنَ

ज़िब्हे अज़ीम का फ़िदया क़रार दिया जब उन्होंने सर तसलीमे ख़म किया और पेशानी ज़मीन पर क़ुर्बानी

الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَعَلَ الرَّأْسُ شَيْبًا وَلَمْ اَكُنْ بِدُعَائِكَ رَبِّ

के लिए रख दी तो तू ने उनको कुशादगी और राहत दी और तू ही वो है जिसको ज़करया ने पोशीदा तौर पर

شَقِيًّا. «وَقُلْتَ «يَدْعُونَنَا رَغَبًا وَرَهَبًا وَكَانُوا لَنَا خَاشِعِينَ.»

समीमे क़ल्बसे पूकारा परवर-दिगार मेरी हि·याँ कमज़ोर हो गईं और बुढ़ापा सर पर चमकने लगा लेकिन

وَانْتَ الَّذِى اسْتَجَبْتَ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

तुझ से दुआ करने से महरूम नही हूँ ऐ परवरदिगार और तूने कहा के वो हमसे रग़बत व ख़ाफ़ के साथ

لِتَزِيدَهُمْ مِنْ فَضْلِكَ فَلَا تَجْعَلْنِى مِنْ اَهْوَنِ الدَّاعِينَ لَكَ

दुआ कर रहे थे और वो हमारी बारगाह मे ख़ुज़ू व ख़ुशू के साथ आए थे और तूने ही उन लोगों की दुआ

وَالرَّاغِبِينَ اِلَيْكَ وَاسْتَجِبْ لِى كَمَا اسْتَجَبْتَ لَهُمْ بِحَقِّهِمْ

क़ुबूल की जो ईमान लाए और अमले सालेह बजा लाए ता के तु उनमे अपने फ़ज़्ल से इज़ाफ़ा कर दे पस

عَلَيْكَ فَطَهِّرْنِى بِتَطْهِيرِكَ وَتَقَبَّلْ صَلَاتِى وَدُعَائِى بِقَبُولٍ

तू मुझको उन मे से न क़रार देना जो तुझ से दुआ करने और तेरी जानिब रग़बत रखने मे सबसे कमज़ोर हैं

حَسَنٍ وَطَيِّبْ بَقِيَّةَ حَيَاتِى وَطَيِّبْ وَفَاتِى وَاخْلُفْنِى فِيمَنْ

और मेरी दुआ क़ुबूल कर ले जैसे तूने उनकी दुआ क़ुबूल की उनके उस हक़ की वजह से जो तुझ पर है

اَخْلُفُ وَاحْفَظْنِى يَا رَبِّ بِدُعَائِى وَاجْعَلْ ذُرِّيَّتِى ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً

पस तू मुझको पाक करदे उनकी तहारत की वजह से और मेरी नमाज़ और दुआओं को बेहतरीन तरीके पर

تَحُوطُهَا بِحِيَاطَتِكَ بِكُلِّ مَا حُطْتَ بِهِ ذُرِّيَّةَ اَحَدٍ مِنْ اَوْلِيَائِكَ

क़ुबूल करले और मेरी बिक़्या ज़िन्दगी को पाक कर दे और मेरी मौत को पाक कर दे और मेरे अख़लाक़

وَاَهْلِ طَاعَتِكَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ يَا مَنْ هُوَ عَلٰى كُلِّ

का तू निगराँ होजा और ऐ परवर-दिगार मेरी दुआ के तुफ़ैल मुझ को महफ़ूज़ रख और मेरी ज़ुररीयत को

شَيْءٍ رَقِيبٌ وَلِكُلِّ دَاعٍ مِنْ خَلْقِكَ مُجِيبٌ وَمِنْ كُلِّ سَائِلٍ

पाका०rजा क़रार दे तू उनको इस तरह महफ़ूज़ रख जैसे अपने वलीयों और इताअत गुज़ारों मे से किसी

قَرِيبٌ اَسْاَلُكَ يَا لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ الْاَحَدُ الصَّمَدُ

एक की ज़ुर्यित की हिफ़ाज़त की है (अपनी रहमत से ऐ सब से ज़्यादा रहेम करनेवाले) ऐ वो ज़ात जो हर

الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا اَحَدٌ وَبِكُلِّ اسْمٍ

चा०rज की निगेहबान है और अपनी मख़लूक मे से हर पुकारनेवाले की आवाज़ पर लब्बैक कहनेवाला है

رَفَعْتَ بِهِ سَمَاءَكَ وَفَرَشْتَ بِهِ اَرْضَكَ وَاَرْسَيْتَ بِهِ الْجِبَالَ

और हर सवाल करनेवाले के क़रीबतर है। मैं तुझसे सवाल करता हूँ ऐ ख़ुदा तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही

وَاَجْرَيْتَ بِهِ الْمَاءَ وَسَخَّرْتَ بِهِ السَّحَابَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ

है। तू ज़िन्दा है पाइन्दा है एक है, बेनियाज़ है। न तेरा कोई बाप है न बेटा और न उसके लिए कोई हमसर

وَالنُّجُومَ وَاللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَخَلَقْتَ الْخَلَائِقَ كُلَّهَا اَسْاَلُكَ

है और हर उस नाम के वास्ते से जिसके ज़रिए तूने अपने आसमान को बुलंद किया है और अपनी ज़मीन

بِعَظَمَةِ وَجْهِكَ الْعَظِيمِ الَّذِى اَشْرَقَتْ لَهُ السَّمَاوَاتُ

का फ़र्श लगाया है और पहाड़ों को गाड़ दिया है और पानी को बहाया है और मुसख़्ख़र किया; सूरज, चाँद,

وَالاَرْضُ فَاضَاءَتْ بِهِ الظُّلُمَاتُ اِلَّا صَلَّيْتَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ

सितारों और रात दिन को और तमाम मख़लूक को पैदा किया मैं तुझसे सवाल करता हूँ तेरी अज़ीम ज़ात

مُحَمَّدٍ وَ كَفَيْتَنِى اَمْرَ مَعَاشِى وَمَعَادِى وَاَصْلَحْتَ لِى شَاْنِى كُلَّهُ

की अज़मत के वास्ते से जिसकी वजह से आसमान व ज़मीन को रौशन किया जिससे तारीकियाँ छुट गईं

وَلَمْ تَكِلْنِى اِلٰى نَفْسِى طَرْفَةَ عَيْنٍ وَاَصْلَحْتَ اَمْرِى وَاَمْرَ

के मोहम्मद व आले मोहम्मद पर दुरूद नाज़ल फ़र्मा और तू मेरे उमूरे मआश व मआद मे काफ़ी हो जा

عِيَالِى وَ كَفَيْتَنِى هَمَّهُمْ وَاَغْنَيْتَنِى وَاِيَّاهُمْ مِنْ كَنْزِكَ

और मेरी मुकम्मल हालत की इस्लाह कर और मुझको पलक झपकने भर के लिए भी ख़ुद पर न छोड़ना

وَخَزَائِنِكَ وَسَعَةِ فَضْلِكَ الَّذِى لَا يَنْفَدُ اَبَدًا وَاَثْبِتْ فِى قَلْبِى

और मेरे अम्र और मेरे अयाल के अम्र की इस्लाह कर और मेरे लिए उन्के ग़मो मे काफ़ी होजा और तू

يَنَابِيعَ الْحِكْمَةِ الَّتِى تَنْفَعُنِى بِهَا وَتَنْفَعُ بِهَا مَنِ ارْتَضَيْتَ مِنْ

मुझको और उनको ग़नी बनादे अपने ख़ज़ाने और माल से और वुसअते फ़ज़्ल से जो कभी ख़त्म नही

عِبَادِكَ وَاجْعَلْ لِى مِنَ الْمُتَّقِينَ فِى آخِرِ الزَّمَانِ اِمَامًا كَمَا

होता है और मेरे दिल मे हिकमत के चश्मे मुस्तहकम करदे जिसके ज़रिए तू मुझको नफ़ा दे और उसको

جَعَلْتَ اِبْرَاهِيمَ الْخَلِيلَ اِمَامًا فَاِنَّ بِتَوْفِيقِكَ يَفُوزُ

जिसको अपने बन्दे मे से तू पसंद करे और मुत्तक़ीन मे से क़रार दे आख़िर ज़माना मे एक इमाम जैसा के

الْفَائِزُونَ وَيَتُوبُ التَّائِبُونَ وَيَعْبُدُكَ الْعَابِدُونَ

तूने इब्राहीम ख़लील को इमाम बनाया था इस लिए के तेरी तौफ़ीक़ के ज़रिए कामयाब होने वाले कामयाब

وَبِتَسْدِيدِكَ يَصْلُحُ الصَّالِحُونَ الْمُحْسِنُونَ الْمُخْبِتُونَ

होते हैं और तौबा करनेवालां की तौबा क़ुबूल होती है और इबादत करनेवाले तेरी इबादत करते हैं और

الْعَابِدُونَ لَكَ الْخَائِفُونَ مِنْكَ وَبِإِرْشَادِكَ نَجَا النَّاجُونَ مِنْ

तेरी ताईद से सालेह, नेक और पोशीदा इबादत करनेवाले और तुझ से डरनेवाले सालेह होते हैं और तेरी

نَارِكَ وَاَشْفَقَ مِنْهَا الْمُشْفِقُونَ مِنْ خَلْقِكَ وَبِخِذْلَانِكَ خَسِرَ

हिदायत से नजातवालां ने तेरे जहन्नम से नजात पाई और उससे डरनेवाले डरे तेरी मख़लूक़ मे से और तेरे

الْمُبْطِلُونَ وَهَلَكَ الظَّالِمُونَ وَغَفَلَ الْغَافِلُونَ اَللّٰهُمَّ آتِ

नज़र अंदाज़ करने के सबब बातिल परस घाटे मे रहे और ज़ालिम हलाक हुए और ग़ाफ़ल ग़फ़लत मे पड़े

نَفْسِي تَقْوَاهَا فَاَنْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلَاهَا وَاَنْتَ خَيْرُ مَنْ زَكَّاهَا

रहे। ख़ुदाया मुझको नफ़स का तक़वा अता फ़र्मा तू ही उसका मालिक व मौला है और तू वो बेहतरीन ज़ात

اَللّٰهُمَّ بَيِّنْ لَهَا هُدَاهَا وَاَلْهِمْهَا تَقْوَاهَا وَبَشِّرْهَا بِرَحْمَتِكَ

है जिसने उसको पाका◌rजा बनाया है। ख़ुदाया नफ़्स की हिदायत को वाज़ेह करदे और उसको तक़वे का

حِينَ تَتَوَفَّاهَا وَنَزِّلْهَا مِنَ الْجِنَانِ عُلْيَاهَا وَطَيِّبْ وَفَاتَهَا

इलहाम करदे और उस को रहमत की बशारत दे दे मौत के वक़्त और जन्नते आला मे उसको नाज़ल कर,

وَمَحْيَاهَا وَاكْرِمْ مُنْقَلَبَهَا وَمَثْوَاهَا وَمُسْتَقَرَّهَا وَمَاوَاهَا

उसकी वफ़ात व हयात को पाकीज़ा कर और उस की बाज़ गश्त मक़ाम व मसकन, करारगाह का कर्म से

فَانْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلَاهَا

नवाज़ दे। तू ही उसका वली और मौला है।

दूसरी दुआ: वह दुआ जो इमामे जवाद (अ.स.) की ज़ियारत के बाद पढ़ी जाती है

उसके बाद मालिक से अपनी हाजतें तलब करे के इन्शाअल्लाह पूरी होंगी।

اَللّٰهُمَّ انْتَ الرَّبُّ وَانَا الْمَرْبُوبُ وَانْتَ الْخَالِقُ وَانَا الْمَخْلُوقُ وَانْتَ

ख़ुदाया तू रब है और मैं तरतीब शुदा और तू ख़ालिक है मैं मख़लूक हूँ और तू मालिक है और मैं बन्दा

الْمَالِكُ وَانَا الْمَمْلُوكُ وَانْتَ الْمُعْطِي وَانَا السَّائِلُ وَانْتَ الرَّازِقُ

हूँ और तू अता करनेवाला है और मैं साएल और तू तो रिज़्क़ देनेवाला और मैं रोज़ी लेनेवला और तू

وَانَا الْمَرْزُوقُ وَانْتَ الْقَادِرُ وَانَا الْعَاجِزُ وَانْتَ الْقَوِيُّ وَانَا

क़ादिर है और मैं आजिज़ और तू ताक़त वर है और मैं कमज़ोर और तू फ़रयाद रस है और मे फ़रयाद

الضَّعِيفُ وَانْتَ الْمُغِيثُ وَانَا الْمُسْتَغِيثُ وَانْتَ الدَّائِمُ وَانَا

करनेवाला और तू हमेशा रहनेवाला है और मैं मिटनेवाला हूँ और तू कबीर है और मैं हक़ीर और तू

الزَّائِلُ وَانْتَ الْكَبِيرُ وَانَا الْحَقِيرُ وَانْتَ الْعَظِيمُ وَانَا الصَّغِيرُ

अज़ीम है और मे कमतरीन और तू मौला है और मैं ग़ुलाम और तू अज़ा०rज है और मैं ज़लील और तू

وَانْتَ الْمَوْلَى وَانَا الْعَبْدُ وَانْتَ الْعَزِيزُ وَانَا الذَّلِيلُ وَانْتَ الرَّفِيعُ

बुलंद है और मैं पस्त और तू तदबीर करनवाला है और मैं तदबीर किया हुआ हूँ और तू बाक़ी है और

وَانَا الْوَضِيعُ وَانْتَ الْمُدَبِّرُ وَانَا الْمُدَبَّرُ وَانْتَ الْبَاقِي وَانَا الْفَانِي

मैं फ़ानी और तू जज़ा देनेवाला है और मैं जज़ा लेनेवाला और तू उठाने वाला हे और मैं उठाया हुआ

وَانْتَ الدَّيَّانُ وَانَا الْمُدَانُ وَانْتَ الْبَاعِثُ وَانَا الْمَبْعُوثُ وَانْتَ

और तू मालदार है और मैं फ़क़ीर और तू ज़िन्दा है और मैं मुर्दा। तू अज़ाब के लिए मेरे अलावा भी

الْغَنِيُّ وَانَا الْفَقِيرُ وَانْتَ الْحَيُّ وَانَا الْمَيِّتُ تَجِدُ مَنْ تُعَذِّبُ يَا رَبِّ

अफ़राद पा सकता है लेकिन मैं रहम करनेवाला तेरे अलावा कोई नही पाता हूँ। ख़ुदाया दुरूद नाज़ल

غَيْرِي وَلَا اجِدُ مَنْ يَرْحَمُنِي غَيْرُكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ

कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर और उनकी सलतनत को क़रीब कर और अपने सामने मेरी ाज़िल्लत

وَقَرِّبْ فَرَجَهُمْ وَارْحَمْ ذُلِّي بَيْنَ يَدَيْكَ وَتَضَرُّعِي اِلَيْكَ وَوَحْشَتِي

पर रहेम कर और अपनी तरफ़ तज़र्रो पर और लोगों से वहशत और तुझ से उन्स पर ऐ करमवाले ख़ुदा

مِنَ النَّاسِ وَاُنْسِي بِكَ يَا كَرِيمُ ثُمَّ تَصَدَّقْ عَلَيَّ فِي هٰذِهِ السَّاعَةِ

मेरे ऊपर इसी वक़्त अपनी तरफ़से रहमत भेज ताके उसके ज़रिए मेरे क़ल्ब की हिदायत करदे और मेरे

بِرَحْمَةٍ مِنْ عِنْدِكَ تَهْدِي بِهَا قَلْبِي وَتَجْمَعُ بِهَا اَمْرِي وَتَلُمُّ بِهَا شَعَثِي

अम्र को जमा करदे और मेरे इन्तेशार को इजमा मे बदल दे और मेरे चेहरे को नूरानी करदे और मेरी

وَتُبَيِّضُ بِهَا وَجْهِي وَتُكْرِمُ بِهَا مَقَامِي وَتَحُطُّ بِهَا عَنِّي وِزْرِي وَتَغْفِرُ

जगह को मुकर्रम करदे और मुझ से मेरा बोझ उतार ले और मेरे गुज़श्ता गुनाहों को बख़्श दे और मेरी

بِهَا مَا مَضٰى مِنْ ذُنُوبِي وَتَعْصِمُنِي فِي مَا بَقِيَ مِنْ عُمْرِي وَتَسْتَعْمِلُنِي

बक़ीया उम्र मे मुझ को महपूज़ करदे और मेरे आमाल का ख़ात्मा अच्छा कर और उसका सवाब मेरे

فِي ذٰلِكَ كُلِّهِ بِطَاعَتِكَ وَمَا يُرْضِيكَ عَنِّي وَتَخْتِمُ عَمَلِي بِاَحْسَنِهِ

लिए जन्नत क़रार दे दे और मुझको सालेहीन के रास्ते पर चला दे और मेरी मदद कर उस नेक चीज पर

وَتَجْعَلُ لِي ثَوَابَهُ الْجَنَّةَ وَتَسْلُكُ بِي سَبِيلَ الصَّالِحِينَ وَتُعِينُنِي عَلٰى

जिसको तूने मुझे अता किया है जिस तरह के तूने सालेहीन की एआनत की है उस नेक चीज़ पर जो तूने

صَالِحِ مَا اَعْطَيْتَنِي كَمَا اَعَنْتَ الصَّالِحِينَ عَلٰى صَالِحِ مَا اَعْطَيْتَهُمْ

उन को अता की है और मुझ से नेक अम्र को कभी न ख़त्म करना और उस बुराई मे न डाल देना जिस

وَلَا تَنْزَعْ مِنِّي صَالِحًا اَعْطَيْتَنِيهِ اَبَدًا وَلَا تَرُدَّنِي فِي سُوءٍ اسْتَنْقَذْتَنِي

से तूने मुझको हमेश नजात दी है और मुझको दुश्मन और हासिद की शमातत मे गिरफ़तार न करना

مِنْهُ اَبَدًا وَلَا تُشْمِتْ بِي عَدُوًّا وَلَا حَاسِدًا اَبَدًا وَلَا تَكِلْنِي اِلٰى نَفْسِي

और पलक झपकने भर के लिए मुझको अपने ऊपर न छोड़ देना और न उस से कम और न उस से

طَرْفَةَ عَيْنٍ اَبَدًا وَلَا اَقَلَّ مِنْ ذٰلِكَ وَلَا اَكْثَرَ يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ اَللّٰهُمَّ

ज़्यादा के लिए। ऐ आलमीन के पालनेवाले। ख़ुदाया दुरूद नाज़ल कर मोहम्मद व आले मोहम्मद पर

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاَرِنِي الْحَقَّ حَقًّا فَاَتَّبِعَهُ وَالْبَاطِلَ بَاطِلًا

और मुझे हक़ को हक़ीक़त की तरह दिखा दे ता के मैं उस का इत्तेबा करूँ और बातिल को बातिल की

فَاَجْتَنِبَهُ وَلَا تَجْعَلْهُ عَلَيَّ مُتَشَابِهًا فَاَتَّبِعَ هَوَايَ بِغَيْرِ هُدًى مِنْكَ

तरह दिखा दे ताके मैं उससे परहेज़ करू और उसको मुझ पर मुश्तबह न करना के अपनी ख़्वाहिश की

وَاجْعَلْ هَوَايَ تَبَعًا لِطَاعَتِكَ وَخُذْ رِضَا نَفْسِكَ مِنْ نَفْسِي وَاهْدِنِي

पैरवी करूँ बग़ैर तेरी हिदायत के और मेरी ख़्वाहिश को अपनी इताअत का ताबे बना दे और अपनी

لِمَا اخْتُلِفَ فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِكَ اِنَّكَ تَهْدِي مَنْ تَشَاءُ اِلٰى صِرَاطٍ

रज़ा को मेरे नफ़्स मे क़रार दे दे और मेरी हिदायत फ़र्मा जब भी हक के बारे मे कोई इख़्तेलाफ़ हो जाए

مُسْتَقِيمٍ

अपने लुत्फ़ व करम से। बेशक तू जिस की चाहे सिराते मुस्तक़ीम की तरफ़ हिदायत करता है।

दूसरी ज़ियारते इमाम जवाद (अ.स.)

اَلسَّلَامُ عَلَى الْبَابِ الاَقْصَدِ وَالطَّرِيْقِ الْاَرْشَدِ وَ الْعَالِمِ الْمُؤَيَّدِ

सलाम उस दरवाज़े पर जो मक़सदे मख़लूक़ है और बेहतरीन राहे हिदायत है और उस आलम पर जिसकी

يُنْبُوْعِ الْحِكَمِ وَمِصْبَاحِ الظُّلَمِ سَيِّدِ الْعَرَبِ وَالْعَجَمِ الْهَادِىْ

ताईद की गई है। हिकमतों के चश्मे पर और ज़ुल्मतों के चिराग़ पर जो अरब व अजम का सरदार है, हिदायत

اِلَى الرَّشَادِ الْمُوَفَّقِ بِالتَّايِيْدِ وَالسَّدَادِ مَوْلَاىَ اَبِىْ جَعْفَرٍ مُحَمَّدِ بْنِ

की जानिब ले जानेवला है और ताईद व तक़वियत से मोवाफ़क़ है मेरे मौला अबू जाफ़र (अ.स.) मोहम्मद

عَلِيٍّ الْجَوَادِ اَشْهَدُ يَا وَلِيَّ اللهِ اَنَّكَ اَقَمْتَ الصَّلَاةَ وَآتَيْتَ الزَّكَاةَ

बिन अली जवाद (अ.स.), मैं गवाही देता हूँ ऐ अल्लाह के वली के आपने नमाज़ क़ाएम की है ज़कात अदा

وَامَرْتَ بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَجَاهَدْتَ فِىْ سَبِيْلِ اللهِ

की है और अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुनकर किया है और राहे ख़ुदा मे उस तरह जिहाद किया

حَقَّ جِهَادِهِ وَعَبَدْتَ اللهَ مُخْلِصًا حَتّٰى اَتَاكَ الْيَقِيْنُ فَعِشْتَ سَعِيْدًا

है जो जिहाद करने का हक़ था और अल्लाह की ख़ालिस इबादत की है यहाँ तक के मौत आ गई आप ने

وَمَضَيْتَ شَهِيْدًا يَا لَيْتَنِى كُنْتُ مَعَكُمْ فَافُوزَ فَوْزًا عَظِيْمًا وَرَحْمَةُ

सआदतमंदी की ज़िन्दगी गुज़ारी और शहादत की जलालत मे दुनिया से गए। काश मे आपके साथ होता

اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ

तो मैं भी अज़ीम कामयाबी हासिल करता और आपपर ख़ुदाकी रहमत व बरकात हों।

उसके बाद ख़ाके क़ब्र को बोसा दे और रूख़सार को उस से मस करके दो रकत नमाज़े ज़ियारत बजा लाए और उसके बाद जो चाहे दुआ करे।
आइम्मा की सामानिक ज़ियारतें

तीन:

सय्यदे अजल अली बिन ताऊस ने मिस्बाहुज़ ज़ाएर में जो ज़ियारत इमाम ज़ादों की नक़्ल की है जिनसे उनकी ज़ियारत की जा सकती है उसका नक़्ल करना इस मक़ाम पर मुनासिब है।

पहली ज़ियारत

उन्होंने फ़र्माया के औलादे आइम्मा में मिस्ले क़ासिम फ़रज़ंदे हज़रत काज़म (अ.स.) या अब्बास बिन अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) या अली इब्नुल हुसैन अली अकबर (अ.स.) शहीदे करबला की ज़ियारत करना चाहें तो क़ब्र के पास खड़े हो कर यूँ कहे:
दूसरी ज़ियारत बराए औलादे आइम्मा (अ.स.):

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا السَّيِّدُ الزَّكِيُّ الطَّاهِرُ الْوَلِيُّ وَالدَّاعِي الْحَفِيُّ

सलाम आप पर ऐ सरदार पाकीज़ा व ताहीर, वली और ख़ुदा की जानिब बुलाने वाले। मैं गवाही देता हूँ

اَشْهَدُ اَنَّكَ قُلْتَ حَقًّا وَنَطَقْتَ حَقًّا وَصِدْقًا وَدَعَوْتَ اِلٰى

के आप ने हक़ बात कही और हमेशाँ सच बोले और आपने दावत दी मेरे मालीक और अपने मालिक

مَوْلَایَ وَمَوْلَاكَ عَلَانِيَةً وَسِرًّا فَازَ مُتَّبِعُكَ وَنَجَا مُصَدِّقُكَ

की तरफ़ ज़ाहिर बज़ाहिर और ख़ुफ़्या तौर पर। आपका इत्तेबा करनेवाला कामयाब हुआ और आप की

وَخَابَ وَخَسِرَ مُكَذِّبُكَ وَالْمُتَخَلِّفُ عَنْكَ اِشْهَدْ لِي بِهٰذِهِ

तसदीक़ करनेवाला नजात पा गया और आपकी तकज़ीब करनेवाला घाटे और नुक़सान मे रहा और

الشَّهَادَةِ لاَكُونَ مِنَ الْفَائِزِينَ بِمَعْرِفَتِكَ وَطَاعَتِكَ

आपसे इख़्तेलाफ़ करनेवाला भी, मेरे लिए इस गवाही के गवाह हो जाईए ताके मे आपकी मारेफ़त और

وَتَصْدِيقِكَ وَاتِّبَاعِكَ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدِي وَابْنَ

इताअत और तसदीक़ व इत्तेबा के ज़रिए कामयाब हो जाऊँ और सलाम आप पर ऐ मेरे सरदार और फ़रज़ंदे

سَيِّدِي اَنْتَ بَابُ اللهِ الْمُؤْتَى مِنْهُ وَالْمَاخُوذُ عَنْهُ اَتَيْتُكَ زَائِرًا

सरदार आप अल्लाह का वो दरवाज़ा हैं जिसकी तरफ़ आया जाता है और उसी से लिया जाता है। मैं आपकी

وَحَاجَاتِي لَكَ مُسْتَوْدِعًا وَهَا اَنَا ذَا اَسْتَوْدِعُكَ دِينِي وَاَمَانَتِي

ज़ियारत को आया हूँ और मेरी हाजतें आपके पास अमानत हैं और अब मैं अपना दीन और अमानत

وَخَوَاتِيمَ عَمَلِي وَجَوَامِعَ اَمَلِي اِلٰى مُنْتَهٰى اَجَلِي وَالسَّلَامُ

आपकी ज़मानत मे देता हूँ और अपना ख़ात्मा अमल और तमाम उम्मीदें मौत के वक़्त तक की और सलाम

عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

आप पर और ख़ुदा की रहमत व बरकता हों।

दूसरी ज़ियारत

اَلسَّلَامُ عَلٰى جَدِّكَ الْمُصْطَفٰى اَلسَّلَامُ عَلٰى اَبِيكَ الرِّضَا

सलाम आप के जद मोहम्मद मुसतुफ़ा पर। सलाम आपके पिदरे बुज़ुर्गवार अली मुर्ताजा मालिक

الْمُرْتَضٰى اَلسَّلَامُ عَلٰى السَّيِّدَيْنِ الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ اَلسَّلَامُ عَلٰى

मक़ाम रजा पर सलाम हो दोनो सरदारों इमाम हसन (अ.स.) व हुसैन (अ.स.) पर। सलाम ख़दीजा

خَدِيجَةَ اُمِّ سَيِّدَةِ نِسَاءِ الْعَالَمِينَ اَلسَّلَامُ عَلٰى فَاطِمَةَ اُمِّ الْاَئِمَّةِ

पर जो आलमीन की औरतोंकी सरदारकी वालेदा हैं सलाम जनाबे फ़ातेमा (स.अ.) पर जो आइम्मए

الطَّاهِرِينَ اَلسَّلَامُ عَلٰى النُّفُوسِ الْفَاخِرَةِ بُحُورِ الْعُلُومِ الزَّاخِرَةِ

ताहेरीन की मादरे गेरामी हैं। सलाम बा इज़्ज़त व इफ़तेख़ार नफ़्सा पर, दरयाए मवाजे इल्मे इलाही

شُفَعَائِي فِي الْآخِرَةِ وَاَوْلِيَائِي عِنْدَ عَوْدِ الرُّوحِ اِلَى الْعِظَامِ

पर आख़िरत मे मेरी शिफ़ाअत करने वालों पर और मेरे दोस्तों पर, रूह के बोसिदा हि·या की तरफ़

النَّاخِرَةِ اَئِمَّةِ الْخَلْقِ وَوُلَاةِ الْحَقِّ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الشَّخْصُ

वापस होने के वक़्त। मख़लूक़ के इमाम और औलियए हक़ पर। सलाम आप पर ऐ मर्दे शरीफ़ व

الشَّرِيفُ الطَّاهِرُ الْكَرِيمُ اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا

पाकीज़ा व करीम मैं गवाही देता हूँ के अल्लाह के अलावा कोई माबूद नही है और मोहम्मद उसके

عَبْدُهُ وَمُصْطَفَاهُ وَاَنَّ عَلِيًّا وَلِيُّهُ وَمُجْتَبَاهُ وَاَنَّ الْاِمَامَةَ فِيْ وُلْدِهِ

बन्दे और मुन्ताख़िब हैं और अली उसके वली और बरगुज़ीदा हैं और इमामत उन्हींकी औलाद मे

اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ نَعْلَمُ ذٰلِكَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ وَنَحْنُ لِذٰلِكَ مُعْتَقِدُوْنَ

है रोज़े क़यामत तक उसे मैं इल्मे यक़ीन के साथ जानता हूँ और हम उस का एतेक़ाद रखने वाले हैं

وَفِيْ نَصْرِهِمْ مُجْتَهِدُوْنَ

और उनकी नुस्रत मे कोशिश करने वाले है।

दुआ मकारिमुल अख़लाक़

इस दुआ को मकारिमुल अख़लाक़ कहते हैं और ये सहिफ़ए सज्जादिया की दुआ है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِهٖ وَ بَلِّغْ بِاِيْمَانِيْ اَكْمَلَ الْاِيْمَانِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान व निहायत रहमवाला है। ख़ुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत

وَاجْعَلْ يَقِيْنِيْ اَفْضَلَ الْيَقِيْنِ وَانْتَهِ بِنِيَّتِيْ اِلٰى اَحْسَنِ

नाज़ल फ़र्मा और मेरे ईमान को कामिल तरीन ईमान की मनिज़ल तक पहुँचा दे मेरे यक़ीन को बेहतरीन

النِّيَّاتِ وَ بِعَمَلِيْ اِلٰى اَحْسَنِ الْاَعْمَالِ اَللّٰهُمَّ وَفِّرْ بِلُطْفِكَ

यकीन क़रार दे दे और मेरी नियत को बेहतरीन नियत और मेरे अमल को बेहतरीन अमल की मनिज़ल तक

نِيَّتِيْ وَ صَحِّحْ بِمَا عِنْدَكَ يَقِيْنِيْ وَاسْتَصْلِحْ بِقُدْرَتِكَ مَا فَسَدَ

पहुँचा दे। ख़ुदा अपने लुत्फ़ से मेरी नियत को ख़ालिस क़रार दे दे अपने करम से मेरे यक़ीन को सही तरीन

مِنِّيْ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِهٖ وَاكْفِنِيْ مَا يَشْغَلُنِي الْاِهْتِمَامِ

बना दे और अपनी क़ुदरत से मेरे बिगड़ जानेवाले उमूर का इस्लाह कर दे ख़ुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद

بِهٖ وَاسْتَعْمِلْنِيْ بِمَا تَسْئَلُنِيْ غَدًا عَنْهُ وَاسْتَفْرِغْ اَيَّامِيْ فِيْمَا

पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और जिन बातों की फ़िक्र मंदी मुझे मशग़ूल कर लेती है उनके लिए तू काफ़ी हो जा

خَلَقْتَنِيْ لَهٗ وَاَغْنِنِيْ وَاَوْسِعْ عَلَيَّ فِيْ رِزْقِكَ وَلَا تَفْتِنِّيْ بِالنَّظَرِ وَ

और मुझे उन कामों मे लगा दे जिनके बारे मे तू कल सवाल करने वाला है। मेरे शबो रोज़ को इस मक़सद

اَعِزَّنِيْ وَلَا تَبْتَلِيَنِّيْ بِالْكِبْرِ وَعَبِّدْنِيْ لَكَ وَلَا تُفْسِدْ عِبَادَتِيْ

मे मसरूफ़ कर दे जिसके लिए मुझे पैदा किया है और मुझे लोगों से बेनियाज़ कर दे मेरे रिज़्क़ मे वुसअत

بِالْعُجْبِ وَاَجْرِ لِلنَّاسِ عَلٰى يَدَيَ الْخَيْرَ وَلَا تَمْحَقْهُ بِالْمَنِّ وَهَبْ

अता फ़र्मा लेकिन मेरा इम्तेहान मोहलत दे कर न लेना मुझे इज़्ज़त अता फ़र्मा मगर मुझ तकब्बुर मे मुब्तेला

لِيْ مَعَالِيَ الْاَخْلَاقِ وَاعْصِمْنِيْ مِنَ الْفَخْرِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

न होने देना मुझे इबादत गुज़ार बना दे लेकिन मेरी इबादत ख़ुद पसंदी से बरबाद न होने पाए। मेरे हाथों पर

وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَلَا تَرْفَعْنِيْ فِي النَّاسِ دَرَجَةً اِلَّا حَطَطْتَنِيْ عِنْدَ

लोगो के लिए ख़ैर जारी फ़र्मा लेकीन उस अहसान जताने के ज़रिए से बरबाद न होने देना। मुझे बुलंदतरीन

نَفْسِيْ مِثْلَهَا وَلَا تُحْدِثْ لِيْ عِزًّا ظَاهِرًا اِلَّا اَحْدَثْتَ لِيْ ذِلَّةً

अख़लाक़ अता फ़र्मा लेकिन ग़ुरूर से महफ़ूज़ रखना। ख़ुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़ल

بَاطِنَةً عِنۡدَ نَفۡسِیۡ بِقَدَرِهَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ

फ़रमा और लोगों के नज़दीक मेरे किसी दरजे को बुलंद न करना मगर ये के मैं अपने नज़दीक इतना ही पुस्त

مَتِّعۡنِیۡ بِهُدًی صَالِحٍ لَّا اَسۡتَبۡدِلُ بِهٖ وَطَرِیۡقَةِ حَقٍّ لَّا اَزِیۡغُ عَنۡهَا

हो जाऊँ और ज़ाहेरी तौर पर मुझे कोई इज्ज़त अता न फ़रमाना ०मगर ये के मुझे ख़ुद मेरे नज़दीक इतनी ही

وَ نِیَّةِ رُشۡدٍ لَّا اَشُكُّ فِیۡهَا وَ عَمِّرۡنِیۡ مَا كَانَ عُمۡرِیۡ بِذۡلَةً فِیۡ

ज़िल्लत अता कर ख़ुदाया मोहम्मदोआले मोहम्मद पर रहमत नाज़ल कर व मुझे ऐसी सालेह हिदायतसे

طَاعَتِكَ فَاِذَا كَانَ عُمۡرِیۡ مَرۡتَعًا لِّلشَّیۡطَانِ فَاقۡبِضۡنِیۡ اِلَیۡكَ

बहरावर कर जिसकी कोई बदल तलाश न करूँ व उस राहे हक़ पर लगा दे जिससे इनहेराफ़ न करूँ वो नेक

قَبۡلَ اَنۡ یَّسۡبِقَ مَقۡتُكَ اِلَیَّ اَوۡ یَسۡتَحۡكِمَ غَضَبُكَ عَلَیَّ اَللّٰهُمَّ لَا

नियत अता फ़र्मा जिस मे किसी तरह का शक ने हो। मुझे उस वक़्त तक ज़िन्दा रखना जब तक मेरी उम्र तेरी

تَدَعۡ خَصۡلَةً تُعَابُ مِنِّیۡ اِلَّا اَصۡلَحۡتَهَا وَلَا عَآئِبَةً اُوَنَّبُ بِهَا اِلَّا

इताअत मे सर्फ़ होती रहे उस के बाद अगर ज़िन्दगी शैतान की चरागाह बन जाए तो मुझे अपनी बारगाह मे

حَسَّنۡتَهَا وَ لَا اُكۡرُوۡمَةً فِیَّ نَاقِصَةً اِلَّا اَتۡمَمۡتَهَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی

वापस बुला लेना क़ब्ल उस के के तेरी नाराज़गी मेरी तरफ़ रूख़ करे या तेरा ग़ज़ब मुझ पर मुस्तहकम हो जाए।

مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَبۡدِلۡنِیۡ مِنۡ بِغۡضَةِ اَهۡلِ الشَّنَاٰنِ الۡمَحَبَّةَ وَ

ख़ुदाया कोई ऐसी ख़सलत जो मेरे लिए ऐब हो बाक़ी न रह जाए मगर तू उसकी इस्लाह कर व कोई ऐसा ऐब

مِنْ حَسَدِ اَهْلِ الْبَغْيِ الْمَوَدَّةَ وَ مِنْ ظِنَّةِ اَهْلِ الصَّلاحِ الثِّقَةَ

जिस पर सरज़निश की जाती है बाक़ी न रह जाए मगर ये के उसको हुस्न मे तबदील करदे व कोई नुक़से

وَ مِنْ عَدَاوَةِ الْاَدْنَيْنَ الْوَلَايَةَ وَ مِنْ عُقُوقِ ذَوِى الْاَرْحَامِ

श०रफ न रह जाए मगर उसे कामिल बनादे। ख़ुदाया मोहम्मदो आले मोहम्मद पर रहमत नाज़ल क़र। मुझे

الْمَبَرَّةَ وَ مِنْ خِذْلَانِ الْاَقْرَبِيْنَ النُّصْرَةَ وَ مِنْ حُبِّ الْمُدَارِيْنَ

दुश्मनों के बुग़ज के बदले प्रेम। ज़्यादती करनेवालों के हसद के बदले मवद्दत। नेक किरदारों की बदज़नी के

تَصْحِيْحَ الْمِقَةِ وَ مِنْ رَدِّ الْمُلَابِسِيْنَ كَرَمَ الْعِشْرَةِ وَ مِنْ

बदले एतेबार। पस्त लोगों की अदावत के बदले प्रेम क़राबत दारों की नाफ़रमानी के बदले नेकी रिश्तेदारों

مَرَارَةِ خَوْفِ الظَّالِمِيْنَ حَلَاوَةَ الْاَمَنَةِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

के क़ते ताल्लुक़ के बदले नु⃞त व मदारात करनेवालों की प्रेम के बदल नाराज़गी की इस्लाह। साथियों के

وَّ اٰلِهٖ وَ اجْعَلْ لِىْ يَدًا عَلٰى مَنْ ظَلَمَنِىْ وَ لِسَانًا عَلٰى مَنْ خَاصَمَنِىْ

ठुकराने के बदले बेहतरीन माशेरात व ज़ालिमो के ख़ाफ़ की तलख़ी के बदले अमन व सुकून की हलावत

وَ ظَفَرًا بِمَنْ عَانَدَنِىْ وَ هَبْ لِىْ مَكْرًا عَلٰى مَنْ كَايَدَنِىْ وَ قُدْرَةً

दे। ख़ुदाया मोहम्मदो आले मोहम्मद पर रहमत नाज़ल कर। मुझे ज़ालिमो के मुक़ाबले मे ताक़त, झगड़ा

عَلٰى مَنِ اضْطَهَدَنِىْ وَ تَكْذِيْبًا لِمَنْ قَصَبَنِىْ وَ سَلَامَةً مِّمَّنْ

करने वालों के बदले क़ुवत ज़ुबान व ब्यान दुश्मनों के मुक़ाबले मे कामयाबी मक्कारों के मुक़ाबले मे बेहतरीन

تَوَعَّدَنِیْ وَ وَفِّقْنِیْ لِطَاعَةِ مَنْ سَدَّدَنِیْ وَ مُتَابَعَةِ مَنْ اَرْشَدَنِیْ

तदबीर दबाव डालने वालों के मुक़ाबले मे क़ुदरत व ताक़त ऐब जुई के मुक़ाबले मे तकज़ीब व डर के

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَ سَدِّدْنِیْ لِاَنْ اُعَارِضَ مَنْ غَشَّنِیْ

मुक़ाबले मे सलामती इनायत कर व मुझे तौफ़ीक़ दे के जो मेरी इस्लाह करे उसकी इताअत करूँ व जो मुझे

بِالنُّصْحِ وَ اَجْزِیَ مَنْ هَجَرَنِیْ بِالْبِرِّ وَ اُثِیْبَ مَنْ حَرَمَنِیْ بِالْبَذْلِ

रास्ता दिखाए उसके नक़्शे क़दम पर चलूँ ख़ुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़ल कर व मुझे

وَ اُكَافِیَ مَنْ قَطَعَنِیْ بِالصِّلَةِ وَ اُخَالِفَ مَنِ اغْتَابَنِیْ اِلٰى حُسْنِ

तौफ़ा०rक दे मैं धोका देनेवालों का मुक़ाबला नसीहत से करूँ व क़तए ताल्लुक़ करनेवालों के साथ नेकी करूँ

الذِّكْرِ وَ اَنْ اَشْكُرَ الْحَسَنَةَ وَ اُغْضِیَ عَنِ السَّیِّئَةِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ

महरूम करनेवालों को अता करूँ व क़तए ताल्लुक़ करनेवालों से ताल्लुक़ात बाक़ी रखूँ ग़ीबत करनेवालों का

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَ حَلِّنِیْ بِحِلْیَةِ الصَّالِحِیْنَ وَ اَلْبِسْنِیْ زِیْنَةَ

जवाब ाज़िक्र से करूँ व नेकियों का शुक्रिया अदा करूँ, बुराईयों से चश्म पोशी करूँ। ख़ुदाया मोहम्मद व

الْمُتَّقِیْنَ فِیْ بَسْطِ الْعَدْلِ وَ كَظْمِ الْغَیْظِ وَ اِطْفَآءِ النَّائِرَةِ وَ

आले मोहम्मद पर रहमत कर और मुझे नेक किरदारों के तरीक़े से मुज़य्यन फ़रमा और मुत्तक़ीन की

ضَمِّ اَهْلِ الْفُرْقَةِ وَ اِصْلَاحِ ذَاتِ الْبَیْنِ وَ اِفْشَآءِ الْعَارِفَةِ وَ

ज़ीनतका लिबास अता फ़र्मा के मैं इन्साफ़ को फैलाऊँ, ग़ुस्से को बरदाश्त करूँ, आतिशे बुग़्जो अदावत को

سَتْرِ الْعَآئِبَةِ وَلِيْنِ الْعَرِيْكَةِ وَخَفْضِ الْجَنَاحِ وَحُسْنِ السِّيْرَةِ

ठंडा करूँ। इख़्तेलाफ़ करनेवालों को यकजा करूँ लोगों के दरमियान मामेलात की इसलाह करूँ नेकियों को

وَ سُكُوْنِ الرِّيْحِ وَ طِيْبِ الْمُخَالَقَةِ وَالسَّبْقِ اِلَى الْفَضِيْلَةِ وَ

नश्र करूँ बुराईयों पर पर्दा डालूँ मिज़ाज को नर्म रखूँ शानों को झुका दूँ। सीरत को हसीन रखूँ। हवा को

اِيْثَارِ التَّفَضُّلِ وَ تَرْكِ التَّعْيِيْرِ وَالْاِفْضَالِ عَلٰى غَيْرِ

पुरसुकून बनाऊँ। अख़लाक़ को पाका॰rजा रखूँ। फ़ज़ीलतों की तरफ़ क़दम आगे बढ़ाऊँ। फ़ज़्ल व करम को

الْمُسْتَحِقِّ وَالْقَوْلِ بِالْحَقِّ وَاِنْ عَزَّ وَاسْتِقْلَالِ الْخَيْرِ وَاِنْ كَثُرَ

इख़्तेयार करूँ। न किसी को सरजनीश करूँ और न ग़ैर मुस्तहक़ पर मेहेबानी करूँ। सिर्फ़ हक़ कहूँ चाहे

مِنْ قَوْلِيْ وَ فِعْلِيْ وَاسْتِكْثَارِ الشَّرِّ وَاِنْ قَلَّ مِنْ قَوْلِيْ وَ فِعْلِيْ وَ

कितना ही मुश्किल हो और क़ौल व फ़ेल मे नेकियों को कम समझूँ चाहे कितनी ही ज़्यादा क्यो न हों और

اَكْمِلْ ذٰلِكَ لِيْ بِدَوَامِ الطَّاعَةِ وَلُزُوْمِ الْجَمَاعَةِ وَرَفْضِ اَهْلِ

तमाम नेकियों को यूँ कामिल बनादे के हमेशा इताअत करूँ। जमाअत के साथ रहूँ। अहले बिदअत और ख़ुद

الْبِدَعِ وَ مُسْتَعْمِلِ الرَّاْيِ الْمُخْتَرَعِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ

साखता अफ़कार इख़्तेयार करनेवालों को छोड़ दूँ। ख़ुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा

اٰلِهٖ وَاجْعَلْ اَوْسَعَ رِزْقِكَ عَلَيَّ اِذَا كَبِرْتُ وَاَقْوٰى قُوَّتِكَ فِيَّ اِذَا

और मेरे वसीतरीन रिज़्क़ को उस वक़्त क़रार देना जब बुढ़ा हो जाऊँ और क़वी तरीन क़ुव्वत उस वक़्त अता

نَصِبْتُ وَلَا تَبْتَلِيَنِّیْ بِالْكَسَلِ عَنْ عِبَادَتِكَ وَلَا الْعَمٰی عَنْ

फ़रमाना जब ख़स्ता हाल हो जाऊँ। मुझे इबातदों के मामले मे कसल मंदी मे मुब्तेला न करना। अपने रास्ते

سَبِيْلِكَ وَلَا بِالتَّعَرُّضِ لِخِلَافِ مَحَبَّتِكَ وَلَا مُجَامَعَةِ مَنْ تَفَرَّقَ

से भटकने न देना। न कोई काम तेरी मोहब्बत के ख़िलाफ़ होने पाए न तुझसे अलग होनेवलों के साथ रहूँ और

عَنْكَ وَ لَا مُفَارَقَةِ مَنِ اجْتَمَعَ اِلَيْكَ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ اَصُوْلُ

न तेरे साथ रहनेवालों से अलग हो जाऊँ। ख़ुदाया मुझे ऐसा बना दे के वक़्ते ज़रूरत तेरे ज़रिए हमला करूँ।

بِكَ عِنْدَ الضَّرُوْرَةِ وَ اَسْئَلُكَ عِنْدَ الْحَاجَةِ وَ اَتَضَرَّعُ اِلَيْكَ

वक़्ते हाजत तुझ से मागूँ फ़क्करो फ़ाक़े मे तेरी बारगाह मे गिडगिडाऊँ। मुझे उस आज़माइश मे न डालना के

عِنْدَ الْمَسْكَنَةِ وَلَا تَفْتِنِّیْ بِالْاِسْتِعَانَةِ بِغَيْرِكَ اِذَا اضْطُرِرْتُ

मजबूरी मे तेरे ग़ैर से मदद चाहूँ। या फ़क़ीरी मे तेरे ग़ैर से सवाल करने के लिए उसके सामने झुक जाऊँ या

وَ لَا بِالْخُضُوْعِ لِسُؤَالِ غَيْرِكَ اِذَا افْتَقَرْتُ وَ لَا بِالتَّضَرُّعِ اِلٰی

तेरे अलावा किसी की बारगाह मे फ़रयाद करूँ और उसके नतीजे मे तेरी तरफ़ से बेरूख़ी, किनारा कशी और

مَنْ دُوْنَكَ اِذَا رَهِبْتُ فَاَسْتَحِقَّ بِذٰلِكَ خِذْلَانَكَ وَ مَنْعَكَ وَ

महरूमी का मुस्तहक़ हो जाऊँ। तू सबसे ज़्यादा रहेम करनेवाला है। ख़ुदाया शैतान जो मेरे दिल मे तमन्नाए

اِعْرَاضَكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ مَا يُلْقِی الشَّيْطَانُ

ख़यालात और हसद पैदा करना चाहता है उसके बदले मे मुझे अपनी अज़मत की याद अपनी क़ुदरत की

فِيْ رُوْعِيْ مِنَ التَّمَنِّيْ وَالتَّظَنِّيْ وَالْحَسَدِ ذِكْرًا لِعَظَمَتِكَ وَ

फ़िक्र और अपने दुश्मन के मुक़ाबले मे कुव्वते तदबीर अता फ़र्मा और जब शैतान मेरी ज़ुबान पर कोई फ़हश

تَفَكُّرًا فِيْ قُدْرَتِكَ وَ تَدْبِيْرًا عَلٰى عَدُوِّكَ وَ مَا اَجْرٰى عَلٰى لِسَانِيْ

व ना सज़ा कलमा या गालम गालोज या बातिल की गवाही या मोमिन की ग़ीबत या मोमिन को दुशनाम वग़ैरा

مِنْ لَفْظَةِ فُحْشٍ اَوْ هُجْرٍ اَوْ شَتْمِ عِرْضٍ اَوْ شَهَادَةِ بَاطِلٍ اَوِ

के कलेमत जारी करना चाहे तो उसके बदले मुझे अपने हम्द की गोयाई और अपनी मदह व सना की क□ात,

اغْتِيَابِ مُؤْمِنٍ غَآئِبٍ اَوْ سَبِّ حَاضِرٍ وَ مَا اَشْبَهَ ذٰلِكَ نُطْقًا

अपनी तमजीद का तसलसुल, अपनी नेमत का शुक्र, अपने एहसान का एतेराफ़ और अपनी मेहेरबनियों के

بِالْحَمْدِ لَكَ وَ اِغْرَاقًا فِي الثَّنَآءِ عَلَيْكَ وَ ذَهَابًا فِيْ تَمْجِيْدِكَ وَ

शुमार की तौफ़ा०rक अता फ़र्मा। ख़ुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और जब तू

شُكْرًا لِنِعْمَتِكَ وَاعْتِرَافًا بِاِحْسَانِكَ وَاِحْصَآءً لِمِنَنِكَ اَللّٰهُمَّ

मुझसे दिफ़ा की ताक़त रखता है तो कोई मुझ पर ज़ुल्म न करने पाए और जब तू मेरा हाथ पकड़ सकता है तो

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَلَا اُظْلَمَنَّ وَ اَنْتَ مُطِيْقٌ لِلدَّفْعِ عَنِّيْ وَلَا

मैं किसी पर ज़ुल्म न करने पाऊँ। जब मेरी हिदायत तेरे इम्कान मे है तो मैं गुमराह न होने पाऊँ और जब

اَظْلِمَنَّ وَ اَنْتَ الْقَادِرُ عَلَى الْقَبْضِ مِنِّيْ وَ لَا اَضِلَّنَّ وَ قَدْ

वुसअते रिज़्क़ तेरे पास है तो मैं फ़क़ीर न होने पाऊँ और जब ताक़तों का सरचश्मा तेरे क़ब्जे मे है तो मैं

اَمْكَنَتْكَ هِدَايَتِیْ وَ لَا اَفْتَقِرَنَّ وَ مِنْ عِنْدِكَ وُسْعِیْ وَ لَا

सरकशी न करने पाऊँ। ख़ुदाया मैं तेरी मग़ाफ़िरत की बारगाह मे हाज़िर हुआ हूँ। तेरी माफ़ी का इरादा किया

اَطْغَیَنَّ وَ مِنْ عِنْدِكَ وُجْدِیْ اَللّٰهُمَّ اِلٰی مَغْفِرَتِكَ وَفَدْتُ وَ

है तेरे दर गुज़र करने का मुश्ताक़ हूँ। तेरे फ़ज़्ल का एतेबार रखता हूँ। मेरे पास न कोई वसीलए मग़िफ़रत है

اِلٰی عَفْوِكَ قَصَدْتُ وَ اِلٰی تَجَاوُزِكَ اشْتَقْتُ وَ بِفَضْلِكَ وَثِقْتُ

न मैं अपने आमाल की बिनापर माफ़ीका मुसतहक़ हूँ। और जब मैंने ख़ुद ही फ़ैसला कर दिया है तो अब तेरे

وَلَیْسَ عِنْدِیْ مَا یُوْجِبُ لِیْ مَغْفِرَتَكَ وَلَا فِیْ عَمَلِیْ مَا اَسْتَحِقُّ

फ़ज़्लो करम के अलावा कोई सहारा नही है। ख़ुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और

بِهٖ عَفْوَكَ وَمَا لِیْ بَعْدَ اَنْ حَكَمْتُ عَلٰی نَفْسِیْ اِلَّا فَضْلُكَ فَصَلِّ

मुझपर मेहेरबानी फ़रमाना ख़ुदाया मुझे हिदायत के ज़रिए गोया बना दे और मुझपर तक़वेका इल्हाम कर दे

عَلٰی مُحَمَّدٍ وَ اٰلِهٖ وَ تَفَضَّلْ عَلَیَّ اَللّٰهُمَّ وَ اَنْطِقْنِیْ بِالْهُدٰی وَ

मुझे पाकीज़ा तरीन आमाल की ताफ़ा०rक अता फ़र्मा और उन आमाल मे लगा दे जो तुझे राज़ी कर सकें।

اَلْهِمْنِی التَّقْوٰی وَ وَفِّقْنِیْ لِلَّتِیْ هِیَ اَزْكٰی وَاسْتَعْمِلْنِیْ بِمَا هُوَ

ख़ुदाया मुझे बेहतरीन रासते पर चला और मेरी ज़िन्दगी व मौत अपनी ही मिल्लत पर क़रार देना। ख़ुदाया

اَرْضٰی اَللّٰهُمَّ اَسْلُكْ بِیَ الطَّرِیْقَةَ الْمُثْلٰی وَاجْعَلْنِیْ عَلٰی مِلَّتِكَ

मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और मुझे मियानारवी की दौलत अता फ़र्मा उन लोगों मे

اَمُوتُ وَ اَحْيٰى اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَ مَتِّعْنِىْ بِالْاِقْتِصَادِ

क़रार दे जो सीधे रासते पर चलते हों और नेकी की तरफ़ हिदायत करते हों। और बेहतरीन बन्दे हों मुझे

وَ اجْعَلْنِىْ مِنْ اَهْلِ السَّدَادِ وَ مِنْ اَدِلَّةِ الرَّشَادِ وَ مِنْ صَالِحِىْ

आख़िरत की कामयाबी इनायत फ़र्मा और कड़ी निगरानी से महफ़ूज़ रखना। ख़ुदाया मेरे नफ़्स से अपने लिए

الْعِبَادِ وَ ارْزُقْنِىْ فَوْزَ الْمَعَادِ وَ سَلَامَةَ الْمِرْصَادِ اَللّٰهُمَّ خُذْ

वो चा०rजें ले के जो उसे नजात दिला सके और वो चा०rजे छोड़ दे जो उस की इस्लाह कर सकें। इस लिए

لِنَفْسِكَ مِنْ نَفْسِىْ مَا يُخَلِّصُهَا وَ اَبْقِ لِنَفْسِىْ مِنْ نَفْسِىْ مَا

के मेरा नफ़स हलाक होने वाला है मगर ये के तू ही बचा ले। ख़ुदाया मैं रन्जीदा हो जाऊँ तो तू मेरा सहारा है

يُصْلِحُهَا فَاِنَّ نَفْسِىْ هَالِكَةٌ اَوْ تَعْصِمَهَا اَللّٰهُمَّ اَنْتَ عُدَّتِىْ اِنْ

और मुझे महरूम कर दिया जाए तो तू मेरा आसरा है। मैं मुसीबतों मे तुझही से फ़रयाद करता हूँ और तेरे ही

حَزِنْتُ وَ اَنْتَ مُنْتَجَعِىْ اِنْ حُرِمْتُ وَ بِكَ اسْتِغَاثَتِىْ اِنْ كَرِثْتُ

पास हर शैय गुम्शुदा का बदल और हर फ़साद की इस्लाह और हर बुराई को बदल देने की ताक़त है, लेहाज़ा

وَ عِنْدَكَ مِمَّا فَاتَ خَلَفٌ وَ لِمَ فَسَدَ صَلَاحٌ وَ فِيْمَا اَنْكَرْتَ

मेरे ऊपर ये एहसान फ़र्मा के आज़माइश से पहले आफ़ियत दे दे,तलब से पहले करम करदे, गुम्राही से पहले

تَغْيِيْرٌ فَامْنُنْ عَلَىَّ قَبْلَ الْبَلَاۤءِ بِالْعَافِيَةِ وَ قَبْلَ الطَّلَبِ بِالْجِدَةِ

होशमंदी देदे मुझे लोगों की सरजनिश की तकला०rफ से पहले बचाले और रोज़े क़यामत अमन अता फ़र्मा

وَ قَبْلَ الضَّلَالِ بِالرَّشَادِ وَاكْفِنِيْ مَؤُنَةَ مَعَرَّةِ الْعِبَادِ وَهَبْ لِيْ

और बेहतरीन हिदायत इनायत फ़र्मा। ख़ुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और अपने

اَمْنَ يَوْمِ الْمَعَادِ وَامْنِحْنِيْ حُسْنَ الْاِرْشَادِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى

लुत्फ़ से मेरा दिफ़ा फ़र्मा। अपनी नेमत से ग़िज़ा अता फ़र्मा। और अपने करम से मेरी इसलाह फ़र्मा। और

مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَادْرَأْ عَنِّيْ بِلُطْفِكَ وَاغْذُنِيْ بِنِعْمَتِكَ وَ اَصْلِحْنِيْ

अपने बेहतरीन सुलूक से मेरी इमदाद करना। मुझे बुलंदी के जेरे साया क़रार दे और अपनी रज़ा से आरासता

بِكَرَمِكَ وَدَاوِنِيْ بِصُنْعِكَ وَاَظِلَّنِيْ فِيْ ذَرَاكَ وَجَلِّلْنِيْ رِضَاكَ وَ

कर दे और जब उमूर मुश्तबह हो जाएं तो सबसे सिधे रास्तेकी तौफ़ा०rक अता फ़र्मा और जब आमाल न

وَفِّقْنِيْ اِذَا اشْتَكَلَتْ عَلَيَّ الْاُمُوْرُ لِاَهْدَاهَا وَ اِذَا تَشَابَهَتِ

पहँचाने जा सकें तो पाका०rजा तरीन अमल की हिदायत फ़र्मा और जब मिल्लतों मे इख़्तेलाफ़ हो जाए तो

الْاَعْمَالُ لِاَزْكَاهَا وَ اِذَا تَنَاقَضَتِ الْمِلَلُ لِاَرْضَاهَا اَللّٰهُمَّ

पसंददीदा तरीन रास्ते पर लगा दे। ख़ुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा। मेरे सर पर

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَتَوِّجْنِيْ بِالْكِفَايَةِ وَسُمْنِيْ حُسْنَ الْوِلَايَةِ

हिफ़ाज़त का ताज रख दे। मेरा निशान बेहतरीन मोहब्बत को क़रार दे। मुझे सच्ची हिदायत अता फ़र्मा और

وَهَبْ لِيْ صِدْقَ الْهِدَايَةِ وَلَا تَفْتِنِّيْ بِالسَّعَةِ وَامْنِحْنِيْ حُسْنَ

वुसअत के ज़रिए मेरी आज़माइश न करना। मुझे बेहतरीन सुकून अता फ़रमा और मेरी ज़िन्दगी को ज़हमत

الدَّعَةِ وَلَا تَجْعَلْ عَيْشِيْ كَدًّا كَدًّا وَلَا تَرُدَّ دُعَائِيْ عَلَيَّ رَدًّا فَإِنِّيْ

न बन्ने देना और न मेरी दुआओं को रद करना इस लिए के न मैं किसी को तेरी ज़िद क़रार देता हूँ और न

لَا اَجْعَلُ لَكَ ضِدًّا وَلَا اَدْعُوْا مَعَكَ نِدًّا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

किसी को तेरा मिस्ल। ख़ुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा। मुझे इ[illegible]ाफ़ से बचा ले। मेरे

وَاٰلِهٖ وَامْنَعْنِيْ مِنَ السَّرَفِ وَ حَصِّنْ رِزْقِيْ مِنَ التَّلَفِ وَ وَفِّرْ

रिज़्क़ को तल्फ़ होने से महफ़ूज़ फ़र्मा व मेरी मिल्कियत को बरकत के ज़रिए ज़्यादा कर दे और जब मैं

مَلَكَتِيْ بِالْبَرَكَةِ فِيْهِ وَاَصِبْ بِيْ سَبِيْلَ الْهِدَايَةِ لِلْبِرِّ فِيْمَا اُنْفِقُ

इनफ़ाक़ करूँ तू मुझे नेकी के सही रास्ते पर लगा दे। ख़ुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़ल

مِنْهُ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَاكْفِنِيْ مَؤُنَةَ الْاِكْتِسَابِ

फ़र्मा मुझे कसबे माशियत की ज़हमतों से मह०पूज़ फ़र्मा और बे वहमो गुमान रिज़्क़ अता फ़र्मा ता के मैं रोज़ी

وَارْزُقْنِيْ مِنْ غَيْرِ اِحْتِسَابٍ فَلَا اَشْتَغِلَ عَنْ عِبَادَتِكَ

की तलाश मे तेरी इबादत से ग़ाफ़िल न हो जाऊँ और कसबे माश की ज़हमतों मे मुब्तेला न हो जाऊँ। ख़ुदाया

بِالطَّلَبِ وَلَا اَحْتَمِلَ اِصْرَ تَبِعَاتِ الْمَكْسَبِ اَللّٰهُمَّ فَاَطْلِبْنِيْ

जो कुछ मैं माँग रहा हूँ अपनी क़ुदरत से मुझे दे दे और जिस से मैं डर रहा हूँ अपनी इज़्ज़त के सहारे मुझे पनाह

بِقُدْرَتِكَ مَا اَطْلُبُ وَ اَجِرْنِيْ بِعِزَّتِكَ مِمَّا اَرْهَبُ اَللّٰهُمَّ صَلِّ

दे दे। ख़ुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा ओर मालदारी के ज़ारिए मेरी आबरूकी

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَصُنْ وَجْهِيْ بِالْيَسَارِ وَ لَا تَبْتَذِلْ جَاهِيْ

हिफ़ाज़त फ़र्मा। और ग़ुरबत की बिना पर मेरी हैसियत को गिरने न देना के मैं उन से माँगने लगूँ जो ख़ुद तेरे

بِالْاِقْتَارِ فَاَسْتَرْزِقَ اَهْلَ رِزْقِكَ وَ اَسْتَعْطِيَ شِرَارَ خَلْقِكَ

मोहताज हैं और तेरी बदतरीन मख़लूक़ के समने दस्ते सवाल फैला दूँ और उस के नतीजे मे उस ाफ़ितने मे

فَاَفْتَتِنَ بِحَمْدِ مَنْ اَعْطَانِيْ وَ اُبْتَلٰى بِذَمِّ مَنْ مَنَعَنِيْ وَ اَنْتَ مِنْ

मुब्तेला हो जाऊँ के जो दे दे उसकी तारीफ़ करूँ और जो न दे उसकी बुराई करूँ हाँलाके अता करने और न

دُوْنِهِمْ وَلِيُّ الْاِعْطَاۤءِ وَالْمَنْعِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اٰلِهٖ

अता करने का इख़्तेयार तेरा है। ख़ुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और मुझे इबादत

وَارْزُقْنِيْ صِحَّةً فِيْ عِبَادَةٍ وَفَرَاغًا فِيْ زَهَادَةٍ وَعِلْمًا فِي اسْتِعْمَالٍ

मे सेहत। ज़ोहदमे त्याग अमल मे इल्म और इश्तेबाह मे इख़्तेयार की तौफ़ा०rक अता फ़र्मा। ख़ुदाया मेरी

وَوَرَعًا فِيْ اِجْمَالٍ اَللّٰهُمَّ اخْتِمْ بِعَفْوِكَ اَجَلِيْ وَ حَقِّقْ فِيْ رَجَاۤءِ

ाज़िन्दगी का ख़ात्मा माफ़ी पर कर। और अपनी रहमत से मेरी हर आरज़ू को पूरा करदे और अपनी रज़ा तक

رَحْمَتِكَ اَمَلِيْ وَسَهِّلْ اِلٰى بُلُوْغِ رِضَاكَ سُبُلِيْ وَ حَسِّنْ فِيْ جَمِيْعِ

पहुँचने के रासते हमवार करदे और हर हालमे हुसने अमल अता फ़र्मा। ख़ुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद

اَحْوَالِيْ عَمَلِيْ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَ نَبِّهْنِيْ لِذِكْرِكَ فِيْ

पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और मुझे ग़फ़लत के औक़ात मे अपने ाज़िक्रके लिए होशयार करदे और मोहलत के

اَوْقَاتِ الْغَفْلَةِ وَاسْتَعْمِلْنِیْ بِطَاعَتِكَ فِیْۤ اَیَّامِ الْمُهْلَةِ وَانْهَجْ

ज़माने मे अपनी इताअत के काम मे लगादे मेरे लिए अपनी मोहब्बत के रासतेको हमवार करदे और उसके

لِیْۤ اِلٰی مَحَبَّتِكَ سَبِیْلًا سَهْلَةً اَكْمِلْ لِیْ بِهَا خَیْرَ الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ

ज़रिए से ख़ैरे दुनिया व आख़िरत की तकमील कर दे। ख़ुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़ल

اَللّٰهُمَّ وَصَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ كَاَفْضَلِ مَا صَلَّیْتَ عَلٰۤی اَحَدٍ مِّنْ

फ़र्मा उस से बेहतर जिस तरह तू उन से पहले किसी मख़लूक पर रहेम किया है या उनके बाद करनेवाला है।

خَلْقِكَ قَبْلَهٗ وَ اَنْتَ مُصَلٍّ عَلٰۤی اَحَدٍ بَعْدَهٗ وَ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا

हमे दुनिया मे भी नेकी अता फ़र्मा और आख़िरत मे भी हुसने आाफ़ियत अता फ़र्मा और अपनी रहमत के

حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنِیْ بِرَحْمَتِكَ عَذَابَ النَّارِ

सहारे अज़ाबे जहन्नम से मजफ़ूज फ़र्मा दे।

सूरह अनकबूत

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ

ख़ुदाके नामसे जो रहमान व रहीम है। १.अलिफ़ लाम मीम। २.क्या लोगोंने ये समझ लिया है के इतना

یُّتْرَكُوْۤا اَنْ یَّقُوْلُوْۤا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا یُفْتَنُوْنَ ﴿۲﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا

कहदेनेसे के हम ईमान लाए छोड़ दिए जाएंगे व उनका इम्तेहान न होगा। ३.और हमने तो उन लोगों का भी

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ

इम्तेहान लिया जो उनसे पहले गुज़र गए। ग़र्ज़ ख़ुदा उन लोगों को जो सच्चे हैं यक़ीनन अलैहदा देखेगा व झूठों

الْكٰذِبِيْنَ ۝٣ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ اَنْ

को भी ज़रूर देखेगा।४.क्या जो लोग बुरे बुरे काम करते हैं उन्होंने यह समझलिया के वो हमसे निकल जाऐंगे

يَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝٤ مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ

ये लोग क्या ही बुरे हुक्म लगाते हैं। ५.जो शख़्स ख़ुदासे मिलने की उम्मीद रखता हो तो ख़ुदाकी मीयाद ज़रूर

فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٥ وَمَنْ جَاهَدَ

आनेवाली है। और वो सुनता है और जानता है।६.और जो शख़्स कोशिश करता है तो बस अपने ही वास्ते

فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝٦ وَالَّذِيْنَ

कोशिश करता है इसमें तो शकही नहीं कि ख़ुदा सारे जहान से बेनियाज़ है।७.व जिनहोंने ईमान क़ुबूल किया

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ

व अच्छे अच्छे काम किए हम यक़ीनन उनके गुनाहों का उनकी तरफ़ से कफ़्फ़ारा क़रार देंगे। व यह जो

وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٧ وَوَصَّيْنَا

आमाल करते थे तो हम उनके आमाल की उन्हें अच्छी से अच्छी जज़ा अता करेंगे।८.व हमने इंसान को अपने

الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ؕ وَاِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا

माँबाप से अच्छा बरताओ करने का हुक्म दिया है व यह भी कहा अगर तुझे तेरे माँबाप इस बात पर मजबूर

لَيۡسَ لَكَ بِهٖ عِلۡمٌ فَلَا تُطِعۡهُمَا ؕ اِلَیَّ مَرۡجِعُكُمۡ فَاُنَبِّئُكُمۡ

करें कि ऐसी चीज़ को मेरा शरीक बना जिनका तुझे इल्म तक नहीं तो उनका कहा न मानना तुम सबको मेरी

بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿٨﴾ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

तरफ़ लौट कर आना है। मैं जो कुछ तुम लोग करते थे बता दूँगा।९.व जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और

لَنُدۡخِلَنَّهُمۡ فِى الصّٰلِحِيۡنَ ﴿٩﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنۡ يَّقُوۡلُ اٰمَنَّا

अच्छे अच्छे काम किए हम उन्हें ज़रूर नेकूकारों में दाख़ल करेंगे।१०.व कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम

بِاللّٰهِ فَاِذَاۤ اُوۡذِىَ فِى اللّٰهِ جَعَلَ فِتۡنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ

ख़ुदा पर ईमान लाए फिर जब उनहें ख़ुदाके बारेमें कुछ तकलीफ़ पहुँची तो वे लोग तकलीफ़ दही को अज़ाब

وَلَئِنۡ جَآءَ نَصۡرٌ مِّنۡ رَّبِّكَ لَيَقُوۡلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمۡ ؕ اَوَلَيۡسَ

के बराबर ठहराते हैं। व तुम्हारे रबकी मदद आ पहुँची व तुम्हें फ़तह हुई तो यही लोग कहने लगे कि हमभी तो

اللّٰهُ بِاَعۡلَمَ بِمَا فِىۡ صُدُوۡرِ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿١٠﴾ وَلَيَعۡلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ

तुम्हारे साथ ही साथ थे भला जो कुछ सारे जहान के दिलों में है क्या ख़ुदा बख़ूबी वाक़फ़ नहीं?११. व जिनहोंने

اٰمَنُوۡا وَلَيَعۡلَمَنَّ الۡمُنٰفِقِيۡنَ ﴿١١﴾ وَقَالَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لِلَّذِيۡنَ

ईमान क़ुबूल किया ख़ुदा उनको अवश्य जानता है व मुनाफ़क़ीन को ज़रूर जानता है।१२.व कुफ़्फ़ार ईमानदारों

اٰمَنُوا اتَّبِعُوۡا سَبِيۡلَنَا وَلۡنَحۡمِلۡ خَطٰيٰكُمۡ ؕ وَمَا هُمۡ بِحٰمِلِيۡنَ

से कहने लगे कि हमारे तरीक़े पर चलो व तुम्हारे गुनाहों को हम ले लेंगे। हालाँकि ये लोग ज़रा भी तो उनके

مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَيَحْمِلُنَّ

गुनाह उठानेवाले नहीं। ये लोग यक़ीनी झूठे हैं। १३.और (हां) ये लोग अपने बोझे तो यक़ीनी उठाए होंगे व

اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ۫ وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

अपने बोझों के साथ उनके बोझ भी उठाएंगे। व जो जो इफ़्तेरा परदाज़याँ ये लोग करते रहे हैं, क़यामत के दिन

عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ

उनसे ज़रूर उनकी बाज़ पुर्स होगी। १४.व हमने नूहको उनकी क़ौम के पास भेजा तो वह उनमें पचास कम

فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ

हज़ार बरस रहे आख़िर तूफ़ान ने उन्हे ले डाला और वह उस वक़्त भी सरकश ही थे। १५.फिर हमने नूह और

وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٤﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً

किश्ती में रहनेवालों को बचा लिया और हमने उस वाक़ये को सारी ख़ुदाई के वासते निशानी क़रार दी। १६.व

لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٥﴾ وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ؕ

इब्राहीम को जब उन्होंने कहा कि ख़ुदा की इबादत करो और उससे डरो। अगर तुम समझते बूझते हो तो यही

ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ

तुम्हारे हक़ में बेहतर है। १७.तुम लोग तो ख़ुदा को छोड़ कर सिर्फ़ बुतों की परस्तिश करते हो और झूठी बातें

دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا وَّتَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ

गढ़ते हो। इसमें तो शक ही नहीं कि ख़ुदा को छोड़कर जिन लोगों की तुम परस्तिश करते हो वह तुम्हारी रोज़ी

اللّٰهِ لَا يَمۡلِكُوۡنَ لَكُمۡ رِزۡقًا فَابۡتَغُوۡا عِنۡدَ اللّٰهِ الرِّزۡقَ وَاعۡبُدُوۡهُ

का इख़्तियार नहीं रखते। पस ख़ुदा ही से रोज़ी भी माँगो और उसी की इबादत भी करो और उसका शुक्र करो

وَاشۡكُرُوۡا لَهٗ ؕ اِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۱۷﴾ وَاِنۡ تُكَذِّبُوۡا فَقَدۡ كَذَّبَ

तुम लोग उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे। १८.व अगर तुमने झुठलाया तो तुमसे पहले भी तो बहुतेरी उम्मतें

اُمَمٌ مِّنۡ قَبۡلِكُمۡ ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوۡلِ اِلَّا الۡبَلٰغُ الۡمُبِيۡنُ ﴿۱۸﴾

झुठला चुकी हैं और रसूल के ज़िम्मे तो सिर्फ़ अहकाम का पहुँचा देना है। १९.बस क्या उन लोगों ने उसपर ग़ौर

اَوَلَمۡ يَرَوۡا كَيۡفَ يُبۡدِئُ اللّٰهُ الۡخَلۡقَ ثُمَّ يُعِيۡدُهٗ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى

नहीं किया कि ख़ुदा किस तरह मख़लूक़ात को पहले पहल पैदा करता है और फिर उसको दोबारा पैदा

اللّٰهِ يَسِيۡرٌ ﴿۱۹﴾ قُلۡ سِيۡرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ فَانۡظُرُوۡا كَيۡفَ بَدَاَ

करेगा?यह तो ख़ुदाके नज़दीक बहुत आसान है।२०.तुम कह दो कि ज़रा रूए ज़मीन पर चल कर देखो तो के

الۡخَلۡقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنۡشِئُ النَّشۡاَةَ الۡاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ

ख़ुदा ने किस तरह पहले पहल मख़लूक़ को पैदा किया फिर ख़ुदा आख़री पैदाइश पैदा करेगा। बेशक ख़ुदा हर

قَدِيۡرٌ ﴿۲۰﴾ ۚ يُعَذِّبُ مَنۡ يَّشَآءُ وَيَرۡحَمُ مَنۡ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيۡهِ

चीज़ पर क़ादिर है। २१. जिस पर चाहे अज़ाब करे और जिस पर चाहे रहेम करे और तुम लोग उसी की तरफ़

تُقۡلَبُوۡنَ ﴿۲۱﴾ وَمَاۤ اَنۡتُمۡ بِمُعۡجِزِيۡنَ فِى الۡاَرۡضِ وَلَا فِى

लौटाए जाओगे। २२.व न तो तुम ज़मीन ही में ख़ुदा को ज़ेर कर सकते हो व न आसमान में। ख़ुदाके सिवा न

السَّمَآءِ ۫ وَمَا لَكُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مِنۡ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيۡرٍ ﴿۲۲﴾ؑ

तो तुम्हारा कोई सरपरस्त है और न मददगार।२३.व जिन लोगों ने ख़ुदाकी आयतों व क़यामत के दिन उसके

وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖۤ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوۡا مِنۡ رَّحۡمَتِىۡ

सामने हाज़र होने से इन्कार किया मेरी रहमत से मायूस हो गए हैं और उन्हीं लोगों के वास्ते दर्दनाक अज़ाब

وَاُولٰٓئِكَ لَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۲۳﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوۡمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنۡ

है।२४.ग़र्ज़ इब्राहीम की क़ौम के पास उसके सिवा और कोई जवाब न था कि बाहम कहने लगे उसको मार

قَالُوا اقۡتُلُوۡهُ اَوۡ حَرِّقُوۡهُ فَاَنۡجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ

डालो या जला डालो। तो ख़ुदा ने उसको आग से बचा लिया। इसमें शक नहीं कि दुनियादार लोगों के वास्ते

لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۲۴﴾ وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذۡتُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ

इस वाक़ये मैं क़ुदरत की बहुत सी निशानियाँ हैं।२५. और इब्राहीम ने कहा कि तुम लोगों ने ख़ुदा को छोड़ कर

اَوۡثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيۡنِكُمۡ فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ۚ ثُمَّ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ

बुतों को सिर्फ़ दुनियावी ज़िन्दगी में बाहम मोहब्बत करने की वजह से (ख़ुदा) बना रखा है। फिर क़यामत के

يَكۡفُرُ بَعۡضُكُمۡ بِبَعۡضٍ وَّيَلۡعَنُ بَعۡضُكُمۡ بَعۡضًا ۫ وَّمَاۡوٰىكُمُ

दिन तुममें से एक का एक इन्कार करेगा व एक दूसरे पर लानत करेगा। और तुम लोगों का ठिकाना जहन्नम

النَّارُ وَمَا لَكُمۡ مِّنۡ نّٰصِرِيۡنَ ﴿۲۵﴾ۙ فَاٰمَنَ لَهٗ لُوۡطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّىۡ

है और तुम्हारा कोई भी मददगार न होगा। २६.तब सिर्फ़ लूत इब्राहीम पर ईमान लाए और इब्रहीम ने कहा कि

مُهَاجِرٌ اِلٰى رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ هُوَالْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٦﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗ

मैं तो देस छोड़ कर अपने रब की तरफ़ निकल जाऊंगा। इसमें शक नहीं कि वह ग़ालिब और हिकमतवाला

اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ

है।२७.और हमने इब्राहीम को इसहाक और याक़ूब अता किया और उनकी नस्ल में पैग़म्बरी व किताब क़रार

اَجْرَهٗ فِي الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾ وَلُوْطًا

दी। और हमने इब्राहीम को दुनिया में भी अच्छा बदला अता किया। और वह तो आख़िरत में भी यक़ीनी

اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ۫ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا

नेकूकारों से हैं। २८.(रसूल) लूत को (याद करो) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम लोग अजब बेहयाई

مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾ اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ

का काम करते हो कि तुमसे पहले सारी ख़ुदाई के लोगों में से किसी ने नहीं किया।२९.क्या तुम लोग मर्दों की

السَّبِيْلَ ۙ وَتَاْتُوْنَ فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ؕ فَمَا كَانَ جَوَابَ

तरफ़ गिरते हो? और रहज़नी करते हो। और तुम लोग अपनी महाफ़िलों में बुरी-बुरी हरकतें करते हो। तो लूत

قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ

की क़ौम के पास इसके सिवा कोई जवाब न था कि वे लोग कहने लगे कि भला अगर तुम सच्चे हो तो हमपर

الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٣٠﴾ ع

ख़ुदाका अज़ाब तो ले आओ।३०.लूत ने दुआ की परवरदिगारा इन मुफ़्सद लोगों के मुक़ाबले में मेरी मदद

وَلَمَّا جَآءَتۡ رُسُلُنَآ اِبۡرٰهِيۡمَ بِالۡبُشۡرٰى ۙ قَالُوۡۤا اِنَّا مُهۡلِكُوۡۤا

कर। ३१.और जब हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते इब्राहम के पास बेटे की ख़ुशख़बरी लेकर आए तो बोले हम लोग

اَهۡلِ هٰذِهِ الۡقَرۡيَةِ ۚ اِنَّ اَهۡلَهَا كَانُوۡا ظٰلِمِيۡنَ ۚ ۝٣١ قَالَ اِنَّ فِيۡهَا

अन्क़रीब उन गावों के रहनेवालों को हलाक करनेवाले हैं उस बस्ती के रहने वाले यक़ीनी सरकश हैं।३२.

لُوۡطًا ؕ قَالُوۡا نَحۡنُ اَعۡلَمُ بِمَنۡ فِيۡهَا ۟ لَـنُـنَجِّيَنَّهٗ وَاَهۡلَهٗۤ اِلَّا

इब्राहीम ने कहा कि उस बस्ती में लूत भी हैं। वह फ़रिश्ते बोले जो लोग उस बस्ती में हैं हम उनसे ०ख़ूब वाक़फ

امۡرَاَتَهٗ ۖ كَانَتۡ مِنَ الۡغٰبِرِيۡنَ ۝٣٢ وَلَمَّاۤ اَنۡ جَآءَتۡ رُسُلُنَا

हैं। हम तो उनको व उनके लड़के बालों को यक़ीनी बचालेंगे मगर उनकी बीबी को।वह पीछे रह जाने वालों

لُوۡطًا سِىۡٓءَ بِهِمۡ وَضَاقَ بِهِمۡ ذَرۡعًا وَّقَالُوۡا لَا تَخَفۡ وَلَا

में होगी।३३.और जब हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते लूत के पास आए लूत उनके आने से ग़मगीन हुए और उन से

تَحۡزَنۡ ۚ اِنَّا مُنَجُّوۡكَ وَاَهۡلَكَ اِلَّا امۡرَاَتَكَ كَانَتۡ مِنَ

दिल तँग हुए फरिश्तों ने कहा आप ख़ौफ़ न करें और कुढ़ें नहीं, हम आपको और आपके लड़के वालों को

الۡغٰبِرِيۡنَ ۝٣٣ اِنَّا مُنۡزِلُوۡنَ عَلٰۤى اَهۡلِ هٰذِهِ الۡقَرۡيَةِ رِجۡزًا مِّنَ

बचालेंगे। मगर आप की बीवी वह तो पीछे रह जानेवालों से होगी।३४.हम यक़ीनन इस बस्ती के रहनेवालों

السَّمَآءِ بِمَا كَانُوۡا يَفۡسُقُوۡنَ ۝٣٤ وَلَقَدۡ تَّرَكۡنَا مِنۡهَاۤ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً

पर चूँकि वे लोग बदकारियाँ करते रहे एक आसमानी अज़ाब नाज़ल करनेवाले हैं। ३५.और हमने यक़ीनी इस

لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ﴿۳۵﴾ وَاِلٰى مَدۡيَنَ اَخَاهُمۡ شُعَيۡبًا ۙ فَقَالَ

में समझदार लोगों के वास्ते निशानी बाक़ी रखी है। ३६.और मदाएन के रहनेवालों के पास उनके भाई शुऐब

يٰقَوۡمِ اعۡبُدُوا اللّٰهَ وَارۡجُوا الۡيَوۡمَ الۡاٰخِرَ وَلَا تَعۡثَوۡا فِى الۡاَرۡضِ

को नबी बनाकर भेजा तो उन्होंने कहा ऐ मेरी क़ौम ख़ुदा की इबादत करो और रोज़े आख़िरत की उम्मीद रखो

مُفۡسِدِيۡنَ ﴿۳۶﴾ فَكَذَّبُوۡهُ فَاَخَذَتۡهُمُ الرَّجۡفَةُ فَاَصۡبَحُوۡا فِىۡ

और रूए ज़मीन में फ़साद न फैलाते फिरो।३७.तो उन लोगों ने शुऐब को झुठलाया। पस भूचाल ने उन्हें ले

دَارِهِمۡ جٰثِمِيۡنَ ﴿۳۷﴾ؗ وَعَادًا وَّثَمُوۡدَاۡ وَقَدۡ تَّبَيَّنَ لَـكُمۡ مِّنۡ

डाला। तो वे लोग अपने घरों में औंधे ज़ानू के भल पड़े के पड़े रह गए। ३८.और क़ौमे आद व समूद को और

مَّسٰكِنِهِمۡ ۛ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيۡطٰنُ اَعۡمَالَهُمۡ فَصَدَّهُمۡ عَنِ

तुमको तो उनके (उज ड़) घर भी मालूम हो चुके। और शैतान ने उनकी नज़र में उनके कामों को अच्छा कर

السَّبِيۡلِ وَكَانُوۡا مُسۡتَبۡصِرِيۡنَ ﴿۳۸﴾ۙ وَقَارُوۡنَ وَفِرۡعَوۡنَ

दिखाया था और उन्हें सीधी राह से रोक दिया था हालाँकि वह बड़े होशियार थे। ३९.व (हमने) कारून-ओ

وَهَامٰنَ ۛ وَلَقَدۡ جَآءَهُمۡ مُّوۡسٰى بِالۡبَيِّنٰتِ فَاسۡتَكۡبَرُوۡا فِى

फ़िरऔन-ओ हामान को भी (हलाक किया) हालाँकि उन लोगों के पास मूसा वाज़ेह और रौशन मोजिज़े लेकर

الۡاَرۡضِ وَمَا كَانُوۡا سٰبِقِيۡنَ ﴿۳۹﴾ فَكُلًّا اَخَذۡنَا بِذَنۡۢبِهٖ ۚ فَمِنۡهُمۡ

आए फिर भी ये लोग रूए ज़मीन में सरकशी करते फिरे व हमसे कहीं आगे न बढ़ सके। ४०.तो हमने सबकी

مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ

उनके गुनाह की सज़ा में ले डाला। चुनांचे उनमें से बाज़ तो वह थे जिनपर हमने पत्थरवाली आँधी भेजी और

وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ

बाज़ उनमें से वह थे जिनको एक सख़्त चिंघाड़ ने ले डाला और बाज़ उनमें से वह थे जिन को हमने ज़मीन में

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٠﴾

धँसा दिया और बाज़ उनमें से वह थे जिन्हें हमने डूबा मारा। व यह बात नहीं कि ख़ुदाने उनपर ज़ुल्म किया

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ

बल्कि ये लोग ख़ुद आप अपने ऊपर ज़ुल्म करते रहे। ४१. जिन लोगों ने ख़ुदा के सिवा दूसरे कारसाज़ बनारखे

الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ۖ وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ

हैं उनकी मिसाल उस मकड़ी की है जिसने एक घर बनाया। और इसमें तो शक ही नहीं कि तमाम घरों से बोदा

الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ

घर मकड़ी का होता है। अगर ये लोग (इतना भी) जानते हों।४२.कि ख़ुदा को छोड़ कर ये लोग जिस चीज़ को

مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤٢﴾ وَتِلْكَ

पुकारते हैं उससे ख़ुदा यक़ीनी वाक़फ़ है और वह तो ग़ालिब हिकमतवाला है। ४३.और हम यह मिसालें लोगों

الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾

के वास्ते बयान करते हैं और उनको तो बस ओलामा ही समझते हैं। ४४. ख़ुदाने सारे आसमान व ज़मीन को

خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً

बिल्कुल ठीक पैदा किया। इसमें शक नहीं कि उसमें ईमानदारों के वास्ते यक़ीनी बड़ी निशानी है। ४५. (ऐ

لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٤﴾ اُتْلُ مَآ اُوْحِىَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ

रसूल) जो किताब तुमहारे पास नाज़ल की गई है कि तिलावत करो और पाबंदी से नमाज़ पढ़ो। बेशक नमाज़

الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ

बेहयाई व बुरे कामों से बाज़ रखती है और ख़ुदा की याद यक़ीनी बड़ा मर्तबा रखती है। व तुम लोग जो कुछ

وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَا تُجَادِلُوْٓا

करते हो ख़ुदा उससे वाक़फ़ है। ४६. व अहले किताब से मुनाज़ेरा न किया करो मगर उम्दा व शाइस्ता

اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ ۖ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ

अलफ़ाज़ व उनवान से। लेकिन उनमें से जिन लोगों ने तुमपर ज़ुल्म किया व साफ़ साफ़ कह दो के जो किताब

وَقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِالَّذِىْٓ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَاِلٰهُنَا

हमपर नाज़ल हुई व जो किताब तुमपर नाज़ल हुई है हम तो सब पर ईमान ला चुके और हमारा माबूद और

وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ

तुम्हारा माबूद एक ही है और हम उसी के फ़रमाँबरदार हैं। ४७. व (ऐ रसूल) जिस तरह अगले पैग़म्बरों पर

الْكِتٰبَ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ

किताबें उतारी उसी तरह हमने तुम्हारे पास किताब नाज़ल की। तो जिन लोगों को हमने किताब अताकी है वह

هٰٓؤُلَآءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٧﴾

उसपर भी ईमान रखते हैं। और उनमें से बाज़ वह हैं जो उसपर ईमान रखते हैं। और हमारी आयतों के तो बस

وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا

पक्के कट्टर काफ़िर मुन्किर हैं। ४८. व (ऐ रसूल) क़ुरआन से पहले न तो तुम कोई किताब ही पढ़ते थे व न

لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٤٨﴾ بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ

अपने हाथ से तुम लिखा करते थे। ऐसा होता तो यह झूठे ज़रूर शक करते।४९.मगर जिनको इल्म अता हुआ

اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَقَالُوْا

है उनके दिल में ये वाज़ेह आयतें हैं।व सरकशों के सिवा हमारी आयतों से कोई इन्कार नहीं करता।५०.व

لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ

(कुफ़्फ़ार) कहते हैं कि इस (रसूल) पर उसके रब की तरफ़ से मोजिज़े क्यों नहीं नाज़ल होते? (ऐ रसूल) उनसे

وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥٠﴾ اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ

कहदो कि मोजिज़े तो बस ख़ुदाही के पास हैं व मैं तो सिर्फ़ डराने वाला हूँ।५१.क्या उनके लिए यह काफ़ी नहीं

الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ

कि हमने तुमपर क़ुरआन नाज़ल किया जो उनके सामने पढ़ा जाता है?इसमें शक नहीं के ईमान-दार लोगों के

يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ

लिए उसमें (ख़ुदा की) मेहेरबानी व नसीहत है। ५२.तुम कहदो के मेरे व तुम्हारे दरम्यान गवाही के वास्ते ख़ुदा

مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا

काफ़ी है जो सारे आसमानों ज़मीनकी चीज़ों को जानता है। व जिन लोगों ने बातिल को माना व ख़ुदासे इन्कार

بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ

किया वही लोग बड़े घाटे में रहेंगे।५३.व (ऐ रसूल) तुमसे लोग अज़ाबके नाज़ल होनेकी जल्दी करते हैं व

بِالْعَذَابِ ؕ وَلَوْلَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ؕ

अगर (उसका) समय मोअय्यन न होता तो यक़ीनन उनके पास अबतक अज़ाब आ जाता व (एक दिन) उनपर

وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٣﴾ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ

अचानक ज़रूर आपड़ेगा व उनको ख़बर भी न होगी। ५४.ये लोग तुमसे अज़ाब की जल्दी करते हैं और यह

بِالْعَذَابِ ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٤﴾ ۙ يَوْمَ

यक़ीनी बात है कि दोज़ख़ काफ़िरों को घेर कर रहेगी। ५५.जिस दिन अज़ाब उनके सर के ऊपर से व उनके

يَغْشٰهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ

पाँव के नीचे से उनको ढाँके होगा और ख़ुदा फरमाएगा कि जोजो कारस्ता-नियाँ तुम करते थे अब इनका मज़ा

ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٥﴾ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ

चखो।५६.ऐ मेरे ईमानदार बंदों मेरी ज़मीन तो यक़ीनन कुशादा है तो तुम मेरी ही इबादत करो।५७.हर शख़्स

اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ

(एक दिन) मौत का मज़ा चखनेवाला है। फिर तुम सब आख़िर हमारी ही तरफ लौटाए जाओगे। ५८.व जिन

الْمَوْتِ قف ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उनको हम बेहिश्त के झरोकों में जगह देंगे जिनके

الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

नीचे नहरें जारी हैं। जिनमें वह हमेशा रहेंगे। (अच्छे) चलनवालों की भी क्या ख़ूब ख़बरी मज़दूरी है। ५९.

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ط نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٥٨﴾ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى

जिन्होंने सब्र किया और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। ६०.और ज़मीन पर चलनेवालों में बहुतेरे ऐसे हैं जो

رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ق اَللّٰهُ

अपनी रोज़ी अपने ऊपर लादे नहीं फिरते। ख़ुदाही उनको रोज़ी देता है व तुमकोभी व वो बड़ा सुन्ने वाला

يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ صلے وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٠﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ

वाकिफ़कार है।६१. व अगर तुम उनसे पूछो के किसने सारे आसमानो ज़मीन को पैदा किया व चाँद व सूरज

مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ

को काम में लगाया तो ज़रूर कहेंगे कि अल्लाहने फिर वह कहाँ बहके चलेजाते हैं? ६२.ख़ुदा ही अपने बंदों में

اللّٰهُ ج فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٦١﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ

से जिसको रोज़ी चाहता है कुशादा कर देता है व जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। इसमें शक नहीं के

عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ط اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٦٢﴾ وَلَئِنْ

ख़ुदाही हर चीज़ से वाक़फ़ है।६३.व अगर तुम उनसे पूछोके किसने आसमान से पानी बरसाया? फिर उसके

سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِ

ज़रिए से ज़मीनको उसके मरने के बाद ज़िंदा किया? तो वह ज़रूर यही कहेंगे के अल्लाह ने।तुम कह दो

مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا

अलहम्दो लिल्लाह। मगर उनमें से बहुतेरे नहीं समझते।६४.और यह दुनियावी ज़िन्दगी तो ख़ेल तमाशे के सिवा

يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ؕ وَاِنَّ

कुछ नहीं व अगर ये लोग समझें बूझें तो इसमें शक नहीं के अबदी ज़िन्दगी तो बस आख़िरतका घर है।६५.

الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٤﴾ فَاِذَا

फिर जब ये लोग कश्ती में सवार होते हैं तो निहायत ख़ुलूस से उसी की इबादत करनेवाले बनकर ख़ुदा से दुआ

رَكِبُوْا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ

करते हैं।फिर जब उन्हें ख़ुश्की में नजात देता तो फ़ौरन शिर्क करने लगतेहैं। ६६.ताकि जो(नेमतें)हमने उन्हें

اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٥﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ

अता की हैं उनका इन्कार कर बैठें व ताकि(दुनियामें)ख़ूब चैन करलें अन्करीब ही इसका नतीजा उन्हें मालूम

وَلِيَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا

हो जाएगा। ६७.क्या इन लोगोंने उसपरभी ग़ौर नहीं किया कि हमने मक्के को अम्नो इतमीनान की जगह

حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ

बनाया?हालाँकि उनके गिर्द-ओ नवाह से लोग उचक लिए जाते हैं। तो क्या ये लोग झूठे माबूदों पर ईमान लाते

يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللهِ يَكْفُرُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى

हैं व ख़ुदाकी नेमत की नाशुक्री करते हैं?६८.व जो शख़्स ख़ुदा पर झूठा बोहतान बाँधे या जब उसके पास कोई

عَلَى اللهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ

सच्ची बात आए तो झुठला दे उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा? क्या काफिरों का ठिकाना जहन्नुम में नहीं है?

مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾ وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ

६९.व जिन लोगों ने हमारी राह मे जिहाद किया उन्हें हम ज़रूर अपनी राह की हिदायत करेंगे। व इसमें शक

سُبُلَنَا ؕ وَاِنَّ اللهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٦٩﴾

नहीं कि ख़ुदा नेकूकारों का साथी है।

सूरह रूम

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ख़ुदा के नाम से जो रहमान व रहीम है। १.अलिफ़-लाम-मीम २.बहुत क़रीब के मुल्क में।३. (नसारा) हार

الٓمّٓ ﴿١﴾ غُلِبَتِ الرُّوْمُ ﴿٢﴾ فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْ بَعْدِ

गए मगर ये लोग अन्क़रीब ही अपने हार जानेके बाद चँद सालों में फिर ग़ालिब आ जाएंगे। ४.क्योंकि

غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ﴿٣﴾ فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ؕ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ

पहले और बाद हर अम्र का इख़्तेयार ख़ुदा ही को है व उस दिन ईमानदार लोग ख़ुदाकी मददसे ख़ुश हो

يَنْصُرُ ۭ بِنَصْرِ اللّٰهِ ۭ يَنْصُرُ وَمِنْۢ بَعْدُ ۭ وَيَوْمَىِٕذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝۴ۙ بِنَصْرِ اللّٰهِ ۭ يَنْصُرُ

जाएंगे ५.वो जिसकी चाहता है मदद करता है व वो (सबपर) ग़ालिब रहेम करनेवाला है।६.ख़ुदा का

مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝۵ۙ وَعْدَ اللّٰهِ ۭ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ

वादा(है) !ख़ुदा अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं किया करता। मगर अक्सर लोग नहीं जानते ७.ये लोग बस

وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝۶ يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ

दुनियावी ज़िन्दगी की ज़ाहिरी हालत को जानते हैं व ये लोग आख़िरत से बिल्कुल ग़ाफ़ल हैं। ८. क्या

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ښ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ۝۷ اَوَلَمْ

उन लोगों ने अपने दिल में (इतना भी) ग़ौर नहीं किया के ख़ुदा ने सारे आसमान और ज़मीन को और जो

يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۣ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا

चीज़ें उन दोनों के दरमियान हैं बस बिल्कुल ठीक व एक मुकर्रर मीयाद के वास्ते पैदा किया है?९.व कुछ

بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ

शक नहीं कि बहुतेरे तो अपने रब के हुज़ूर ही को किस तरह नहीं मातने क्या ये लोग रूए ज़मीन पर चले

بِلِقَاۗئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ۝۸ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا

फिरे नहीं कि देखते कि जो लोग उनसे पहले गुज़र गए उनका अंजाम कैसा (बुरा) हुआ? हालाँकि जो

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً

लोग उनसे क़ुव्वतमें भी कहीं ज़्यादा थे व जिसक़द्र ज़मीन उन लोगों ने आबाद की है उससे कहीं ज़्यादा

وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا وَجَآءَتْهُمْ

उन लोगों ने काश्त भी की थी?व उसको आबाद भी किया था व उनके पास भी उनके पैग़म्बर वाज़ेह

رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا

मोजिज़े लेकर आए थे। तो ख़ुदा ने उनपर कोई ज़ुल्म नहीं किया मगर वे लोग आप अपने ऊपर ज़ुल्म

اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝٩ؕ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوا السُّوْٓاٰى

करते थे। १०.फिर जिन लोगों ने बुराई की थी उनका अंजाम बुरा ही हुआ के उन लोगों ने ख़ुदा की

اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١٠ؒ اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ

आयतों को झुठलाया था व उनके साथ मसख़रापन किया था।११. ख़ुदाही ने मख़लूक़ात को पहली बार

ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝١١ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ

पैदा किया फिर वही दोबारा (पैदा) करेगा। फिर तुम सब लोग उसीको लौटाए जाओगे।१२.और जिस

الْمُجْرِمُوْنَ ۝١٢ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَكَانُوْا

दिन क़यामत बरपा होगी गुनहगार नाउम्मीद होकर रह जाएंगे। १३.और उनके शरीकों में से कोई उनका

بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝١٣ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ

सिफारशी न होगा व ये लोग ख़ुद भी अपने शरीकों से इन्कार कर जाएंगे। १४.व जिस दिन क़यामत

يَّتَفَرَّقُوْنَ ۝١٤ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ

बरपा होगी उस दिन कुफ़्फ़ार जुदा होजाएंगे। १५.फिर जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया व अच्छे अच्छे

رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ﴿١٥﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ

काम किए तो वह बेहिश्त में नेहाल कर दिए जाएंगे।१६.मगर जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया व हमारी

الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓئِكَ فِى الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ﴿١٦﴾ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ

आयतों व आख़िरत की हुज़ूरी को झुठलाया तो वे अज़ाब में गिरफ्तार किए जाएंगे। १७. फिर जिस समय

تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿١٧﴾ وَلَهُ الْحَمْدُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

तुम लोगों की शाम हो व जिस समय तुम्हारी सुबहहो।१८.ख़ुदाकी पाकीज़-गी ज़ाहिरकरो व सारे

وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿١٨﴾ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ

आसमान व ज़मीन में तीसरे पहरको व जिस समय तुम लोगोंकी दोपहर हो जावे वही क़ाबिले तारीफ़

الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ وَكَذٰلِكَ

है।१९.वही ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और वही मुर्दा को ज़िन्दा से पैदा करता है।और ज़मीन को

تُخْرَجُوْنَ ﴿١٩﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ

मरने के बाद ज़िन्दा करता है।२०. व उसी तरह तुम लोग भी निकाले जाओगे। व उसकी निशानियों में

بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ

से यह भी है के उसने तमको मिट्टी से पैदा किया फिर यकायत तुम आदमी बनकर चलने फिरने लगे।२१.व

اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ؕ اِنَّ فِىْ

उसीकी निशानियों में से एक यह है कि उसने तुम्हारे वास्ते तुम्हारीही जिंस की बीबियाँ पैदा कीं। ताकि

ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّتَفَكَّرُوۡنَ ﴿٢١﴾ وَمِنۡ اٰيٰتِهٖ خَلۡقُ السَّمٰوٰتِ

तुम उनके साथ रह कर चैन करो। व तुम लोगों के दरम्यान प्यार व उलफत पैदा की। इसमें शकन ही

وَالۡاَرۡضِ وَاخۡتِلَافُ اَلۡسِنَتِكُمۡ وَاَلۡوَانِكُمۡ ؕ اِنَّ فِيۡ ذٰلِكَ

कि उसमें ग़ौर करनेवालों के वास्ते यक़ीनी बहुत सी निशानियाँ हैं। २२. व उसीकी निशानियों में आसमानों

لَاٰيٰتٍ لِّلۡعٰلِمِيۡنَ ﴿٢٢﴾ وَمِنۡ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمۡ بِالَّيۡلِ وَالنَّهَارِ

व ज़मीनका पैदा करना और तुम्हारी ज़बानों व रंगतों में इख़्तेलाफ़ भी है। यक़ीनन इसमें वाक़फ़कारों के

وَابۡتِغَآؤُكُمۡ مِّنۡ فَضۡلِهٖ ؕ اِنَّ فِيۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّسۡمَعُوۡنَ ﴿٢٣﴾

वास्ते बहुतसी निशानियाँ हैं। २३.व रात दिन को तुम्हारा सोना व रोज़ीकी तलाश करना भी उसकी

وَمِنۡ اٰيٰتِهٖ يُرِيۡكُمُ الۡبَرۡقَ خَوۡفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً

क़ुदरतकी निशानी है।२४.बेशक जो लोग सुनते हैं उनके लिए इसमें निशानियों में से एक यह भी है कि

فَيُحۡيٖ بِهِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا ؕ اِنَّ فِيۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ

वह तुमको डराने व उम्मीद दिलाने के वास्ते बिजली दिखाता है व आसमान से पानी बरसाता है और

يَّعۡقِلُوۡنَ ﴿٢٤﴾ وَمِنۡ اٰيٰتِهٖۤ اَنۡ تَقُوۡمَ السَّمَآءُ وَالۡاَرۡضُ بِاَمۡرِهٖ ؕ

उससे ज़मीनको आबाद करता है। बेशक अक़्लमंदों के वास्ते उसमें (०ख़दा की) बहुत सी दलीलें हैं।

ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمۡ دَعۡوَةً ۖ مِّنَ الۡاَرۡضِ ۖ اِذَاۤ اَنۡتُمۡ تَخۡرُجُوۡنَ ﴿٢٥﴾

२५.व उसीकी निशानी है के आसमान व ज़मीन उसके हुक्म से क़ाएम हैं। फिर मरने के बाद जिस समय

وَلَهٗ مَنۡ فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوۡنَ ﴿۲۶﴾ وَهُوَ الَّذِىۡ

तुमको बुलाएगा तो तुम सबके सब ज़मीन से निकल पड़ोगे। २६. व जो लोग आसमानों व ज़मीन में हैं

يَبۡدَؤُا الۡخَلۡقَ ثُمَّ يُعِيۡدُهٗ وَهُوَ اَهۡوَنُ عَلَيۡهِ ؕ وَلَهُ الۡمَثَلُ الۡاَعۡلٰى

सब उसके हैं व सब उसीके ताबे फरमान हैं। २७. व वो ऐसा (क़ादिर) है जो मख़लूक़ात को पहली बार

فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ۚ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ﴿۲۷﴾ ضَرَبَ لَكُمۡ

पैदा करता है फिर दोबारा (क़यामत मे) पैदा करेगा व यह उसपर बहुत आसान है व सारे आसमान व

مَّثَلًا مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ ؕ هَلۡ لَّكُمۡ مِّنۡ مَّا مَلَكَتۡ اَيۡمَانُكُمۡ مِّنۡ

ज़मीन में सबसे बालातर उसीकी शान है व वही ग़ालिब, हिकमतवाला है।२८.व हमने तुम्हारी ही एक

شُرَكَآءَ فِىۡ مَا رَزَقۡنٰكُمۡ فَاَنۡتُمۡ فِيۡهِ سَوَآءٌ تَخَافُوۡنَهُمۡ كَخِيۡفَتِكُمۡ

मिसाल बयानकी हमने जो कुछ तुम्हें अता किया क्या उसमें तुम्हारे लौंडी ग़ुलामों में से कोई तुम्हारा

اَنۡفُسَكُمۡ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الۡاٰيٰتِ لِقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ﴿۲۸﴾ بَلِ

शरीक है के तुम उसमें बराबर हो जाओ? तुम उनसे ऐसा ही ख़ौफ़ रखते हो जितना तुम्हें अपने लोगों का

اتَّبَعَ الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡۤا اَهۡوَآءَهُمۡ بِغَيۡرِ عِلۡمٍ ۚ فَمَنۡ يَّهۡدِىۡ مَنۡ

ख़ौफ़ होता है?अक़्लमंदो के वास्ते हम यूं अपनी आयतों को तफ़सीलवार बयान करते हैं। २९. मगर

اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمۡ مِّنۡ نّٰصِرِيۡنَ ﴿۲۹﴾ فَاَقِمۡ وَجۡهَكَ لِلدِّيۡنِ

सरकशों ने तो बग़ैर समझे बूझे अपनी नफ़सानी ख़्वाहिशों की पैरवी करली ग़र्ज़ ख़ुदा जिसे गुमराही में

حَنِيۡفًا ؕ فِطۡرَتَ اللّٰهِ الَّتِىۡ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيۡهَا ؕ لَا تَبۡدِيۡلَ

छोड़ दे उसे कौन सीधी राह पर ला सकता है व उनको कोई मददगार (भी) नहीं।३०.तो तुम बातिल से

لِخَلۡقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّيۡنُ الۡقَيِّمُ ۙ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا

कतरा के अपना रूख़ दीन की तरफ़ किए रहो। यही ख़ुदा की बनावट है जिस पर उसने लोगों को पैदा

يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۳۰﴾ ۙ مُنِيۡبِيۡنَ اِلَيۡهِ وَاتَّقُوۡهُ وَاَقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا

किया। ख़ुदाकी बनावट में तबद्दुल नहीं। यही मज़बूत दीन है। मगर बहुत से लोग नहीं जानते। ३१.

تَكُوۡنُوۡا مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ﴿۳۱﴾ ۙ مِنَ الَّذِيۡنَ فَرَّقُوۡا دِيۡنَهُمۡ وَكَانُوۡا

उसीकी तरफ़ रूजू होकर इबादत करो व उसीसे डरते रहो। व पाबंदी से नमाज़ पढ़ो व मुश्रेकीन से न हो

شِيَعًا ؕ كُلُّ حِزۡبٍۢ بِمَا لَدَيۡهِمۡ فَرِحُوۡنَ ﴿۳۲﴾ وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ

जाना। ३२. जिन्होंने अपनी दीन में तफ़र्रक़ापरदाज़ी की व मुख़्तलिफ़ ाफ़िरके बनगए ।जो जिस ाफ़िरके

دَعَوۡا رَبَّهُمۡ مُّنِيۡبِيۡنَ اِلَيۡهِ ثُمَّ اِذَاۤ اَذَاقَهُمۡ مِّنۡهُ رَحۡمَةً اِذَا فَرِيۡقٌ

के पास है उसी में नेहाल है।३३.व जब लोगों को कोई मुसीबत छू भी गईतो उसीकी तरफ रूजू होकर

مِّنۡهُمۡ بِرَبِّهِمۡ يُشۡرِكُوۡنَ ﴿۳۳﴾ ۙ لِيَكۡفُرُوۡا بِمَاۤ اٰتَيۡنٰهُمۡ ؕ

अपने रब को पुकारने लगते हैं। फिर जब वो अपनी रहमत की चखाता है तो उन्हीं में से कुछ लोग अपने

فَتَمَتَّعُوۡا ۚ فَسَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۳۴﴾ اَمۡ اَنۡزَلۡنَا عَلَيۡهِمۡ سُلۡطٰنًا

रब के साथ शिर्क करने लगते हैं।३४.ताकि जो हमने दिया उसकी नाशुक्री करें।दुनिया में चंद रोज़ फिर

فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ﴿٣٥﴾ وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً

तो बहुत जल्द तुम्हें मालूम ही होगा। ३५.क्या हमने उन लोगों पर कोई दलील नाज़ल की है जो उसको

فَرِحُوا بِهَا ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ

बयान करती है जिससे शरीक ठहराते हैं।३६. व जब हमने लोगों को अपनी रहमत चखादी तो वह उससे

يَقْنَطُونَ ﴿٣٦﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ

ख़ुश हुए।व जब उन्हें अपनी कारस्तानियों की बदौलत कोई मुसीबत पहुंची तो मायूस हो व्ार बैठे रहते

وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣٧﴾ فَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ

हैं। ३७.क्या उनलोगों ने ग़ौर न किया के ख़ुदा ही जिसकी रोज़ी चाहता है कुशादा कर देता है व तंग करता

حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يُرِيدُونَ

है कुछ शक नहीं कि उसमें ईमानदार लोगों के वास्ते बहुतसी निशानियाँ हैं।३८. तो क़राबतदार का हक़

وَجْهَ اللَّهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٣٨﴾ وَمَا آتَيْتُم مِّن رِّبًا

दे दो और मोहताज व परदेसी का। जो लोग ख़ुदाकी ख़ुशनूदीके ख़्वाहा हैं उनके हक़ में यही सबसे बेहतर

لِّيَرْبُوَ فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُو عِندَ اللَّهِ ۖ وَمَا آتَيْتُم مِّن

है व ऐसे ही लोग अपनी दिली मुरादें पाएंगे। ३९. व तुम लोग जो सूद देते हो ताकि लोगों के माल में तरक्की

زَكَاةٍ تُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُونَ ﴿٣٩﴾ اللَّهُ الَّذِي

हो।तो ख़ुदा के यहां फूलता फलता नहीं व तुम लोग जो ख़ुदाकी ख़ुशनूदी के इरादे से ज़कात देते हो तो

خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۖ هَلْ مِنْ

ऐसे ही लोग दुनादून लेनेवाले हैं।४०.ख़ुदा वह है जिसने तुमको पैदा किया फिर उसी ने रोज़ी दी फिर वही

شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۖ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا

तुमको मार डालेगा फिर वही तुमको ज़िन्दा करेगा शरीकों में से कोई भी ऐसा है जो कर सके? जिसे ये

يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٠﴾ ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي

लोग शरीक बनाते हैं वह उसे पाक-ओ पाकीज़ा व बरतर है। ४१. ख़ुद लोगों ही की हरकतों की बदौलत

النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤١﴾ قُلْ

ख़ुश्क-ओ तर में फ़साद फैला ताकि जो कुछ ये लोग कर चुके ख़ुदा उनको उनमें से बाज़ करतूतों का

سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ

मज़ा चखाए। ताकि ये लोग बाज़ आएँ।४२.तुम कह दो कि ज़रा रूए ज़मीन पर फिर कर देखो तो जो

قَبْلُ ۖ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ﴿٤٢﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ

लोग उसके क़ब्ल गुज़र गए उनका क्या हुआ। उनमें से बहुतेरे तो मुश्रिक ही हैं। ४३. तो तुम उस दिन के

الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ

आने से पहले जो ख़ुदा की तरफ से आकर रहेगा (व) कोई उसे रोक नहीं सकता अपना रूख मज़बूत

يَّصَّدَّعُوْنَ ﴿٤٣﴾ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا

दीनकी तरफ़ किए रहो।उस दिन लोग अलग अलग हो जाएंगे।४४.जो काफ़र बन बैठा उसपर उसके

فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ﴿۴۴﴾ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

कुफ़्र का वबाल है व जिन्होंने अच्छे काम किए वे अपने ही लिए आसाइश का सामान कर रहे हैं।४५.

الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۴۵﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ

ताकि जो लोग ईमान लाए व अच्छे अच्छे काम किए उनको ख़ुदा अपने फ़ज़्ल से अच्छी जज़ा अता

يُّرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ

करेगा। वह यक़ीनन कुफ़्फ़ार से उल्फ़त नहीं रखता। ४६.उसी की निशानी है के हवाओं को ख़ुशख़ब्री

الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۴۶﴾

के वास्ते भेजता है ताकि तुम्हें अपनी रहमत चखाए। व इसलिए भी कि कशतियाँ उसके हुक्म से चल

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ

खड़ी हों। व ताकि तुम उसके फ़ज़्लो करम की तलाश करो व इस लिए भी ताकि तुम शुक्र करो। ४७.

فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ؕ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ

व हमने तुमसे पहले और भी बहुतसे पैग़म्बर उनकी क़ौम पर भेजे तो वह पैग़म्बर वाज़ेह मोजिज़े लेकर

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۴۷﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ

आए तो उन मु[illegible]ामों से हमने (ख़ूब) बदला लिया।व हमपर तो मोमिनीन की मदद करना लाज़म था ही।

فِي السَّمَآءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَيَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ

४८.ख़ुदा ही वह क़ादिर तवाना है जो हवाओं को भेजता है तो वह बादलों को उड़ाए फिरती हैं फिर वही

خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنۡ يَّشَآءُ مِنۡ عِبَادِهٖۤ اِذَا هُمۡ

ख़ुदा बादल को जिसतरह चाहता आसमान में फैला देता है। फिर उसको टुकड़े (टुकड़े) करता है। फिर

يَسۡتَبۡشِرُوۡنَ ۝٤٨ۚ وَاِنۡ كَانُوۡا مِنۡ قَبۡلِ اَنۡ يُّنَزَّلَ عَلَيۡهِمۡ مِّنۡ

तुम देखते हो कि बुंदियां निकल पड़ती हैं। फिर जब ख़ुदा उन्हें अपने बंदों में से जिस पर चाहता है बरसा

قَبۡلِهٖ لَمُبۡلِسِيۡنَ ۝٤٩ فَانۡظُرۡ اِلٰٓى اٰثٰرِ رَحۡمَتِ اللّٰهِ كَيۡفَ يُحۡىِ

देता है तो वे लोग ख़ुशियाँ मनाने लगते हैं। ४९.अगरचे ये लोग (बाराने रहमत) नाज़ल होने से पहले शुरू

الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحۡىِ الۡمَوۡتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ

ही से बिल्कुल मायूस और मजबूर थे। ५०.ग़र्ज़ ख़ुदा की रहमत के आसार की तरफ़ देखो के क्योंकर

شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ۝٥٠ وَلَٮِٕنۡ اَرۡسَلۡنَا رِيۡحًا فَرَاَوۡهُ مُصۡفَرًّا لَّظَلُّوۡا مِنۡۢ

ज़मीन को उसकी पड़ती होने के बाद आबाद करता है। बेशक यक़ीनी वही मुर्दोंको ज़िन्दा करनेवाला व

بَعۡدِهٖ يَكۡفُرُوۡنَ ۝٥١ فَاِنَّكَ لَا تُسۡمِعُ الۡمَوۡتٰى وَلَا تُسۡمِعُ الصُّمَّ

हर चीज़ पर क़ादिर है।५१. व अगर हम हवा भेजें तो फिर लोग खेती को ज़र्दा देखें तो वे लोग उसके बाद

الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوۡا مُدۡبِرِيۡنَ ۝٥٢ وَمَآ اَنۡتَ بِهٰدِ الۡعُمۡىِ عَنۡ

नाशुक्री करने लगें।५२.तुम तो आवाज़ न मुर्दों ही को सुना सकते हो व न बहरों को जब वो पीठ फेर के

ضَلٰلَتِهِمۡ ؕ اِنۡ تُسۡمِعُ اِلَّا مَنۡ يُّؤۡمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمۡ مُّسۡلِمُوۡنَ ۝٥٣ ع

चले जाएं। ५३.व न तुम अँधों को उनकी गुमराही से राहपर ला सकते हो तुम तो बस लोगों को सुना

اَللّٰهُ الَّذِىۡ خَلَقَكُمۡ مِّنۡ ضُعۡفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنۡۢ بَعۡدِ ضُعۡفٍ قُوَّةً

सकते हो जो हमारी आयतों को दिल से मानें फिर यहीं लोग इस्लाम लानेवाले हैं।५४.ख़ुदा ही तो है

ثُمَّ جَعَلَ مِنۡۢ بَعۡدِ قُوَّةٍ ضُعۡفًا وَّشَيۡبَةً ؕ يَخۡلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ

जिसने तुम्हें नुतफ़े से पैदा किया फिर उसीने बचपने की कमज़ोरी के बाद क़ुव्वत दी। फिर उसीने क़ुव्वत

وَهُوَ الۡعَلِيۡمُ الۡقَدِيۡرُ ﴿۵۴﴾ وَيَوۡمَ تَقُوۡمُ السَّاعَةُ يُقۡسِمُ

के बाद कमज़ोरी व बुढ़ापा पैदा कर दिया तो वो जो चाहता है पैदा करता है व वही बड़ा वाकिफ़-कार व

الۡمُجۡرِمُوۡنَ ۙ مَا لَبِثُوۡا غَيۡرَ سَاعَةٍ ؕ كَذٰلِكَ كَانُوۡا

क़ाबू रखता है।५५.व जिस दिन क़यामत बरपा होगी तो गुनहागर लोग क़समें खाएंगे कि वे घड़ी भर से

يُؤۡفَكُوۡنَ ﴿۵۵﴾ وَقَالَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ وَالۡاِيۡمَانَ لَقَدۡ لَبِثۡتُمۡ

ज़्यादता नहीं ठहरे। यूं ही लोग इफ़्तेरा परदाज़या करते रहे।५६.और जिन लोगों को इल्म व ईमान दिया

فِىۡ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوۡمِ الۡبَعۡثِ ؗ فَهٰذَا يَوۡمُ الۡبَعۡثِ وَلٰكِنَّكُمۡ

गया जवाब देंगे कि तुम तो ख़ुदा की किताब के मुताबिक़ रोज़े क़यामत तक बराबर ठहरे रहे। फिर यह

كُنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۵۶﴾ فَيَوۡمَئِذٍ لَّا يَنۡفَعُ الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا

तो क़यामत ही का दिन है। मगर तुम तो उसका यक़ीन ही न रखते थे।५७.तो उसदिन सरकश लोगों को

مَعۡذِرَتُهُمۡ وَلَا هُمۡ يُسۡتَعۡتَبُوۡنَ ﴿۵۷﴾ وَلَقَدۡ ضَرَبۡنَا لِلنَّاسِ فِىۡ

न उनकी माज़ेरत काम आएगी व न उनकी सुनवाई होगी। ५८.व हमने तो इस क़ुरआन में हर तरह की

هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ

मिसाल बयान की व अगर तुम उनके पास कोई मोजिज़ा लाओ तो भी यक़ीनन कुफ़्फ़ार यही बोल उठेंगे

كَفَرُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ

तुम लोग निरे दग़ाबाज़ हो।५९.जो लोग समझ नहीं रखते उनके दिलों पर ख़ुदा यूं तसदीक़ करता है।६०.

الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٩﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ

तुम सब्र करो। बेशक ख़ुदा का वादा सच्चा है व ऐसा न हो कि जो लोग (तुम्हारी) तसदीक़ नहीं करते तुम्हें

الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٦٠﴾

(बहका कर) ख़फ़ीफ़ कर दें।

सूरह दुख़ान

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. حٰمٓ ﴿١﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ اِنَّآ

ख़ुदा के नाम से जो बहुत मेहेरबान रहमवाला है। १. हा मीम। २. वाज़ेह-ओ रौशन किताब की क़सम। ३.

اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ﴿٣﴾ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ

हमने इसको मुबारक रात में नाज़ल किया। बेशक हम डराने वाले थे। ४. उसी रात को तमाम दुनिया के

حَكِيْمٍ ﴿٤﴾ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ؕ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٥﴾ رَحْمَةً مِّنْ

हिकमत मसलहत के (साल भर के) काम फ़ैसल किए जाते हैं। ५. यानी हमारे यहां से हुक्म होकर। हम ही

رَّبِّكَ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيۡعُ الۡعَلِيۡمُ ۙ﴿۶﴾ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ

(पैग़म्बरों के) भेजने वाले हैं। ६.यह तुम्हारे रब की मेहेरबानी है, वह बेशक बड़ा सुन्नेवाला वाकिफ़कार है।

وَمَا بَيۡنَهُمَا ۘ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّوۡقِنِيۡنَ ﴿۷﴾ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحۡىٖ

७.सारे आसमान व ज़मीन व जो कुछ उन दोनों के दरम्यान है सब का मालिक है अगर तुममें यक़ीन करनेकी

وَيُمِيۡتُ ؕ رَبُّكُمۡ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿۸﴾ بَلۡ هُمۡ فِىۡ شَكٍّ

सलाहियत है ८.उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वही जिलाता है वही मारता है तुम्हारा मालिक व तुम्हारे अगले

يَّلۡعَبُوۡنَ ﴿۹﴾ فَارۡتَقِبۡ يَوۡمَ تَاۡتِى السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيۡنٍ ۙ﴿۱۰﴾

बाप दादाओंका भी मालिक है।९.लेकिन ये लोग तो शकमें पड़े खेलते हैं। १०.तोतुम उस दिनका इंतेज़ार करो

يَّغۡشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۱۱﴾ رَبَّنَا اكۡشِفۡ عَنَّا

कि आसमान से ज़ाहिर बज़ाहिर धुवाँ निकलेगा।११. लोगों को ढाँक लेगा। यह दर्दनाक अज़ाब है।१२. कि

الۡعَذَابَ اِنَّا مُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱۲﴾ اَنّٰى لَهُمُ الذِّكۡرٰى وَقَدۡ جَآءَهُمۡ

परवरदिगार हमसे अज़ाब को दूर करदे।हम अभी ईमान लाते हैं। १३.भला क्या उनको नसीहत होगी जब

رَسُوۡلٌ مُّبِيۡنٌ ۙ﴿۱۳﴾ ثُمَّ تَوَلَّوۡا عَنۡهُ وَقَالُوۡا مُعَلَّمٌ مَّجۡنُوۡنٌ ۘ﴿۱۴﴾ اِنَّا

उनके पास पैग़म्बर आ चुके जो साफ़ साफ़ बयान कर देते थे। १४.उसपर भी उन लोगों ने उससे मूँह फेरा

كَاشِفُوا الۡعَذَابِ قَلِيۡلًا اِنَّكُمۡ عَآئِدُوۡنَ ۘ﴿۱۵﴾ يَوۡمَ نَبۡطِشُ

और कहने लगे यह तो सिखाया हुआ दिवाना है। १५. (ख़ैर) हम थोड़े दिन के लिए अज़ाब को टाल देते हैं तुम

الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ﴿۱۶﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ

ज़रूर फिर कुफ़्र करोगे। १६. हम बयक पूरा बदला तो बस उस दिन लेंगे जिस दिन सख़्त पकड़ पकड़ेंगे।१७.

فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ ﴿۱۷﴾ اَنْ اَدُّوْٓا اِلَىَّ عِبَادَ اللّٰهِ ؕ

और उनसे पहले हमने क़ौमे फ़िरऔन की आज़माइश की व उनके पास एक आली क़द्र पैग़म्बर (मूसा)

اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿۱۸﴾ وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّىْٓ اٰتِيْكُمْ

आए। १८.(व कहा)कि ख़ुदा के बंदों (बनी इसराईल) को मेरे हवाले करदो, मैं (ख़ुदा की तरफ़ से) तुम्हारा

بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱۹﴾ وَاِنِّىْ عُذْتُ بِرَبِّىْ وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ﴿۲۰﴾

एक अमानतदार पैग़म्बर हूं। १९. और ख़ुदा के सामने सरकशी न करो मैं तुम्हारे पास एक वाज़ेह दलील ले

وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِىْ فَاعْتَزِلُوْنِ ﴿۲۱﴾ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ

कर आया हूँ। २०.व इस बात से कि तुम मुझे संगसार करो, मैं अपने रब की पनाह मांगता हूं।२१.व अगर

مُّجْرِمُوْنَ ﴿۲۲﴾ فَاَسْرِ بِعِبَادِىْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَاتْرُكِ

तुम मुझपर ईमान नहीं लाए तो तुम मुझसे अलग हो जाओ मगर वह सताने लग)। २२. तब मूसा ने अपने रब

الْبَحْرَ رَهْوًا ؕ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ﴿۲۴﴾ كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ

से दुआ की के यह बड़े शरीर लोग हैं। २३.तो ख़ुदा ने हुक्म दिया कि तुम मेरे बंदों को रातों रात लेकर चले

وَّعُيُوْنٍ ﴿۲۵﴾ وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿۲۶﴾ وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا

जाओ व तुम्हारा पीछा भी ज़रूर किया जाएगा।२४.व दरिया को अपनी हालत पर ठहरा हुआ छोड़ कर (पार

فٰكِهِيْنَ ﴿٢٧﴾ كَذٰلِكَ ۖ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿٢٨﴾ فَمَا بَكَتْ

हो) जाओ उनका सारा लश्कर डुबो दिया जाएगा।२५.वे लोग कितने बाग़ और चशमे।२६.व खेतियां और

عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَلَقَدْ نَجَّيْنَا

नफ़ीस मकान व आराम की चीज़ें।२७.जिसमें वे ऐश व चैन किया करते थे छोड़ गए। २८.यूं ही हुआ, और

بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿٣٠﴾ مِنْ فِرْعَوْنَ ۭ اِنَّهٗ كَانَ

उन तमाम चीज़ों का दूसरे लोगों को मालिक बनाया। २९. तो उन लोगों पर आसमान-ओ ज़मीन को भी रोना

عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى عِلْمٍ عَلَى

न आया न उन्हें मोहलत ही दी गई। ३०. व हमने बनी इ[illegible]ईल को ज़िल्लत के अज़ाब से फ़िरऔन से नजात

الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ ﴿٣٣﴾ اِنَّ

दी। ३१. वह बेशक सरकश व हदसे बाहर निकल गया था। ३२.और हमने बनी इसराईल को समझ बूझकर

هٰٓؤُلَاۗءِ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿٣٤﴾ اِنْ هِيَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ

सारे जहान से बरगज़ीदा किया था। ३३. व हमने उनको ऐसी निशानियाँ दी थीं जिनमें सरीही आज़माइश

بِمُنْشَرِيْنَ ﴿٣٥﴾ فَاْتُوْا بِاٰبَاۗىِٕنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٦﴾ اَهُمْ خَيْرٌ

थी।३४.यह कहते हैं कि हमें तो सिर्फ़ एक बार मरना है।३५.और फिर हम दोबारा उठाए न जाएंगे। ३६. तो

اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ وَّالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ اَهْلَكْنٰهُمْ ۡ اِنَّهُمْ

अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादाओं को ले तो आओ। ३७. भला ये लोग अच्छे हैं या तबाह क़ौम व वे

كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا

लोग जो उनसे पहले हो चुके हमने उन सबको हलाक कर दिया के वो ज़रूर गुनहगार थे।३८.व हमने सारे

لٰعِبِينَ ﴿٣٨﴾ مَا خَلَقْنٰهُمَآ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

आसमान-ओ ज़मीन और जो चीज़ें उन दोनों में हैं। ३९.उन दोनों को हमने बस ठीक (मसलहत से) पैदा किया

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٠﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَنْ

मगर उनमें के बहुतेरे लोग नहीं जानते। ४०. बेशक क़यामत का दिन उनसब का मुक़र्ररा समय है। ४१. जिस

مَوْلًى شَيْـًٔا وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ﴿٤١﴾ إِلَّا مَنْ رَحِمَ اللّٰهُ ۚ إِنَّهُ

दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम न आएगा और न उनकी मदद की जाएगी। ४२. मगर जिस पर

هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٤٢﴾ إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ﴿٤٣﴾ طَعَامُ

ख़ुदा रहेम फ़रमाए। बेशक (खुदा) सब पर ग़ालिब, बड़ा रहेमवाला है। ४३. (आख़ेरत में) थूहड़ का दरख़्त।

الْأَثِيمِ ﴿٤٤﴾ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ﴿٤٥﴾ كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ﴿٤٦﴾

४४. ज़रूर गुनहगार का खाना होगा। ४५. जैसे पिघला हुआ ताँबा वह पेटों में इस तरह उबाल खाएगा।

خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلٰى سَوَآءِ الْجَحِيمِ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ

४६. जैसे खौलता पानी। ४७. (फ़रिश्तों को हुक्म होगा) उसको पकड़ो और घसीटते हुए दोज़ख़ के बीचों

مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ﴿٤٨﴾ ذُقْ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ﴿٤٩﴾

बीच ले जाओ।४८. फिर उसके सर पर खौलते हुए पानी का अज़ाब डालो ४९. अब मज़ा चखो बेशक तू तो

اِنَّ هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهٖ تَمْتَرُوْنَ ۝٥٠ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ

बड़ी इज़्ज़तवाला सरदार है। ५०. यह वही (दोज़ख़) तो है जिसमें तुम लोग शक किया करते थे। ५१. बेशक

اَمِيْنٍ ۝٥١ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝٥٢ يَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ

परहेज़गार लोग अमन की जगह। ५२.बाग़ों और चश्मों में होंगे। ५३. रेशम की बारीक और कभी दबीज़

وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ۝٥٣ كَذٰلِكَ ۣ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ۝٥٤

पोशाक पहने जोड़ लगा देंगे। ५४. ऐसा ही होगा और हम बड़ी बड़ी आँखोंवाली हूरों से उनके जोड़ लगा देंगे।

يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ ۝٥٥ لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ

५५. वहां इतमीनान से हर क़िस्म के मेवे मँगवा कर खाएंगे। ५६. वहां पहले दफ़ा की मौत के सिवा उनको

اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى ۚ وَوَقٰىهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝٥٦ فَضْلًا مِّنْ

मौत की तलख़ी चखनी ही न पड़ेगी और ख़ुदा उनको दोज़ख़ के अज़ाब से महफ़ूज़ रखेगा।५७.(ये) तुम्हारे

رَّبِّكَ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝٥٧ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ

रब फ़ज़्ल है, यही तो बड़ी कामयाबी है। ५८. तो हमने इस क़ुरआन को तुम्हारी ज़बान में आसान कर दिया

لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝٥٨ فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ۝٥٩

ताकि ये लोग नसीहत पकड़ें। ५९. तो तुम भी मुन्तिज़र रहो और ये लोग भी मुंतिज़र हैं।

हदीसे किसा

सहीह सनद से जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह अन्सारी से रिवायत है के उन्हों ने कहा:

عَنْ جَابِرِ ابْنِ عَبْدِ اللهِ الْاَنْصَارِیْ عَنْ فَاطِمَةَ الزَّاهْرَاءِ

एक रोज़ मेरे पिदर रसूलुल्लाह (स.अ.व.व.) तश्रीफ़ लाये व कहा सलाम हो तुम पर ऐ फ़ातिमा, मैंने कहा आप

عَلَيْهَا السَّلَامُ بِنْتِ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

पर भी सलाम हो बाबा, पस आपने कहा फ़ातिमा मैं अपने जिस्म में कमज़ोरी पाता हूँ, फ़ातिमा ने अर्ज़ किया

قَالَ سَمِعْتُ فَاطِمَةَ اَنَّهَا قَالَتْ دَخَلَ عَلَيَّ اَبِیْ رَسُوْلُ اللهِ فِیْ

आपको ख़ुदा की पनाह में देती हूँ बाबा कमज़ोरी से, आँहज़रत ने कहा फ़ातिमा! मेरे लिए चादरे यमानी लाओ,

بَعْضِ الْاَيَّامِ فَقَالَ السَّلَامُ عَلَيْكِ يَا فَاطِمَةُ فَقُلْتُ عَلَيْكَ

व मुझे उढ़ा दो, कहा फ़ातिमा ने कि मैं चादरे यमानी लाई, व मैंने आँ हज़रत (स.अ.व.व.) को उढ़ा दी और मैं

السَّلَامُ قَالَ اِنِّیْۤ اَجِدُ فِیْ بَدَنِیْ ضُعْفًا فَقُلْتُ لَهٗ اُعِيْذُكَ بِاللهِ

हज़रत (स.अ.व.व.) को देख रही थी कि चेहरा हज़रत (स.अ.व.व.) का नूरानी व रौशन हो कर चमकने लगा

يَا اَبَتَاهُ مِنَ الضُّعْفِ فَقَالَ يَا فَاطِمَةُ اِيْتِيْنِیْ بِالْكِسَآءِ الْيَمَانِیْ

मिस्ले चौधवीं रात के चाँद के, कहा फ़ातिमा (स) ने, फिर एक साअत गुज़री थी कि मेरा बेटा हसन आया और

فَغَطِّينِىْ بِهٖ فَاَتَيْتُهٗ بِهٖ وَصِرْتُ اَنْظُرُ اِلَيْهِ وَاِذَا وَجْهُهٗ يَتَلَالَؤُ

कहाः सलाम हो आप पर एक मादरे गिरामी, पस! कहा मैंनेः व तुम पर भी मेरा सलाम हो, ऐ खुंकीए चश्म व मेरे

كَاَنَّهُ الْبَدْرُ فِىْ لَيْلَةِ تَمَامِهٖ وَ كَمَالِهٖ. فَمَا كَانَتْ اِلَّا سَاعَةً وَّ

मेवए दिल, पस! हसन (अ.स.) ने मुझसे कहाः ऐ अम्माजान मैं सूँघ रहा हूँ आपके पास ऐसी ख़ुशबू गोया वह

اِذَا بِوَلَدِىَ الْحَسَنِ قَدْ اَقْبَلَ وَ قَالَ السَّلَامُ عَلَيْكِ يَآ اُمَّاهُ

मेरे नाना पाक रसूलुल्लाह की है कहा फ़ातिमा (स) नेः हां तुम्हारे नाना आराम कर रहे हैं ज़ेरे चादर, पस! हसन

فَقُلْتُ وَ عَلَيْكَ السَّلَامُ يَا قُرَّةَ عَيْنِىْ وَ ثَمَرَةَ فُؤَادِىْ فَقَالَ يَا

(अ.स.) चादर की तरफ़ आए व कहा सलाम हो आप पर ऐ मेरे नाना जान व ऐ रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) की है

اُمَّاهُ اِنِّىْٓ اَشُمُّ عِنْدَكِ رَآئِحَةً طَيِّبَةً كَاَنَّهَا رَآئِحَةُ جَدِّىْ رَسُوْلِ

कहा फ़ातिमा (स) नेः कि हां तुम्हारे नाना आराम कर रहे हैं ज़ेरे चादर, पस! हसन (अ.) चादर की तरफ़ मुतवज्ज़े

اللهِ فَقُلْتُ نَعَمْ اِنَّ جَدَّكَ تَحْتَ الْكِسَآءِ فَاَقْبَلَ الْحَسَنُ نَحْوَ

हुऐ व अर्ज़ कियाः सलाम हो आप पर ऐ मेरे नानाजान व ऐ रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) क्या आप मुझे इजाज़त देते

الْكِسَآءِ وَ قَالَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا جَدَّاهُ يَا رَسُوْلَ اللهِ اَتَاْذَنُ

हैं कि मैं दाख़ल होऊँ आप (स.अ.व.व.) के पास चादर में? रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) ने कहाः तुम पर भी सलाम

لِىْ اَنْ اَدْخُلَ مَعَكَ تَحْتَ الْكِسَآءِ فَقَالَ وَ عَلَيْكَ السَّلَامُ يَا

हो ऐ मेरे बेटे! व मेरे हौज़े (कौसर) के मालिक! मैं तुमको इजाज़त देता हूँ, पस हसन (अ.स.) आँ हज़रत के पास

وَلَدِیْ وَ یَا صَاحِبَ حَوْضِیْ قَدْ اَذِنْتُ لَكَ فَدَخَلَ مَعَهٗ تَحْتَ

चादर में दाख़ल हुए। कहा फ़ातिमा (अ.स.) नेः अभी एक साअत गुज़री थी कि मेरा बेटा हुसैन (अ.स.) आया व

الْكِسَآءِ. فَمَا كَانَتْ اِلَّا سَاعَةً وَّاِذَا بِوَلَدِیَ الْحُسَیْنِ قَدْ اَقْبَلَ

अर्ज़ किया: सलाम हो आप पर ऐ मादरे गिरामी, पस! मैंने जवाब दियाः तुम पर भी सलाम हो ऐ मेरे फ़रज़न्द ऐ

وَ قَالَ السَّلَامُ عَلَیْكِ یَآ اُمَّاهُ فَقُلْتُ وَ عَلَیْكَ السَّلَامُ یَا

ख़ुंकिए चश्म व ऐ मेरे मेवए दिल। पस! अर्ज़ किया हुसैन (अ.स.) नेः ऐ अम्माजान मैं आपके पास ऐसी ख़ुशबू

وَلَدِیْ وَ یَا قُرَّةَ عَیْنِیْ وَ ثَمَرَةَ فُؤَادِیْ فَقَالَ لِیْ یَآ اُمَّاهُ اِنِّیْٓ اَشُمُّ

सूंघ रहा हूँ कि गोया वह ख़ुशबू मेरे नानाजान जनाब रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) की है, पस! मैंने जवाब दियाः हां

عِنْدَكِ رَآئِحَةً طَیِّبَةً كَاَنَّهَا رَآئِحَةُ جَدِّیْ رَسُوْلِ اللهِ فَقُلْتُ

तुम्हारे नाना रसूल अल्लाह (स.अ.व.व.) व तुम्हारे बिरादरे मोहतरम दोनों ज़ेरे चादर आराम कर रहे हैं, पस हुसैन

نَعَمْ اِنَّ جَدَّكَ وَ اَخَاكَ تَحْتَ الْكِسَاءِ فَدَنَی الْحُسَیْنُ نَحْوَ

(अ.स.) चादर के क़रीब गए व अर्ज़ किया सलाम हो आप पर ऐ नाना जान! और सलाम हो आप पर पर ऐ वह

الْكِسَاءِ وَ قَالَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا جَدَّاهُ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا

बुज़ुर्गवार जिनको ख़ुदा ने मुंतख़ब किया है क्या आप मुझे इजाज़त देते हैं कि मैं आप दोनों बुज़ुर्गों के पास ज़ेरे

مَنِ اخْتَارَهُ اللهُ اَتَاْذَنُ لِیْٓ اَنْ اَكُوْنَ مَعَكُمَا تَحْتَ الْكِسَآءِ؟

चादर दाख़ल होऊँ? कहा रसूले ख़ुदा ने हुसैन (अ.स.) सेः तुम पर भी सलाम हो ऐ फ़रज़न्द और ऐ मेरी उम्मत की

فَقَالَ عَلَيْكَ السَّلَامُ يَا وَلَدِيْ وَيَا شَافِعَ اُمَّتِيْ قَدْ اَذِنْتُ لَكَ

शफ़ाअत करनेवाले! मैं तुम्हें इजाज़त देता हूँ, पस हुसैन (अ.स.) दोनों बुज़ुर्गों के पास ज़ेरे चादर दाख़ल हुए कहा

فَدَخَلَ مَعَهُمَا تَحْتَ الْكِسَآءِ. فَاَقْبَلَ عِنْدَ ذٰلِكَ اَبُو الْحَسَنِ

जनाबे फ़ातिमा (अ.स.) ने! अभी थोड़ी देर गुज़री थी कि हज़रत अबुल हसन अली बिन अबी तालिब (अ.स.)

عَلِيُّ بْنُ اَبِيْ طَالِبٍ وَقَالَ السَّلَامُ عَلَيْكِ يَا بِنْتَ رَسُوْلِ اللهِ

तश्रीफ़ लाए व कहा सलाम हो तुम पर ऐ रसूले ख़ुदा की बेटी, फ़ातिमा ने कहाः आप पर भी सलाम हो ऐ अबुल

فَقُلْتُ وَعَلَيْكَ السَّلَامُ يَا اَبَا الْحَسَنِ وَيَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ

हसन और ऐ अमीरूल मोमिनीन (अ.स.)। अली (अ.स.) ने कहा ऐ फ़ातिमा मैं सूंघ रहा हूँ आपके पास ऐसी ख़ुशबू

فَقَالَ يَا فَاطِمَةُ اِنِّيْ اَشُمُّ عِنْدَكِ رَآئِحَةً طَيِّبَةً كَاَنَّهَا رَائِحَةُ اَخِيْ

गोया वह ख़ुशबू मेरे भाई व मेरे इब्ने अम रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) की है, मैंने कहाः आप आगाह हों वह जनाब

وَابْنِ عَمِّيْ رَسُوْلِ اللهِ فَقُلْتُ نَعَمْ هَا هُوَ مَعَ وَلَدَيْكَ تَحْتَ

मए आपके दोनों फ़रज़न्दों के आराम कर रहे हैं चादर के नीचे, पस! अली इब्ने अबी तालिब (अ.स.) मुतवज्ज़े हुए

الْكِسَآءِ فَاَقْبَلَ عَلِيٌّ نَحْوَ الْكِسَآءِ وَقَالَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا

चादर की तरफ़ व अर्ज़ किया आप पर ऐ रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) सलाम हो। क्या आप मुझे इजाज़त देते हैं कि

رَسُوْلَ اللهِ اَتَاْذَنُ لِيْ اَنْ اَكُوْنَ مَعَكُمْ تَحْتَ الْكِسَآءِ؟ قَالَ لَهٗ

मैं भी आपके पास ज़ेरे चादर हाज़र हो जाऊँ? कहा रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) ने तुम पर भी सलाम हो ऐ मेरे भाई

وَعَلَيْكَ السَّلَامُ يَا اَخِيْ يَا وَصِيِّيْ وَخَلِيْفَتِيْ وَصَاحِبَ لِوَآئِيْ

व मेरे वसी व मेरे ख़लीफ़ा व मेरे अलमदार मैं तुम्हें चादर के नीचे दाख़ल होने की इजाज़त देता हूँ, पस अली इब्ने

قَدْ اَذِنْتُ لَكَ فَدَخَلَ عَلِيٌّ تَحْتَ الْكِسَآءِ. ثُمَّ اَتَيْتُ نَحْوَ

अबी तालिब (अ.स.) चादर में दाख़ल हुए, कहा फ़ातिमा (स) ने कि बाद इसके मैं ख़ुद इस चादर की तरफ़ मुतवज़्ज़े

الْكِسَآءِ وَقُلْتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَتَاهُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَتَأْذَنُ

हुई व अर्ज़ किया मैंने सलाम हो आप पर ऐ बाबा जान ऐ रसूले ख़ुदा क्या आप इजाज़त देते हैं मुझे कि मैं भी इस

لِيْ اَنْ اَكُوْنَ مَعَكُمْ تَحْتَ الْكِسَآءِ؟ وَقَالَ وَعَلَيْكِ السَّلَامُ

चादर में आपके साथ दाख़ल हो जाऊं, कहा रसूले ख़ुदा ने हां ऐ मेरी बेटी व मेरी पारएजिगर, मैं तुमको चादर में

يَا بِنْتِيْ وَيَا بِضْعَتِيْ قَدْ اَذِنْتُ لَكِ فَدَخَلْتُ تَحْتَ الْكِسَآءِ.

दाख़ल होने की इजाज़त देता हूँ फ़ातिमा (स) कहती हैं कि मैं आँहज़रत (स.अ.व.व.) के पास ज़ेरे चादर दाख़ल हुई,

فَلَمَّا اكْتَمَلْنَا جَمِيْعًا تَحْتَ الْكِسَآءِ اَخَذَ اَبِيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ

फ़ातिमा (स) कहती हैं कि जब हम सब अहलेबैत चादर के नीचे जमा हो गए तो मेरे वालिदे मोहतरम रसूले ख़ुदा

بِطَرَفَيِ الْكِسَآءِ وَ اَوْمَئَ بِيَدِهِ الْيُمْنٰى اِلَى السَّمَآءِ وَ قَالَ

ने चादर के दोनों सिरे थामे व अपने हाथ को आसमान की तरफ़ बुलंद करके गोया हुएः बारे इलाहा! यही हैं फ़क़त

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰؤُلَآءِ اَهْلُ بَيْتِيْ وَخَاصَّتِيْ وَحَامَّتِيْ لَحْمُهُمْ لَحْمِيْ

मेरे अहलेबैत व मेरे मख़्सूसीन और मेरे हामी व मददगार व वह जिन का गोश्त मेरा गोश्त और जिनका ख़ून मेरा

وَ دَمُهُمْ دَمِيْ يُؤْلِمُنِيْ مَا يُؤْلِمُهُمْ وَ يَحْزُنُنِيْ مَا يَحْزُنُهُمْ اَنَا

ख़ून है, जिन्होंने उनको अज़ीयत दी उन्होंने मुझको अज़ीयत दी, जिन्होंने उन्हें ग़मगीन किया उन्होंने मुझे ग़मगीन

حَرْبٌ لِّمَنْ حَارَبَهُمْ وَ سِلْمٌ لِّمَنْ سَالَمَهُمْ وَ عَدُوٌّ لِّمَنْ

किया, जिसने उनसे जंग की उसने मुझसे जंग की, जिसने उनसे सुलह की उसने मुझसे सुलह की व जिसने उनसे

عَادَاهُمْ وَ مُحِبٌّ لِّمَنْ اَحَبَّهُمْ اِنَّهُمْ مِنِّيْ وَ اَنَا مِنْهُمْ فَاجْعَلْ

दुश्मनी रखी उसने मुझसे दुश्मनी रखी, जिसने उनको दोस्त रखा उसने मुझको दोस्त रखा गर्ज़ यह सब मुझसे हैं व

صَلَوٰتِكَ وَ بَرَكَاتِكَ وَ رَحْمَتَكَ وَ غُفْرَانَكَ وَ رِضْوَانَكَ عَلَيَّ وَ

मैं उन सबसे, पस ख़ुदावन्दा! तू इन पर व मुझ पर दरूद, बरकतें व रहमत नाज़ल फ़रमा व उनको व मुझे अपने

عَلَيْهِمْ وَ اَذْهِبْ عَنْهُمُ الرِّجْسَ وَ طَهِّرْهُمْ تَطْهِيْرًا. فَقَالَ

दामने करम में जगह दे तू हमसे राज़ी रह व उनसे हर रिज्स व आलूदगी को दूर रख व उनको पाक रख इतना कि

اللّٰهُ عَزَّ وَ جَلَّ يَا مَلآئِكَتِيْ وَ يَا سُكَّانَ سَمٰوٰتِيْ اِنِّيْ مَا خَلَقْتُ

जितना पाक रखने का हक़ है, पस ख़ुदाए अज़्ज़ा व जल्ला ने फ़रमया ऐ मेरे मलाएका व रहनेवाले मेरे आसमानों

سَمَآءً مَّبْنِيَّةً وَّ لَا اَرْضًا مَّدْحِيَّةً وَّ لَا قَمَرًا مُّنِيْرًا وَّ لَا شَمْسًا

के क़सम है मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की कि नहीं पैदा किया मैंने आसमानों को जो बनाया गया व न ज़मीन

مُّضِيْئَةً وَّ لَا فَلَكًا يَّدُوْرُ وَ لَا بَحْرًا يَّجْرِيْ وَ لَا فُلْكًا يَّسْرِيْ اِلَّا

को जो बिछाई गई, व न महताबे नूरानी को व न आफ़ताबे रौशन को, व न उस फ़लक को जो दौरा करता है व ना

فِیْ مَحَبَّةِ هٰؤُلَآءِ الْخَمْسَةِ الَّذِیْنَ هُمْ تَحْتَ الْکِسَآءِ فَقَالَ

दरयाए जारी को और न कश्ती को जो दरया में चलती है, मगर मुहब्बत में उन पाँचों बुज़ुर्गवारों की जो ज़ेरे चादर

الْاَمِیْنُ جِبْرَآئِیْلُ یَا رَبِّ وَ مَنْ تَحْتَ الْکِسَآءِ؟ فَقَالَ عَزَّ وَ

हैं, पस! अर्ज़ किया जिब्रईले अमीन (अ.स.) ने ए परवरदिगारे आलम वह कौन बुज़ुर्गवार हैं जो चादर के नीचे हैं?

جَلَّ هُمْ اَهْلُ بَیْتِ النُّبُوَّةِ وَ مَعْدِنُ الرِّسَالَةِ هُمْ فَاطِمَةُ وَ

ख़ुदाए साहिबे इज़्ज़त व जलाल ने कहा वह अहलेबैत नबुव्वत व मादने रिसालत हैं, वह फ़ातिमा ज़हरा हैं उनके

اَبُوْهَا وَ بَعْلُهَا وَ بَنُوْهَا. فَقَالَ جِبْرَآئِیْلُ یَا رَبِّ اَتَأْذَنُ لِیْ اَنْ

पिदरे बुज़ुर्गवार हैं उनके शौहरे नामदार हैं व दोनों फ़रज़न्द हैं। फ़रमाया जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने ऐ परवरदिगार!

اَهْبِطَ اِلَی الْاَرْضِ لِاَکُوْنَ مَعَهُمْ سَادِسًا؟ فَقَالَ اللّٰهُ نَعَمْ

मुझे इजाज़त दे कि मैं ज़मीन पर जाकर उन हज़रात (स.अ.व.व.) के साथ छठा शख़्स ज़ेरे चादर हो जाऊं! कहा

قَدْ اَذِنْتُ لَكَ فَهَبَطَ الْاَمِیْنُ جِبْرَآئِیْلُ وَ قَالَ السَّلَامُ

ख़ुदा ने तुमको इजाज़त दी, पस जिब्रईले अमीन (अ.स.) नाज़ल हुए व अर्ज़ किया सलाम हो आप पर ऐ रसूले ख़ुदा

عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَلْعَلِیُّ الْاَعْلٰی یُقْرِئُكَ السَّلَامُ وَ یَخُصُّكَ

(स.अ.व.व.) बित्तहकीक कि ख़ुदाए अली व आला आपको सलाम फ़रमाता है व ख़ास कहता है आपको तहीय्या

بِالتَّحِیَّةِ وَالْاِکْرَامِ وَ یَقُوْلُ لَكَ وَ عِزَّتِیْ وَ جَلَالِیْ اِنِّیْ مَا

और इक्राम के साथ व आपसे फ़रमाता है कि मुझे क़सम है अपने इज़्ज़त व जलाल की कि मैं हर्गिज़ पैदा नहीं

خَلَقْتُ سَمَآءً مَّبْنِيَّةً وَّلَا اَرْضًا مَّدْحِيَّةً وَّلَا قَمَرًا مُّنِيْرًا وَّلَا

करता आसमान को जो बनाया गया है, व न ज़मीन को जो बिछाई गई है व न महताबे नूरानी को व न आफ़ताबे

شَمْسًا مُّضِيْئَةً وَّلَا فَلَكًا يَّدُوْرُ وَلَا بَحْرًا يَّجْرِىْ وَلَا فُلْكًا يَّسْرِىْ

रौशन को, व न फ़लक को जो दौरा करता है, और न दरयाए जारी को, व न कश्ती को जो दरया में चलती है मगर

اِلَّا لِاَجْلِكُمْ وَ مَحَبَّتِكُمْ وَ قَدْ اَذِنَ لِىْ اَنْ اَدْخُلَ مَعَكُمْ فَهَلْ

आप हज़रात (स) के सबब से व आपकी मुहब्बत के बाइस मुझको इजाज़त दी है ख़ुदा ने कि मैं आपके साथ ज़ेरे

تَأْذَنُ لِىْ يَا رَسُوْلَ اللهِ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ وَعَلَيْكَ السَّلَامُ يَآ

चादर दाख़ल हूँ, पस क्या आप भी मुझको इजाज़त देते हैं ऐ रसूले ख़ुदा? कहा रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) ने तुम पर

اَمِيْنَ وَحْيِ اللهِ اِنَّهٗ نَعَمْ قَدْ اَذِنْتُ لَكَ فَدَخَلَ جَبْرَآئِيْلُ

भी सलाम हो ऐ अल्लाह की वही के अमीन मैं तुमको इजाज़त देता हूँ चादर के नीचे आने की, पस हज़रत जिब्राईल

مَعَنَا تَحْتَ الْكِسَآءِ فَقَالَ لِاَبِىْ اِنَّ اللهَ قَدْ اَوْحٰٓى اِلَيْكُمْ يَقُوْلُ

(अ.स.) चादर के नीचे दाख़ल हुए व अर्ज़ किया उन बुज़ुर्गों से कि ख़ुदाए अज़्ज़ा व जल्ला ने वही फ़रमाई है आप

اِنَّمَا يُرِيْدُ اللهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَ

हज़रात की तरफ, वह कहता है सिवाए उसके नहीं कि ख़ुदा चाहता है कि दूर रखे आप हज़रात अहलेबैत (अ.स.)

يُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا فَقَالَ عَلِيٌّ لِاَبِىْ يَا رَسُوْلَ اللهِ اَخْبِرْنِىْ مَا

से नजासत को और आपको पाक रखे जो पाक रखने का हक़ है, पस अर्ज़ की हज़रत अली बिन अबी तालिब

لِجُلُوْسِنَا هٰذَا تَحْتَ الْكِسَآءِ مِنَ الْفَضْلِ عِنْدَ اللّٰهِ فَقَالَ

(अ.स.) ने ऐ रसूले ख़ुदा फ़रमाइये मुझ से इस अम्र को जो हम सब के बैठने से इस चादर में ख़ुदाए तआला के

النَّبِيُّ وَ الَّذِیْ بَعَثَنِیْ بِالْحَقِّ نَبِيًّا وَّاصْطَفَانِیْ بِالرِّسَالَةِ نَجِيًّا

नज़दीक फ़ज़ीलत हासिल है, पस फ़रमया रसूल ने क़सम उस ख़ुदा की जिसने मबऊस किया मुझे बर हक़ नबी

مَّا ذُكِرَ خَبَرُنَا هٰذَا فِیْ مَحْفِلٍ مِّنْ مَحَافِلِ اَهْلِ الْاَرْضِ وَ فِيْهِ

बनाकर नीज़ बरगुज़ीदा किया मुझको रिसालत के साथ और नजात देहन्दा क़रार दिया, जहां ज़िक्र की जायेगी यह

جَمْعٌ مِّنْ شِيْعَتِنَا وَ مُحِبِّيْنَا اِلَّا وَ نَزَلَتْ عَلَيْهِمُ الرَّحْمَةُ

हदीस हमारी किसी महिफ़ल में महिफ़लों से अहले ज़मीन की दरां हालांकि उस महिफ़ल में एक जमाअत जमा हो

وَحَفَّتْ بِهِمُ الْمَلَآئِكَةُ وَاسْتَغْفَرَتْ لَهُمْ اِلٰى اَنْ يَّتَفَرَّقُوْا

हमारे शियों व दोस्तों की उनपर नाज़ल होगी रहमत ख़ुदा की और मलाएका उनको घेर लेंगे व उनके लिए तलबे

فَقَالَ عَلِیٌّ اِذًا وَّ اللّٰهِ فُزْنَا وَفَازَ شِيْعَتُنَا وَرَبِّ الْكَعْبَةِ فَقَالَ

मग़िफ़रत करेंगे यहां तक कि वह सब मुतफ़र्रिक हो जाएं, यह सुनकर अली (अ.स.) ने कहा, फिर तो कामयाब व

النَّبِیُّ ثَانِيًا يَا عَلِیُّ وَ الَّذِیْ بَعَثَنِیْ بِالْحَقِّ نَبِيًّا وَّاصْطَفَانِیْ

कामरान हुए हम व हमारे शिया बेरब्बे ख़ानए काबा, पस कहा रसूले ख़ुदा ने क़सम है उस ख़ुदा की जिसने मुझ को

بِالرِّسَالَةِ نَجِيًّا مَّا ذُكِرَ خَبَرُنَا هٰذَا فِیْ مَحْفِلٍ مِّنْ مَحَافِلِ اَهْلِ

बहक़्क़े नबी मबऊस किया व मुझको रिसालत के साथ बरगुज़ीदा किया, जब बयान की जाएगी यह हदीस किसी

الْاَرْضِ وَ فِيْهِ جَمْعٌ مِّنْ شِيْعَتِنَا وَ مُحِبِّيْنَا وَ فِيْهِمْ مَهْمُوْمٌ

महिफ़ल में अहले ज़मीन की महिफ़लों में से जहां कि जमा हों हमारे शिया व हमारे दोस्त, पस उनमें जो रंजीदा व

اِلَّا وَ فَرَّجَ اللهُ هَمَّهٗ وَ لَا مَغْمُوْمٌ اِلَّا وَ كَشَفَ اللهُ غَمَّهٗ وَ لَا

मलूल होगा, ख़ुदा ज़रूर उसके रंज व आलम को दूर करेगा, व जो कोई तलब करनेवाला हाजत का होगा हक़

طَالِبُ حَاجَةٍ اِلَّا وَ قَضَى اللهُ حَاجَتَهٗ فَقَالَ عَلِيٌّ اِذًا وَّ اللهِ فُزْنَا

तआला उसकी हाजत को ज़रूर पूरी करेगा, यह सुन कर कहा हज़रत अली बिन अबी तालिब (अ.स.) ने क़सम

وَ سُعِدْنَا وَ كَذٰلِكَ شِيْعَتُنَا فَازُوْا وَ سُعِدُوْا فِي الدُّنْيَا وَ

बख़ुदा! हम अहलैबेत फ़ाइज़ और सईद हुऐ व इसी तरह हमारे शिया फ़ाइज़ व सईद हुए दुनिया व आख़िरत में

الْاٰخِرَةِ وَ رَبِّ الْكَعْبَةِ.

काबे के परवरदिगार के करम से।

बाक़यातुस सालिहात

सदा बाक़ी रहनेवाले आमाल

भाग १

फज़ीलते सूरह यासीन

रसूल अक्रम (स.अ.व.व.) से मर्वी हे कि जो शख़्स भी रज़ाए इलाही के लिए सुरह यासीन की तिलावत करेगा ख़ुदावंद आलम उस के गुनाहों को माफ़ कर देगा और उस को १२ ख़त्मे क़ुरआन का सवाब इनायत फ़र्माएगा और अगर मरीज़ के पास इस सूरह की तिलावत की जाए इस के हर हुर्फ के बदले में दस फ़रिश्ते सफ़बस्ता खड़े हो कर उसके लिए इस्तेग़फ़ार करेंगे और उसकी क़ब्ज़े रूह के मौक़े पर हाज़र रहेंगे और उसकी तशीए जनाज़ा भी करेंगे और नामाज़े जनाज़ा भी पढ़ेंगे और ये उस के वक़्ते दफ़न भी मौजूद रेहते हैं।
और अगर कोई मरीज़ इस सूरह की हालते एहतेज़ार मे तिलावत करेगा या उस के नज़दीक कोई दूसरा शख़्स इस की तिलावत करेगा तो ख़ाज़ने जन्नत उस को आबे जन्नत का एक जाम पेश करेगा और वो उसे पी कर दुनिया से सैराब हो कर जाएगा और रोज़े क़यामत क़ब्र से सैरो सैराब उठाया जाएगा और जब तक वो जन्नत में दाख़ल न हो जाएगा किसी भी जाम का मोहताज न होगा।
और मनक़ूल है के सूरह यासीन वो सूरह है जो दुनिया व आख़िरत की सादत को अपनी तिलावत करने वाले के शामिले हाल कर देता है और दुनिया के आलाम व मासाएब और आख़िरत के ख़ाफ़ से नजात दे देता है और हर शर को दफ़ा कर देता है और हर हाजत रवाँ कर देता है। और इस सूरह की तिलावत करनेवाले का सवाब बीस हज के बराबर और जो सिर्फ़ इसे ग़ौर से

सुनेगा उस के लिए एक हज़ार तूर, एक हज़ार बर्कत और एक हज़ार रहमत का सबब है और उस के हर रंज व ग़म को दूर कर देता है।
रसुल अक्रम से रिवायत है के अगर कोई शख़्स क़ब्रस्तान में जाकर सूरह यासीन की तिलावत करता है तो ख़ुदावंदे आलम मुर्दों के अज़ाब में तख़फ़ीफ़ कर देता और उन की तादाद के बराबर वो ख़ुद भी हसनात का हक़दार हो जाता है।
हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रिवायत है के जो शख़्स दिन में सूरह यासीन पढ़ेगा वो रात तक आसूदा और महफ़ूज़ रहेगा और जो शख़्स सोने से पहले तिलावत करेगा ख़ुदावंदे आलम उस के लिए एक हज़ार फ़रिशते माअय्यन कर देगा जो उस को हर शैतान के शर से बचाते रहेंगे और हर अफ़त से महफ़ूज़ रखेंगे और अगर उस दिन मर भी जाए तो ख़ुदावंदे आलम उसे जन्नत में दाख़ल कर देगा।

फज़ीलते सूरह रहमान

मनक़ूल है के हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) ने फ़र्माया सूरह रहमान की तिलावत तर्क न करना के वो मुनाफिक़ीन के दिलों में नहीं ठहरता और रोज़े क़यामत ख़ुदावंद की बार्गाह मे एक हसीन व जमील आदमी बेहतरीन ख़ुशबू की शकल में हाज़र होगा और ख़ुदावंदे आलम से इतना क़रीब होगा के उस से ज़्यादा कोई भी ख़ुदा के क़रीब न होगा। तो उस के बाद पर्वर्दिगार ए आलम उस से फ़र्माएगा के दुनिया में कौन तेरे हुक्म का पैरा था और तेरी मुसलसल तिलावत करता रहता था। वो अर्ज़ करेगा के पर्वर्दिगार फ़ुलां और फ़ुलां शख़्स, तो उन के चहरे नूरानी बना दिए जाएँगे और उन्हें हुक्म होगा के जिस की भी चाहो शिफ़ाअत कर सकते हो। जिस के बाद वो इतनी शिफ़ाअत करेंगे के क़ाबिले शिफ़ाअत लोगों में से कोई बाक़ी न रह पाएगा। उस के बाद खुदावंदे आलम उन से फ़र्माएगा के जन्नत में दाख़ल हो जाओ और जहाँ चाहो वहाँ सुकूनत इख़तियार कर लो।
इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के जो शख्स भी सूरह रहमान की

तिलावत करेगा उसे चाहिए के फ़बे अय्यालाए रब्बेकुमा तुकाज़्ज़िबान के बाद कहे लाबे शयअन मिन आलाएका रब्बे उकज़्ज़ेबो तो अगर रात में तिलावत कर के मर भी जाएगा तो शहीद होगा और अगर दिन में पढ़ेगा और मर जाएगा तो भी शहीद होगा।

फ़ज़ीलते सूरह वाक़िया

कहा जाता है के उसमान बिन अफ़्फ़ान ने अबदुल्लाह बिन मसऊद की मर्ज़ उल मौत में इयादत की और सवाल किया के तुम्हें किस से शिकवा है? उनहों ने कहा के अपने गुनाहों से। फिर दरयाफ़्त किया के किस चीज़ की ख़्वाहिश है। रहमते पर्वरदिगार की। कहा तुम्हारे लिए तबीब न बुला लिया जाए? कहा मेरे तबीब ने ही मुझे मरीज़ बना दिया है। कहा क्या तुमहें कुछ अतिया देने का हुक्म दे दूँ? कहा जब मुझे ज़रूरत थी तो तुमने नहीं दिया और अब देना चाहते हो तो मैं उस से मुसतग़नी हूँ। कहा जो मैं तुमहें दे रहा हूँ वो तुमहारी बेटियों के लिए है। कहा के उन को उस की कोई ज़रूरत नहीं है इस लिए के मैं ने उन को हुक्म दिया है के सूरह वाक़ेआ की तिलावत करें और मैं ने रसूले अक्रम से सुना है के जो शख़्स रात में सूरह वाकेआ की तिलावत करेगा उसे कोई परेशानी लाहक़ ना होगी और हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से भी मनक़ूल है के जो शख़्स हर शब सोने से पहले सूरह वाक़ेआ पढ़ेगा तो ख़ुदावंदे आलम से उस हालत में मुलाक़ात करेगा के उस का चेहरा चौधवीं के चाँद की मानिन्द होगा और इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से ये भी मनक़ूल है के जो शख़्स जन्नत और उस के इनामात का मुश्ताक़ हो उसे सूरह वाक़ेआ की तिलावत करनी चाहिए।

फ़ज़ीलते सूरह जुमा

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से ही मनक़ूल है के जो मोमिन भी हमारा शीया है उस पर वाजिब है के शबे जुमा की नमाज़ में सूरह जुमा और सब्बेहिस्मेका रब्बेकल आला और नमाज़े ज़ोहर में सूरह जुमा और

मुनाफ़ेक़ून की तिलावत करे के अगर ये अमल बजा लाएगा तो रसूल अक्रम का अमल बजा लाया है और ख़ुदावंदे आलम के ज़िम्मे उस का सवाब और उस की जज़ा सिर्फ़ और सिर्फ़ बिहश्त है।

फ़ज़ीलते सूरह मुल्क

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से ये भी मनक़ूल है के जो शख़्स भी सोने से पहले सूरह तबारकल्लज़ी की तिलावत करेगा तो वो सुबह तक ख़ुदावंदे आलम की अमान में रहेगा और उस ही तरह क़यामत तक उस के अमान में रहेगा। यहाँ तक के जन्नत में दाख़िल हो जाए।

क़ुतुब रावंदी ने इब्ने अब्बास से रिवायत नक़ल की है के एक शख़्स ने एक क़ब्र पर ख़ैमा लगाया और उसे इल्म नहीं था के ये क़ब्र है। तो जब उस ने सूरह तबारकल्लज़ी बेयदेहिल मुल्क पढ़ा तो एक चीख़ने वाले की अवाज़ सुनी जो ये कह रहा था के ये सूरह नजात देने वाला है। उस ने रसूल अक्रम से ये क़िस्सा बयान किया तो आप ने फ़र्माया ये सूरह अज़ाबे क़ब्र से नजात देने वाला है।

फ़ज़ीलते सूरह नबा

शेख़ सदूक़ ने इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के आप ने फ़र्माया के जो शख़्स सूरह अम्मा यतसाअलून की तिलावत करेगा वो साल ख़त्म होने से पहले ही ख़ाना काबा की ज़ियारत करेगा बशर्ते ये के साल भर तक हर रोज़ उस की तिलावत करता रहे।

और शेख़ तबरसीr ने मज्मउल बयान में उबय बिन काब से रिवायत की है के हज़रत रसूल अक्रम (स.अ.व.व.) ने फ़र्माया है के जो शख़्स सूरह अम्मा यतसाअलून की तिलावत करेगा ख़ुदावंद आलम उस को रोज़े क़यामत सर्द शराब से सेराब करेगा।

वाज़ेह रहे के अहलेबैत (अ.स.) की रिवायत में नबाए अज़ीम से मुराद विलायत है और उस से हज़रत अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) की ज़ाते गिरामी मुराद है

के वही नबाए अज़ीम और कश्तीए नूह की मानिंद हैं।

फ़ज़ीलते सूरह आला व शम्स

शेख़ सदूक़ ने इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के जो शख़्स सूरह सब्बे इसमे रब्बेकल आला को वाजिब या नाफ़ेला नमाज़ में पढ़ेगा रोज़े क़यामत उस से कहा जाएगा के जिस दरवाज़े से जन्नत में दाख़ल होना चाहे दाख़ल हो जाए।
मज्मउल बयान में उबय बिन काब के हवाले से हज़रत रसूल अक्रम (स.अ.व.व.) से नक़ल किया गया है के जो शख़्स सूरह वश्शम्स की तिलावत करेगा गोया उसने वो सब सदक़ा कर दिया है जिस पर सूरज और चाँद की रौशनी पढ़ती है।

फ़ज़ीलते सूरह क़द्र

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के जो शख़्स सूरह क़द्र को वाजिब नमाज़ में पढ़ेगा उसे ख़ुदा की जानिब से एक मुनादि निदा देगा के तेरे पूर्व गुनाह माफ़ कर दिए गए अब फिर से अमल शुरू कर दे।

फ़ज़ीलते सूरह ज़लज़ला

हज़रत रसूल अक्रम(स.अ.व.व.) से नक़ल किया गया है के जो शख़्स चार बार सूरह ज़लज़ला की तिलावत करेगा वो उस व्यक्ति की तरह है जिस ने पूरा क़ुरान पढ़ा है।

फ़ज़ीलते सूरह आदियात

रिवायत में है के जो व्यक्ति लगातार सूरह आदियात को पढ़ता है तो वह हज़रत अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के साथ मेहशूर होगा।

फ़ज़ीलते सूरह काफ़ेरून, नस्र, इख़लास व मऊज़तैन

मुख़्तलिफ़ आहदीस में वारिद हुआ है के वाजिब और नाफ़ेला नमाज़ों मे सूरह काफ़ेरून को पढ़ने की बहुत फ़ज़ीलत है और इसको पढ़ने का सवाब एक चौथाई क़ुरान के बराबर है और सूरह इख़लास पढ़ने का सवाब एक तिहाई कुरान के बराबर है और वाजिब और मुस्तहब नमाज़ों में सूरह नस्र को पढ़ना दुशमनों पर नुसरत का सबब है। और ये के जब इनसान अपने घर से बाहर जाए तो मऊज़तैन को पढ़े तो बुरी नज़र उसे नुक़सान नहीं पहुँचा सकती और जिस किसी को सपने में डर लगता हो तो उसे सोते समय ये दोनों सूरे और आयतल कुरसी पढ़नी चाहिए।

बाक़यतुस सालेहात

सदा बाक़ी रहनेवाले नेक अमल

मुसतहब दुआएं और नमाज़ें

???

प्रस्तावना

दरगाहे इलाही का ये हक़ीर और गुनहगार गुलाम अब्बास बिन मुहम्मद रज़ा क़ुम्मी (र.अ.) यह कहना चाहता है के ये मज्मुआ मुशत्मिल है दिन और रात के मुख़्ख़्तसर आमाल पर और मैं ने उस मे से थोड़ी मासूर नमाज़ें, थोड़े तावीज़ और हिर्ज़, अज़कार और थोड़ी दुआएँ और थोड़े सुरों और आयतों के ख़्वास और अमवात के आदाब को जमा कर दिया है ताके उसको मफ़ातीउल जिनान के साथ शामिल कर दिया जाए और वे किताबे शरीफ़ हर तरह से कामिल हो जाए और उसका नाम मैं ने बाक़यातुस सालेहात फ़ील अदया वस

सलात अलमंदुबात रखा है के ख़ुदावंदे आलम का इर्शाद है के बिक़यातुस सालिहात तुमहारे रब के पास बेहतर ज़ख़ीरा है। मैं ने इसको छ: हिस्सों और एक ख़ात्मे पर मुरत्तिब किया है। पहले हिस्से में दिन व रात के थोडे आमाल हैं। दूसरे हिस्से में थोड़े मुस्तहब नमाज़ों का ज़िक्र है। तीसरे हिस्से में मुश्किलात और बीमारियों की दुआएँ और बुख़ार के तावीज़ वग़यरा दर्ज हैं। चौथे हिस्से में किताबे शरीफ़ काफ़ी से मुन्तिख़ब दुआएँ हैं। पाँचवे हिस्से में हिर्ज़ और उन दुओं के बारे में है जो किताब मुहज्जुद दावात व मुजताना से ली गई हैं। छटे हिस्से में कुछ सुरों और आयात की तासीर और थोड़ी दुआएँ और कुछ मुतफ़र्रिक चीज़ें हैं। और ख़ात्मे में अमवात का बयान है मुझे पूरा भरोसा है के तमाम ईमानी भाई और शीयाने अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) इस बन्दे को ज़िदंगी में और मरने के बाद दुआए मग़फिरत से फ़रामोश नहीं करेंगे।

भाग एक

दिन व रात के आमाल

वर्ग - १

वो आमाल जिन का समय तुलूए फज्र और तुलूए आफ़ताब के दरमियान है। याद रहे के जुमला आयाते शरीफ़ा में से एक शरीफ़ समय बैनत्तुलूऐन है के अइम्मा अलैहिस्सलाम से इस की फ़ज़ीलत और इस में इबादत व ज़िक्र व तसबीहे ख़ुदा व्ा बहुत अहमियत वारिद हुई है और कुछ रिवायतों में इस समय को ग़फ़लत की घड़ी भी कहा गया है।

जैसा के इमाम बाक़र (अ.स.) से मनक़ूल है के इबलीस दो समय मतलब तुलू और ग़ुरूबे आफ़ताब के समय अपनी फ़ौज को हर तरफ़ फैला देता है परंतू इन दोनों समय में ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्रे ख़ुदा करो और ख़ुदा की पनाह

तलब करो ताके इबलीस और उसकी फ़ौज के शर से बचे रहो और इन दोनों मौक़ों पर अपने बच्चों को ख़ुदा वदें आलम की पनाह में दे दो के ये दोनों मौक़े ग़फ़लत के माक़े हैं।

ये भी याद रहे के इन समय पर सोना मकरूह है और इमाम मुहम्मद बाक़र (अ.स.) से वारिद हुआ है के सुबह के समय सोना अच्छा नहीं है और इस से रोज़ी में कमी हो जाती है, रगं पीला और मुतग़ैर हो जाता है। और उस नींद में हर तरह की बदबख़ती है क्योंकि अल्लाह ताला रोज़ी को तुलुए फ़ज्र और तुलूए आफ़ताब के दरमियान बाटता है परंतु इस समय सोने से बचना चाहिए। शेख़ तूसी (र.अ.) ने मिसबाह में ये दुआ नक़ल की है जिस को तुलूए सुबह सादिक़ के समय पढ़ा जाता है।

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ صَاحِبُنا فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَاَفْضِلْ عَلَيْنَا

ख़ुदाया तू ही हमारा साथी है। इसलिए मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और हमपर अपना

اَللّٰهُمَّ بِنِعْمَتِكَ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ

फ़ज़्लो करम फ़र्मा। ख़ुदाया तेरी नेमत से नेकीयां की तकमील होती है इसलिए मुहम्मद व आले मुहम्मद पर

وَاَتْمِمْهَا عَلَيْنَا عَائِذًا بِاللهِ مِنَ النَّارِ عَائِذًا بِاللهِ مِنَ النَّارِ

रहमत नाज़ल फ़र्मा और उन नेकीयों को हमारे लिए तमाम करदे। हम जहन्नम से ख़ुदा की पनाह चाहते हैं।

عَائِذًا بِاللهِ مِنَ النَّارِ

जहन्नम से ख़ुदा की पनाह चाहते हैं।

उसके बाद ये दुआ पढ़े:

يَا فَالِقَهُ مِنْ حَيْثُ لَا اَرٰى وَمُخْرِجَهُ مِنْ حَيْثُ اَرٰى صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

ऐ सुबह की ईजाद करनेवाले वहाँ से जिसे हम ने नहीं देखा और उस तरह सामने लानेवाले

وَآلِهِ وَاجْعَلْ اَوَّلَ يَوْمِنَا هٰذَا صَلَاحًا وَاَوْسَطَهُ فَلَاحًا وَآخِرَهُ

जैसे हम देख रहे हों। मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा। हमारे आज के दिन की

نَجَاحًا

शुरूआत सलाह और बीच का हिस्सा फ़लाह व आख़री हिस्सा कामयाबी करार दे।

उसके बाद दस बार ये पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّي اُشْهِدُكَ اَنَّهُ مَا اَصْبَحَ بِي مِنْ نِعْمَةٍ اَوْ عَافِيَةٍ فِي دِينٍ اَوْ

ख़ुदाया हम तुझे गवाह बनाते हैं के इस सुबह हमारे पास जो नेमत या दीन या दुनिया की आफ़ियत

دُنْيَا فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ بِهَا عَلَيَّ

है वो सब तेरे ही करम से है। तू ख़ुदाए वहदहू लाशरीक है। तेरे लिए हम्द तेरे लिए शुक्र है। यहाँ

حَتّٰى تَرْضٰى وَبَعْدَ الرِّضَا

तक के तू राज़ी हो जाए।

इन दुआओं के अलावा और बहुत सी दुआओं का ज़िक्र हुआ है इस समय के लिए लेकिन सब से बेहतर यह हैं:

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ

अल्लाह तआला पाक है और सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है व नही है कोई माबूद सिवाए अल्लाह के व अल्लाह सबसे बड़ा है।

ये भी पढ़ना मुसतहब है:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ

सिर्फ़ वो ही ख़ुदा ए वहदहू लाशरीक है। उस ही के लिए मुल्क और उस ही के लिए हम्द है। वो ही

وَيُمِيتُ وَيُحْيِي وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

ज़िंदगी और मौत देनेवाला है। वो हमेशा ज़िदां है। उसके लिए मौत नहीं है। सारी नेकीयाँ उसके

قَدِيرٌ

हाथ में हैं और वो हर चीज़ पर क़ादिर है।

सुबह की अज़ान सुन्ने के बाद ये दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسْأَلُكَ بِاِقْبَالِ نَهَارِكَ وَاِدْبَارِ لَيْلِكَ وَحُضُورِ

ख़ुदाया मैं तुझ से सवाल करता हूँ दिन के आते समय और रात के जाते समय। नमाज़ों के

صَلَوَاتِكَ وَاَصْوَاتِ دُعَائِكَ وَتَسْبِيحِ مَلَائِكَتِكَ اَنْ تُصَلِّيَ

अवक़ात में, दुओं के अवक़ात में और मलायका के तस्बीह के अवक़ात में। तू मुहम्मद व

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاَنْ تَتُوبَ عَلَيَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ

आले मुहम्मद पर रहमत नाज़िल फ़र्मा और हमारी तौबा को क़ुबूल फ़र्मा के तू तो तौबा क़ुबूल

الرَّحِيمُ

करनेवाला और रहम करनेवाला है।

आदाबे बैतुल ख़िला

जब नमाज़ पढ़ना चाहो और तुम्हे बैतुल ख़िला जाने की हाजत महसूस हो तो पहले उस से फ़ारिग़ हो लो। बैतुल ख़िला के आदाब बहुत ज़्यादा हैं मगर यहाँ सिर्फ़ उन का ख़ुलासा बयान किया जा रहा है।
एक ये के अदंर जाते समय पहले बाएँ पैर रखे और ये कहे:

بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ اَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الرِّجْسِ النَّجِسِ الْخَبِيثِ الْمُخْبِثِ

अल्लाह के नाम से और अल्लाह से। मैं अल्लाह से पनाह मांगता हूँ गंदगी व नजासते ख़बीस व

الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

ख़बासत की जड़ से। दुतकारे हुए शैतान से।

और जब कपड़े उतारें तो बिस्मिल्लाह कहे और हर हाल में अपनी शर्मगाह जिन के लिए दिखना हराम है उन से छुपाए रखे और क़िबले की तरफ़ मूहँ या पुश्त कर के बैठ कर पेशाब या पाख़ाना न करें और क़ज़ाए हाजत के समय ये कहे:

اَللّٰهُمَّ اَطْعِمْنِی طَيِّبًا فِی عَافِيَةٍ وَاَخْرِجْهُ مِنِّی خَبِيثًا فِی

ख़ुदाया मुझे पाकीज़ा ग़िज़ा दे आफ़ीयत के साथ और उसे जिस्म से बाहर निकाल दे जब ये

عَافِيَةٍ

ख़बीस हो जाए और वो भी आफ़ीयत के साथ।

और जब निगाह उस ग़लाज़त पर पड़े तो ये कहें:

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِی الْحَلَالَ وَجَنِّبْنِی الْحَرَامَ

ख़ुदाया हमें रिज़्के हलाल अता फ़र्मा और हराम से परहेज़ की तौफीक़ दे।

और इसतिंजा करने से पहले इस्तेबरा करे और पानी पर आँख पड़े तो ये दुआ पढ़ें:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِی جَعَلَ الْمَاءَ طَهُورًا وَلَمْ يَجْعَلْهُ نَجِسًا

सारी तारीफ़ उसके लिए जिसने पानी को पाक बनाया और नजिस नही बनाया।

इसतिंजा करते समय कहें:

اَللّٰهُمَّ حَصِّنْ فَرْجِی وَاَعِفَّهُ وَاسْتُرْ عَوْرَتِی وَحَرِّمْنِی عَلٰی

ख़ुदाया मेरी शर्मगाह की हिफ़ाज़त फ़र्मा, इफ़्फ़त अता फ़र्मा, मेरी परदह पोशी फ़र्मा और मेरे जिस्म

النَّارِ

को जहन्नम पर हराम कर दे।

और जब खड़े हो तब पेट पर दाएँ हाथ को फेर कर कहे:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَمَاطَ عَنِّى الْاَذٰى وَهَنَّاَنِىْ طَعَامِىْ وَشَرَابِىْ وَعَافَانِىْ

सारी तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है जिस ने हमसे अज़ीयतों को दूर किया, खाने पीने को हमारे

مِنَ الْبَلْوٰى

लिए ख़ुशगवार बनाया और हर बला से नजात दी।

फिर बैतुल ख़ला से बाहर निकलते समय पहले दाएँ पैर को बाहर रखें और ये दुआ पढ़े:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ عَرَّفَنِىْ لَذَّتَهُ وَاَبْقٰى فِىْ جَسَدِىْ قُوَّتَهُ وَاَخْرَجَ عَنِّىْ

सारी तारीफ़ उस अल्लाह के लिए जिस ने खाने की लज़्ज़त से आश्ना किया। उसकी ताक़त को

اَذَاهُ يَا لَهَا نِعْمَةً يَا لَهَا نِعْمَةً يَا لَهَا نِعْمَةً لَا يُقَدِّرُ الْقَادِرُوْنَ

जिस्म में बाक़ी रखा और फ़ाज़ल हिस्से को बाहर निकाल दिया। क्या कहना नेमते परवरदिगार

قَدْرَهَا

का, क्या कहना नेमते इलाही का। ये वो शै है जिस पर कोई क़ादिर नहीं।

मिस्वाक के आदाब

मिस्वाक करे के ये मूहँ को साफ़ बलग़म को दूर करती है और दिमाग़ को हुशयार बनाती है और ह़स्नात बढ़ाती है और ख़ुदा की ख़ुश्नूदी की वजह है। मिस्वाक के बाद दो रकत नमाज़ पढ़ना उन सत्तर रकत नमाज़ों से बेहतर है जो बिना मिस्वाक के पढ़ी जाती हों और अगर मिस्वाक नहीं हो तो ऊगंली से मिस्वाक करना काफ़ी है।

वुज़ू के आदाब

और अच्छा है के वुज़ू करते समय चहरे को क़िबले की तरफ़ कर के बैठ जाए और पानी का बरतन अपनी दाएँ तरफ़ रखे और जब पानी पर आँख पड़े तो ये दुआ पढ़े:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ جَعَلَ الْمَاءَ طَهُوْرًا وَلَمْ يَجْعَلْهُ نَجِسًا

सारी तारीफ़ उसके लिए जिसने पानी को पाक बनाया और नजिस नही बनाया।

फिर बरतन में हाथ डालने से पहले हाथों को धो ले और ये दुआ पढ़े:

بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِىْ مِنَ

अल्लाह के नाम से और अल्लाह ही के सहारे, ख़ुदाया मुझ को तौबा करनेवाले और पाकीज़ा

الْمُتَطَهِّرِيْنَ

रहनेवालों में क़रार दे।

इसके बाद तीन चुल्लू पानी ले कर तीन बार कुल्ली करें और कहें:

اَللّٰهُمَّ لَقِّنِی حُجَّتِی یَوْمَ اَلْقَاكَ وَاَطْلِقْ لِسَانِی بِذِكْرَاكَ

ख़ुदाया रोज़े क़यामत मुझे मेरी हुज्ज़त की तलक़ीन करना और अपने ज़िक्र से मेरी ज़बान को रवां बना देना।

इसके बाद तीन बार नाक में पानी डाले और कहें:

اَللّٰهُمَّ لَا تُحَرِّمْ عَلَیَّ رِیحَ الْجَنَّةِ وَاجْعَلْنِی مِمَّنْ یَشَمُّ رِیحَهَا وَرَوْحَهَا

ख़ुदाया मेरे लिए जन्नत की ख़ुशबू को हराम क़रार नही देना और उन लोगों में क़रार देना जो जन्नत

وَطِیبَهَا

की ख़ुशबू से और उसकी पाकीज़ा फ़िज़ा से मुस्तफ़ीज़ हो सकें।

फिर चहरे पर पानी डालें और कहें:

اَللّٰهُمَّ بَیِّضْ وَجْهِی یَوْمَ تَسْوَدُّ الْوُجُوهُ وَلَا تُسَوِّدْ وَجْهِی یَوْمَ

ख़ुदाया हमारे चहरे को उस दिन रौशन कर देना जिस दिन चहरे सियाह हो जाएँ और उस दिन

تَبْیَضُّ الْوُجُوهُ

सियाह न कर देना जिस दिन चहरे रौशन हो जाएँ।

इसके बाद दाएँ हाथ पर पानी डालते हुए कहें:

اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِی كِتَابِی بِيَمِينِی وَالْخُلْدَ فِی الْجِنَانِ بِيَسَارِی وَحَاسِبْنِی

ख़ुदाया मेरे नामा ए आमाल को मेरे दाएँ हाथ में देना और जन्नत मुझे आसानी से इनायत फ़र्मा

حِسَابًا يَسِيرًا

देना और हिसाब में भी आसानी फ़र्मा देना।

इसके बाद बाएँ हाथ को धोते हुए कहें:

اَللّٰهُمَّ لَا تُعْطِنِی كِتَابِی بِشِمَالِی وَلَا مِنْ وَرَاءِ ظَهْرِی وَلَا تَجْعَلْهَا

खुदाया मेरे नामा ए आमाल को बाएँ साथ में या पुश्त की तरफ़ से नही देना और मेरे हाथों को मेरी

مَغْلُولَةً اِلٰى عُنُقِی وَاَعُوذُ بِكَ مِنْ مُقَطَّعَاتِ النِّيرَانِ

गर्दन से बाधं न देना। मैं जहन्नम से तेरी पनाह चाहता हूँ।

इसके बाद दाएँ हाथ से सर का मसह करते हुए कहें:

اَللّٰهُمَّ غَشِّنِی رَحْمَتَكَ وَبَرَكَاتِكَ

ख़ुदाया मुझे अपनी रहमत और बरकतों में ढ़ाँक दे।

फिर पैरों का मसह करते हुए ये पढ़ें:

اَللّٰهُمَّ ثَبِّتْنِي عَلَى الصِّرَاطِ يَوْمَ تَزِلُّ الْاَقْدَامُ وَاجْعَلْ سَعْيِي فِيمَا

ख़ुदाया मुझे सिरात् पर उस दिन साबित क़दम रखना जिस दिन सारे क़दम फिसल रहे हों। मेरी

يُرْضِيكَ عَنِّي يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

सई को उस कामों में क़रार देना जो तुझे राज़ी कर सकें ऐ साहिबे जलाल व इक्राम।

वुज़ू ख़त्म हो जाने के बाद ये कहें:

اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسْاَلُكَ تَمَامَ الْوُضُوءِ وَتَمَامَ الصَّلَاةِ وَتَمَامَ رِضْوَانِكَ

खुदाया मैं तुझ से सवाल करता हूँ के मेरा वुज़ू भी कामिल हो, मेरी नमाज़ भी कामिल हो और मेरे

وَالْجَنَّةَ

लिए तेरी रिज़ा और जन्नत भी कामिल हो।

उसके बाद ये भी पढ़ सकते हैं:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो आलमीन का पालने वाला है।

आख़िर में तीन बार सूरह क़द्र पढ़ें और ख़ुश्बू लगाकर आराम से मस्जिद की तरफ़ जाएँ।

मस्जिद जाने के आदाब

मस्जिद जाते समय घर से निकलने से पहले ये दुआ पढ़ें:

بِسۡمِ اللّٰهِ الَّذِیۡ خَلَقَنِیۡ فَهُوَ یَهۡدِیۡنِیۡ وَالَّذِیۡ هُوَ یُطۡعِمُنِیۡ وَیَسۡقِیۡنِیۡ

उस ख़ुदा के नाम से जिस ने पैदा किया हिदायत दी खाने पीने का सामान दिया और जब मैं बीमार

وَاِذَا مَرِضۡتُ فَهُوَ یَشۡفِیۡنِیۡ وَالَّذِیۡ یُمِیۡتُنِیۡ ثُمَّ یُحۡیِیۡنِیۡ وَالَّذِیۡ اَطۡمَعُ

हो गया तो मुझे शिफ़ा दी। वो ही मौत देनेवाला, वो ज़िंदगी देनेवाला और उस ही से ये उम्मीद है के

اَنۡ یَّغۡفِرَ لِیۡ خَطِیۡٓـَٔتِیۡ یَوۡمَ الدِّیۡنِ رَبِّ هَبۡ لِیۡ حُکۡمًا وَّاَلۡحِقۡنِیۡ

क़यामत के दिन मेरी ख़ताओं को माफ़ करदेगा। ख़ुदाया मुझे हिकमत अता फ़र्मा, मुझे सालेहीन

بِالصّٰلِحِیۡنَ وَاجۡعَلۡ لِّیۡ لِسَانَ صِدۡقٍ فِی الۡاٰخِرِیۡنَ وَاجۡعَلۡنِیۡ مِنۡ وَّرَثَةِ

से मिला दे और आख़री दौर में मेरे लिए नेक नामी की ज़बान क़रार दे और मुझे जन्नत के वारिसों

جَنَّةِ النَّعِیۡمِ وَاغۡفِرۡ لِاَبِیۡ

में करार दे और मेरे माँ बाप को बख़्श दे।

मस्जिद में प्रवेश करने से पहले अपने जूते बाहर छोड़ दें और पहले दाएँ पैर को अंदर रखें और ये दुआ पढ़ें:

بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَمِنَ اللّٰهِ وَإِلَى اللّٰهِ وَخَيْرُ الْاَسْمَاءِ كُلِّهَا لِلّٰهِ تَوَكَّلْتُ

अल्लाह के नाम से, अल्लाह के सहारे से, अल्लाह की तरफ़ से और अल्लाह ही की तरफ़ बहतरीन नाम

عَلَى اللّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ

सब अल्लाह के लिए हैं। मेरा भरोसा अल्लाह पर है। उसके अलावा किसी की कोई ताक़त नही। ख़ुदाया

وَافْتَحْ لِي اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ وَتَوْبَتِكَ وَاَغْلِقْ عَنِّي اَبْوَابَ مَعْصِيَتِكَ

मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा। मेरे लिए अपनी रहमत और तौबा के दरवाज़े खोल

وَاجْعَلْنِي مِنْ زُوَّارِكَ وَعُمَّارِ مَسَاجِدِكَ وَمِمَّنْ يُنَاجِيكَ فِي اللَّيْلِ

दे और मासीयत के दरवाज़ों को बंद करदे। मुझे अपने घर के ज़ाएरीन, अपनी मस्जिद के आबाद

وَالنَّهَارِ وَمِنَ الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ وَادْحَرْ عَنِّي

करनेवालों और दिन रात अपनी बारगाह में मुनाजात करनेवालों और उन लोगों में क़रार दे जिनकी

الشَّيْطَانَ الرَّجِيمَ وَجُنُودَ اِبْلِيسَ اَجْمَعِينَ

नमाज़ में ख़ुशू व ख़§ज़ू हो और मुझ से शैताने रजीम को और इबलीस के लश्करों को दूर करदे

नमाज़ से पहले की दुआ

और जब नमाज़ पढ़ने का इरादा करे तो ये दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ إِنِّي اُقَدِّمُ إِلَيْكَ مُحَمَّدًا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ بَيْنَ يَدَيْ حَاجَتِي

ख़ुदाया मैं तेरी बारगाह में पैग़म्बरे अक्रम को अपनी हाजतों से पहले पेश कर रहा हूँ और उन्हीं के

وَاَتَوَجَّهُ بِهٖ اِلَيْكَ فَاجْعَلْنِي بِهٖ وَجِيهًا عِنْدَكَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ

ज़रिए तेरी बारगाह में हाज़र हो रहा हूँ। मुझे अपने नज़दीक दुनिया व आख़ेरत में अच्छा बना दे और

وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ وَاجْعَلْ صَلَاتِي بِهٖ مَقْبُولَةً وَذَنْبِي بِهٖ مَغْفُورًا

अपने मुक़र्रिब बन्दों में क़रार देदे। पैग़म्बर के तुफ़ैल में मेरी नमाज़ को मक़बूल, मेरे गुनाहों को

وَدُعَائِي بِهٖ مُسْتَجَابًا اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

मग़फ़ूर और मेरी दुआओं को मुस्तेजाब बना दे के तू बहतरीन बख़्शनेवाला और रहम करनेवाला है।

फिर नमाज़ के लिए अज़ान और इक़ामत कहें और अज़ान और इक़ामत के बीच सज्दा कर के बैठ कर कुछ फ़ासला दें कर ये दुआ पढ़ें:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ قَلْبِي بَارًّا وَعَيْشِي قَارًّا وَرِزْقِي دَارًّا وَاجْعَلْ لِي عِنْدَ

ख़ुदाया मेरे दिल को नेक, मेरी ज़िदंगी को मुतमइन, मेरे रिज़्क को मुसलसल क़रार दे और मेरे

قَبْرِ رَسُولِكَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ مُسْتَقَرًّا وَقَرَارًا

वास्ते क़ब्रे पैग़म्बर के पास दाएमी मुस्तक़र क़रार दे।

इसके बाद जो भी हाजत हो ख़ुदावंदे आलम से तलब करें अज़ान और इक़ामत के दरमियान दुआ रद् नहीं होती है और इक़ामत कहने के बाद कहें:

اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ تَوَجَّهْتُ وَمَرْضَاتَكَ طَلَبْتُ وَثَوَابَكَ ابْتَغَيْتُ

ख़ुदाया मैं तेरी तरफ़ मुतवज्ज़ेह हूँ, तेरी रिज़ा चाहता हूँ, तेरे सवाब का ख़्वाहिशमंद हूँ, तुझ पर ईमान

وَبِكَ آمَنْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ

लाया हूँ और तुझ पर भरोसा किया है। ख़ुदाया मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा।

وَافْتَحْ مَسَامِعَ قَلْبِي لِذِكْرِكَ وَثَبِّتْنِي عَلٰى دِينِكَ وَدِينِ نَبِيِّكَ

अपनी याद के लिए मेरे दिल के कानों को खोल दे। अपने और अपने पैग़म्बर (स.अ.व.व.) के

وَلَا تُزِغْ قَلْبِي بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنِي وَهَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ

दीन पर साबित क़दम फ़र्मा और ख़बरदार हिदायत के बाद मेरे दिल में कजी ना पैदा होने पाए।

الْوَهَّابُ

मुझे अपनी बारगाह से रहमत इनायत फ़र्मा के तू बहतरीन अता करनेवाला है

इसके बाद नमाज़ के लिए तैयार हो जाए और अपने दिल को अच्छी तरह तैयार कर लें और अपनी ज़िल्लत और पस्ती के बराबर अपने परवरदिगार की अज़मत व जलाल का अदांज़ा लगाएँ और इस तरह से खड़ा हो जैसे उसे देख रहा हो और इस बात से ह़या करे के ज़बान से उस से बातें करे और ध्यान किसी और की तरफ़ हो। बहुत ही गंभीरता के साथ नम्रता की हालत में अपने दोनों हाथों को घुटनों के ऊपर रानों पर रखें और दोनों पैरों के बीच तीन उंगलीयों से लेकर एक बालिश की दूरी रखें और निगाह स्जिदेगाह पर रखे। फिर नमाज़े फ़ज्र की नीयत करें कुरबतन इलल्लाह और मुस्तहब ये है के छः तकबीरें कहें और हर तकबीर में हाथों को कानों तक उठाए और हतेलियाँ क़िबले की तरफ़ हों और अंगूठे को छोड़कर सब उंगलियाँ मिली हुई हों और तीसरी तकबीर के बाद ये दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِينُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّي ظَلَمْتُ

ख़ुदाया तू ही बादशाहे हक़्क़ और वाज़े करनेवाला है। तेरे अलावा कोई ख़ुदा नही। तू बेनियाज़ है। मैं ने अपने

نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي ذَنْبِي اِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ اِلَّا اَنْتَ

ऊपर ज़ुल्म किया है लेहाज़ा मेरे गुनाहों को माफ़ करदे के तेरे अलावा कोई माफ़ करनेवाला नहीं है।

पाँचवी तकबीर के बाद कहें:

لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ فِي يَدَيْكَ وَالشَّرُّ لَيْسَ اِلَيْكَ

मैं तेरी बारगाह में हाज़र हूँ, सारा ख़ैर तेरे हाथ में है। शर का तुझ से कोई संबंध नहीं। हिदायत

وَالْمَهْدِيُّ مَنْ هَدَيْتَ عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدَيْكَ ذَلِيلٌ بَيْنَ يَدَيْكَ

याफ़ता वो है जिसको तू हिदायत दे। तेरा बन्दा, तेरे बन्दों का फ़र्ज़ंद, तेरी बारगाह में मैं ज़लील,

مِنْكَ وَبِكَ وَلَكَ وَاِلَيْكَ لَا مَلْجَاَ وَلَا مَنْجَى وَلَا مَفَرَّ مِنْكَ اِلَّا

तुझ ही से, तेरे ही ज़रिए, तेरे ही लिए और तेरी ही तरफ़। कोई पनाहगाह और कोई मनिज़ले

اِلَيْكَ سُبْحَانَكَ وَحَنَانَيْكَ تَبَارَكْتَ وَتَعَالَيْتَ سُبْحَانَكَ رَبَّ

नजात तेरे अलावा नहीं है। तू बेनियाज़ है, बा बरकत है, बुलंद व बुज़ुर्ग व बरतर है, बैतुल हराम

الْبَيْتِ الْحَرَامِ

का मालिक है।

और सातवीं तकबीर के बाद कहें:

وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالاَرْضَ عَالِمِ الْغَيْبِ

ख़ुदाया मैं अपना रूख़ किए हूँ उस ख़ुदा की तरफ़ जो आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ है। ग़ायब व हाज़र

وَالشَّهَادَةِ حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ اِنَّ صَلاَتِي وَنُسُكِي

का जानने वाला है। मैं बातिल से कत्रा कर उसका इताअत गुज़ार बन्दा हूँ और मुशरिकीन में नहीं हूँ मेरी

وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا

नमाज़, मेरी इबादतें, मेरी ज़िंदगी और मेरी मौत सब उस ही ख़ुदा के लिए हैं जो रब्बुलआलमीन है। उसका

مِنَ الْمُسْلِمِينَ

काई शरीक नहीं है। उस ही का मुझे हुक्म दिया गया है और मैं उसके इताअत गुज़ार बनदों में से हूँ।

और क़िराते नमाज़ शुरू करने से पहले धीरे से कहें:

اَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

मैं पनाह चाहता हूँ अल्लाह की दुतकारे हुए शैतान से।

और फिर तमाम आदाब के साथ सूरह ह़म्द की तिलावत करें और ह़§ज़ूरे दिल और शब्द के मतलब का ख़ास ध्यान रखें और सूरह ह़म्द के बाद कोई दूसरा सूरह पढ़ें और अच्छा ये है के सूरह हल अता या सूरह नबा या सूरह क़यामत

जैसे सूरों की तिलावत करें। सूरह के अंत होने पर मज़कूरा तरीक़े से तकबीर कहे और रूकू में जाएँ और दाँए हाथ को दाँए घुटने पर रखें और बाँए हाथ को बाँए घुटने पर रखें। हाथ की तमाम उगंलीयाँ खुली रहें और घुटनों से बिल्कुल चिपकी रहें । कमर झुकी रहे। गर्दन दराज़ और मसावी रहे। नज़रें क़दमों के बीच हों और फ़िर सुबहाना रब्बी अल अज़ीमे व बेहम्देही कहे और हो सके तो इसे सात या पाँच बार दोहराए। उसे कहने से पहले ये दुआ पढ़ें:

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ

पाक है मेरा रब जो अज़ीम है और तारीफ़ उसी के लिए है।

बेहतर है के ये जुमला सात पाँच या तीन बार कहें; उस से पहले ये पढ़ें:

اَللّٰهُمَّ لَكَ رَكَعْتُ وَلَكَ اَسْلَمْتُ وَبِكَ آمَنْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ

ख़ुदाया तेरे ही सामने झुक गया हूँ, तेरे सुपुर्द हो गया हूँ, तुझ पर ईमान लाया, तेरे ऊपर भरोसा

وَاَنْتَ رَبِّي خَشَعَ لَكَ سَمْعِي وَبَصَرِي وَشَعْرِي وَبَشَرِي وَلَحْمِي وَدَمِي

किया। तू मेरा रब है। मेरा आँख, कान, बाल, खाल, गोश्त, ख़ून, दिमाग़, आसाब, हि•याँ सब तेरी

وَمُخِّي وَعَصَبِي وَعِظَامِي وَمَا اَقَلَّتْهُ قَدَمَايَ غَيْرَ مُسْتَنْكِفٍ وَلَا

बारगाह में हाज़र हैं मेरा पूरा वुजूद, ना मुझे कोई इनकार है, ना मैं मग़रूर हूँ और ना तेरी बारगाह

مُسْتَكْبِرٍ وَلَا مُسْتَحْسِرٍ

से अलग होनेवाला हूँ।

फिर रूकू से उठते हुऐ कहें:

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ

अल्लाह ने सुना जिसने उसकी तारीफ़ की।

और तकबीर कह कर सजदे में जाए। हर ह़ालत में ख़§ज़ू व ख़ुशू बाक़ी रखे और घुटनों को ज़मीन पर रखने से पहले हतेलियों को ज़मीन पर रखें और माथे को ख़ाके करबला पर रख कर ज़िक्रे सजदा करे और अच्छा ये है के ज़िक्र सात या पाँच बार या तीन बार करे और ज़िक्र से पहले ये दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ لَكَ سَجَدْتُ وَبِكَ آمَنْتُ وَلَكَ اَسْلَمْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ

ख़ुदाया मेरा सजदा तेरे लिए, मेरा ईमान तुझ पर और मैं तेरे सुपुर्द हूँ और तुझ पर एतेबार करनेवाला हूँ। तू

وَاَنْتَ رَبِّي سَجَدَ وَجْهِي لِلَّذِي خَلَقَهُ وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

मेरा परवरदिगार है, मेरा वुजूद उसके सामने सजदा रेज़ है जिस ने पैदा किया है। समात व बसारत इनायत

رَبِّ الْعَالَمِيْنَ تَبَارَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ

करी है। सारी हम्द अल्लाह के लिए जो रब्बुलआलमीन है। बा बरकत है वो ख़ुदा जो बेहतरीन ख़ालिक़ है।

ज़िक्र ख़त्म करने के बाद सजदे से सर उठाकर तकबीर कहें और बाएँ पैर ज़ोर दे कर बैठ जाएँ और ये पढ़े:

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّي وَاَتُوبُ اِلَيْهِ

मैं अल्लाह से मग़ाफ़िरत मांगता हूँ और उससे माफ़ी चाहता हूँ।

और ाफ़िर ये भी कहें:

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَاجْبُرْنِي وَادْفَعْ عَنِّي وَعَافِنِي اِنِّي لِمَا اَنْزَلْتَ

मैं ख़ुदा से तौबा करता हूँ और उसकी बारगाह में इस्तेग़फ़ार करता हूँ। ख़ुदाया मुझे बख़्श दे, मुझ पर रहम कर और मुझ से हर बला

اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ تَبَارَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ

को दफ़ा करदे। मुझे आाफ़ियत अता फ़र्मा के मैं तेरे ख़ैर का मोहताज हूँ। अल्लाह बा बरकत और रब्बुल आलमीन है।

फिर आराम से खड़े होकर सूरह ह़म्द और दुसरा, कोई सूरह पढ़ें मगर सूरह तौह़ीद पढ़ना और तीन बार ये कहना अच्छा है:

بِحَوْلِ اللّٰهِ وَقُوَّتِهِ اَقُومُ وَاَقْعُدُ

मैं अल्लाह की ताक़त से खड़ा होता और बैठता हूँ।

फिर तकबीर कह कर दूसरा सजदा करें और पहले सजदे की तरह अमल अंजाम दें और फिर सजदे से सर उठा कर बैठ जाएँ और खड़े होते समय कहें:

كَذٰلِكَ اللّٰهُ رَبِّي

इसी तरह है अल्लाह मेरा रब।

फिर तकबीर कह कर क़ुनूत के लिए हाथ उठा लें और हाथों को चहरे के सामने रखें हतेलियों को आसमान की दिशा में रखें। अंगूठों को छोड़कर सारी उंगलियाँ मिली हुई हों और अच्छा ये है के क़ुनूत में कलेमाते फ़रज पढ़ें और उसके बाद ये दुआ पढ़ें:

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَعَافِنَا وَاعْفُ عَنَّا فِى الدُّنْيَا وَالاٰخِرَةِ

ख़ुदाया हमारी मग़फ़ेरत फ़र्मा, हम पर रहम कर, हमें आफ़ियत इनायत फ़र्मा दुनिया व आख़ेरत

اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ

में। हमें माफ़ कर दे। तू हर शै पर क़ादिर है।

फिर ये कहें:

اَللّٰهُمَّ مَنْ كَانَ اَصْبَحَ وَلَهُ ثِقَةٌ اَوْ رَجَاءٌ غَيْرُكَ فَاَنْتَ ثِقَتِى

खुदाया अगर किसी ने ऐसी सुबह करी है के उसका ऐतबार या उसकी उम्मीद तेरे अलावा किसी और से

وَرَجَائِى يَا اَجْوَدَ مَنْ سُئِلَ وَيَا اَرْحَمَ مَنِ اسْتُرْحِمَ صَلِّ عَلٰى

है तो मेरे लिए तू ही उम्मीद का मरकज़ है और मेरा ऐतबार तुझ ही पर है तू ही बेहतरीन वो ख़ुदा है जिस

مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَارْحَمْ ضَعْفِى وَمَسْكَنَتِى وَقِلَّةَ حِيلَتِى

से सवाल किया जाए और बेहतरीन वो माबूद जो रहम करनेवाला है मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत

وَامْنُنْ عَلَيَّ بِالْجَنَّةِ طَوْلًا مِنْكَ وَفُكَّ رَقَبَتِي مِنَ النَّارِ

नाज़ल फ़र्मा। हमारी कमज़ोरी, हमारी मस्कनत, हमारी बेचारगी पर रहम फ़र्मा और हमें अपने करम से

وَعَافِنِي فِي نَفْسِي وَفِي جَمِيعِ اُمُورِي بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ

जन्नत इनायत फ़र्मा। हमारी गर्दन को जहन्नुम की आग से आज़ाद कर दे। हमारे नफ़्स और हमारे तमाम

الرَّاحِمِينَ

मामेलात में अपनी रहमत से आफ़ियत अता फ़र्मा के तू बेहतरीन रहम करनेवाला है।

क़ुनूत को देर तक पढ़ना अच्छा है क्योंकि क़ुनूत में पढ़नेवाली दुआएँ बहुत ज़्यादा हैं।
फिर तकबीर कह कर पहली रकत की तरह रूकू और सजदे करें और दोनों सजदों के बाद तशहुद और सलाम के लिए बैठ जाएँ और तश्हुद से पहले कहें:

بِسْمِ اللهِ وَبِاللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَخَيْرُ الْاَسْمَاءِ لِلّٰهِ اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا

अल्लाह के नाम और अल्लाह से और सारी तारिफ़ अल्लाह के लिए है और बेहतरीन नाम अल्लाह के लिए हैं

اللهُ

मै गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही है।

ताक़ीबाते नमाज़

और नमाज़ ख़त्म करने के बाद ताक़ीबात पढ़ना शुरू करें क्योंकि इसकी बहुत ताकीद की गई है। खुदावंदे आलम का इर्शाद है के:

فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ. وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ.

तो जब तुम्हें फ़राग़त मिले तो अपना वसी मोअय्यन करना और अपने रब से रग़बत करना।

रिवायत में इसकी तफ़सीर ये वारिद हुई है के जब नमाज़ ख़त्म हो जाए तो तकलाःrफ बरदाशत करते हुए खुदावंदे आलम की तरफ़ ध्यान कर के उस से अपनी हाजतें तलब करें और उस से हटकर हर किसी से अपनी उम्मीद तोड़ लें।
हज़रत अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से मनक़ूल है के जब तुम नमाज़ ख़त्म कर लो तो हाथों को आसमान की तरफ ऊँचे कर के दुआ की तकलाःrफ सहन करो। रिवायत में वारिद हुआ है के ताक़ीबात पढ़ने से रिज़क में बढ़ोत्री होती है। जब तक एक मोमिन नमाज़ के बाद ताक़ीबात पढ़ता रहता है उसे नमाज़ पढ़ने का सवाब मिलता रहता है। वाजिब नमाज़ के बाद की दुआ की फज़ीलत मुस्तहब नमाज़ के बाद की दुआ है।
अल्लामा मजलिसी (र.अ.) ने फ़र्माया के उर्फ में ताक़ीब उस तिलावते क़ुरान और दुआ को कहा जाता हे जो नमाज़ के बाद पढ़ी जाती है।
अफ़ज़ल ये है के ताक़ीबात को वुज़ू के साथ और क़िबले की तरफ मूहँ कर के बैठ कर पढ़ें और ये भी अच्छा है के तशहुद की तरह बैठे और बात ना करे। ख़ास तौर से शाम की नमाज़ के बाद।
ओलमा ने कहा है के ताक़ीबात में नमाज़ की सारी शरतों का ख़याल रखना चाहिए लेकिन फिर भी जिस तरह मुमकिन हो नमाज़ के बाद तिलावते क़ुरआन और दुआ में मशग़ूल रहे यहाँ तक के रास्ता चलते हुए भी पढ़ सकता है और उस ही हिसाब से सवाब का भी हक़दार होगा। शेख़ अब्बास क़ुम्मी का बयान है के आइम्मा (अ.स.) से दीन और दुनिया के लिए नमाज़ के बाद पढ़ी जानेवाली बेशुमार दुआएँ नक़ल की हुई हैं और कयोंकि जिस्मानी इबादतों में नमाज़ सब से बड़ी इबादत है और नमाज़ की तकमील के लिए मासूरह ताक़ीबात अहम किरदार अदा करती हैं और उन से इनसान के ज़रूरियात पूरे होते हैं और गुनाह मिटते हैं इसलिए मेरे ध्यान में ये ख़याल आया के इन में

से अक्सर दुआओं को बिहारउल अनवार और मिक़बास अल्लामह मजलिसी (र.अ.) से लेकर इस रिसाले में नक़ल कर दूँ।
इन ताक़ीबात की दो क़िस्में हैं। थोड़े ताक़ीबात मुशतरिक हैं और थोड़े ख़ास हैं। मुशतरिक ताक़ीबात उन को कहा जाता है जो नमाज़ के बाद पढ़ी जाती हैं और उन की तादाद बहुत ज़्यादा है। हम इस जगह उन में से सिर्फ थोड़ी बयान करेंगे।

नमाज़ के बाद पढ़ने की सामानय दुआएँ

तसबीह हज़रत फ़ातेमा ज़हरा (स.अ)

जिसकी फ़ज़ीलतें हदीसों में इतनी ज़्यादा हैं के इनका सही तरह से शुमार नामुमकिन है। इमाम ज़ाफ़र सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के हम अपने बच्चों को तसबीह हज़रत फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.) पढ़ने का हुकुम उस ही तरह देते हैं जिस तरह उन्हें नमाज़ की ताकीद करते हैं इसलिए उसे कभी भी नहीं छोड़ना चाहिए और जो शख़्स उसे बराबर पढ़ेगा वे कभी शक़ी बदबख़्त नहीं होगा। और मोतबर रिवायत में है के ख़ुदावंदे आलम ने क़ुर्आने मजीद में जिस ज़िक्रे कसीर का हुकुम दिया है वो तसबीह हज़रत फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.) है। और जो इसे हर नमाज़ के बाद पढ़ता रहेगा मतलब उसने वज़कुरूल्लाहा ज़िक्रन कसीरा पर अमल करते हुए ख़ुदा को बहुत ज़्यादा याद किया है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا

ऐ ईमान वालों, अल्लाह को याद करो ज़िक्रे कसीर के साथ।

इमाम मुहम्मद बाक़र (अ.स.) से मोतबर सनद के साथ रिवायत है के जो शख़्स तसबीह हज़रत फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.) पढ़कर इसतेग़फ़ार करे तो ख़ुदावंदे आलम उसे माफ़ कर देता है। और तसबीह के पूरे कलेमात सौ हैं

लेकिन मीज़ाने अमल में इसकी तादाद एक हज़ार है। तसबीह से शैतान दूर होता है और ख़ुदावंदे आलम की ख़ुशनूदी मिलती है।
और इमाम सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के जो शख़्स नमाज़ के बाद पैरों को हिलाने से पहले तसबीह हज़रत फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.) पढ़ेगा तो उसे माफ़ कर दिया जाएगा और उसके लिय जन्नत वाजिब हो जाएगी।
दूसरी मोतबर हदीस में है के मेरे नज़दीक हर नमाज़ के बाद तसबीह हज़रते फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.) पढ़ना एक हज़ार रकत नमाज़ पढ़ने से अच्छा है।
हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़र (अ.स.) ने फ़र्माया के कोई भी ज़िक्र ऐसा नहीं है जो तसबीह हज़रते फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.) से अच्छा हो व तमजीद परवरदिगार करी जा सकती हो और अगर कोई चीज़ इस से अच्छी होती तो रसूले अक्रम ज़रूर उसे हज़रत फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.) को अता फ़र्माते।
ख़ुलासा ये है के इस फ़ज़ीलत में इतनी ज़्यादा रिवायत हैं के उनको इस रिसाले में बयान नहीं किया जा सकता है।

तसबीह-ए-ज़हरा का तरीक़ा

तसबीह के तरीक़े में भी बहुत इखतेलाफ़ पाया जाता है लेकिन सब से ज़्यादा मश्हूर तरीक़ा ये है:
३४-बार اَللّٰهُ اَكْبَرُ, ३३- बार اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ और ३३-बार سُبْحَانَ اللّٰهِ
कुछ रिवायतों में सुबहानअल्लाह,अलहम्दोल्लिह से पहले भी वारिद हुआ है और कुछ ओलमा ने इन रिवायत की वज़ाहत इस तरह करी है के नमाज़ के बाद पहले तरीक़े से और सोने से पहले दूसरे तरीक़े के मुताबिक़ तसबीह पढ़े अगरचे ज़ाहिरन पहले ही तरीक़े से पढ़ना हर मक़ाम पर अच्छा है। और मुस्तहब ये है के कहें:
जैसा के इमाम सादिक़ (अ.स.) से रिवायत है के जो शख़्स वाजिब नमाज़ के बाद तसबीह हज़रत फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.) पढ़कर एक बार لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहेगा तो ख़ुदावंदे आलम उसके गुनाहों को माफ़ करदेगा।

तुरबते इमाम हुसैन (अ.स.) (ख़ाके शिफ़ा) की तसबीह

अच्छा ये है के तुरबते इमाम हुसैन (अ.स.) (ख़ाके शिफ़ा) की तसबीह इस्तेमाल करे बलके तमाम अज़कार के लिए ये ही तसबीह मुस्तहब है बलके इस तसबीह का अपने पास रखना भी मुस्तहब है कयोंकि ये बलाऔं से अमान के अलावा बहुत सवाब का ज़रीया बनती है।

ये भी मनक़ूल है के शुरूआत में हज़रत फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.) ने ऊन का एक धागा बना कर उस में गिरह लगा दी थीं और आप उन्हीं के ज़रीए गिन कर तसबीह पढ़ा करती थीं। उसके बाद जब जनाब ह़मज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब जंगे ओह़द में शहीद हो गए तो आपने उन की क़ब्रे मुत्हर से मिट्टी लेकर उस से तसबीह बनाई और फिर लोगों ने भी आपकी पैरवी शुरू करदी। और जब हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) की शहादत हो गई तो उसके बाद ये सुन्नत हो गई के आप की क़ब्र की ख़ाक से तसबीह बनाकर तसबीह की जाए। इमामे ज़माना (अ.स.) से रिवायत है के जिस के हाथ में ख़ाके शिफ़ा की तसबीह हो और वो तसबीह पढ़ना और ज़िक्र करना भूल भी जाए तो उसके लिए ज़िक्रे ख़ुदा का सवाब बराबर लिखा जाएगा।

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के ख़ाके शिफ़ा की तसबीह ख़ुद ज़िक्रे ख़ुदा करती है और तसबीह पढ़ती रहती है चाहे इंसान तसबीह करे या ना करे।

और आपने ये भी फ़र्माया के ख़ाके शिफ़ा की तसबीह पर ।ज़िक्र या इसतेग़फ़ार करना दूसरी तसबीहों पर ज़िक्र करने से ७० गुना अच्छा है और अगर ज़िक्र करे बग़ैर ही उसके दानों को हरकत देता रहे तो भी हर दाने के बदले उसके लिए ७ तसबीहों का सवाब लिखा जाता रहेगा।

दूसरी रिवायत में है के अगर ज़िक्र करते हुए दानों को हरकत भी दे तो उसके लिए चालीस नेकियाँ लिखी जाती हैं।

रिवायत में है के जन्नत की हूरें किसी फ़रिश्ते को ज़मीन की तरफ़ जाता हुआ देखती हैं तो उस से इल्तेमास करती हैं के उन के लिए ख़ाके शिफ़ा की तसबीह लेकर आए।

सही ह़दीस में इमाम मूसा काज़म (अ.स.) से मरवी है के मोमिन के पास पाँच

चीज़ें रहना ज़रूरी हैं। मिस्वाक, कंघी, जा-नमाज़, चौंतीस दानों की तसबीह और अक़ीक की अंगूठी।
बज़ाहिर पुख़ता या कच्चे दानों की तसबीह दोनों ही मुनासिब हैं अगर के कच्चे दानों की तसबीह अच्छी है।
इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से मरवी है के जो शख़्स भी क़ब्रे इमाम हुसैन (अ.स.) की ख़ाक से एक तसबीह पढ़ेगा तो ख़ुदावंदे आलम उस के लिए चार सौ ह़सनात लिखेगा और उस के चार सौ गुनाह माफ़ करदेगा और चार सौ ह़ाजतें पूरी करेगा और चार सौ दरजात भी ऊँचे कर देगा।
रिवायत में ये भी है के उसका धागा आसमानी रंग का हो कई रिवायतों में है के औरतों के लिए ऊंगली से तसबीह पढ़ना अफज़ल है, लेकिन ख़ाके शिफ़ा की तसबीह की फज़ीलत हर लेहाज़ से ज़्यादा और हर एतेबार से क़वीतर है।
दूसरे: ताक़ीबात में दूसरी चीज़ ये मुस्तहब है के वाजिब नमाज़ के सलाम के बाद तीन बार कानों तक हाथ ऊँचे कर के अल्लाहो अकबर कहें।
जैसा के अली बिन इब्रहीम (र.अ.) और सय्यद बिन ताऊस (र.अ.) और इबने बाबावए (र.अ.) ने मोतबर सनद से हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के मुफ़ज़्जल बिन उमर ने इमाम से पूछा के नमाज़ी किस बिना पर सलाम के बाद तीन बार हाथ उठाकर अल्लाहो अकबर कहता है? तो आपने फ़र्माया:
जब रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) ने मक्के पर जीत हासिल करने के बाद हजरे असवद के पास नमाज़ पढ़ी और सलाम के बाद तीन बार तकबीर कही और हर तकबीर के बाद हाथों को ऊँचा किया और कहा:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ وَحْدَهُ وَحْدَهُ اَنْجَزَ وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَاَعَزَّ

अल्लाह के अलावा कोई ख़ुदा नहीं। वो एक है, अकेला है, तन्हा है। उसने अपने वादे को पूरा

جُنْدَهُ وَغَلَبَ الاَحْزَابَ وَحْدَهُ فَلَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ

किया, अपने बन्दे की मदद करी, अपने लशकर की मदद करी और तमाम अहज़ाब पर ग़ालिब

وَيُمِيتُ وَيُحْيِي وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

बनाया। उस ही के लिए मुल्क और उस ही के लिए हम्द है। वो ही ज़िदंगी और मौत का देनेवाला

اَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِى لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ذُو الْجَلَالِ وَالاِكْرَامِ

है वो मौत देता है और ज़िन्दा करता है और वो ऐसा ज़िन्दा है जिसको कभी मौत नही। उसके

وَاَتُوبُ اِلَيْهِ

हाथ मे ख़ैर है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है।

फ़िर असहाब की तरफ़ रूख़ कर के फ़र्माया के वाजिब नमाज़ के बाद तकबीर और ये दुआ हरगिज़ न छोड़ें जो शख़्स भी नमाज़ के बाद ऐसा करेगा तो उसने इसलाम और लश्करे इसलाम के ग़ल्बे पर शुक्रे ख़ुदा अदा किया है।
हदीस सही में मनकूल है के जब इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) नमाज़ से फ़ारिग़ होते थे तो अपने मुबारक हाथों को ऊँचा कर के दुआ करते थे।
इमाम बाक़र (अ.स.) से रिवायत है के जो शख़्स भी ख़ुदावंदे आलम की तरफ़ हाथ उठाता है तो ख़ुदावंदे आलम उसे ख़ाली हाथ लौटाने में शर्म महसूस करता है इसलिए जब भी दुआ करो अपने हाथ नीचे ना लाऔ मगर ये के अपने सर और चहरे पर फेरना चाहिए।
तीसरे: कुलैनी (र.अ.) ने इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से मोतबर सनद से रिवायत की है के जो शख़्स नमाज़ ख़त्म करने के बाद ये दुआ तीन बार पढ़ेगा तो ख़ुदावंदे आलम उसके सब गुनाह माफ़ कर देता है चाहे उसके गुनाह समुद्र के झाग से ज़्यादा ही क्यों ना हां:

اَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ ذُوالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

मै इस्तेग़फार करता हूँ अल्लाह से जिसके अलावा कोई ख़ुदा नही है वो ज़िन्दा व पाईंदा है जलालत

وَاَتُوبُ اِلَيْهِ

व इक्राम वाला है और उसी से तौबा करता हूँ।

और दुसरी रिवायत में है के जो शख़्स इस इस्तेग़फार को पढ़ेगा तो ख़ुदावंदे आलम उस के चालीस गुनाहे कबीरा माफ़ कर देगा। कुलैनी (र.अ.) ने इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से मोतबर सनद के साथ ये रिवायत की है के किसी भी नमाज़ के बाद ये दुआ तर्क ना करना:

اُعِيذُ نَفْسِى وَمَا رَزَقَنِى رَبِّى بِاللهِ الْوَاحِدِ الصَّمَدِ الَّذِىْ لَمْ يَلِدْ

मैं अपने नफ़्स और जो कुछ मुझे ख़ुदा ने दिया है सब को उस ख़ुदा की पनाह में देता हूँ जो वाहिद है,

وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا اَحَدٌ وَاُعِيذُ نَفْسِى وَمَا رَزَقَنِى رَبِّى

बेनियाज़ है, ना उसका कोई बाप है ना बेटा और ना कोई हमसर। मैं अपने नफ़्स और तमाम नेमतों को

بِرَبِّ الْفَلَقِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ وَمِنْ شَرِّ

उस ख़ुदा के हवाले करता हूँ जो सुबह का ख़ालिक़ है, जो मुझे मख़लू क़ात के डर से, दिन व रात के

النَّفَّاثَاتِ فِى الْعُقَدِ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ وَاُعِيذُ نَفْسِى وَمَا

शर से और झाड़ फूकं करने वालों के शर से और हर हासिद के शर से महफ़ूज़ रखे है। मैं अपने नफ़्स

رَزَقَنِی رَبِّی بِرَبِّ النَّاسِ مَلِكِ النَّاسِ اِلٰهِ النَّاسِ مِنْ شَرِّ

और अपनी सारी मिलकियत को उस ख़ुदा ए बुज़र्ग व बरतर के हवाले करता हूँ जो इनसानों का रब

الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ مِنَ الْجِنَّةِ

है, इनसानों का मालिक है और इनसानों का माबूद है ताके वो मुझे वसवासे ख़नास के शर से महफ़ूज़

وَالنَّاسِ

रखे जो लोगों के दिलों में वस्वसे पैदा करते हैं चाहे इनसानों में हों या जिन्नात में।

पाँचवे: शेख़ कुलैनी (अ.स.) ने मोतबर सनद के साथ अली बिन महिज़यार से रिवायत की है के मुहम्मद बिन इब्राहीम (अ.स.) ने इमाम अली नक़ी (अ.स.) की ख़िदमत में लिखा के मौला अगर आप मसलह़त सम.झें तो मुझे एक ऐसी दुआ तालीम फ़र्मादें जिस को हर नमाज़ के बाद पढ़ा करूँ और उस की बरकत से मुझे देना व आख़िरत की सादत नसीब हो जाए। हज़रत ने जवाब में ये दुआ फ़र्माई:

اَعُوْذُ بِوَجْهِكَ الْكَرِيْمِ وَعِزَّتِكَ الَّتِیْ لَا تُرَامُ وَقُدْرَتِكَ الَّتِیْ لَا

ख़ुदाया मैं तेरी ज़ाते करीम और तेरी ईज़्ज़ते अज़ीज़ और तेरी क़ुदरते ला मुतनाही की पनाह

یَمْتَنِعُ مِنْهَا شَیْءٌ مِنْ شَرِّ الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنْ شَرِّ الْاَوْجَاعِ كُلِّهَا

चाहता हूँ, दुनीया व आख़िरत के शर से और तमाम बीमारियों के शर से।

एक और रिवायत मे ये भी है:

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

व नही है कोई ताक़त व क़ुद्रत सिवाए अल्लाह के जो बुलंद मरतबा और अज़मत वाला है।

छे: शेख़ कुलैनी और इबने बाबवए (र.अ.) ने सनद सही के ज़रिए हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.स.) और इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के तुम्हारे लिए वाजिब नमाज़ के बाद जो सब से छोटी दुआ तुम्हारे लिऐ काफ़ी है वो ये है

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ مِنْ كُلِّ خَيْرٍ اَحَاطَ بِهٖ عِلْمُكَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ كُلِّ

ख़ुदाया मैं तुझ से हर उस ख़ैर का सवाल करता हूँ जो तेरे इल्म में है और हर उस बुराई से पनाह

شَرٍّ اَحَاطَ بِهٖ عِلْمُكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ عَافِيَتَكَ فِیْ اُمُوْرِیْ كُلِّهَا

चाहता हूँ जो तेरे इल्म में है। ख़ुदाया मैं अपने तमाम मामेलात में आफ़ियत चाहता हूँ। दुनिया की

وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ خِزْیِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْاٰخِرَةِ

रूसवाई और आख़िरत के अज़ाब से पनाह चाहता हूँ।

इबने बाबावए (र.अ.) की रिवायत में दुआ के ये अलफ़ाज़ सुन्नत हैं:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ

ख़ुदाया मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल कर।

दूसरे: नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाए तो ये कहें:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاَجِرْنِى مِنَ النَّارِ وَاَدْخِلْنِى الْجَنَّةَ

ख़ुदाया मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा, मुझे जहन्नुम से पनाह दे दे, जन्नत में

وَزَوِّجْنِى الْحُوْرَ الْعِيْنَ

दाख़ल कर दे और हुरैन से मेरा रिशता क़रार दे दे।

जैसा के मोतबर हदीस में हज़रत अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से रिवायत है के बन्दा उस सनय तक नमाज़ से फ़ारिग़ न हो जब तक ह़क ए ताला से जन्नत का सवाल और दोज़ख़ से उस की पनाह न माँग ले और हुरैन से अपने निकाह़ का सवाल ना करदे।

आठ: मौसीक़ सनद के ज़रिए इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से मरवी है:

के जब ख़ुदावंदे आलम ने हुक्म दिया के ये आयत ज़मीन पर ले जाओ तो उन आयतों ने अर्श ए इलाही पर अर्ज़ किया के परवरदिगार तू हमें ख़ताकारों और गुनहगारों के बीच क्यों भेज रहा है? इर्शाद हुआ के ज़मीन पर जाओ के मैं अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम खाकर कहता हूँ के आले मुहम्मद और उन के शीयों में से कोई भी तुम्हारी तिलावत नहीं करेगा मगर ये के मैं अपनी पोशीदा रहमत से रोज़ाना सत्तर बार इन पर नज़रे रहमत करूँगा और हर नज़र में सत्तर ह़ाजतें पूरी करूँगा और दुआ भी क़ुबूल करलूंगा चाहे उसने जितने गुनाह करे हों।

और दूसरी रिवायत में है के जो शख़्स इन आयत की तिलावत करेगा मैं उसको जन्नत की मुक़द्दस वादी में जगह दूँगा चाहे वो कितना ही गुनहगार क्यों न हो और अगर ऐसा नही किया तो रोज़ाना अपनी ख़ास रहमत से इसकी तरफ़ सत्तर बार नज़र करूँगा और अगर ये भी न किया तो रोज़ाना

उसकी सत्तर हाजतें पूरी करूँगा जिन में सब से छोटी हाजत उसके गुनाहों की माफ़ी है और अगर ये भी इनाम नहीं हुआ तो मैं उसको शैतान और तमाम दुश्मनों के शर से पनाह दे दूंगा और उन के मुक़ाबले में इसकी मदद करूँगा और मौत के अलावा इसको जन्नत में जाने से कोई चीज़ ना रोक सकेगी। और वो आयत ये है:
???

اللهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَاْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا

खुदा ही वो है कि उसके सिवा कोई माबूद नही, जिंदा है (व) सारे जहान का संभालनेवाला है

فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ اِلَّا

उसको न ऊंघ आती है न नींद। जो कुछ आसमानों में है व जो कुछ ज़मीन में है उसी का है कौन

بِاِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ

ऐसा है जो उसकी आज्ञा बिना उसके पास सिफ़ारिश करे। जो कुछ उनके सामने हो और जो कुछ

بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ اِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ

उनके पीछे हो चुका है जानता है। व लोग उसके इल्म में से किसी चीज़ पर भी अहाता नही रखते

وَالْاَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ. لَا اِكْرَاهَ

मगर वो जितना चाहे। उसकी कुर्सा सब आसमानो व ज़मीन को घेरे है व इन दोनो की देखभाल

فِي الدِّينِ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ

उस पर भारी नही है व वो आलीशान बड़ा है। दीन मे किसी तरह की ज़बरदस्ती नही, क्योंकि

وَيُؤْمِنْ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى لَا انْفِصَامَ لَهَا

हिदायत गुमराही से ज़ाहिर हो चुकी तो जिस शख़्स ने झ़ूठे ख़ुदाओं से इन्कार किया व खुदा ही पर

وَاللّٰهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ. اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ آمَنُوْا يُخْرِجُهُمْ مِنَ

ईमान लाया तो उसने वो मज़बूत रस्सी पकड़ ली जो टूट ही नही सकती व ख़ुदा सुनता जानता है।

الظُّلُمَاتِ اِلَى النُّوْرِ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوا اَوْلِيَاؤُهُمُ الطَّاغُوْتُ

ख़ुदा उन लोगों का सरपरस्त है जो ईमान ला चुके कि उन्हें अंधेरों से निकाल कर रौशनी में लाता

يُخْرِجُوْنَهُمْ مِنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمَاتِ اُولٰئِكَ اَصْحَابُ النَّارِ

है व जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया उनके सरपरस्त शैतान हैं के उनको रौशनी से निकाल

هُمْ فِيْهَا خَالِدُوْنَ.

कर अंधेरों में डाल देते हैं, यही लोग तो जहन्नमी हैं (उसमे) हमेशाँ रहेंगे।

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَالْمَلَائِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَائِمًا

अल्लाह गवाह है के उसके अलावा कोई ख़ुदा नहीं है। मलायका और साहिबाने इल्म गवाह हैं। वो

بِالْقِسْطِ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ. اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ

ख़ुदाए आदिल है। उसके अलावा कोई ख़ुदा नहीं है। वो ही अज़ीज़ व हकीम है। दीन अल्लाह के

الْاِسْلَامُ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتَابَ اِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا

नज़दीक सिर्फ इसलाम है और अहले किताब ने जो भी झगड़ा डाला है वो इल्म के आने के बाद,

جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ وَمَنْ يَكْفُرْ بِآيَاتِ اللهِ فَإِنَّ اللهَ سَرِيعُ

ये उनकी ज़्यादती है और जो भी अल्लाह की आयात से इन्कार करेगा ख़ुदा बहुत जल्द हिसाब

الْحِسَابِ.

करनेवाला है।

आयाते मुल्क:

قُلِ اللّٰهُمَّ مَالِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ

ख़ुदाया तू मालिकुल मुल्क है, जिस को चाहता है मुल्क दे देता है, जिस से चाहता है मुल्क ले लेता

تَشَاءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَاءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ

है, जिसे चाहता है इज़्जत देता हे जिसे चाहता है ज़लील कर देता है। सारा ख़ैर तेरे हाथों में है। तू

شَيْءٍ قَدِيرٌ. تُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَتُخْرِجُ

हर शै पर क़ादिर है और रात को दिन में और दिन को रात में दाख़ल कर देता है। ज़िन्दा को मुर्दा

الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَاءُ بِغَيْرِ

से और मुर्दे को ज़िन्दा से निकाल लेता है और जिसे चाहता है बे हिसाब रोज़ी इनायत फ़र्माता है।

حِسَابٍ.

पाक है अल्लाहे अज़ीम व उसीकी हम्द है व नही है कोई ताक़तो क़ुव्वत सिवाए अल्लाह के जो

और मोतबर सनद के साथ हज़रत इमाम मूसा काज़म (अ.स.) से मनक़ूल है के जो शख़्स नमाज़ के बाद आयतल कुर्सा पढ़ेगा तो उसको कोई कीड़ा और जानवर ज़रर नहीं पहुँचा सकता है।

दूसरी मोतबर ह़दीस में है के रसूले ख़ुदा (स) ने फ़र्माया के ऐ अली (अ.स.) हर वाजिब नमाज़ के बाद आयतल कुर्सा की ज़रूर तिलावत किया करो के पैग़म्बर सदीक़ या शहीद के अलावा कोई भी इसकी पाबंदी नहीं कर सकता है।

और रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) से ही रिवायत है के जो शख़्स हर नमाज़ के बाद आयतल कुर्सा पढ़ेगा तो मौत के अलावा उसके लिए जन्नत में दाख़ल होने से कोई शै माने नहीं हो सकती है।

और दूसरी रिवायत में है के जो शख़्स वाजिब नमाज़ के बाद आयतल कुर्सा पढ़ेगा उसकी नमाज़ क़ुबूल होगी और वो ख़ुदा की अमान में रहेगा और ख़ुदा उसको गुनाहों और बलाओं से महफ़ूज़ करदेगा।

नौ: कुलैनी (र.अ.), इबन बाबावए (र.अ.) और दूसरे अफ़राद ने मोतबर सनदों के साथ इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.स.) से रिवायत की है के:

शैबा हुज़ैली ने रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया के या रसूल अल्लाह (स) मैं बुढ़ा हो गया हूँ और अब मेरी ताक़त उन सब आमाल की इजाज़त नहीं देती है जिनका मैं आदी था के उस तरह नमाज़, रोज़ा, और हज व जिहाद नहीं कर सकता हूँ इसलिए मुझे आप ऐसी चीज़ तालीम करें जिस से मुझे फ़ायदा हो और वो मेरे लीए आसान भी हो।

आपने फ़र्माया दोबारा कहो। उसने ये बात तीन बार कही तो आपने फ़र्माया के तुम्हारे चारों तरफ़ कोई भी पेड़ और पत्थर या ढ़ेला ऐसा बाक़ी नहीं रहा जिसने तुम पर तरस खा कर ये ना कहा हो। अब जब तुम नमाज़े सुब्ह से फ़ारिग़ होना तो दस बार कहना:

سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ

बुज़ुर्ग व बरतर है।

الْعَظِيمِ

ख़ुदाया मुझे अपने पास से हिदायत इनायत फ़र्मा, अपने फ़ज़्ल व करम को मेरे शामिले हाल कर

ताके ख़ुदा तुम को इस दुआ की बरकत से नाबिनाई, दिवानगी, बुर्स, जुज़ाम और परेशानहाली से महफ़ूज़ रखे।
शैबा ने अर्ज़ किया रसूल अल्लाह (स) ये तो मेरी दुनिया के लिए है मेरी आख़ेरत के लिए भी कुछ फ़र्माएं तो आपने फ़र्माया के हर नमाज़ के बाद ये दुआ पढ़ो:

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِي مِنْ عِنْدِكَ وَاَفِضْ عَلَيَّ مِنْ فَضْلِكَ وَانْشُرْ عَلَيَّ مِنْ

दे, अपनी रहमत मुझे अता फ़र्मा दे और अपनी बरकतें मुझ पर भेज।

رَحْمَتِكَ وَاَنْزِلْ عَلَيَّ مِنْ بَرَكَاتِكَ

अल्लाह तआला पाक है और सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है व नही है कोई माबूद सिवाए अल्लाह के व अल्लाह सबसे बड़ा है।

फ़िर हज़रत ने फ़र्माया अगर इंसान इसको पूरी ज़िदगी पढ़ता रहे और जान बूझकर तर्क ना करे तो जब वो मैदाने हश्र में आएगा तो आठों दरवाज़े उसके लिए खोल दीए जाँएगे के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़ल हो सकता है।
इसके साथ दूसरी दुआएँ भी मोतबर सनदों के साथ वारिद हुई हैं।
दसवें: तसबीहाते अरबा पढ़े:

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाह तआला पाक है

जैसा के शेख़ तूसी (र.अ.) व इबने बाबवए व हिमयरी (र.अ.) ने सही असनाद के ज़रिए इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के एक दिन रसूले अक्रम ने अपने असहाब से फ़र्माया के तुमहारे पास जितने कपड़े और बरतन हैं अगर इनको एक साथ जमा कर के उन को एक के ऊपर एक रख दिए जाएँ तो क्या ये आसमान तक पहुँच जाएँगे?
सब ने अर्ज़ किया के नहीं!
तो आपने फ़र्माया के क्या तुम लोग चाहते हो के मैं तुम्हे ऐसी चीज़ तालीम दूँ जिसकी जड़ें ज़मीन में हों और उसकी शाख़ें आसमान में हो?
सब ने कहा या रसूल अल्लाह (स), फ़र्माएँ । आपने फ़र्माया के हर नमाज़ के बाद तीस बार कहो...इसकी असल ज़मीन में है और शाख़ें आसमान में हैं। ये इंसान को नगहानी मसाएब, घर के गिरजाने, पानी में ग़र्क हो जाने, आग में जलना, कुँए में गिरना, दरिंदों के फाड़ खाने, बुरी मौत और उस दिन आसमान से नाज़ल होने वाली हर बला को तुम से दूर रखेगा और इसी का नाम बाक़याते सालेहात है जैसा के ख़ुदावंदे आलम ने क़ुरआन मजीद में फ़र्माया है।
और सही सनद के साथ इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के उन तसबीह़ात को हर वाजिब नमाज़ के बाद अपनी जगह से उठने से पहले चालीस बार पढ़कर ख़ुदावंदे आलम से जो भी दुआ करेगा पूरी होगी।
सही सनद के साथ इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के जो शख़्स वाजिब नमाज़ के बाद तीस बार सुब्हान अल्लाह कहेगा तो उसके सब गुनाह झꭤड़ जाँएगे।
और दूसरी ह़दीस में आप ही से मनक़ूल है के खुदावंदे आलम ने क़ुरआने मजीद में जिस ज़िक्रे क़सीर की तारीफ़ की है वो ये है हर वाजिब नमाज़ के बाद तीस बार सुब्हानअल्लाह कहे:

سُبْحَانَ اللهِ

ऐ वो जो चाहता है करता है और उसके अलावा कोई नही जो चाहे करे।

क़ुतुब रावंदी ने हज़रत अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) ने बुरRा इबने आिज़ब से फ़र्माया के क्या तुम चाहते हो के तुम्हें इस चीज़ से बाख़बर करूँ के अगर तुम उस चीज़ को बजा लाओ तो यक़ीनन ख़ुदा के ह़क़ीकी दोस्त बन सकते हो? अर्ज़ किया बेशक! तो आपने फ़र्माया के नमाज़ के बाद तसबीहाते अरबा में से हर एक को दस बार पढ़ो। अगर तुम ऐसा करोगे तो दुनिया में तुम से हज़ार बलाएँ दूर होंगी जिन में से एक बला मुरतद हो जाना भी है और तुम्हारे लिए आख़िरत में हज़ार दरजात महफ़ूज़ हो जाएँगे जिन में से एक दरजा ये है के तुम ह़ज़रत रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) के ज़वार में रहो।
गयारह: शेख़ कुलैनी (र.अ.) ने सनदे ह़सन के साथ ह़ज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के जो शख़्स भी वाजिब नमाज़ के बाद तीन बार ये कहेगा तो जो ह़ाजत तलब करेगा वो पूरी होगी।

يَامَنْ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ وَلَا يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ اَحَدٌ غَيْرُهُ

मैं गवाही देता हूँ के नहीं है कोई ख़ुदा सिवाए अल्लाह के। वो अकेला हे उसका कोई शरीक नहीं

बारह: शेख़ बरक़ी (र.अ.) ने मौसक़ सनद के साथ हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से नक़ल किया है के जो शख़्स नमाज़ ख़त्म होने के बाद अपने ज़ानूओं को ह़रकत देने से पहले दस बार इस तहलील को पढ़ेगा तो खुदावंदे आलम उसके चालीस हज़ार गुनाहों के माफ़ करदेगा और उसके नामा ए अमल में चालीस हज़ार हसनात दर्ज करदेगा और वो ऐसा है के गोया उसने बारह बार क़ुरआन ख़त्म किया है और फ़र्माया है के मैं तो उसे सौ बार पढ़ता हूँ मगर तुम लोगों के लिए दस बार ही काफी है:

اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ اِلٰهًا وَاحِدًا اَحَدًا صَمَدًا

है। वाहिद ख़ुदा है, समद है। उसने न तो कोई साथी रखा है न उसकी कोई औलाद है।

لَمۡ يَتَّخِذۡ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا

ख़ुदाया मेरे लिए गशाय्शे हाल और मुशकिलात से बच निकलने का रास्ता क़रार दे दे और मुझे

इस तहलील की बहुत ही फ़ज़ीलत बयान हुई हैं ख़ास तौर पर नमाज़े सुबह और नमाज़े इशा के बाद और तुलू व ग़ुरूबे आफ़ताब के समय।
तेरहवें: शेख़ कुलैनी (र.अ.) और इबने बाबवए (र.अ.) और दूसरे अफ़राद ने सही सनद के साथ इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के जिबरईल जेल में हज़रत यूसुफ के पास आए और कहा के हर नमाज़ के बाद ये कहा करो:

اَللّٰهُمَّ اجۡعَلۡ لِى فَرَجًا وَمَخۡرَجًا وَارۡزُقۡنِى مِنۡ حَيۡثُ اَحۡتَسِبُ وَمِنۡ

वहाँ से रिज़्क इनायत फ़र्मा जो मेरे ख़याल में हो या मेरे ख़याल से बालातर हो।

حَيۡثُ لَا اَحۡتَسِبُ

ख़ुदाया तेरी मग़िफ़रत मेरे आमाल से ज़्यादा एतेमाद के क़ाबिल है और तेरी रहमत मेरे गुनाहों से ज़्यादा

चौदह: बलदुल अमीन में हज़रत रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) से रिवायत की गई है के जो शख़्स ये चाहता है के ख़ुदावंदे आलम रोज़े क़यामत उसको उसके गुनाहों की सज़ा न दे और उसके गुनाहों का दफ़तर ना खोले तो उसे हर नमाज़ के बाद ये दुआ पढ़ना चाहीए:

اَللّٰهُمَّ اِنَّ مَغۡفِرَتَكَ اَرۡجٰى مِنۡ عَمَلِى وَاِنَّ رَحۡمَتَكَ اَوۡسَعُ مِنۡ ذَنۡبِى

वसीतर है। ख़ुदाया अगर मेरे गुनाह अज़ीम हों तो तेरी माफ़ी मेरे गुनाहों से ज़्यादा अज़ीम है। ख़ुदाया अगर

اَللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ ذَنْبِىْ عِنْدَكَ عَظِيْمًا فَعَفْوُكَ اَعْظَمُ مِنْ ذَنْبِىْ اَللّٰهُمَّ

मैं रहमत के क़ाबिल नहीं हूँ तो तेरी रहमत उस क़ाबिल है के मेरे शामिले हाल हो जाए इसलिए के वो हर शै

اِنْ لَمْ اَكُنْ اَهْلًا اَنْ تَرْحَمَنِىْ فَرَحْمَتُكَ اَهْلٌ اَنْ تَبْلُغَنِىْ وَتَسَعَنِىْ

पर हावी है। ये सवाल तेरी रहमत के सहारे है के तू बेहतरीन रहमत करनेवाला है।

لِاَنَّهَا وَسِعَتْ كُلَّ شَیْءٍ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

मेरा भरोसा उस ख़ुदाए हइ पर है जिसे मौत नहीं है। सारी हम्द ख़ुदा के लिए है जिस की न कोई

पंद्रह: कफ़मी ने हज़रत रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) से रिवायत की है के एक शख़्स ने आप से बीमारी और तंगदस्ती की शिकायत की तो आप ने फ़र्माया के हर वाजिब नमाज़ के बाद कहो:

تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَىِّ الَّذِىْ لَا يَمُوْتُ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً

बीवी है न कोई बच्चा, न कोई उसके मुल्क में शरीक है न कोई उसके लिए साहिबे इख़्तियार।

وَلَا وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهٗ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ

तस्बीह उस ही के शयाने शान है।

وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا

कोई ताक़ात व क़ुव्वत नही सिवाए अल्लाह के।

और दूसरी रिवायत में ये है के मुझे कभी कोई मुसीबत पेश नहीं आई मगर ये के जिबरईल मेरे सामने आए और मुझ से ये दुआ बयान की। और मोतबर हदीसों में आया है के दिलों के दर्दों, क़र्ज़ की अदायगी और परेशानी व बीमारी

के लिए इस दुआ को बार बार पढ़ना चाहिए। कुछ रिवायतों में इसके शुरू में ये भी आया है:

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ

ख़ुदाया मेरे इल्म को मुफ़ीद क़रार दे दे, मुझे इल्म से आरास्ता कर दे, मुझे आफ़ियत अता फ़र्मा दे,

सोलह: शेख़ मुफ़ीद (र.अ.) ने अपनी किताब मुक़ना में हर नमाज़ की ताक़ीबात के लिए ये दुआ ाज़िक्र की है:

اَللّٰهُمَّ انْفَعْنَا بِالْعِلْمِ وَزَيِّنَّا بِالْحِلْمِ وَجَمِّلْنَا بِالْعَافِيَةِ وَكَرِّمْنَا

तक़वे की करामत अता फ़र्मा। मेरा ख़ुदा मेरा वली वो ख़ुदा है जिस ने किताब को नाज़ल किया

بِالتَّقْوٰى اِنَّ وَلِيِّىَ اللهُ الَّذِىْ نَزَّلَ الْكِتَابَ وَهُوَ يَتَوَلّٰى

और वो ही तमाम सादेक़ीन का वली है।

الصَّالِحِيْنَ

ख़ुदाया मैं तुझ से सवाल करता हूँ तेरे उस पोशीदा नाम के सहारे जो ख़ज़ाने क़ुदरत में है,पाक व पाकीज़ा है, बा

सत्तरह: इब्ने बाबवए और शेख़ तूसी आदी नें मोतबर सनदों के साथ हज़रत अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से रिवायत की है के जो शख़्स दुनिया से इस तरह जाना चाहता है के वो गुनाहों से बिल्कुल इस तरह पाक हो जैसे के ख़ालिस सोना। और उस से रोज़े क़यामत किसी भी गुनाह के बारे में सवाल ना किया जाए तो उसे चाहिए के नमाज़े पंजगाना के बाद दस बार सूरह इख़लास की तिलावत करे और फिर आसमान की तरफ़ हाथ उठाकर ये दुआ पढ़े। फिर हज़रत ने फ़र्माया के ये दुआ पोशीदा राजों में से जिस की तालीम

मुझे रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) ने दी है और मुझे ये हुक्म दिया है के मैं हसन (स) और हुसैन (स) को इसकी तालीम दूँ:

اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسْاَلُكَ بِاسْمِكَ الْمَكْنُونِ الْمَخْزُونِ الطَّاهِرِ الطُّهْرِ

बरकत है। मेरा सवाल तेरे अज़ीम नाम तेरी क़दीम सलतनत के सहारे है ऐ आसीयों को अता करनेवाले, क़ैदियों

الْمُبَارَكِ وَاَسْاَلُكَ بِاسْمِكَ الْعَظِيمِ وَسُلْطَانِكَ الْقَدِيمِ يَا وَاهِبَ

को आज़ाद करने वाले, आतिशे जहन्नुम से रिहाई अता करनेवाले मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल

الْعَطَايَا يَا مُطْلِقَ الْاُسَارٰى يَا فَكَّاكَ الرِّقَابِ مِنَ النَّارِ صَلِّ عَلٰى

फ़र्मा। हमारी गर्दन को आतिशे जहन्नम से आज़ाद कर दे। हमें दुनिया से अमन व अमान के साथ उठाना और

مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَفُكَّ رَقَبَتِي مِنَ النَّارِ وَاَخْرِجْنِي مِنَ الدُّنْيَا سَالِمًا

जन्नत में सेहत व सलामती के साथ दाख़ल कर देना। हमारी दुआ की इबतेदा फ़लाह को और दरमियानी हिस्सा

وَاَدْخِلْنِي الْجَنَّةَ آمِنًا وَاجْعَلْ دُعَائِي اَوَّلَهُ فَلَاحًا وَاَوْسَطَهُ نَجَاحًا

कामयाबी को और आख़री हिस्सा सलाह को क़रार दे दे। तू तमाम ग़ैब का जाननेवाला है।

وَآخِرَهُ صَلَاحًا اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ

ऐ गर्दनों को जहन्नम से आज़ाद करनेवाले मेरा सवाल ये है के मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल

कई मोतबर किताबों में ये दुआ ज़िक्र की गई है:

يَا فَكَّاكَ الرِّقَابِ مِنَ النَّارِ اَسْأَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ

फ़र्मा और मेरी गर्दन को आतिशे जहन्नम से आज़ाद कर दे। मुझे दुनिया से सही व सालिम उठाना और जन्नत

مُحَمَّدٍ وَاَنْ تُعْتِقَ رَقَبَتِي مِنَ النَّارِ وَاَنْ تُخْرِجَنِي مِنَ الدُّنْيَا

में सेहत व सलामती के साथ दाख़ल कर देना। हमारी दुआ की इबतेदा फ़लाह को और दरमियानी हिस्सा

سَالِمًا وَتُدْخِلَنِي الْجَنَّةَ آمِنًا وَاَنْ تَجْعَلَ دُعَائِي اَوَّلَهُ فَلَاحًا

कामयाबी को और आख़री हिस्सा सलाह को क़रार दे दे। तू तमाम ग़ैब का जाननेवाला है।

وَاَوْسَطَهُ نَجَاحًا وَآخِرَهُ صَلَاحًا اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ

ऐ जलाल व इक्राम वाले मुझपर रहम कर जहन्नम की आग से

शेख़ कुलैनी नें मोतबर सनद के साथ इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के जो शख़्स भी ख़ुदावंदे आलम और रोज़े क़यामत पर ईमान रखता है वो हर वाजिब नमाज़ के बाद सूरह इख़लास को तर्क ना करे, यक़ीनन जो शख़्स भी इसे पढ़ेगा खुदावंदे आलम उसके दुनिया व आख़िरत के ख़ैर को जमा करदेगा और उसके वालेदैन और वालेदैन के तमाम आज़ा के गुनाहों को बख़्श देगा और दूसरी हदीस में है के जो शख़्स वाजिब नमाज़ के बाद दस बार सूरह इख़लास पढ़ेगा तो खुदावंदे आलम हूरैन से उसका निकाह करदेगा। सय्यद इबने ताऊस ने हज़रत रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) से रिवायत की है के जो शख़्स भी हर नमाज़ के बाद सूरह इख़लास पढ़ेगा तो उसके सर आसमान से रहमत नाज़ल होगी और उसके दिल में सुकून व इतमेनान पैदा होगा और उसपर ख़ुदा की नज़रे करम होगी। वो उसके गुनाहों को बख़्श देगा और वो जो भी सवाल करेगा उसकी हाजत पूरी करेगा और वो खुदावंदे आलम की अमान में रहेगा।

अÇरह: शेख़ कुलैनी और दूसरे अफ़राद ने मोतबर सनद के साथ अहलेबैत से

रिवायत की है के जो शख़्स नमाज़ के बाद दाएं हाथ से अपनी दाहड़ी पकड़े और बाएँ हाथ को आसमान की तरफ़ ऊचाँ करे और ये तीन बार कहे:

يَاذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ارْحَمْنِي مِنَ النَّارِ

मुझे बचा ले दर्दनाक अज़ाब से।

फिर तीन बार कहे:

اَجِرْنِي مِنَ الْعَذَابِ الْاَلِيمِ

ऐ अज़ीज़ ऐ करीम। ऐ मेहेरबान ऐ माफ़ करने वाले ऐ रहम करने वाले।

फिर दोनों हाथों को आसमान की तरफ़ ऊचाँ करे और तीन बार कहे:

يَا عَزِيزُ يَا كَرِيمُ يَا رَحْمٰنُ يَا غَفُورُ يَا رَحِيمُ

मुझे बचा ले दर्दनाक अज़ाब से।

फिर हाथों को पलटकर आसमान की तरफ़ उलटा हाथ करे के हतेलीयाँ ज़मीन की तरफ़ हों और तीन बार कहे:

اَجِرْنِي مِنَ الْعَذَابِ الْاَلِيمِ

अल्लाह, मलाएका व रूह रहमत भेजते हैं मुहम्मद व आले मुहम्मद पर

फिर कहे:

وَصَلَّى اللهُ عَلىٰ مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَالْمَلاَئِكَةُ وَالرُّوحُ

ऐ वो ख़ुदा जिसको एक आवाज़ सुनना दूसरी आवाज़ से मशग़ूल नहीं करता है। सवाल करनेवाले

फिर हज़रत ने फ़र्माया के जो शख़्स ये दुआ पढ़ेगा ख़ुदावंदे आलम उसके गुनाह माफ़ कर देगा और उस से राज़ी हो जाएगा और उसकी मौत तक इनसान और जिन्नात के साथ सारी मख़लूक उसके लिए इस्तिग़फ़ार करेगी।
उन्नीस: शेख़ मुफ़ीद (र.अ.) ने किताबे मजालिस में मुहम्मद हनफ़ीया से रिवायत की है के एक दिन मेरे वालिदे मोहतरम हज़रत अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) काबे का तवाफ कर रहे थे। अचानक आप ने एक मर्द को देखा जो काबे का परदा पकड़े हुए ये दुआ पढ़ रहा है। आपने उस से फ़र्माया के ये तुम्हारी दुआ है? उसने कहा बेशक। आपने फ़र्माया के मैं ने इसे सुन लिया है और तुम इसे हर नमाज़ के बाद पढ़ा करो के ख़ुदावंदे आलम की क़सम जो शख़्स भी नमाज़ के बाद इस दुआ को पढ़ेगा तो ख़ुदावंदे आलम उसके तमाम गुनाहों को माफ़ करदेगा चाहे उनकी तादाद आसमान के सितारों, बारिश के बूँदां, ज़मीन के ज़ररें के बराबर ही क्यों ना हो।
फिर अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) ने फ़र्माया के हाँ मैं ये दुआ जानता हूँ बेशक ख़ुदावंदे आलम बेहद अता करनेवाला और करीम है।
उसने कहा के ऐ अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) आपने सही फ़र्माया और साहिबे इल्म से ज़्यादा दानातर हैं। और वो हज़रत ख़ि॰ýï (अ.स.) थे । कफ़अमी (र.अ.) ने भी ये दुआ बलदुल अमीन में रिवायत की है और वो दुआ ये है:

يَامَنْ لَا يَشْغَلُهُ سَمْعٌ عَنْ سَمْعٍ وَيَامَنْ لَا يُغَلِّطُهُ السَّائِلُونَ وَيَامَنْ لَا

उस से शुबा में नहीं डाल सकते हैं। ख़ुदाया मुझे अपनी माफ़ी की ख़ुनकी और अपनी रहमत

يُبْرِمُهُ اِلْحَاحُ الْمُلِحِّيْنَ اَذِقْنِي بَرْدَ عَفْوِكَ وَمَغْفِرَتِكَ وَحَلَاوَةَ

की हिला- वत इनायत फ़र्मा दे।

رَحْمَتِكَ

अल्लाह की तस्बीह शाम के समय और अल्लाह ही की तस्बीह सुबह के समय, सारी हम्द आसमान

बीस: दैलमी (र.अ.) ने आलामुदीन में इब्ने अब्बास से रिवायत की है के हज़रत रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) ने फ़र्माया है के जो शख़्स नमाज़े मग़रिब के बाद इन आयत को पढ़ेगा उसे पिछले दिनों हाथ से निकल जानेवाला वो सवाब भी मिल जाएगा और उसकी नमाज़ भी क़ुबूल हो जाएगी। और अगर हर वाजिब और मुस्तहब नमाज़ के बाद पढ़ेगा तो उसके लिए आसमान के सितारों, बारिश की बुंदों, पेड़ों के पत्तों और मिट्टी के ज़र्रों की तादाद के बराबर हसनात लिखे जाएंगे और जब वो मरेगा तो उसे हर नेकी के बदले दस नेकियाँ दी जाएंगी और वो आयत ये है:

فَسُبْحَانَ اللهِ حِيْنَ تُمْسُونَ وَحِيْنَ تُصْبِحُونَ. وَلَهُ الْحَمْدُ فِي

व ज़मीन में उस ही के लिए है शाम के समय भी ज़ोहर के समय भी। वो मुर्दे को ज़िंदा से और

السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِيْنَ تُظْهِرُونَ. يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ

ज़िंदा को मुर्दे से निकालता है। मुर्दा ज़मीन को ज़िंदा बनाता है और यूँही तुम भी क़ब्रों से निकाले

الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِي الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَ كَذٰلِكَ

जाओगे। तस्बीह ख़ुदाके लिए है जो रब्बुल इज़्ज़त है और सलाम हो मुरसलीन के लिए और हम्द

تُخْرَجُونَ. سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ. وَسَلاَمٌ عَلَى

ख़ुदाए रब्बुल आलमीन के लिए।

الْمُرْسَلِيْنَ. وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ.

ख़ुदाया मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा परवरदिगार तेरे रसूले सादिक़ मुस्द्दक़ ने ये कहा

इक्कीस: सय्यद इबने ताऊस (र.अ.) ने मोतबर सनद के साथ जमील बिन दर्राज़ से रिवायत की है के एक शख़्स इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) की ख़िदमत में आया और कहा मौला उमर ज़्यादा हो गई है और मेरे सब आज़ा मर चुके हैं और अब मेरा कोई मोनिस व हमदम नहीं है और मुझे अपनी मौत का ख़तरा लाहक है तो आपने फ़र्माया के सालेह और नेक किरदार मोमिन इनस्यित और इतमेनान व सुकून ए क़ल्ब के लिए आज़ा से अच्छे होते हैं और अगर तुम अपनी और अपने आइज़्ज़ा व क़ुरबा की लंबी उमर चाहते हो तो ये दुआ हर नमाज़ के बाद पढ़ा करो। और अगर तुम चाहो तो अपने एक एक दोस्त का नाम ले कर कहो:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ اَللّٰهُمَّ اِنَّ رَسُولَكَ الصَّادِقَ

है और तेरी ज़बान से नक़ल किया है के तू ने फ़रमाया है के मैं जो कुछ करना चाहता हूँ उसमे मुझे कोई

الْمُصَدَّقَ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَآلِهِ قَالَ اِنَّكَ قُلْتَ مَا تَرَدَّدْتُ فِي شَيْءٍ

तरद्दुद नहीं होता अलावा उस वक़्त के जब कसी ऐसे बन्दे की रूह क़ब्ज़ करना चाहता हूँ जो मौत को

اَنَا فَاعِلُهُ كَتَرَدُّدِى فِي قَبْضِ رُوحِ عَبْدِىَ الْمُؤْمِنِ يَكْرَهُ الْمَوْتَ

पसंद नहीं करता और मैं भी उसे नाराज़ नहीं करना चाहता। ख़ुदाया मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत

وَاَكْرَهُ مَسَاءَتَهُ اَللّٰهُمَّ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَعَجِّلْ لِوَلِيِّكَ

नाज़ल फ़र्मा, अपने वली के ज़हूर में ताजील फ़र्मा, उन्हें आाफ़ियत व नुसरत अता फ़र्मा और मुझे किसी

الْفَرَجَ وَالْعَافِيَةَ وَالنَّصْرَ وَلَا تَسُؤْنِى فِي نَفْسِى وَلَا فِي اَحَدٍ مِنْ

बुराई से न अपने बारे में और न अपने अहबाब के बारे में दो-चार करना।

اَحِبَّتِى

अल्लाह जो चाहता है वही होता है कोई ताक़ात व क़ुव्वत नही सिवाय अल्लाहे बुज़ुर्ग व बाला के।

रावी का बयान है के जब मैंने ये दुआ पाबंदी के साथ पढ़ी तो मुझे इतनी लंबी ।ज़िंदगी नसीब हुई के ।ज़िंदगी से रंजीदा हो गया। ये दुआ बहुत मोतबर है और दुआ की सारी किताबों में मौजूद है।

नमाज़े सुबह की मख़सूस ताक़ीबात

नमाज़े सुबह की ताक़ीबात दूसरी तमाम नमाज़ों से ज़्यादा हैं। और ख़ास तौर से इन ताक़ीबात की फ़ज़ीलत में अहादीस बहुत ज़्यादा हैं। हज़रत अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से मनक़ूल है के नमाज़े सुबह के बाद तुलूए आफताब तक ज़िक्रे ख़ुदा करना रोज़ी के हुसूल के लिए सफ़र करने से ज़्यादा अच्छा है और रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) से मनक़ूल है के जो शख़्स तुलूए फ़ýı से तुलूए आफ़ताब तक मुसल्ले पर बैठा ताक़ीबात में मशग़ूल रहे तो खुदावंदेआलम उसे जहन्नुम की आग से महफ़ूज़ कर देगा।

इमाम मुहम्मद बाक़र (अ.स.) से मनक़ूल है के शैतान दिन के लशकर को तुलूए सुबह से लेकर तुलूए आफ़ताब तक हर तरफ़ फैला देता है और रात के लशकर को गुरूबए आफ़ताब से लेकर (मग़रिब की तरफ़) आसमान की सुरख़ी

ज़ायल होने तक फैला देता है तो इसलीए इन दो समय ख़ुदावंदेआलम को ज़्यादा से ज़्यादा याद करो के इन दो समय शैतान इनसान को ख़ुदा के ज़िक्र से ग़ाफ़िल बना देता है।
सही सनद के साथ मनक़ूल है के इमाम रज़ा (अ.स.) जब ख़ुरासान में नमाज़े सुबह पढ़ते थे तो तुलूए आफ़ताब तक मुसल्ले पर बैठे ताक़ीबात में मशग़ूल रहते थे। फिर हज़रत के लिए एक थैली लाई जाती थी जिस में मिस्वाक रहती थी तो आप हर एक मिस्वाक से मिस्वाक करते थे। फिर थोड़ा सा कुंदर चबाते थे और फिर क़ुरआने मजीद की तिलावत किया करते थे।
रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) से मनक़ूल है के जो शख़्स तुलूए सुबह सादिक़ से ले कर तुलूए आफ़ताब तक ताक़ीबात में मशग़ूल रहेगा तो उसके लिए एक हज का सवाब लिखा जाएगा और हदीसे क़ुदसी में है के ख़ुदावंदेआलम फ़र्माता है के ऐ औलादे आदम मुझे सुबह के बाद एक घंटे तक और अस्र के बाद एक घंटे तक याद करना ताके मैं तेरे सब अहम कामों के लिए काफ़ी हो जाऊँ।

नमाज़े सुबह की मख़सूस ताक़ीबात

पहले: इबने बाबवए ने सही व मोतबर सनद के साथ इमाम मुहम्मद बाक़र (अ.स.) से रिवायत की है के जो शख़्स नमाज़े सुबह के बाद सत्तर बार इस्तेग़फ़ार पढ़ेगा तो ख़ुदावंदेआलम उस को बख़्श देगा चाहे उस दिन वो सत्तर हज़ार गुनाह क्यों ना कर चुका हो और दुसरी रिवायत में सात सौ गुनाहों का ज़िक्र है।
दूसरे: इबने बाबवए (र.अ.) ने सही सनदां के साथ हज़रत अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से रिवायत की है के जो शख़्स नमाज़े सुबह के बाद ग्यारह बार सूरह इख़लास पढ़ेगा उस दिन उसका कोई गुनाह शैतान की नाक रगड़ने के लिए ना लिखा जाएगा। बलदुलअमीन में रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) से रिवायत की है के जो शख़्स दिन में दस बार सूरह इख़लास पढ़ेगा तो शैतान चाहे जितनी कोशिश करले उसका एक भी गुनाह नहीं लिखा जाएगा।
तीसरे: शेख़ कुलैनी (र.अ.) ने सही सनद के साथ हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के जो शख़्स नमाज़े सुबह के बाद सौ बार ये कहे

तो उस दिन वो कोई बुराई नहीं देखेगा।

مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

पाक है अल्लाहे अज़ीम व उसी की हम्द है व नही है कोई ताक़तो क़ुव्वत सिवाय अल्लाह के जो बुज़ुर्ग व बरतर है।

शेख़ तूसी (र.अ.) और दूसरे अफ़राद ने भी इस को कुतुब ए दुआ में नक़ल किया है।
चार: कफ़अमी वग़ैरा ने हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़र (अ.स.) से नक़ल किया है के जो शख़्स सूरह क़द्र को नमाज़ ए सुबह के बाद दस बार ज़वाल ए आफ़ताब के समय और उसी तरह दस बार असर के बाद पढ़ेगा तो दो हज़ार कातिबान ए हसनात को तीस साल तक लिखने में मसरूफ़ रखेगा। और आप ही से रिवायत है के जो शख़्स इस को तुलू ए आफ़ताब के बाद सात बार पढ़ेगा तो मलाएका की सत्तर सफ़ें इस पर सत्तर सलवात भेजेंगी और सत्तर बार इसके लिए दुआए रहमत करेंगी। इमाम मुहम्मद तक़ी (अ.स.) से उस शख़्स के लिए बहुत सवाब नक़ल किया गया है जो २४ घंटे में ७६ बार सूरह क़द्र की तिलावत करेगा: सात बार तुलूए सुबह सादिक़ के बाद और नमाज़ से पहले, दस बार नमाज़े सुबह के बाद और दस बार ॰नाफ़ेला ज़ोहर से पहले और २१ बार इसके बाद; दस बार नमाज़े अñ्र के बाद और इशा के बाद सात बार और सोते समय ग्यारह बार और इसका थोड़ा सवाब ये है के परवरदिगारेआलम एक हज़ार फ़रिशतों को ख़ल्क करेगा जो ३६ हज़ार साल तक उसके सवाब को लिखते रहेंगे।
पाँच: इबने बाबवए (र.अ.) और सारे ओलमा ने मोतबर सनद के साथ हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़र (अ.स.) से रिवायत की है के हज़रत रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) ने फ़र्माया के जो शख़्स हर दिन नमाज़े सुबह के बाद दस बार कहे तो ख़ुदावंदेआलम उसको अंधेपन, दीवानगी, बुरस, परेशानी सर पर मकान गिरने या बुढ़ापे के ख़ोरफ़ात से महपूीज़ रखेगा।

سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ

तस्बीह है परवरदिगार की मीज़ान के बराबर इल्म की इन्तेहा के बराबर, रज़ा के हद्दे आख़िर के बराबर

الْعَظِيمِ

अर्श के वज़्न और कुर्सा के वुसअत के बराबर।

छेः बलदुलअमीन में हज़रत अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से रिवायत है के हज़रत रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) ने फ़र्माया के जो शख़्स ये चाहता है के ख़ुदावंदेआलम उसकी मौत में देर करे और दुश्मनों के मुक़ाबले उसकी मदद करे और बुरी मौत से उसे नजात देदे तो वो हर सुबह और शाम को ये दुआ तीन बार पढ़ा करे:

سُبْحَانَ اللّٰهِ مِلْءَ الْمِيزَانِ وَمُنْتَهَى الْعِلْمِ وَمَبْلَغَ الرِّضَا وَزِنَةَ

हम्द है अल्लाह के लिए मीज़ान के बराबर इल्म की इन्तेहा रज़ा की आख़री हद अर्श के वज़्न ओर कुर्सा

الْعَرْشِ وَسَعَةَ الْكُرْسِيِّ

की सादत के बराबर यूँही वहदानियत ए ख़ुदा का इक्रार करता हूँ।

फिर तीन बार कहे:

الْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْءَ الْمِيزَانِ وَمُنْتَهَى الْعِلْمِ وَمَبْلَغَ الرِّضَا وَزِنَةَ

कोई ख़ुदा नही सिवा अल्लाह के पल्ले के भरने के बराबर, और इल्म की हद तक। और रज़ा की आाख़िर

الْعَرْشِ وَسَعَةَ الْكُرْسِيِّ

तक। और अर्श के वज़न तक। और कुरसी की वुसअत तक।

फिर तीन बार कहे:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مِلْءَ الْمِيزَانِ وَمُنْتَهٰى الْعِلْمِ وَمَبْلَغَ الرِّضَا وَزِنَةَ

अल्लाह सबसे बड़ा है पल्ले के भरने के बराबर, और इल्म की हद तक। और रज़ा की आाख़िर तक। और

الْعَرْشِ وَسَعَةَ الْكُرْسِيِّ

अर्श के वज़न तक। और कुरसी की वुसअत तक।

फिर तीन बार कहे:

اللّٰهُ اَكْبَرُ مِلْءَ الْمِيزَانِ وَمُنْتَهٰى الْعِلْمِ وَمَبْلَغَ الرِّضَا وَزِنَةَ الْعَرْشِ

ख़ुदा के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है। कोई ताक़ात व क़ुव्वत नही सिवा

وَسَعَةَ الْكُرْسِيِّ

अल्लाहे बुज़ुर्ग व बाला के।

सात: सय्यद इबने ताऊस (र.अ.) ने मोतबर सनद के साथ हज़रत इमाम रज़ा (अ.स.) से रिवायत की है के जो शख़्स नमाज़े सुबह के बाद सौ बार ये कहे तो वो इस्मे आज़म से इस से ज़्यादा क़रीब होगा जितनी आँख की सियाही

सफ़ेदी से क़रीब होती है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ

अज़मतवाला ख़ुदा पाक है उसी की तारिफ़ है उसी से माफ़ी मांगते हैं व फ़ज़्ल की दरखास्त केरते हैं।

الْعَظِيمِ

मेरा भरोसा उस ख़ुदा ए हय्यो क़य्युम पर है जिस के लिए मौत नहीं है। सारी हम्द उस अल्लाह के

और मोतबर सनदों से हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) और हज़रत इमाम मूसा काज़म (अ.स.) से मनक़ूल है के जो शख़्स नमाज़े सुबह और मग़रिब के बाद किसी से बात करने और अपनी जगह से हिलने से पहले सात बार ये दुआ पढ़ेगा तो उस से सत्तर तरह की मुसीबतें दूर हो जाएँगी जिन में से सब से आसान मुसीबत बुर्स,जुज़ाम, शैतान और बादशाहों का डर है। कुछ रिवायतों में तीन बार और कुछ में दस बार भी ज़िक्र हुआ है और इसकी तादाद कम से कम तीन बार और ज़्यादा में ज़्यादा सौ बार है। उसके बाद जितना ज़्यादा पढ़ेगा तो सवाब भी उतना ज़्यादा होगा।
आठ: शेख़ अहमद बिन फ़हद (र.अ.) और दूसरे अफ़राद ने रिवायत की है के एक शख़्स ने हज़रत इमाम मूसा काज़म (अ.स.) की ख़िदमत में शिकायत की के मेरा कारोबार बंद हो गया और जो भी कारोबार शुरू करता हूँ तो उसमें कोई मुनाफ़ा नहीं होता है और जिस हाजत की तरफ़ रूख़ करता हूँ तो वो पूरी नहीं होती है तो आपने फ़र्माया के नमाज़े सुबह के बाद दस बार कहो:

سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَاَسْاَلُهُ مِنْ فَضْلِهِ

लिए है जिस ने किसी को बेटा नहीं बनाया। कोई उसके मुल्क में शरीक नहीं है। कोई कमज़ोरी

रावी का बयान है के अभी मुझे उस पर अमल करते हुए ज़्यादा समय नहीं गुज़रा था के कुछ लोगों ने ख़बर दी के तुम्हारे ख़ानदान का एक शख़्स मर गया है और तुम्हारे अलावा उसका कोई नहीं है। फिर मुझे सारा माल मिल गया और में अब तक बेनियाज़ हूँ। ऊसूले काफ़ी और मकारिमुल अख़लाक़ में है के एक हलक़ाम नाम के आदमी ने हज़रत से अर्ज़ किया के मुझे ऐसी दुआ तालीम फ़र्माएं जो दुनिया व आख़िरत दोनो के लिए हो और आसान भी हो। हज़रत ने उसे ये दुआ तालीम फ़र्माई के इस को नमाज़े सबह के बाद तुलूए आफ़ताब से पहले पाबंदी से पढ़ लिया करो और जब उसने उसे पाबंदी से पढ़ा तो उसकी हालत अच्छी हो गई।

नौ: अय्याशी ने अब्दुल्लाह बिन सिनान से रिवायत की है के मैं हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) की ख़िदमत में गया हज़रत ने फ़र्माया क्या तुम चाहते हो के मैं तुम्हे ऐसी दुआ तालीम दूँ के अगर तुम उसे पढ़ो तो ख़ुदावंदेआलम तुम्हारे क़र्ज़ अदा कर दे और तुम्हारी हालत अच्छी हो जाए। मैं ने अर्ज़ की के इस से अच्छा क्या होगा के मैं तो ऐसी दुआ का मोहताज हूँ हज़रत ने फ़र्माया के नमाज़े सुबह के बाद कहो:

تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَيِّ الْقَيُّومِ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي لَمْ

में उसका वली नहीं है और तकबीर और बुज़ुर्गी उस ही के लिए है। ख़ुदाया मैं तेरी पनाह चाहता

يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ وَلِيٌّ مِنَ

हूँ परेशानीयों से, फ़क़रो फ़ाक़े से, बुर्स या बीमारी के ग़ल्बे से और मैं तुझ से सवाल करता हूँ के

الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا اَللّٰهُمَّ إِنِّي اَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبُؤْسِ وَالْفَقْرِ وَمِنَ

अपने हक़ के अदा करने में मेरी मदद फ़र्मा चाहे वो हक़ तेरा हो या तेरे बन्दे का हो।

غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَالسُّقْمِ وَاَسْاَلُكَ اَنْ تُعِيْنَنِى عَلٰى اَدَاءِ حَقِّكَ اِلَيْكَ

और कर्ज़े का ग़लबा मुझपर तो मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल कर और मेरी मदद कर तेरे और

وَاِلَى النَّاسِ

बंदों के फ़र्ज़ अदा करने में।

शेक़ तूसी (र.अ.) और दूसरे ओलमा की रिवायत की बिना पर उसके आख़री अल्फ़ाज़ हैं:

وَمِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَاَعِنِّى عَلٰى اَدَاءِ حَقِّكَ اِلَيْكَ

अल्लाह के अलावा ताक़त का मरक०००००ज़??? कोई नहीं। मेरा एतेमाद उस ख़ुदाए ज़िंदा पर है जिस

وَاِلَى النَّاسِ

के लिए मौत नहीं है। हमारी हम्द अल्लाह के लिए है जिस ने किसी को बेटा नहीं बनाया। न कोई उसके

दस: कफ़मी (र.अ.) ने रिवायत की है के एक शख़्स ने रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) से शिकायत की के वो तंगदस्त, परेशान हाल और बीमार है। हज़रत ने फ़र्माया के हर सबह और शाम ये दुआ दस बार पढ़ा करो। उस ने सिर्फ़ पाँच दिन पढ़ा था के सेहतयाब हो गया और उस की दौलत और सुकून व इतमेनान सब वापस आ गया।

शेख़ तूसी (र.अ.) और दूसरे अफ़राद ने सुबह की नमाज़ की ताक़ीबात में ये दुआ नक़ल की है:

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَمُوْتُ وَالْحَمْدُ

मुल्क में शरीक न कोई कमज़ोरी में उसका वली। और सारी बुज़ुर्गा उस ही के वास्ते है।???

لِلّٰهِ الَّذِیْ لَمْ یَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ یَكُنْ لَهٗ شَرِیكٌ فِی الْمُلْكِ وَلَمْ یَكُنْ لَهٗ

ख़ुदाया ऐ आसमान व ज़मीन के पैदा करनेवाले ग़ायब व हाज़र के जाननेवाले, ऐ रहमान व

وَلِیٌّ مِنَ الذُّلِّ وَ كَبِّرْهُ تَكْبِیرًا

रहीम, मैं दुनिया में इस बात का अहद करता हूँ के तू ख़ुदाए वहदहु ला शरीक है हज़रत मुहम्मद

ग्यारह: शेख़ तबरसी (र.अ.), कफ़मी (र.अ.) और दूसरे अफ़राद ने हज़रत रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) से रिवायत की है के आपने अपने असहाब से फ़र्माया क्या तुम सुबह व शाम आलमीन के परवरदिगार से अहद लेने से आजिज़ हो? उन्होंने अर्ज़ की के हम कैसा अहद कर लें? फ़र्माया के ये दुआ पढ़ा करो। जो शख़्स भी ये दुआ पढ़ेगा उस पर एक मोहर लगाकर उसे अर्श ए इलाही के नीचे रख दिया जाएगा और रोज़ ए क़्यामत एक मुनादी अवाज़ देगा के वो लोग कहाँ हैं जिन का ख़ुदावंदेआलम रहमान से कोई अहद है? फिर वो अहद उनको दे दिया जाएगा ताके वो उस अहद के साथ जन्नत में दाख़ल हों। शेख़ तूसी (र.अ.) ने ये दुआ ताक़ीबात ए नमाज़ ए सुबह में बयान की है:

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَیْبِ وَالشَّهَادَةِ الرَّحْمٰنَ

(स.अ.व.व.) तेरे बन्दे और रसूल हैं। ख़ुदाया मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा

الرَّحِیمَ اَعْهَدُ اِلَیْكَ فِی هٰذِهِ الدُّنْیَا اَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

और हमें पलक झपकने के बराबर भी ख़ुद हमारे हवाले मत कर देना और ना किसी मख़लूक

وَحْدَكَ لَا شَرِیكَ لَكَ وَاَنَّ مُحَمَّدًا صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَآلِهِ عَبْدُكَ

के हवाले करना, इसलिए के अगर तू ने मख़ल􏰀क़ात के हवाले कर दिया तो गोया मुझे ख़ैर से

وَرَسُولُكَ اَللّٰهُمَّ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَلَا تَكِلْنِي اِلٰى نَفْسِي طَرْفَةَ

दूर कर दिया और शर से क़रीब कर दिया ख़ुदाया मेरा एतेमाद सिर्फ़ तेरी रहमत पर है इसलिए

عَيْنٍ اَبَدًا وَلَا اِلٰى اَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ فَاِنَّكَ اِنْ وَكَلْتَنِي اِلَيْهَا تُبَاعِدْنِي

मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और मेरे लिए वो अहद क़रार दे जिस को रोज़

مِنَ الْخَيْرِ وَتُقَرِّبْنِي مِنَ الشَّرِّ اَيْ رَبِّ لَا اَثِقُ اِلَّا بِرَحْمَتِكَ فَصَلِّ عَلٰى

ए क़यामत अदा करदे इसलिए के तू अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता है।

مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَاجْعَلْ لِي عِنْدَكَ عَهْدًا تُؤَدِّيهِ اِلَيَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اِنَّكَ لَا

ऐ मेरे रब रहमत नाज़ल कर मुहम्मद व आले मुहम्मद पर और मुहम्म्द के अहले बैत पर।

تُخْلِفُ الْمِيعَادَ

ख़ुदाया मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल कर।

बारह: उद्दतुदाई में हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रिवायत है के जो शख़्स भी नमाज़ ए सुबह के बाद किसी से बात करने से पहले कहे...तो ख़ुदावंदेआलम उसके चेहरे को जहन्नम की आग से महफ़ूज़ रखेगा।

رَبِّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاَهْلِ بَيْتِ مُحَمَّدٍ

ऐ मेरे रब मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल कर और मेरी गरदन को जहन्नम की आग से

और इबने बाबवए ने सवाबुल आमाल में मोतबर सनद के साथ रिवायत की है के नमाज़ ए सुबह के बाद सौ बार कहो: ताके ख़ुदावंदेआलम तुम्हारे चेहरे को जहन्नम की आग से महफ़ूज़ रखे:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ

आज़ाद करदे।

और दूसरी रिवायत में है के किसी से बात करने से पहले सौ बार कहे:

يَا رَبِّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاَعْتِقْ رَقَبَتِي مِنَ النَّارِ

ऐ आक़ाओं के आक़ा और ऐ बादशाहों के बादशाह और ऐ सादात के सय्यद और ऐ सब जब्बारों

सजदे शुक्र

जब ताक़ीबाते नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाए तो सजदे शुक्र अदा करे के इस बात पर तमाम शीया ओलमा का इत्तेफ़ाक़ है के नई नेमत हासिल होने पर या बला के टल जाने के बाद सजदा शुक्र करना सुन्नत है और सब से अच्छा सजदा शुक्र वो है जो नमाज़ के बाद नमाज़ की ताफ़ीक़ मिल जाने के लिए किया जाए।

हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़र (अ.स.) से रिवायत की है के आप ने फ़र्माया के मेरे वालिदे गिरामी हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) जब भी ख़ुदावंद की कोई भी नेमत को याद करते तो उसके लिए सजदे शुक्र किया करते थे और जो भी आयते सजदा पढ़ते थे उसके बाद भी सजदा करते थे और अगर ख़ुदावंदेआलम ने उस बला को टाल दिया जिस से वो ख़ौफ़ज़दा रहते थे तो तब भी सजदा करते थे। जब वाजिब नमाज़ से फ़ारिग़ होते तब भी सजदा करते थे और जब दो अफ़राद के बीच में सुलह कराने का मौक़ा मिल जाता था तो उसके शुक्र में सजदा करते थे।

और हज़रत के तमाम आज़ा ए सजदा पर सजदे का असर नुमाया था। इसी बिना पर आप को हज़रत सज्जाद (अ.स.) कहा जाता था। हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से सही सनद के साथ रिवायत है के जो शख़्स भी

नमाज़ के अलावा किसी नेमत के शुक्र में एक सजदा करेगा तो ख़ुदावंदेआलम उसके लिए दस नेकियाँ लिखेगा और दस बुराईयाँ उसके नामा ए अमाल से मिटा देगा और उसके दस दरजात जन्नत में बुलंद हो जाएंगे।

और बहुत ही मोतबर सनद के साथ आप (अ.स.) से मनक़ूल है उस हालत में बन्दा ख़ुदावंदेआलम के सब से ज़्यादा क़रीब होता है जब वो सजदे में हो और गिरया कर रहा हो और दूसरी सही हदीस में है के सजदा ए शुक्र हर मुस्लमान पर वाजिब है। इसी पर अपनी नमाज़ ख़त्म करो और इस से अपने परवरदिगार को ख़ुश करके मलाएका को हैरतज़दह कर दो। यक़ीनन जब बन्दा नमाज़ के बाद सजदा ए शुक्र करता है तो ख़ुदावंदेआलम उसके और मलाएका के दरम्यान से हिजाब उठा देता है।

फिर फ़र्माता है के ऐ मेरे मलाएका ज़रा बंदे को देखो जिस ने मेरे फ़र्ज़ को अदा करने और अहद को पूरा करने के बाद मेरे सामने इस नेमत का शुक्र किया है जो मैंने उसे अता की है। ऐ मेरे मलाएका बताओ उसे क्या दिया जाए? तो वो कहते हैं परवरदिगार तेरी रहमत। फ़िर कहता है के और क्या देना चाहिए?

कहते हैं परवरदिगार तेरी जन्नत।

फिर फ़र्माता है और क्या? कहते हैं के उसकी सब ज़रूरियात और हाजतों की अदायगी। फिर बार बार येही सवाल किया जाता है यहँ तक के फ़रिशते कहते हैं के परवरदिगार अब हम कुछ नहीं जानते।

तो फिर ख़ुदावंदेआलम फ़र्माता है के मैं उसका इसी तरह शुक्रिया अदा करूँगा जैसे उसने मेरा शुक्र अदा किया है और मैं अपने फ़ज़्ल से रूख़ करूंगा और रोज़ ए क़्यामत अपनी अज़ीम रहमत का उसे दीदार कराऊँगा।

सही सनद के साथ हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के ख़ुदावंदेआलम ने हज़रत इब्राहीम (अ.स.) को अपना ख़लील (दोस्त) बनाया के आप ज़मीन पर बहुत सजदे किया करते थे। दूसरी मोतबर हदीस में है के जब तुम्हे खुदावंदेआलम की कोई नेमत याद आए और उस जगह कोई दुश्मन तुम्हे न देख रहा हो तो अपने रूख़सार को ज़मीन पर रख दो और अगर तुम ऐसी जगह पर हो जहाँ वो लोग देख रहे हों और सजदए शुक्र करना मुमकिन

न हो तो पेट पर हाथ रख कर ख़ुदावंदेआलम के सामने तवाज़ो और इनकेसारी के लिए झुक जाओ और पेट पर हाथ रखने की वजह है के तुम्हारे मुख़ालिफ़ ये समझें के तुम्हारे पेट में दर्द हो गया है।

और कसरत के साथ रिवायत में है के ख़ुदावंदेआलम ने हज़रत मूसा (अ.स.) से ख़िताब कर के कहा क्या तुम ये जानते हो के मैंने पूरी मख़लूक में तुम्हारा इन्तेख़ाब करके तुम्हे अपना कलीम क्यों बनाया है?

जनाबे मूसा (अ.स.) ने कहा ऐ मेरे परवरदिगार मुझे नहीं मालूम तो ख़ुदावंदेआलम ने फ़र्माया के जब मैं ने अपने बंदो पर निगाह डाली तो मैंने उन के दरमियान किसी को ऐसा नहीं पाया जिस का नफ़्स मेरे सामने तुम से ज़्यादा ज़लील हो इसकी वजह ये है के तुम नमाज़ से फ़ारिग़ होकर अपने चहरे को दोनों तरफ़ ख़ाक पर रखते हो।

मौसिक़ सनद के साथ हज़रत इमाम रज़ा (अ.स.) से रिवायत है के हर वाजिब नमाज़ के बाद सजदए शुक्र करना ख़ुदावंदेआलम की उस नेमत का शुक्रिया है के जो उसने बंदे को नमाज़ पढ़ने की ताफ़ीक़ दी है और उस सजदे में कम से कम तीन बार شُكْرًا لِلّٰهِ कहा जाए। रावी ने सवाल किया के शुक्रनलिल्लाह के क्या माने हैं?

फ़र्माया के इसके मानी ये हैं के मेरा ये सजदा ख़ुदावंदेआलम का शुक्राना है के उसने मुझे अपनी बारगाह में क़याम और अपने फ़र्ज़ को अदा करने की ताफ़ीक़ दी है।

और ख़ुदावंदेआलम का शुक्र अदा करने से नेमत में और इताअत की तौफ़ीक़ों में बढ़ोतरी होती है।

और नमाज़ में कोई ऐसी कमी रह गई हो जो नाफ़ेला से पूरी ना हुई हो तो वो इस सजदे से पूरी हो जाती है। सजदा जिस तरह भी चाहे कर सकता है। एहतियात की बिना पर वो बिल्कुल नमाज़ की तरह सातों आज़ा ज़मीन पर रखे और पेशानी को उसी चीज़ पर रखे जिस पर नमाज़ में रखता है और अफ़ज़ल ये है के नमाज़ के सजदे के बरअक्स कोहनीयों को ज़मीन पर रखे और पेट को ज़मीन से मिला दे और ये भी सुन्नत है के पहले पेशानी को ज़मीन पर रखे फिर चहरे के दाएँ हिस्से (यानी रूख़सार) को फिर बाएँ हिस्से

को और फ़िर से पेशानी को ज़मीन पर रखे। और इसी बिना पर इसे दो सजदे शुक्र कहा जाता है।
ज़ाहिरन ये सजदा बग़ैर किसी ज़िक्र के भी किया जा सकता है अगर चे सुन्नत ये है के ज़िक्र किया जाए और अच्छा ये है के ज़िक्र उन्हीं अज़कार और दुआओं में से हो जिनको आयंदा बयान किया जाएगा। और मुस्तहब ये है के इस सजदे को तूल दें जैसा के मन्क़ूल है के हज़रत इमाम मूसा काज़म (अ.स.) तुलूए आफ़ताब के बाद से ज़वाले आफ़ताब तक और अñा के बाद शाम तक सजदे में रहा करते थे।
और दूसरी हदीस में है के हज़रत दस साल से ज़्यादा हर रोज़ तुलूए आफ़ताब से ज़वाल तक सजदे में रहे थे।
और सही सनद के साथ मन्क़ूल है के हज़रत इमाम रेज़ा (अ.स.) इतनी देर तक सजदे में रहते थे के संगरेज़े आपके पसीने से तर हो जाते थे और आप चहरे के दाएँ और बाएँ दोनें हिस्सों को ज़मीन से मिला देते थे। रिजाले किशी में है के फ़ज़्ल बिन शाज़ान इब्ने अबी उमैर के पास आए जब के वो सजदे में थे और उन्हांने सजदे को बहुत तूल दिया। जब सर उठाया तो लोगों ने सजदे के तूलानी होने का ज़िक्र किया तो कहा के अगर तुम जमील बिन दरज के सजदे को देख लेते तो मेरे सजदे को भी तुलानी नहीं न कहते।
फिर मैं एक दिन जमील बिन दरज के पास गया तो उन्होंने बहुत देर तक सजदा किया। जब सर उठाया तो मैंने कहा के तुम ने बहुत देर तक सजदा किया है।
कहा के अगर तुम मारूफ बिन ख़रबूज के सजदे को देख लेते तो मेरे सजदे को बहुत आसान समझते।
और फ़ज़्ल बिन शाज़ान ही ने रिवायत करी है के अली बिन फ़ज़ाल इबादत के लिए सहरा में चले जाते थे और इतना तूलानी सजदा करते थे के परिदें ज़मीन पर पड़ा हुआ कपड़ा समझकर उनकी पुश्त पर बैठ जाते थे और उन के आस पास जानवर घास खाते रहते थे और उन से बिलकुल नहीं डरते थे और रिवायत भी है के जब सूरज तुलू होता था तब अली बिन मेहिज़यार सजदे में जाते थे और उस समय तक सर नहीं उठाते थे जब तक अपने एक

हज़ार भाईयों के लिए दुआ नहीं कर लेते जिस तरह अपने लिए दुआ करी है और तवील सजदे की वजह से उनकी पेशानी पर ऐसा घट्टा हो गया था जैसा के ऊँट के पैरों में घट्टे होते हैं।
ये भी रिवायत है के इब्ने उमैर नमाज़े सुबह के बाद सजदए शुक्र में जाकर ज़ोहर तक सर नहीं उठाते थे और अफ़ज़ल ये है के सजदए शुक्र को सारे ताक़ीबात के बाद और नवाफ़िल से पहले अंजाम दे और नमाज़े मग़रिब के लिए अकसर ओलमा ने कहा है के नवाफ़ल के बाद सजदए शुक्र अदा करे और कुछ ओलमा ने नवाफ़ल से पहले भी कहा है और ज़ाहिरन दोनों ही बहतर हैं और नवाफ़िल से पहले बजा लाना ज़्यादा बहतर है जैसा के हुमैरी ने इमामे ज़माना (अ.स.) से रिवायत करी है अगर दोनों तरीक़े से बजा लाए तो शायद और बहतर होगा।
सजदए शुक्र की दुआएँ
बहुत ज़्यादा और सब से आसान दुआएँ ये हैं:
पहले: मोतबर सनद के साथ इमाम रेज़ा (अ.स.) से मन्क़ूल है के अगर तुम चाहो तो सौ बार شُكْرًاشُكْرًا कहो और अगर चाहो तो عَفْوًاعَفْوًا कहो।
और ओयून अख़बारे रज़ा में रजा बिन अबी ज़हाक से रिवायत की है के हज़रत इमाम रेज़ा (अ.स) ख़ुरासान के सफ़र में जब भी नमाज़े ज़ोहर की ताक़ीबात से फ़ारिग़ होते थे तो सजदे में जाकर सौ बार ???शुक्रन लिल्लाह कहा करते थे और जब नामज़े अñा की ताक़ीबात से फ़ारिग़ होते थे तो सजदे में जाकर सौ बार حَمْدًالِلّٰهِ कहते थे।
दो: शैख़ कुलैनी ने मोतबर सनद के साथ हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के बन्दा ख़ुदावंदेआलम से उस हाल में सब से ज़्यादा क़रीब होता है जब वो सजदे में होता है और अपने ख़ुदा को पुकारता है इसलिए जब तुम सजदे में जाऔ तो ये कहो:

يَا رَبَّ الْاَرْبَابِ وَيَا مَلِكَ الْمُلُوكِ وَيَا سَيِّدَ السَّادَاتِ وَيَا جَبَّارَ

के जाबिर और ऐ ख़ुदाओं के ख़ुदा मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत

الْجَبَابِرَةِ وَيَا اِلٰهَ الْآلِهَةِ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ...

नाज़ल कर।

इसके बाद हाजत तलब करो और कहो: इसके बाद दुआ भी करना चाहो तो कर सकते हो।

فَاِنِّي عَبْدُكَ نَاصِيَتِي فِي قَبْضَتِكَ

तो मैं तेरा बंदा हूँ और मेरी जान तेरे क़ब्ज़े में है।

ख़ुदा माफ़ करनेवाला है और उसके लिए कोई भी हाजत पूरी करना कोई मुश्किल नही है।
तीन: शैख़ कुलैनी ने मोतबर सनद के साथ हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के मेरे वालिदे मस्जिद सजदे की हालत में रो रहे थे और ये दुआ पढ़ रहे थे:

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّي حَقًّا حَقًّا سَجَدْتُ لَكَ يَا رَبِّ تَعَبُّدًا وَرِقًّا

बेनियाज़ी तेरे लिए है, तू मेरा ख़ुदा है परवरदिगार है, मेरा सजदा तेरे लिए है। बन्दगी की बिना पर और तेरी ग़ुलामी की बिना

اَللّٰهُمَّ اِنَّ عَمَلِي ضَعِيفٌ فَضَاعِفْهُ لِي اَللّٰهُمَّ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ

पर। ख़ुदाया मेरा अमल कमज़ोर है, उसे ज़्यादा से ज़्यादा बना दे। परवरदिगार मुझे रोज़े क़यामत अपने अज़ाब से महफ़ूज़

تَبْعَثُ عِبَادَكَ وَتُبْ عَلَيَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

रखना और मेरी तौबा को क़ुबूल कर लेना के तू बेहतरीन तौबा क़ुबूल करनेवाला और महरबान है।

चार: शैख़ कुलैनी ने मोतबर सनद के साथ ये रिवायत की है के हज़रत इमाम मूसा काज़म (अ.स.) सजदे में ये दुआ पढ़ते थे:

اَعُوذُبِكَ مِنْ نَارٍ حَرُّهَا لَا يُطْفٰى وَاَعُوذُبِكَ مِنْ نَارٍ جَدِيدُهَا لَا يَبْلٰى

ख़ुदाया मैं तेरी पनाह चाहता हूँ उस जहन्नम से जिस की आग बुझनेवाली नहीं है, जिस का नया

وَاَعُوذُبِكَ مِنْ نَارٍ عَطْشَانُهَا لَا يُرْوٰى وَاَعُوذُبِكَ مِنْ نَارٍ مَسْلُوبُهَا

पुराना होनेवाला नहीं, जिसका प्यासा सेराब नहीं होगा और जिस का बरैहना लिबास से महरूम

لَا يُكْسٰى

रहेगा।

पाँच: शैख़ कुलैनी ने मोतबर सनद के साथ रिवायत की है के एक शख़्स ने हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से अर्ज़ किया के मेरी एक साहिबे फ़रज़न्द कनीज़ है जो बीमार है। हज़रत ने फ़र्माया के उस से कहो के हर वाजिब नमाज़ के बाद सजदए शुक्र में ये कहा करे:

يَارَؤُوفُ يَارَحِيمُ يَارَبِّ يَاسَيِّدِى

ऐ नर्मदिल ऐ रहीम ऐ मेरे रब ऐ मेरे सय्यद।

इसके बाद दुआ माँगो।

छ:: बहुत सारी मोतबर रिवायत में है के हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) और हज़रत इमाम मूसा काज़म (अ.स.) सजदए शुक्र में ये दुआ पढ़ते थे:

اَسْاَلُكَ الرَّاحَةَ عِنْدَ الْمَوْتِ وَالْعَفْوَ عِنْدَ الْحِسَابِ

मैं तुझसे राहत मागता हूँ मौत के समय और हिसाब के वक़्त माफ़ी

सात: सही सनद के साथ मरवी है के इमाम सादिक़ (अ.स.) सजदे में ये दुआ पढ़ते थे:

سَجَدَ وَجْهِيَ اللَّئِيمُ لِوَجْهِ رَبِّيَ الْكَرِيمِ

मेरा द्रश्ट चेहरा मेरे रबके करीम चेहरे के सामने झुका है।

आठ: मोतबर किताबों में हज़रत अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से नक़ल हुआ है के ख़ुदावंदेआलम के नज़दीक सब से बहतरीन कलाम ये है के बन्दा सजदे में तीन बार कहे:

اِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي

बेशक मैंने अपने आप पर ज़ुल्म किया तो मुझे माफ़ करदे।

नौ: जाफ़रयात में इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) जब सजदे में सर रखते थे तो ये दुआ पढ़ते थे:

اَللّٰهُمَّ مَغْفِرَتُكَ اَوْسَعُ مِنْ ذُنُوبِي وَرَحْمَتُكَ اَرْجَى عِنْدِي مِنْ عَمَلِي

ऐ ख़ुदा तेरी मग़फिरत मेरे गुनाहों से ज़्यादा वसी है और तेरी रहमत मेरे अमल से ज़्यादा उम्मीदवार

فَاغْفِرْ لِي ذُنُوبِي يَا حَيًّا لَا يَمُوتُ

है। तो मेरे गुनाह माफ़ करदे ऐ वो जिंदा जिसे मौत नही है।

दस: क़ुतुबए रावंदी ने हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के जब तुम्हें कोई मुश्किल या ग़म का सामना करना पड़े तो ज़मीन पर सजदा करके ये कहो:

يَا مُذِلَّ كُلِّ جَبَّارٍ يَا مُعِزَّ كُلِّ ذَلِيلٍ قَدْ وَحَقِّكَ بَلَغَ مَجْهُودِي فَصَلِّ

ऐ सब जब्बारों को ज़लील करने वाले ऐ सब जलीलों को इज़्ज़त देने वाले मैं ने तुझसे क़सम खाते हुए सारी

عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَفَرِّجْ عَنِّي

कोशिशें करीं। तो मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़िल कर और मुझे बचा ले।

और उद्दतुद दाई में आंहज़रत से रिवायत है के जब किसी पर कोई शदीद दुशवारी या मुसीबत या ग़म आ पड़े तो अपने घुटने और हाथों को बरहना करके ज़मीन पर टेक दे और सीने को भी ज़मीन से मिलादे और ाफ़िर हाजत तलब करे।

ग्यारह: इबने बाबवए ने मोतबर सनद से साथ इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के जब कभी बन्दा सजदे में तीन बार ये कहता है तो ख़ुदावंदेआलम जवाब में लबैक कहकर फ़र्माता है के मेरे बन्दे हाजतें तलब करले। दुआ ये है:

يَا اللّٰهُ يَا رَبَّاهُ يَا سَيِّدَاهُ

ऐ अल्लाह ऐ रब ऐ सय्यद ओ सरदार

और मकारिमुल अख़लाक़ में रिवायत है के जो शख़्स भी सजदे में इस तरह कहे यहाँ तक के साँस टूट जाए तो ख़ुदावंदेआलम फ़र्माता है के अपनी हाजत बयान कर। दुआ ये है:

يَا رَبَّاهُ يَا سَيِّدَاهُ

ऐ रब ऐ सय्यद ओ सरदार

बारह: मकारिमुल अख़लाक़ में हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) एक शख़्स के पास से गुज़रे जो सजदे में ये कह रहा था:

يَا رَبِّ مَاذَا عَلَيْكَ اَنْ تُرْضِيَ عَنِّي كُلَّ مَنْ كَانَ لَهُ عِنْدِي تَبِعَةٌ

परवरदिगार तेरे लिए कोई मुश्किल नहीं के तू मेरे लिए हर उस शख़्स को राज़ी करदे के जिसका

وَاَنْ تَغْفِرَ لِي ذُنُوبِي وَاَنْ تُدْخِلَنِي الْجَنَّةَ بِرَحْمَتِكَ فَاِنَّمَا عَفْوُكَ

कोई हक मेरे ज़िम्मे है और मेरे गुनाहों को माफ़ कर दे और अपनी रहमत से मुझे जन्नत में दाख़ल

عَنِ الظَّالِمِينَ وَاَنَا مِنَ الظَّالِمِينَ فَلْتَسَعْنِي رَحْمَتُكَ يَا اَرْحَمَ

कर दे इसलिए के तेरी माफ़ी ज़ालि-मीन के लिए है और मैं भी ज़ालिम हूँ इसलिए तेरी रहमत

الرَّاحِمِينَ

शामिले हाल हो जाए, ऐ बेहतरीन रहम करनेवाले।

तो हज़रत ने फ़र्माया के अपना सर उठा के तेरी दुआ क़बूल हो गई है। हक़ीक़तन तूने उस पैग़म्बर की दुआ पढ़ी है जो क़ौमे आद के ज़माने में था। मोअल्लफ़ किताब शेख़ अब्बास क़ुम्मी फ़र्माते हैं हम ने मफ़ातीह में मस्जिदे कूफ़ा और मस्जिदे ज़ैद के आमाल में भी थोड़ी दुआएँ नक़ल करी हैं जो सजदे में पढ़ी जाती हैं और शेख़ तूसी (र.अ.) ने मिसबाहुल मुतहज्जिद में सजदे शुक्र के ज़िक्र में फ़र्माते हैं के मुस्तहब है के सजदे में अपने भाईयों के लिए दुआ करे और ये दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ رَبَّ الْفَجْرِ وَاللَّيَالِي الْعَشْرِ وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ وَاللَّيْلِ اِذَا يَسْرِ

परवरदिगार ऐ फ़ा और दस रातों के रब और शफ़ा व वित्र के मालिक, रात के मालिक, हर शै के परवरदिगार

وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَاِلٰهَ كُلِّ شَيْءٍ وَخَالِقَ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكَ كُلِّ شَيْءٍ صَلِّ

हर शै के माबूद और हर शै के ख़ालिक़ और हर शै के मालिक मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَافْعَلْ بِي وَبِـ... مَا اَنْتَ اَهْلُهُ وَلَا تَفْعَلْ بِنَا مَا نَحْنُ

और मेरे लिए और मेरे तमाम मुतआले क़ीन के लिए वो बरताव करना जिस का तू अहल है और वो बरताव

اَهْلُهُ فَاِنَّكَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ

नहीं करना जिसका मैं अहल नहीं हूँ। इसलिए के तू अहले तक़वा और अहले मग़फिरत है।

जब सजदे से सर उठाए तो अपने हाथों को आज़ा ए सजदा पर फेरे और अपने चहरे को बाऐं जानिब फेरे उसके बाद दाऐं जानिब फेरे तीन बार हाथ फेरकर हर बार ये पढ़ें:

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الرَّحْمٰنُ

ख़ुदाया तेरे लिए हम्द है तेरे अलावा कोई ख़ुदा नहीं है। तू आलिमे ग़ैब व शहादत है। तू रहमान

الرَّحِيمُ اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنِّي الْهَمَّ وَالْحَزَنَ وَالْغِيَرَ وَالْفِتَنَ مَا ظَهَرَ

व रहीम है। परवरदिगार हम से हम व ग़म, हुज़्न व अलम, तग़य्युरात और फ़ित्ने ज़ाहिर व बातिन

مِنْهَا وَمَا بَطَنَ

सब को दूर फ़रमादे।

वर्ग - २

तुलू व गुरूब के दरमियान

इसमें उन आमाल का ज़िक्र है जिन को तुलूए आफ़ताब और गुरूबए आफ़ताब के दरमियान अंजाम दिया जाता है। जब सूरज निकलने वाला हो तो वो दुआएँ पढ़ी जाएं जिनको पाँचवी फ़स्ल में ज़िक्र किया जाएगा इनशाअल्लाह ताला। बेहतर है के हर दिन के शुरू में सदक़ा निकाले चाहे थोड़ा ही क्यों ना हो।

ज़ोहर की नमाज़ के आदाब

ज़ोहर से पहले नमाज़ के लिए तैयारी शुरू करे और पहले थोड़ी देर आराम करे क्यांकि ये नमाज़े शब और दिन के रोज़े के लिए मददगार है। फ़िर नमाज़े ज़ोहर के लिए बेदार हो जाए उसके बाद वज़ू करके मस्जिद में जाए और नमाज़े तहियते मस्जिद पढ़े और अगर नमाज़ का समय ना हुआ हो तो समय का इंतेज़ार करे। अव्वले वक़्त नमाज़ पढ़ना मुस्तहब है और जब ज़वाल हो जाए तो ये दुआ पढ़े:

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَمْ یَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا

तस्बीह ख़ुदा के लिए है उसके अलावा कोई ख़ुदा नहीं। सारी हम्द उस अल्लाह के लिए है जिसकी न कोई बीवी है न कोई

وَلَمْ یَكُنْ لَّهٗ شَرِیْكٌ فِی الْمُلْكِ وَلَمْ یَكُنْ لَّهٗ وَلِیٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِیْرًا

बेटा ना उसकी सलतनत में कोई शरीक और न कमज़ोरी में उसका कोई सहारा। तकबीर उस ही की शयान ए शान है।

और रिवायत में है हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.स.) ने मोहम्मद बिन मुसलिम से फ़रमाया के इस की पाबंदी करो जिस तरह की अपनी आँखो की हिफ़ाज़त करते हो और अगर बावज़ू नही हो तो वज़ू करने मे जलदी करो और

जो आदाब पहले ।ज़िक्र हूए उसको बजा लाओ

नवाफ़लए ज़ोहर

फिर नवाफ़िलए जोहर को पढ़ना शुरू करो और वो आठ रकत है फिर नियत करे पहली दो रकत के लिए और सात तकबीर जो पहले ज़िक्र हुई उन को दुआओं के साथ बजा लाओ और कलमए इसतेआज़ा को पढ़ो:

أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

मै दुतकारे हुए शैतान से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ।

और पहली रकत मे सूरह हम्द व तौहीद पढ़ो और दूसरी रकत में हम्द और क़ुल या अय्योहल काफ़ेरून पढ़ो और उन दो रकतों से फ़ारिग़ होने के बाद तीन तकबीरें जो ताकीबात में ज़िक्र हुई तसबीह हज़रत फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.) के साथ पढ़ो फिर ये दुआ पढो:

اَللّٰهُمَّ اِنِّي ضَعِيفٌ فَقَوِّ فِي رِضَاكَ ضَعْفِي وَخُذْ اِلَى الْخَيْرِ بِنَاصِيَتِي

ख़ुदाया कमज़ोर हूँ मुझे ताक़त इनायत फ़र्मा और मुझे ख़ैर की तरफ़ खाrचकर पहुँचादे। ईमान को मेरी रज़ा

وَاجْعَلِ الْاِيمَانَ مُنْتَهٰى رِضَائِي وَبَارِكْ لِي فِيمَا قَسَمْتَ لِي وَبَلِّغْنِي

की इनतेहा क़रार दे दे और जो कुछ रिज़्क तू ने दिया है उस ही में बरकत इनायत फ़र्मादे। अपनाr रहमत से

بِرَحْمَتِكَ كُلَّ الَّذِي اَرْجُو مِنْكَ وَاجْعَلْ لِي وُدًّا وَسُرُورًا لِلْمُؤْمِنِينَ

हर वो चीज़ मुझे अता फ़र्मा जिसका मैं उम्मीदवार हूँ। मेरे लिए लोगों के दिलों में मोहब्बत और ख़ुशी क़रार दे

وَعَهْدًا عِنْدَكَ

और अपनी बारगाह में अहल क़रारदे।

फिर उठो और दूसरी दो रकत बजा लाओ इसी तरीक़े से मगर ये के छः इबतेदाई तकबीरें न कहो और उठो और दूसरी दो रकत इसी तरह बजा लाओ और तसबीह व इस दुआ को जो उन चार रकतों के बाद मज़कूर है पढ़ो और दूसरी दो रकत को अज़ान व इक़ामत के बीच में पढ़ो और नमाज़ की इक़ामत के बाद कहो:

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلاَةِ الْقَائِمَةِ بَلِّغْ مُحَمَّدًا صَلَّى

परवरदिगार ऐ मुकम्मिल दावत के मालिक , ऐ नमाज़ ए क़ायम के मालिक! हज़रत

اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ الدَّرَجَةَ وَالْوَسِيلَةَ وَالْفَضْلَ وَالْفَضِيلَةَ بِاللهِ

मुहम्मद(स.अ.व.व.) को बुलंद दरजऐ वसीला फ़ज़्ल व करम और फ़ज़ीलत इनायत फ़र्मा। मेरा

اَسْتَفْتِحُ وَبِاللهِ اَسْتَنْجِحُ وَبِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ اَتَوَجَّهُ

आग़ाज़ अल्लाह के सहारे, मेरी कामयाबी अल्लाह के सहारे, में पैग़म्बर(स.अ.व.व.) के सहारे ख़ुदा

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاجْعَلْنِي بِهِمْ عِنْدَكَ وَجِيهًا فِي

की बारगाह में मुतवज्ज़े हूँ । ख़ुदाया मुहम्मद व आल ए मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा। मुझे

الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ

दुनिया व आख़ेरत में वजीया और अपने मुक़्रिब बन्दों में क़रार देदे।

ज़ोहर की वाजिब नमाज़

फिर नमाज़े ज़ोहर पढ़ने मे मशगूल हो जाए और रेआयत रखे उन चा॰rजो की जिन का ज़िक्र नमाज़े सूबह में आया है और उस में बहुत कुछ सिवाए बिसमिल्लाह के आहिसता पढ़ें और बेहतर ये है के पहली रकत मे हम्द के बाद सूरह इन्ना अनज़लना पढ़ें और दूसरी रकत मे सूरह तौहीद पढ़े और जब दो रकत पढ़ ले और तशहुद से फ़ारिग़ हो जाए तो सलवात के बाद पढ़े:

وَتَقَبَّلْ شَفَاعَتَهُ وَارْفَعْ دَرَجَتَهُ

और क़बूल कर उनकी शिफ़ा -अत और बुलंद कर उनके दरजात।

फिर उठे और तसबिहाते अरबा पढ़े तीन मरतबा और अगर इस के बाद इस्तेग़फ़ार का इज़ाफ़ा कर दे कुरबतन इल्ललाह तो बेहतर है। फिर रूकू और सजदे को बजा लाए इस तारीक़े से जो साबिक़ में ज़िक्र हुआ है फिर तिसरी रकत से उठे और चौथी रकत भी इसी तरी॰क़े से बजा लाए फिर तशहुद और सलाम पढ़े नमाज़ के बाद ताक़ीब पढ़ना शुरू करे और वो तीन तकबीरें हैं जो ताक़ीबात के शूरू में थी फिर उस के बाद पढ़े आिख़र तक जो पहले ज़िक्र हुई है फिर तसबीह हज़रत ज़हरा (स.अ.) पढ़े और नमाज़ की तक़ीबाते मूशतरका मे से जो चाहे पढ़े फिर इस के बाद नमाज़े ज़ोहर की मख़सूस ताक़ीबात को पढ़े और वो बहुत ज़्यादा हैं उन मे से बाज़ को हिदाया और मफ़ातीह में ज़िक्र किया है और इस मुख़तसर रेसाले में गुनजाईशे ज़िक्र नही है फिर सजदए शुक्र और नमाज़े ज़ोहर की ताक़ीब से फ़ारिग़ होने के बाद नमाज़े अñा के लिए तय्यार हो जाए।

नाफ़िला और ताक़ीबाते अस्र

नमाज़े अस्र के वासते आमादा हो उस के नाफ़ेला को बजा लाए और वो भी आठ रकत है नवाफ़िला के बजा लाने से फ़ारिग़ होने के बाद नमाज़े अस्र को भी इसी तरीक़े से बजा लाए जो ज़िक्र किया गया है और मुनासिब ये है के पहली रकत में हम्द के बाद या उनके मिस्ल पढ़े और दूसरी रकत में पढ़ें सूरह तौहीद को।

नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद मुश्तरिक ताक़ीबात में से जो चाहे पढ़े फिर नमाज़े अस्र से मख़सूस अमल को बजा लाए उन्ही में से सत्तर मरतबा इस्तेग़फ़ार और दस मरतबा सूरह इन्ना इनानज़लना फिर सजदए शुक्र बजा लाए और जब मस्जिद से बाहर आना चाहें तो इस दुआ को पढ़ें:

اَللّٰهُمَّ دَعَوْتَنِي فَاَجَبْتُ دَعْوَتَكَ وَصَلَّيْتُ مَكْتُوبَتَكَ وَانْتَشَرْتُ

ख़ुदाया तूने मुझे पुकारा। मैं ने तेरी दावत पर लबैक कहा है तेरे फ़रीज़े को अदा किया और उस के बाद तेरे

فِي اَرْضِكَ كَمَا اَمَرْتَنِي فَاَسْاَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَمَلَ بِطَاعَتِكَ

हुक्म के मुताबिक़ दुनिया में मुनतशर हो गया। अब मैं तेरे फ़ज़्ल से ये चाहता हूँ के तेरी इताअत पर अमल

وَاجْتِنَابَ مَعْصِيَتِكَ وَالْكَفَافَ مِنَ الرِّزْقِ بِرَحْمَتِكَ

करूँ, तेरी मासीयत से महफ़ूज़ रहूँ और अपनी रहमत से उतना रिज़्क दे दे जो मेरे लिए काफ़ी हो।

वर्ग-३

गुरूब और सोते समय के आमाल

जान लो के वो चाॽरज जो मुनासिब है तुम्हारे लिए गुरूबे आफ़ताब के वक़्त वो ये है के जल्दी करो मस्जिद जाने की और आफ़ताब की ज़रदी के वक़्त ये दुआ पढ़े:

اَمۡسٰی ظُلۡمِی مُسۡتَجِیرًا بِعَفۡوِكَ وَاَمۡسَتۡ ذُنُوبِی مُسۡتَجِیرَةً

परवरदिगार मेरा ज़ुल्म तेरी माफ़ी की पनाह में है और मेरे गुनाह तेरे मग़ाफ़िरत के पनाह में

بِمَغۡفِرَتِكَ وَاَمۡسٰی خَوۡفِی مُسۡتَجِیرًا بِاَمَانِكَ وَاَمۡسٰی ذُلِّی مُسۡتَجِیرًا

हैं, मेरा ख़ौफ़ तेरी अमान के पनाह में है और मेरी ज़िल्लत तेरी इज़्ज़त की पनाह में है, मेरा

بِعِزِّكَ وَاَمۡسٰی فَقۡرِی مُسۡتَجِیرًا بِغِنَاكَ وَاَمۡسٰی وَجۡهِیَ الۡبَالِی

फ़क्र तेरी बेनियाज़ी की पनाह में है, मेरा बोसीदा चहरा तेरे बाक़ी रहनेवाले चहरे की पनाह

مُسۡتَجِیرًا بِوَجۡهِكَ الدَّائِمِ الۡبَاقِی اَللّٰهُمَّ اَلۡبِسۡنِی عَافِیَتَكَ وَغَشِّنِی

में है। ख़ुदाया मुझे लिबासे आाफ़ियत अता फ़र्मा, अपनी रहमत से ढ़ांक ले, अपनी करामत

بِرَحۡمَتِكَ وَجَلِّلۡنِی كَرَامَتَكَ وَقِنِی شَرَّ خَلۡقِكَ مِنَ الۡجِنِّ وَالۡاِنۡسِ یَا

अता फ़र्मा और अपनी मख़लूक़ में जिन व इन्स सबके शर से महफ़ूज़ रखना। वो अल्लाह

اللهُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيمُ

है रहमान है रहीम है।

और मुनासिब ये है के उस वक़्त में मशग़ूल रहे तसबीह पढ़े और इस्तेग़फ़ार में इस लिए के इस वक़्त की फ़ज़ीलत वैसी ही है जैसे तुलूए आफ़ताब से पहले की और ख़ुदा वन्दे आलम ने फ़रमाया है: وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ.

इमाम सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के जब आफ़ताब ग़ुरूब के लिए आमादा हो तो उस वक़्त ख़ुदाए अज़्ज़ावा जल का ज़िक्र करो और अगर तुम ऐसे लोगों के साथ हो जो तुम्हें म॰शग़ूल रखें तो उठ जाओ और दुआ करो यानी उठ कर दुआ में मशग़ूल हो जाओ और पढ़ो:

ग़ुरूब की दुआ

يَا مَنْ خَتَمَ النُّبُوَّةَ بِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ اِخْتِمْ لِي فِي يَوْمِي

ऐ वो जिसने नबुव्वत को मुहम्मद पर ख़त्म किया अल्लाह रहमत नाज़िल करे उनपर और उनकी

هٰذَا بِخَيْرٍ وَشَهْرِي بِخَيْرٍ وَسَنَتِي بِخَيْرٍ وَعُمْرِي بِخَيْرٍ

आल पर मेरे लिए ख़त्म कर ये मेरे दिन को ये मेरे महीने को ये मेरे साल को और मेरी पूरी उम्र को।

ग़ुरूबे आफ़ताब के वक़्त और पढ़ो तहलील और मासूराह इसतेआज़ा को जो सुबह और शाम की दुआओं में आएगा फिर हाथ को सर पर रखे और अपने चेहरे पर खिचें और अपनी दाढ़ी को अपने हाथ से पकड़े और पढ़े:

اَحَطْتُ عَلٰى نَفْسِي وَاَهْلِي وَمَالِي وَوَلَدِي مِنْ غَائِبٍ وَشَاهِدٍ بِاللهِ

मैं अपने नफ़्स, अपने अहल, अपने माल व औलाद सब को बचाना चाहता हूँ हर ग़ायब व हाज़र से

الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَالِمُ الْغَیْبِ وَالشَّهَادَةِ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیمُ الْحَیُّ

अल्लाह के सहारे जिस के अलावा कोई ख़ुदा नहीं है। वो ग़ायब व हाज़र का जाननेवाला रहमान व

الْقَیُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِی السَّمَاوَاتِ وَمَا فِی

रहीम हय्यो क़य्यूम है जिस के लिए ना नींद है ना ऊँघ। जो कुछ आसमानों में है व जो कुछ ज़मीन

الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِی یَشْفَعُ عِنْدَهُ اِلَّا بِاِذْنِهِ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیهِمْ

में है उसी का है कौन ऐसा है जो उसकी आज्ञा बिना उसके पास सिफ़ारिश करे। जो कुछ उनके

وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا یُحِیطُونَ بِشَیْءٍ مِنْ عِلْمِهِ اِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ

सामने हो और जो कुछ उनके पीछे हो चुका है जानता है। व लोग उसके इल्म में से किसी चीज़ पर

كُرْسِیُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضَ وَلَا یَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِیُّ

भी अहाता नही रखते मगर वो जितना चाहे। उसकी कुर्सी सब आसमानो व ज़मीन को घेरे है व इन

الْعَظِیمُ

दोनो की देखभाल उस पर भारी नही है व वो आलीशान बड़ा है।

नमाज़े मग़रिब के आदाब

फिर जल्दी करे नमाज़ मग़रिब के पढ़ने में और मुनासिब नही है नमाज़े मग़रिब में ताख़ीर करना उस के अव्वले वक़्त से और बहुत सी हदिसों मे बहुत ज़्यादा ताकीद वारिद हूई है के अव्वले वक़्त से ताख़ीर न की जाए और जब चाहो के नमाज़ मे मश्ग़ूल हो तो पहले अज़ान और इक़ामत कहे साबिक़ में ाज़िक्र किए हूए तरीक़े की तरह और अज़ान व इक़ामत के दरमियान में कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسْاَلُكَ بِاِقْبَالِ لَيْلِكَ وَاِدْبَارِ نَهَارِكَ وَحُضُورِ صَلَوَاتِكَ

परवरदिगार मैं तुझ से सवाल कर रहा हूँ रात की आमद और दिन के जाने के सहारे, वक़्ते नमाज़ के आने के सहारे,

وَاَصْوَاتِ دُعَاتِكَ وَتَسْبِيحِ مَلاَئِكَتِكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ

दुआओं और मलायका के तस्बीहात की आवाज़ा के सहारे के मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा

مُحَمَّدٍ وَاَنْ تَتُوبَ عَلَيَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

और मेरी तौबा को क़बूल कर ले के तू ही बेहतरीन मेहेरबान और तौबा का क़बूल करने वाला है।

फिर उठे और नमाज़ मिग़्रब को आदाब व शराएत के साथ बजा लाए नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद तीन तकबीरें और तसबीहए हज़रत ज़हरा (स.अ.) को पढ़े फिर ये दुआ पढ़े:

اِنَّ اللهَ وَمَلاَئِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا اَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا

अल्लाह व मलायका सलवात भेजते हैं पैग़म्बर (स.अ.व.व.) पर। साहिबाने ईमान तुम भी सलवात भेजो और सरापा

عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ وَعَلٰى ذُرِّيَّتِهِ

तस्लीम हो जाओ। ख़ुदाया तेरे पैग़म्बर पर, उनकी ज़ुरीयत पर और उनके अहलेबैत पर सलवात और रहमत

وَعَلٰى اَهْلِ بَيْتِهِ

नाज़ल फ़र्मा।

और सात मरतबा कहे:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है। और कोई ताकात व क़ुव्वत नही

الْعَظِيمِ

सिवाय अल्लाहे बुज़ुर्ग व बाला के।

ये भी तीन बार पढ़ सकते हैं:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِى يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ وَلَا يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ غَيْرُهُ

सारी तारिफ़ अल्लाह के लिए जो ऐसा है के जो चाहता है करता है और उसके अलावा कोई नही है के जो चाहे करे।

ये भी तीन बार पढ़ सकते हैं:

سُبْحَانَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اغْفِرْ لِى ذُنُوبِى جَمِيعًا فَاِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ

पाक है तू तेरे अलावा कोई माबूद नही मेरे सब गुनाह माफ़ कर क्योंकि तेरे अलावा कोई नही है जो सब गुनाह

كُلَّهَا جَمِيعًا اِلَّا اَنْتَ

माफ़ कर सके।

और अगर चाहते हो के इस से ज़्यादा ताक़ीब पढ़ो तो बेहतर ये है के नाफ़ेला मग़रिब के बाद पढ़े फिर नाफ़ेला पढ़ने के लिए उठे और वो चार रकत है दो सलाम के साथ और कलाम करना नाफ़ेलए मग़रिब और नमाज़े मग़रिब के

दरमियान मकरूह है और पहली रकत मे पढ़े, सूरह कुल या अय्योहल काफ़ेरून और दूसरी रकत में सूरह तौहीद और दूसरी रकत में जो सूरह चाहे पढ़े और बेहतर ये है के तीसरी रकत मे सूरह हदीद की इबतेदाई आयत से आाख़िर सूरह तक पढ़े:

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ. لَهُ مُلْكُ

जो भी आसमानों और ज़मीन में है वो अल्लाह की हम्दो सना करता है और वह ताक़त वर और दाना है।

السَّمَاوَاتِ وَالاَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ. هُوَ

आसमानों और ज़मीन की हुकूमत उसी की है। वो ज़िंदा करता है और मौत देता है। और वही हर चीज़ पर

الاَوَّلُ وَالآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ. هُوَ

क़ादिर है। वही सबसे पहले और सबसे अंतिम है। और सब पर ज़ाहिर और (निगाहों से) पोशीदा। और वही

الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالاَرْضَ فِي سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى

सब चा०rजों को जानता है। वह वही तो है जिसने सारे आसमान व ज़मीन छ: दिन मे पैदा किए फिर अर्श (के

الْعَرْشِ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ

बनाने) पर आमादा हुआ। जो ज़मीन में दाख़िल होती है और जो उससे निकलती है और जो चीज़ आसमान से

السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ وَاللّٰهُ بِمَا

नाज़ल होती है और उसकी तरफ़ चढ़ती है (सब) उसको मालूम है। और तुम (चाहे) जहाँ कहीं रहो वह तुम्हारे

تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ. لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَإِلَى اللهِ تُرْجَعُ

साथ है और जो कुछ भी तुम करते हो ख़ुदा उसे देख रहा है। सारे आसमान व ज़मीन की बादशाही ख़ास उसी

الأُمُورُ. يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَهُوَ عَلِيمٌ

की है और ख़ुदा ही की तरफ़ सब उमूर पलटते हैं। वही रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में

بِذَاتِ الصُّدُورِ.

दाख़िल करता है और दिलों के भेदों तक से ख़ुब वाक़फ़ है।

मग़रिब नाफ़ला की चौथी रकत मे सूरह हम्द के बाद ये पढ़े: जो सूरह हशर की अंतिम चार आयतें हैं:

لَوْ أَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْآنَ عَلَى جَبَلٍ لَرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُتَصَدِّعًا مِنْ

अगर हम इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर (भी) नाज़ल करते तो तुम उसको देखते कि ख़ुदा के डर से झुका और

خَشْيَةِ اللهِ وَتِلْكَ الأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ هُوَ

फटा जाता है। और यह मिसालें हम लोगों (के समझाने) के लिए बयान करते हैं ताकि वो ग़ौर करें। वही ख़ुदा

اللهُ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيمُ

है जिस के सिवा कोई माबूद नही। पोशीदा और ज़ाहिर का जाननेवाला वही बड़ा मेहेरबान निहायत रहमवाला

هُوَ اللهُ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ

है। वही वो खुदा है जिस के सिवा कोई क़ाबिले इबादत नही। (हक़ीक़ी) बादशाह पाक ज़ात (हर ऐब से) बड़ी

الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَانَ اللهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ هُوَ اللهُ

अमन देनेवाला निगेहबान ग़ालिब ज़बरदस्त बड़ाईवाला। ये लोग जिसको (उसका) शरीक ठहराते हैं उससे पाक

الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰى يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي

है। वही ख़ुदा (तमाम चीजों का) ख़ालिक सूरतों का बनानेवाला उसी वे अच्छे-अच्छे नाम हैं। जो चा०rजें सारे

السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ.

आसमान-ओ ज़मीन मे हैं सब उसी की तसबीह करती हैं और वही ग़ालिब, हिकमतवाला है।

और अगर तन्हा हम्द पर इकतेफ़ा करना चाहे तो जाएज़ है जैसे के तमाम नाफ़ेला नमाज़ो में जाएज़ है और उसमे बुलंद आवाज़ से क़ेरअत करना मुनासिब है और इसी तरह तमाम नाफ़ेला शब मे मुनासिब है।

नाफ़ेलए मग़रिब के बाद के आमाल

जब नाफ़ेलए मग़रिब से फ़ारिग़ हो जाए तो कोई माने नही है के मुशतरका ताक़ीबात को पढ़े जितना भी चाहे फिर सजदए शुक्र बजा लाए इसी तरह जिस तरह साबिक़ में ाज़िक्र किया गया है और कम से कम चीज़ जो सजदए शुक्र मे काफ़ी है वो है शुकरन: شُكْرًا شُكْرًا شُكْرًا।

शेख़ कुलैनी ने हज़रत सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है आप ने फ़रमाया के जब नमाज़े मग़रिब से फ़ारिग़ हो जाए तो अपनी पेशानी पर अपना हाथ फेरे और तीन बार कहे:

بِسْمِ اللهِ الَّذِي لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الرَّحْمٰنُ

उसके नाम से जिसके अलावा कोई ख़ुदा नही है ग़ैब और ज़ाहिर का देखने वाले है रहमान व

الرَّحِيمُ اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنِّي الْهَمَّ وَالْحَزَنَ

रहीम है ऐ ख़ुदा मेरे ग़म और दुख को मिटा दे।

और मुनासिब है के नमाज़े नाफ़ला पढ़े और उस का तारिक़ा मफ़ातीह वग़ैरा मे ज़िक्र किया गया हे।

नामज़े इशा के आदाब

जब शफ़क़ छुप जाए तो अज़ान व इक़ामत कहे नमाज़े इशा के लिए साबिक़ में मज़कूर आदाब के साथ फिर नमाज़े इशा पढ़ना शुरू करे आदाब व शराएत के साथ और मुनासिब है के उस के क़ुनूत और ताक़ीब को तूल दे क्योंके उसका वक़्त बहुत वसीअ है फिर ताक़ीब में वो दुआ पढ़े जो मुशतरिक है सुबह और शाम के दरमीयान फिर उस के बाद शाम से मख़सूस दुआ पढ़े और वो बहुत ज़्यादा हैं उन में से वो दुआ जो रोज़ी तलब करने के लिए है और मफ़ातीह में मनक़ूल है। दुआ ये है:

اَللّٰهُمَّ اِنَّهُ لَيْسَ لِي عِلْمٌ بِمَوْضِعِ رِزْقِي وَاِنَّمَا اَطْلُبُهُ بِخَطَرَاتٍ تَخْطُرُ

ऐ अल्लाह मुझे नही मालूम मेरी रोज़ी कहाँ से अएगी और मै उसे तलब करता हूँ अपने ख़याल

عَلٰى قَلْبِي...

से...

मुसतहब है के सात मरतबा पढ़े सूरह क़द्र को, उस के बाद ये दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ وَمَا اَظَلَّتْ وَرَبَّ الْاَرَضِيْنَ السَّبْعِ

ऐ सातों आसमान के मालिक और जिन पर वो साया फ़िगन हैं और सातों ज़मीनों के मालिक और

وَمَا اَقَلَّتْ وَرَبَّ الشَّيَاطِينِ وَمَا اَضَلَّتْ وَرَبَّ الرِّيَاحِ وَمَا ذَرَتْ

जिन चीज़ों को वो उठाए हुए हैं। ऐ शयातीन के मालिक, ऐ हवाओं के मालिक, ऐ परवरदिगार

اَللّٰهُمَّ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَاِلٰهَ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكَ كُلِّ شَيْءٍ اَنْتَ اللّٰهُ

जो हर शै का रब है माबूद है, मालिक है। तू ख़ुदाए मुक़्तदिर है, हर शै पर तेरी क़ुदरत है। तू वो

الْمُقْتَدِرُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ اَنْتَ اللّٰهُ الْاَوَّلُ فَلَا شَيْءَ قَبْلَكَ وَاَنْتَ الْاٰخِرُ

अव्वल है जिस से पहले कोई शै नहीं और वो आाख़िर है जिस के बाद कोई शै नहीं। तू ज़ाहिर

فَلَا شَيْءَ بَعْدَكَ وَاَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَا شَيْءَ فَوْقَكَ وَاَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَا

है, तुझ से बालातर कोई नहीं तू बातिन है तुझसे मख़फी कुछ नहीं। तू जिब्राईल व मीकाईल व

شَيْءَ دُونَكَ رَبَّ جَبْرَائِيلَ وَمِيكَائِيلَ وَاِسْرَافِيلَ وَاِلٰهَ اِبْرَاهِيمَ

इ[illegible]ाफ़ील का परवरदिगार है। इब्राहीम इसमाईल इसहाक़ याक़ूब और असबात का माबूद है मैं

وَاِسْمَاعِيلَ وَاِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْاَسْبَاطِ اَسْاَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى

तुझ से सवाल करता हूँ के मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा मुझे अपनी रहमत

مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاَنْ تَوَلَّانِي بِرَحْمَتِكَ وَلَا تُسَلِّطَ عَلَيَّ اَحَدًا مِنْ

इनायत फ़र्मा और मुझ पर किसी ऐसी मख़लूक को मुसल्लत न करदेना जिस के बरदाश्त करने की

خَلْقِكَ مِمَّنْ لَا طَاقَةَ لِي بِهِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَتَحَبَّبُ اِلَيْكَ فَحَبِّبْنِيْ وَفِيْ

ताक़त मुझ में न हो। मैं तेरी मोहब्बत चाहता हूँ, मुझे महबूब बनाले लोगों के दरमियान इज़्जत दे

النَّاسِ فَعَزِّزْنِيْ وَمِنْ شَرِّ شَيَاطِيْنِ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ فَسَلِّمْنِيْ يَا رَبَّ

शया-तीन जिन्न व इन्स के शर से महफ़ूज़ बनादे। ऐ आलमीन के परवरदिगार मुहम्मद व आले

الْعَالَمِيْنَ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ

मुहम्मद पर रहमत नाज़िल फ़र्मा।

फिर जो चाहे दुआ करे उसके बाद सजदए शुक्र बजा लाए फिर नमाज़े वतीरा को पढ़े और वो दो रकत नाफ़ेला है बैठ कर नमाज़ इशा के बाद और मूसतहब है के इस नमाज़ में क़ुआर्न के सौ आयत पढ़ी जाए और बेहतर है के हम्द के बाद पहली रकत मे सूरह वाक़ेया पढ़ा जाए और दूसरी रकत मे सूरह तौहीद पढ़े और सलाम के बाद जो दुआ चाहे पढे।

सोते समय के आदाब

जब सोने का इरादा करे तो बेहतर है के मौत के लिए तैयार हो जाए और बा तहारत रहे और गुन्हाओं से तौबा करे और अपने दिल को दुनिया के ग़मो से दूर कर दे मौत के वक़्त को याद करे और लहद में तन्हा बेकस होने को याद करे और अपनी वसीयत को लिख कर अपने तक्ये के नीचे रखे और इरादा करे के नमाज़े शब के लिए उठेगा क्यांके ये नमाज़ मोमिन के लिए फ़ख़्र और ज़ीनत है दुनिया और आख़ेरत में नमाज़ आाख़िरे शब में है और सोने के वक़्त सूरह क़ुल हो अल्लाह पढ़े और सूरह अलहाकुमुत तकासुर और आयतल कूर्सा को पढ़े उस के बाद तीन बार ये दुआ पढ़े:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَلَا فَقَهَرَ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ بَطَنَ فَخَبَرَ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ

सारी हम्द उस अल्लाह के लिए है जो बुलंद है हर शै पर क़ादिर है सारी हम्द उस अल्लाह के लिए है जो हर शै के बातिन

الَّذِیْ مَلَكَ فَقَدَرَ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ یُحْیِی الْمَوْتٰی وَیُمِیْتُ الْاَحْیَاءَ

से बाख़बर है। सारी हम्द उस अल्लाह के लिए है जो मालिक भी है और साहिबे इख़तियार भी है। सारी हम्द उस अल्लाह

وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

के लिए है जो मुर्दों को ज़िंदगी और ज़िंदों को मौत देता है और हर शै पर क़ुद्रत व इख़तियार रखता है।

फिर तसबीहे जनाबे फ़ातेमा (स.अ.) पढ़े और दाहेनी करवट सोए जिस तरह मय्यत को क़बर में लिटाया जाता हे लेकिन मरणासन्न की तरह सोने के बारे मे शेख़ नूरी ने दारूस सलाम मे फ़रमाया है के मैं ने इस तारीके को नही पाया है। किसी हदीस व ख़बर मे गज़ाली ने उसको ज़िक्र किया है और शक नही है के हिदायत उस के ख़िलाफ है।
अगर चाहे के नमाज़े शब के लिए बेदार हो या इस के अलावा के लिए और डरता हो के ख़्वाब ग़ालीब आ जाएगा तो आख़िर सूरह कहफ पढ़े वो ये आयत है:

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ یُوْحٰٓی اِلَیَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَمَنْ كَانَ

(ऐ रसूल कह दो) के मै भी तुम्हारा ही जैसा एक आदमी हूँ (फ़र्क इतना है) कि मेरे पास ये वही आती है

یَرْجُوْ لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْیَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا یُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ

कि तुम्हारा माबूद यक्ता है। तो जो व्यक्ति आरज़ूमंद होकर अपने परवरदिगार के सामने हाज़र होगा तो

اَحَدًا.

उसे अच्छे काम करने चाहिए और अपने परवरदिगार की इबादत में किसी को शरीक न करे।

रिवायत हुई है हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से के कोई शख़्स इस आयत को सोने के वक़्त नही पढ़ेगा मगर ये के वो बेदार हो जाएगा उस वक़्त में जब वो चाहता है बेदार होना और अगर बिच्छू और जानवरों के शर से महफ़ूज रहना चाहता है सुबह तक तो ये दुआ पढ़े:

اَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ الَّتِى لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَلَا فَاجِرٌ مِنْ شَرِّ

मैं ख़ुदा के कामिल शब्दों की पनाह चाहता हूँ जिन से कोई नेक या बद आगे नहीं निकल सकता। वो

مَا ذَرَاَ وَمِنْ شَرِّ مَا بَرَاَ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا اِنَّ رَبِّى

मुझे पनाह दे उन तमाम चीज़ों के शर से जो पैदा हुईं हैं और हर ज़मीन पर रहनेवाले के शर से जो उन

عَلٰى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ

के इख़तियार में है। बेशक तू रब सिराते मुस्तक़ीम पर।

अगर एहतेलाम से डरता हो तो पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّى اَعُوذُ بِكَ مِنَ الْاِحْتِلَامِ وَمِنْ سُوءِ الْاَحْلَامِ وَمِنْ اَنْ

मैं ख़ुदा की पनाह चाहता हूँ बद ख़्वाबी से और बुरे ख़्यालात से और उस बात से के शैतान मेरी

يَتَلاَعَبَ بِيَ الشَّيْطَانُ فِي الْيَقْظَةِ وَالْمَنَامِ

ज़िन्दगी से खेले चाहे बेदारी में हो चाहे ख़्वाब में।

अगर घर मकान के ख़राब होने से डरता है तो सूरह फ़ातिर, आयत ४१ पढ़े:

اِنَّ اللهَ يُمْسِكُ السَّمَاوَاتِ وَالاَرْضَ اَنْ تَزُولاَ وَلَئِنْ زَالَتَا اِنْ

बेशक ख़ुदा ही सारे आसमान व ज़मीन अपनी जगह से हट जाने से रोके हुए है और अगर (फ़र्ज़ करो के) यह अपनी

اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِنْ بَعْدِهِ اِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا.

जगह से हट जाएं तो फिर उसके सिवा उन्हें कोई रोक नहीं सकता। बेशक वो बड़ा बुर्दबार बख़्शनेवाला है।

अगर चोर से डरता है तो सूरह बनी इसराईल की ये आयात पढ़े:

قُلِ ادْعُوا اللهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ اَيًّا مَا تَدْعُوا فَلَهُ الاَسْمَاءُ الْحُسْنٰى

चाहे उसे अल्लाह पुकारो या रहमान पुकारो। जिस नाम से भी पुकारो उसके तो सब नाम अच्छे हैं। और न तो अपनी नमाज़

وَلَا تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيلًا. وَقُلِ

बहुत चिल्ला कर पढ़ो, और न बिल्कुल चुपके से। बल्कि उसके दरमियान एक औसत तरीक़ा चुनो। और कहो कि हर तरह

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ

की तारीफ़ उसी ख़ुदा की है, जो न तो कोई औलाद रखता है और न (सारे जहान की) सल्तनत में उसका कोई साझेदार है

يَكُنْ لَهُ وَلِيٌّ مِنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا.

और न उसे किसी तरह की कमज़ोरी है कि कोई उसका सरपरस्त हो। और उसी की बड़ाई भी अच्छी तरह करते रहा करो।

सोने के वक़्त सूरमा लगाए सात बार, चार मरतबह दाहेनी आँख मे और तीन बार बांए आँख मे और सूरमा लगाने के वक़्त पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّىۤ اَسْاَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ

ख़ुदाया तुझ से सवाल करता हूँ के मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़र्मा मेरी बसारत

مُحَمَّدٍ وَاَنْ تَجْعَلَ النُّوْرَ فِىْ بَصَرِىْ وَالْبَصِيْرَةَ فِىْ دِيْنِىْ وَالْيَقِيْنَ فِىْ

में नूर अता फ़र्मा। मेरे दीन में बसीरत अता फ़र्मा, मेरे दीन में यक़ीन, अमल में इख़लास और

قَلْبِىْ وَالْاِخْلَاصَ فِىْ عَمَلِىْ وَالسَّلَامَةَ فِىْ نَفْسِىْ وَالسَّعَةَ فِىْ رِزْقِىْ

नफ़्स में सलामती और रिज़्क में वुसअत अता फ़र्मा और तौफीक़ दे के मैं जब तक ज़िंदा रहूँ तेरी

وَالشُّكْرَ لَكَ اَبَدًا مَا اَبْقَيْتَنِىْ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ

नेमतों का शिक्रया अदा करूँ। तू हर शै पर क़ादिर है मुख़तार है।

मुनासिब है के तुलूए फ़ýा और तुलुए आफ़ताब के दरमियान सोने को तरर्क करे और अñा के बाद ख़्वाब को भी और जब चाहे के सोए तो चिराग़ को बुझाए और रू बिक़बलह सोए और उस छत पर जिस के किनारे दिवारें न हो न सोए और जो ख़्वाब भी देखे उसे हर शख़्स से बयान न करे मगर ये के आलिम नासेह और महेरबान हो।

वर्ग-४

रात को बेदार होना व नमाज़े शब

ख़्वाब से उठना और नमाज़े शब पढ़ना। जान लो के असहाबे इसमत (अ.स.) से बहुत सी रिवायात वारिद हूई हैं शब में उठने के बारे में और उस की फ़ज़ीलत के बारे में और रिवायत है के ये मोमिन का शरफ है और ये के नमाज़े शब बाईसे सेहते बदन और कूफ़्फ़ारए गुन्हा है उस दिन के लिए और वैहशते क़ब्र को दूर करने वाली है चेहरा को नूरानी और बेहतरीन ख़ुशबू और रोज़ी को हासिल करती है और ये के माल और औलाद दुनिया की ाज़िन्दगी की ज़ीनत हैं और आठ रकत नमाज़ आिख़र शब मे बा नमाज़े वीतर ज़ीनते आख़िरत है और कभी ख़ुदा वन्दे आलम उन दोनो जीनतों को किसी के लिए जमा करता है और ये के वो शख़्स झूठा है जो ये कहे के मैं नमाज़े शब पढ़ता हूँ और दिन मे भूका रहता हूँ क्योंके नमाज़े शब दिन की राज़ी की ज़ामिन है।

हज़रत सादिक़ (अ.स.) से रिवायत है के रसूले ख़ुदा ने हज़रत अला (अ.स.) से वसीयत मे फ़रमाया था ऐ अला, मै तुम को वसियत करता हूँ चन्द ख़सलतों की उसे महफ़ूज़ रखो उसके बाद फ़रमाया ख़ुदाया तू उन की मदद कर और ज़िक्र किया उन ख़सलतों का यहां@ तक के फ़रमाया तुम पर नमाज़े शब लाज़िम है तुम पर नमाज़े शब लाज़िम है और तुम पर नमाज़े शब लाज़म है और तुम पर नमाज़े ज़वाल लाज़िम है तुम पर नमाज़े ज़वाल लाज़िम है और तुम पर नमाज़े ज़वाल लाज़म है।

ज़ाहिर ये है के हज़रत ने नमाज़े शब से तेरह रकत नमाज़ का इरादा किया और नमाज़े ज़वाल से आठ रकत नमाज़ का जो नाफ़ेलए ज़वाल है।

अनसे रिवायत है उन्होंने कहा के मै ने हज़रत रसूल (स) को फ़रमाते हुए सूना है के दो रकत नमाज़ आधी रात मे बेहतर है मेरे नज़दीक दुनिया से और जो कूछ दुनिया मे है।

रिवायत है के इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) से लोगो ने पूछा के क्या बात

है के जो लोग नमाज़े तहज्जुद पढ़ते हैं उनका चेहरा तमाम लोगों से बेहतर होता है तो फ़रमाया के इस वजह से के वो खुदा वन्दे आलम से तखलिए में बात करते हैं तो खुदा उनको अपना नूर अता करता है।

मुख़तसर ये के इस सिलसिले मे रिवायात ज़्यादा हैं और मकरूह है रात मे बेदार होने को तर्क करना।

शेख़ ने सही सनद के साथ हज़रत सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है उन्होंने फ़रमाया के कोई बन्दा नही है मगर ये के बेदार होता है शब में एक मरतबा या दो मरतबा या कई मरतबा पस अगर उठ गया तो उठ गया वरना शैतान उस के दोनो पैरों के दरमियान कूशदगी करता है पस वो पेशाब करता है उस के कान मे क्या वो नही देखता के जो शख्श नमाज़े शब के लिए नही उठता है तो जब सुबह को उठता है तो उसकी तबयत भारी और वो काहिल होता है।

शेख बर्का ने मोतबर सनद के साथ इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.स.) से रिवायत की है उन्होंने फ़रमाया के रात का एक शैतान है जिस को रहा कहते हैं जो इनसान रात को बेदार होता है और नमाज़ के लिए उठने का इरादा करता है तो शैतान उस से कहता है अभी तुम्हारे उठने का वक़्त नही है पस जब दूसरी बार बेदार होता है और उठना चाहता है तो वो शैतान कहता हे के उठने का वक़्त नही हुआ है यानी जल्दी क्या है वो बराबर उसको उठने से रोकता रहता हे यहां@ तक के सूबह हो जाती है और जब सुबह हो जाती है तो उसके कान में पेशाब करता है और नाज़ से अपनी दुम को हिलाता है और इतराता है।

इब्ने अबी जमहूर ने हज़रत रसूले ख़ुदा (स) से नक़ल किया है के आप ने एक रोज़ अपने असहाब से फ़रमाया के तुम मे से कोई जब रात को सोता है तो शैतान उस के पीछे तीन गिरहें लगा देता हे और हर एक पर लिखता है रात तूलानी हे सोते रहो, पस जब बेदार होता है और ज़िक्रे खुदा करता है तो एक गिरहा खुल जाती है और अगर वज़ू करता है तो दूसरी भी खुल जाती है और अगर नमाज़ पढ़ता है तो तीसरी गिरहा भी खुल जाती है। पस वो सुबह मे ख़ुशी और पकीज़गी नफ़स से दाखिल होगा वरना ख़बीसूननफ़स और काहिल सुबह करेगा ये रिवायत अहले सुन्नत की किताबों मे भी ।ज़िक्र की

गई है।

क़ुतुब रावन्दी ने रिवायत की है अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से के तीन चा॰rज की तमा तीन चा॰rज के साथ न करो रात मे बेदारी का लालच न करो ज़्यादा खाने के साथ चेहरे की नूरानियत की तमा न करो तमाम रात सोने के साथ और दुनिया मे अमान की तमा न करो। फ़ासिकों की सोबत के साथ।

कुतुब रावन्दी से रिवायत है के हज़रत ईसा (अ.स.) ने अपनी वालदा जनाबे मरयम को उनकी वफ़ात के बाद बुलाया और कहा के ऐ मादरे गिरामी मुझ से कलाम कीजिए के आप दुनिया मे वापस होना चाहती हैं जवाब दिया के हॉ ताके मैं बहुत ठन्डी रात मे ख़ुदा के लिए नमाज़ पढ़ूँ और बहुत गरम दिन में रोज़ा रखूँ ऐ फ़रज़न्द, मेरी जान्। ये रासता बहुत ख़तरनाक है।

नमाज़े शब का तरीक़ा

मुख़तसर और आसान तरीक़ा ता के तमाम इन्सान बजा ला सकें इन्शाह अल्लाह ताला वो ये है के जब नींद से बेदार हो ख़ुदा वन्दे आलम को सजदा करे और बेहतर है के सजदे में या सजदे से सर उठाने की हालत में ये दुआ पढ़े:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَحْيَانِىْ بَعْدَ مَا اَمَاتَنِىْ وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

सारी हम्द उस ख़ुदा के लिए है जिसने मौत के बाद ज़िंदगी दी और फिर उस ही की बारगाह में हाज़र होना है। सारी

الَّذِىْ رَدَّ عَلَىَّ رُوْحِىْ لِاَحْمَدَهٗ وَاَعْبُدَهٗ

हम्द उस ख़ुदा के लिए है जिसने मेरी रूह को वापस कर दिया ताके मैं उसकी हम्द करूँ व उसकी इबादत करूँ।

और जब खड़ा हो तो पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّى عَلٰى هَوْلِ الْمُطَّلَعِ وَوَسِّعْ عَلَىَّ الْمَضْجَعَ وَارْزُقْنِى خَيْرَ مَا

ख़ुदाया मेरी मदद कर क़यामत के हौल के मुक़ाबले में मेरी क़ब्र में वुसअत अता फ़र्मा और मुझे

بَعْدَ الْمَوْتِ

मौत के बाद भी ख़ैर इनायत फ़र्मा।

जब मुर्ग की आवाज़ सुने तो पढ़े:

سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلاَئِكَةِ وَالرُّوحِ سَبَقَتْ رَحْمَتُكَ

तू ख़ुदाए पाको पाकीज़ा है, मलायका और रूहुल क़ुद्स का मलिक है। तेरी रहमत तेरे ग़ज़ब पर

غَضَبَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ عَمِلْتُ سُوءًا وَظَلَمْتُ نَفْسِى فَاغْفِرْ لِى

बरतरी रखती है। तेरे अलावा कोई ख़ुदा नहीं, मैंने बुराई की है, मैंने नफ़्स पर ज़ुल्म किया है। मुझे

اِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ اِلَّا اَنْتَ فَتُبْ عَلَىَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ

माफ़ कर दे इसलिए के गुनाहों को माफ़ करनेवाला तेरे अलावा कोई नहीं है। मेरी तौबा क़ुबूल

الرَّحِيمُ

फ़र्मा तू बेहतरीन तौबा क़ुबूल करनेवाला और महरबान है।

जब आसमान की तरफ़ निगाह करे तो ये दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنَّهُ لَا يُوَارِي مِنْكَ لَيْلٌ سَاجٍ وَلَا سَمَاءٌ ذَاتُ اَبْرَاجٍ وَلَا

ख़ुदाया जिस से न कोई रात छुपा सकती है और न बुलंद आसमान छुपा सकते हैं, न कोई ज़मीन

اَرْضٌ ذَاتُ مِهَادٍ وَلَا ظُلُمَاتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ وَلَا بَحْرٌ لُجِّيٌّ تُدْلِجُ

परदापोशी कर सकती है, न ज़ुल्मतें परदापोशी कर सकती हैं न गहरे समंदर बचा सकते हैं।

بَيْنَ يَدَيِ الْمُدْلِجِ مِنْ خَلْقِكَ تُدْلِجُ الرَّحْمَةَ عَلٰى مَنْ تَشَاءُ مِنْ خَلْقِكَ

ख़ुदाया तू जिसको चाहता है उस ही पर अपनी रहमत नाज़ल कर देता है। आँखो की ख़्यानत

تَعْلَمُ خَائِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ غَارَتِ النُّجُومُ وَنَامَتِ

और दिलों के राज़ों को जानता है। ऐ परवरदिगार तारे चुप हैं, आँखे संवर रही हैं। सिर्फ़ तू ख़ुदाए

الْعُيُونُ وَاَنْتَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَاْخُذُكَ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ سُبْحَانَ اللّٰهِ

हैयो क़य्युम है तुझे नींद नहीं आती। तस्बीह है उस अल्लाह के लिए जो रब्बुल आलमीन है और

رَبِّ الْعَالَمِينَ وَاِلٰهِ الْمُرْسَلِينَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

मुरसलीन का ख़ुदा है और सारी हम्द ख़ुदाए रब्बुल आलमीन के लिए है

फिर सूरह आले इम्रान की ये आयात पढ़े:

اِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ

इसमे तो शक नही के आसमानो और ज़मीन की पैदाइश और रात दिन के फेर बदल मे अक़्लमंदों के लिए

لَآيَاتٍ لِأُولِي الْأَلْبَابِ. الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ

बहुत सी निशानिया हैं। जो लोग उठते बैठते करवट लेते ख़ुदा का ज़िक्र करते हैं और आसमानो और ज़मीन की

جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبَّنَا مَا

बनावट मे ग़ौरो फ़िक्र करते हैं और (बे साख़्ता) कह उठते हैं कि ख़ुदा वंदा तूने उसको बेकार पैदा नही किया

خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ. رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ

तू पाक व पाकीज़ा है, पस हम को दोज़ख के अज़ाब से बचा। ऐ हमारे पालनेवाले जिसको तूने दोज़ख मे डाला

تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ. رَبَّنَا إِنَّنَا

तो यक़ीनन उसे रूस्वा कर डाला और ज़ुल्म करनेवालों का कोई मददगार नहीं। ऐ हमारे पालनेवाले (जब)

سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلْإِيمَانِ أَنْ آمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا رَبَّنَا

हमने एक आवाज़ लगानेवाले (पैग़ंबर) को सुना के वो ईमान के वास्ते यूँ पुकारता था के अपने परवरदिगार

فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ. رَبَّنَا

पर ईमान लाओ तो हम ईमान लाए, पस हमारे पालनेवाले हमे हमारे गुनाह माफ़ करदे और हमारी बुराईयों को

وَآتِنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّكَ لَا

हम से दूर करदे और हमे नेकूकारों के साथ (दुनिया से) उठा ले। और पालनेवाले अपने रसूलों की मारेफ़त जो

تُخْلِفُ الْمِيعَادَ.

कुछ हमसे वादा किया है हमे दे और हमे क़यामत के दिन रूस्वा न कर, तू तो वादा ख़िलाफ़ी करता ही नही।

फिर जब चाहे के इबादत की तरफ़ मुतवज्जे हो और उसको बैतूल ख़िला की ज़रूरत हो तो उस से इब्तेदा करे और जब बैतुल ख़िला से बाहर आए तो मिसवाक करे फिर वुज़ू करे और ख़ुशबू लगाए फिर नमाज़े शब के लिए उठे।

शब नमाज़ का समय

ये नमाज़ का अव्वले वक़्त आधी रात है और तुलूए सुबहे सादिक़ से जितना नज़दीक हो अफ़ज़ल है और अगर सुबह हो जाए और चार रकत बजा लाया हो तो बक़ीया को पढ़े सिर्फ़ हम्द के साथ बगैर सूरे के और जब नमाज़े शब के लिए उठे तो पहले आठ रकत नमाज़े शब पढ़े और हर दो रकत के बाद सलाम पढ़े और बेहतर है के पहली दो रकत मे हम्द के बाद साठ बार सूरह तौहीद पढ़े हर रकत मे तीस मरतबा यहाॅ तक के नमाज़ ख़त्म करे और उसके और खुदा के दरमियान कोई गुनाह न होगा या ये के पहली रकत में तौहीद और दूसरी रकत में क़ुलया अय्योहल काफ़ेरून पढ़े और दूसरी छः रकतों मे हम्द और जो सूरह चाहे पढ़े और हम्द और क़ुल्हो अल्लाह हर रकत मे काफ़ी है और सिर्फ़ हम्द पर इकतेफ़ा करता भी जाएज़ है।

क़ुनूत

जिस तरह क़ुनूत वाजबी नमाज़ो मे सुन्नत है इसमे भी है और नेज़ नवाफिला की दूसरी रकत मे और काफ़ी है तीन बार पढ़ना:

سُبْحَانَ اللّٰهِ

पाक है ख़ुदा।

या ये दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَعَافِنَا وَاعْفُ عَنَّا فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ

ख़ुदाया हमें माफ़ फ़र्मा, हम पर रहमत नाज़ल फ़र्मा हमें आाफ़ियत अता फ़र्मा दुनिया व आख़िरत

اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

में। तू हर शै पर क़ादिर है।

या ये दुआ पढ़े:

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ الاَعَزُّ الاَجَلُّ

ख़ुदाया मग़िफ़रत फ़र्मा, रहम फ़र्मा और जिन बुराईयों को जानता है उन से दर गुज़र फ़र्मा, तू

الاَكْرَمُ

साहिबे इज़्ज़त है और साहिबे जलालत है।

रिवायत है के इमाम मूसा काज़िम (अ.स.) जब रात मे मेहराबे इबादत मे खड़े होते थे तो पढ़ते थे:

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ خَلَقْتَنِي سَوِيًّا وَرَبَّيْتَنِي صَغِيرًا...

ऐ ख़ुदा बेशक तूने मुझे सालिम पैदा किया और मेरी परवरिश की जब मै छोटा था...

नमाज़े शफ व वित्र

नमाज़े शब से फ़ारिग़ हो जाए तो दो रकत नमाज़े शेफा बजा लाए और एक रकत नमाज़ वित्र पढ़े और उन तीन रकतां मे हम्द के बाद कुलहो अल्ला पढ़े ताके वो एक खत्मे कुआर्न के बराबर हो जाए क्योंके सूरह तौहीद १/३ कुआर्न है और या ये के नमाज़ शेफा मे पहली रकत मे हम्द और कुल औज़ोबे रब्बिन्नास और दूसरी रकत मे हम्द और कुल औज़ोबे रब्बिल फ़लक पढ़े और जब नमाज़े शेफा से फ़ारिग़ हो जाए तो मुसतहब है के पढ़े:

اِلٰهِی تَعَرَّضَ لَكَ فِی هٰذَا اللَّيْلِ الْمُتَعَرِّضُونَ وَقَصَدَكَ

ऐ मेरे ख़ुदा इस शब मे माँगने वाले तेरे हुज़ूर मे अपनी सिफ़ारिश करते हैं व कस्द करनेवालों ने तेरा

الْقَاصِدُونَ...

कस्द किया है।

ये दुआ शबे नीमए शाबान के आमाल में मफ़ातीह में मज़कूर है।
नमाज़े शफ से फ़ारिग़ हो जाए तो एक रकत नमाज़ वित्र के लिए उठे और उसमें हम्द और सूरह तौहीद पढ़े या हम्द के बाद कुल हो अल्लाह तीन मरतबा और मआज़तैन यानी फ़लक़ व नास पढ़े।
फिर हाथ को कुनूत के लिए उठाएँ और जो दुआ चाहे पढ़ें।
और शेख तुसी (र.अ.) ने फ़रमाया है के जो दुआएँ इस मक़ाम पर पढ़ी जाती हैं वो बहुत ज़्यादा हैं उनकी गिनती नही हो सकती लेकिन कुनूत में कोई भी दुआ पढ़ सकता है।
मूसतहब है के इन्सान कुनूत में गिरया करे ख़ुदा के ख़ाफ़ से और अज़ाबे ख़ुदा के ख़ौफ से या रोने वालां की शकल बनाए और बरादराने मोमिन के लिए

दुआ करे और मुसतहब है के चालीस व्यक्तियों का नाम ले जो शख़्स चालीस मोमिन के लिए दुआ करेगा उसकी दुआ क़ुबूल होगी इन्शाअल्लाह ताला और फिर जो चाहता हो वो दुआ करे।
शेख़ सदूक़ ने फ़कीह मे फ़रमाया है के हज़रत रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) क़ुनूते वित्र में ये पढ़ते थे:

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِي فِيمَنْ هَدَيْتَ وَعَافِنِي فِيمَنْ عَافَيْتَ وَتَوَلَّنِي

ख़ुदाया जिन लोगों को तू ने हिदायत दी है और आाफ़ियत दी है और जिन का तू ज़िम्मेदार है, जिन की

فِيمَنْ تَوَلَّيْتَ وَبَارِكْ لِي فِيمَا اَعْطَيْتَ وَقِنِي شَرَّ مَا قَضَيْتَ فَاِنَّكَ

अता में बरकत दी है, जिन को शर से बचाया है, उन्हीं में से हमको भी क़रार देदे, इसलिए के तू फ़ैसला

تَقْضِي وَلَا يُقْضَى عَلَيْكَ سُبْحَانَكَ رَبَّ الْبَيْتِ اَسْتَغْفِرُكَ

करनेवाला है, तेरे ऊपर किसी का फैसला चलनेवाला नहीं है। तू बेनियाज़ है, काबे का मालिक है। तुझ

وَاَتُوبُ اِلَيْكَ وَاُؤْمِنُ بِكَ وَاَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا

से इस्तेग़फ़ार व तौबा करता हूँ और ईमान लाया हूँ, तुझ पर भरोसा करता हूँ और तेरे अलावा किसी

بِكَ يَا رَحِيمُ

के पास कोई ताक़त नहीं है।

मुनासिब है सत्तर बार पढ़ें और मुनासिब है के बाएँ हाथ को दुआ के लिए बुलंद करें और इसतेग़फ़ार को दाहेने हाथ से शुमार करें:

اَسۡتَغۡفِرُ اللّٰهَ رَبِّیۡ وَاَتُوبُ اِلَیۡهِ

मै अल्लाह से मग़ाफ़िरत माँगता हूँ और उससे माफ़ी चाहता हूँ।

रिवायत हुई है के हज़रत रसूल (स.अ.व.व.) नमाज़े वित्र में सत्तर बार इसतेग़फ़ार करते थे और सात बार पढ़ते थे:

هٰذَا مَقَامُ الۡعَائِذِ بِكَ مِنَ النَّارِ

ये मक़ाम है उसका जो तेरी पनाह चाहता है जहन्नम से।

ये भी रिवायत है के हज़रत ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) सहर को नमाज़े वित्र में तीन सौ बार पढ़ते थे:

اَلۡعَفۡوَ الۡعَفۡوَ

माफ़ कर माफ़ कर

उसके बाद कहते थे:

رَبِّ اغۡفِرۡ لِی وَارۡحَمۡنِی وَتُبۡ عَلَیَّ اِنَّكَ اَنۡتَ التَّوَّابُ الۡغَفُورُ

मेरे रब मुझे माफ़ कर और मुझ पर रहम कर मै तुझसे तौबा करता हूँ बेशक तू तौबा क़ुबूल करने

الرَّحِیمُ

वाला माफ़ करनेवाल रहीम है।

मुनासिब है के कुनूत को तूल दे और फ़ारिग़ हो तो रूकू में जाए और रूकू से सर उठाने के बाद इस दुआ को जिसे शेख ने तहज़ीब में ज़िक्र किया है इमाम मूसा काज़म (अ.स.) से पढ़े।

هٰذَا مَقَامُ مَنْ حَسَنَاتُهُ نِعْمَةٌ مِنْكَ وَشُكْرُهُ ضَعِيفٌ وَذَنْبُهُ

ख़ुदाया तेरे सामने वो बन्दा खड़ा है जिस की नेकीयाँ तेरे नेमत का नतीजा हैं मगर उसका शुक्र कमज़ोर

عَظِيمٌ وَلَيْسَ لِذٰلِكَ اِلَّا رِفْقُكَ وَرَحْمَتُكَ فَاِنَّكَ قُلْتَ فِي كِتَابِكَ

है उसके गुनाह अज़ीम हैं और उसके लिए सिवाए तेरी रहमत और मेहेरबानी के कोई सहारा नहीं। तू

الْمُنْزَلِ عَلٰى نَبِيِّكَ الْمُرْسَلِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ ﴿كَانُوا قَلِيلًا مِنَ

ने ख़ुद अपनी किताबे मुनिज़्ल में फ़र्माया है के अल्लाह के नेक बन्दे रात में बहुत कम सोते हैं, सहर के

اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ﴾ طَالَ هُجُوعِي وَقَلَّ

समय इस्तेग़फ़ार करते हैं, तो मै बेदार हूँ ख़ुदाया मेरी नींद तूलानी हो गई मेरा क़याम कम हो गया। ये

قِيَامِي وَهٰذَا السَّحَرُ وَاَنَا اَسْتَغْفِرُكَ لِذُنُوبِي اسْتِغْفَارَ مَنْ لَا يَجِدُ

सहर के समय मैं अपने गुनाहों का इस्तेग़फ़ार कर रहा हूँ। ये इस्तेग़फ़ार उसका है जिसके इख़तियार में

لِنَفْسِهِ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا وَلَا مَوْتًا وَلَا حَيَاةً وَلَا نُشُورًا

न फ़ायदा है न नुक़सान, न मौत है न ज़िंदगी न हशर व नशर।

फिर सजदे में जाए और नमाज़ को तमाम करे और सलाम के बाद तसबीहए ज़हरा (स.अ.) पढ़ें फिर कहे, तीन मरतबो:

اَلْحَمْدُ لِرَبِّ الصَّبَاحِ اَلْحَمْدُ لِفَالِقِ الْاِصْبَاحِ

सारी हम्द उस ही के लिए जो सुबह का परवरदिगार है, सुबह का इजाद करनेवाला है।

फिर तीन बार कहे:

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

तस्बीह मेरे उस ख़ुदा की जो क़ायनात का बादशाह पाक सिफ़ात अज़ीज़ व हकीम है।

फिर ये दुआ पढ़ सकते हैं:

يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ يَا بَرُّ يَا رَحِيمُ يَا غَنِيُّ يَا كَرِيمُ ارْزُقْنِي مِنَ التِّجَارَةِ

ऐ हैयो-क़य्युम ऐ ख़ुदाए रहीम व करीम ऐ ख़ुदा ए ग़नी मुझे वो तिजारत अता फ़र्मा जिसमें सब से

اَعْظَمَهَا فَضْلًا وَاَوْسَعَهَا رِزْقًا وَخَيْرَهَا لِي عَاقِبَةً فَاِنَّهُ لَا خَيْرَ فِي مَا

ज़्यादा फ़ज़ीलत हो। जिस का रिज़्क वसी तर हो और जो मेरे लिए अंजाम में बेहतरीन हो इसलिए

لَا عَاقِبَةَ لَهُ

के उसमें कोई ख़ैर नहीं है, जिस की कोई आक़ेबत नहीं है।

मुनासिब है के उसके बाद दुआ हज़ीन पढ़ जो मुलहेक़ात बाक़ेयात अस्सालेहात में ।ज़िक्र होगी।

أُنَاجِيكَ يَا مَوْجُودُ فِي كُلِّ مَكَانٍ...

मै तुझको पुकारता हूँ ऐ वो जो हर जगह मौजूद है।

फिर सजदे में जाए और पाँच बार कहे:

سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ

पाक और क़दासत वाला है मलाएका और रूह का रब

फिर बैठे व आयतल कुर्सी पढ़े और दोबारा सजदे में जाए और साबिक़ ज़िक्र को पाँच बार पढ़े:

सुबह की नाफ़ेला

फिर नाफ़ेला सुबह के लिए उठे और वो दो रकत है पहली रकत में हम्द के बाद कुलया अय्योहल काफ़ेरून और दूसरी रकत में हम्द के बाद सूरह तौहीद पढ़े और जब सलाम पढ़ चुके तो दाहिने पहलू पर लेटें और बिक़बला मय्यत की तरह लहेद में और अपने दाएँ तरफ़ को दाहिने हाथ पर रखे और कहे:

اِسْتَمْسَكْتُ بِعُرْوَةِ اللهِ الْوُثْقَى الَّتِي لَا انْفِصَامَ لَهَا وَاعْتَصَمْتُ

मैं ख़ुदा की उस रसीमाने हिदायत से वाबस्ता हूँ जो टूटने वाली नहीं है। मैं हब्ले मतीन से वाबस्ता

بِحَبْلِ اللهِ الْمَتِينِ وَاَعُوذُ بِاللهِ مِنْ شَرِّ فَسَقَةِ الْعَرَبِ وَالْعَجَمِ

हूँ, मैं ख़ुदा की पनाह चाहता हूँ अरब व अज़म के फ़ासिक़ों के शर और जिन्नो इन्स के फ़ासिक़ों

وَاَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنْ شَرِّ فَسَقَةِ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ

के शर से।

फिर ये तीन बार पढ़े:

سُبْحَانَ رَبِّ الصَّبَاحِ فَالِقِ الْاِصْبَاحِ

पाक है सुब्ह का रब सुब्हा को शिगाफ़ करनेवाला।

आौर पाँच आयते आले ईमरान पढ़े।
फिर उठ कर बैठे और तसबीह ज़हरा (स.अ.) पढ़े।
किताब मन ला यहज़रहुल फ़क़ीह में रिवायत हूई है के जो शख़्स मोहम्मद व आले मोहम्मद पर सलवात भेजे सौ मरतबा दो रकत नाफ़ेला सुबह और नमाज़े सुबह के दरमियान तो ख़ुदा वन्दे आलम उसको महफ़ूज़ रखता है आग की गर्मा से।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ

ख़ुदाया मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल कर।

और जो शख़्स सौ मरतबा यह कहे, तो ख़ुदा बनाता है, उस के लिए बेहिश्त मे एक घर।

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّي وَاَتُوبُ اِلَيْهِ

पाक है मेरा अज़ीम रब और उसकी तारीफ़ है मैं अल्लाह से मग़ाफ़िरत मांगता हूँ और उससे माफ़ी चाहता हूँ।

और जो शख्स एक्कीस बार कुल हो अल्लाह पढ़े ख़ुदा उसके लिए बेहिश्त में घर बनाता है और उसको चालीस मरतबा पढ़े तो ख़ुदा वन्दे आलम उसको बख़्श देता है।
मुनासिब है के नमाज़े शब से फ़ारिग़ हाने के बाद सहा॰rफए कामेला की बत्तीसवों दुआ पढ़ी जाए:

اَللّٰهُمَّ يَا ذَا الْمُلْكِ الْمُتَأَبِّدِ بِالْخُلُودِ...

ऐ अल्लाह ऐ मुल्क वाले जो हमेशा बाक़ी रहेगा।

फिर सजदे शुक्र करे और मुनासिब है के इस में अपने बिरादराने मोमिन के लिए दुआ करे और दुआ सजदे शुक्र में गुज़री।

اَللّٰهُمَّ رَبَّ الْفَجْرِ وَاللَّيَالِي الْعَشْرِ وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ...

मै अल्लाह दिन व दस रातों के रब और सम व विषम के रब...

उम्मीद रखता हूँ बिरादराने ईमानी इस गुनहगार लेखक के लिए भी दुआ करेगें मै बेहद मोहताजे दुआ हूँ।

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ

कोई माबूद नही सिवाए ख़ुदा के वो एक है उसका कोई शरीक नही है। मुल्क और तारीफ़ उसी के लिए है। ज़िंदा करता है

وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

और मौत देता है और वो ऐसा ज़िंदा है जिसे मौत नही है उसके हाथों मे सारी ख़ैर है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है।

वर्ग-५

सुबह व शाम की दुआएँ

सुबह व शाम के बाज़ ज़िक्र और दुआओं के बारे में जान लो ख़ुदा तुम्हारी ताईद करे बेशुमार तहरीस और तरग़ीब इन दोनो वक़्तों के लिए आयतों और हदीसां में वारिद हुई है लेहाज़ा उन दो वक़्तों के लिए बे शुमार दुआएँ और ज़िक्र रसूले ख़ुदा और अइम्माए अतहार (स) से वारिद हुए हैं मै इस रिसालह में मुख़तसर तज़किरे के ज़ारिए बरकत हासिल करता हूँ।

पहला: इब्न बाबवय ने मोतबर सनद के साथ अमीरल मोमिनीन (अ.स.) से रिवायत की है के जो शख़्स तुलूए आफ़ताब से कुल हो अल्ला, इन्ना अनज़लना, और आयतल कुर्सा में से हर एक को ग्यारह मरतबा पढ़े तो ख़ुदा उस के माल से हर उस चीज़ को दूर करेगा जिस से वो डरता हो।

और फ़रमाया के जो कुलहो अल्ला और इन्ना अनज़लना को तुलूए आफ़ताब से पहले पढ़े तो उस दिन उसको गुनाह नही पहुचेगा चाहे शैतान कितनी भी कोशिश करे।

दूसरे: कुलैनी, इब्ने बाबवय, शेख़ तूसी और दूसरों ने हज़रत इमाम सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के हर मुसलमान पर वाजिब है के दस बार तुलूए आफ़ताब से क़ब्ल और दस बार ग़ुरूब से पहले ये दुआ पढ़े:

يُحِيِي وَيُمِيتُ وَيُمِيتُ وَيُحْيِي

वो ज़िंदा करता है और मौत देता है और मौत देता है और ज़िंदगी देता है।

وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ

और वो ऐसा ज़िंदा है जो मरता नही उसके हाथ मे ख़ैर है।

और बाज़ रिवायात में इस तरह वारिद हुआ है:

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهِ

अल्लाह तआला पाक है और तारिफ़ उसी की है।

कई रिवायतों मे नही है और बअज़ में है:

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाह तआला पाक है और सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है व नही है कोई माबूद सिवाए अल्लाह के व अल्लाह सबसे बड़ा है।

बज़ाहिर सब अच्छा है और अगर तमाम किसमो के साथ पढ़े तो बेहतर है। बाज़ रिवायतों मे वारिद हुआ है के अगर तर्क हो जाए तो उस की कज़ा करे जो लाज़म है और बाज़ रिवायतों मे उस के गुनाहां का कफ़्फ़ारा है उस दिन के।

तीन: इब्ने बाबवय और दूसरां ने बहुत मोतबर सनदां के साथ हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) से और हज़रत सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के जो शख़्स शाम मे सौ बार कहे अल्लाहो अकबर तो गोया उसने सौ गुलाम आज़ाद किए।

दूसरी सही सनद के साथ इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.स.) से मनक़ूल है के जो शख़्स सौ बार तुलूए आफ़ताब से क़ब्ल और सौ बार गुरूब से पहले आल्लाहो अकबर कहे तो ख़ुदा वन्दे आलम उस के लिए सौ गुलामों के आज़ाद करने का सवाब लिखता है और जो शख़्स दस बार कहे तो ख़ुदा वन्द दस नेकियाँ उसके लिए लिखता है और जो ज़्यादा कहे तो उसके लिए ज़्यादा नेकियाँ लिखता है।

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ

अल्लाह तआला पाक है और सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है व नही है कोई माबूद सिवाए अल्लाह के व अल्लाह सबसे बड़ा है।

चार: इब्ने बाबवए ने मोतबर सनद के साथ हज़रत सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के रसूले ख़ुदा ने इरशाद फ़रमाया है के बेहिश्त मे चन्द एक मकान हैं जिनका बाहर अन्दर से और अन्दर बाहर से ज़ाहीर है और मेरी उम्मत मे से वो शख़्स उसमे साकिन होगा जो अच्छी बात करे लोगों को खाना खिलाए और जिस से मिले सलाम करे और रात को उस वक़्त नमाज़ पढ़े जब सब लोग सो रहे हों फिर फ़रमाया के अच्छी बात ये है के सुबह और शाम दस बार पढ़े:

فَسُبْحَانَ اللهِ حِيْنَ تُمْسُونَ وَحِيْنَ تُصْبِحُونَ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي

फिर जिस समय तुम लोगों की शाम हो और जिस समय तुम्हारी सुबह हो खुदा की पाका०rजगी ज़ाहिर करो और

महासिन मे सही सनद से मनक़ूल है हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.स.) से के रसूले ख़ुदा (स) एक शख़्स के पास से गुज़रे जो अपने लिए बाग़ लगा रहा था आप ने ख॰डे हो कर फ़रमाया क्या तुम चाहते हो के मै तुम्हारी रहनूमाई ऐसे बाग़ की जानिब करूँ के जिस की जड़ इस से ज़्यादा मज़बूत और फल उस के जोर रस और अच्छा हां? उसने कहा हाँ या रसूल अल्लाह फ़रमाया के सुबह व शाम पढ़ो महासिन मे सही सनद से मनक़ूल है हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.स.) से के रसूले ख़ुदा (स) एक शख़्स के पास से गुज़रे जो अपने लिए बाग़ लगा रहा था आप ने ख॰डे हो कर फ़रमाया क्या तुम चाहते हो के मै तुम्हारी रहनूमाई ऐसे बाग़ की जानिब करूँ के जिस की जड़ इस से ज़्यादा मज़बूत और फल उस के जोर रस और अच्छा हां? उसने कहा हाँ या रसूल अल्लाह फ़रमाया के सुबह व शाम पढ़ो महासिन मे सही सनद से मनक़ूल है हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.स.) से के रसूले ख़ुदा (स) एक शख़्स के पास से गुज़रे जो अपने लिए बाग़ लगा रहा था आप ने ख॰डे हो कर फ़रमाया क्या तुम चाहते हो के मै तुम्हारी रहनूमाई ऐसे बाग़

की जानिब करूँ के जिस की जड़ इस से ज़्यादा मज़बूत और फल उस के जोर रस और अच्छा हां? उसने कहा हाँ या रसूल अल्लाह फ़रमाया के सुबह व शाम पढ़ो

السَّمَاوَاتِ وَالاَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِيْنَ تُظْهِرُونَ.

सारे आसमान व ज़मीन मे तीसरे पहर को और जिस समय तुम लोगों की दोपहर हो जावे वही क़ाबिले तारीफ़ है।

हर तसबीह के बदले मे बेहिश्त मे दरख़्त तेरे लिए लगाता है उसमे मुख़तलिफ़ क़िस्म के मेवे हैं और यही बाक़ेयातुस सालेहात है जिसे ख़ुदा ने क़ुआर्न मे फ़रमाया है जो माले दुनिया से अच्छा और बाक़ी रहने वाला है।

पाँच: इब्ने बाबवए ने मुसतनद सनद के साथ हज़रत अमीरल मोमिनीन (अ.स.) से रिवायत की है के जो शख्स शाम के नज़दीक या शाम के बाद तीन बार इस आयत को पढ़े तो उस रात मे कोई नेकी उस से फ़ौत न होगी और तमाम बुराईयाँ उससे दूर होगीं। और ऐसा ही है अगर सुबह के वक़्त पढ़े, और आयत ये है:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है। कोई ताक़ात व क़ुव्वत नही सिवाय

الْعَظِيمِ

अल्लाहे बुज़ुर्ग व बाला के।

छेः बरकी ने महासिन मे मौसिक सनद के साथ हज़रत इमाम रेज़ा (अ.स.) से रिवायत की है के जो सुबह के वक़्त तीन बार और शाम को तीन बार पढ़े तो नही डरेगा शैतान से और न बादशाह से न जुज़ाम से न बुर्स से और

हज़रत ने फ़रमाया के मै सौ बार पढ़ता हूँ:

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَمُوتُ وَالْحَمْدُ

अल्लाह के अलावा ताक़त का मरकज़ कोई नहीं। मेरा एतेमाद उस ख़ुदाए ज़िंदा पर है जिस के लिए

لِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ

मौत नहीं है। हमारी हम्द अल्लाह के लिए है जिस ने किसी को बेटा नहीं बनाया। ना कोई उसके मुल्क

وَلِيٌّ مِنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا

में शरीक ना कोई कमज़ोरी में उसका वली। और सारी बुज़ुर्गा उस ही के वास्ते है।

नमाज़े सुबह और शाम की ताक़ीब मे दस बार गुज़रा है।
सात: मोतबर सनद से हज़रत सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के एक शख़्स अनसार मे से चन्द दिन रसूल ख़ुदा (स) की ख़िदमत में न आया। तो हज़रत ने उस से पूछा के किस वजह से इतने दिनो तक ग़ायब था तो उसने कहा के तंगदस्ती और तूले बिमारी की वजह से फ़रमाया के क्या तुम चाहते हो के तमहें ऐसी दुआ तालीम करूं के जब पढ़ो तो फ़क़ीरी और बीमारी तुम से दूर हो जाए उसने कहा हाँ। रसूल ने फ़रमाया के सुबह व शाम इस दुआ को पढ़ो:

أَعُوذُ بِاللهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَأَعُوذُ بِاللهِ أَنْ

मैं पनाह चाहता हूँ समी व अलीम की शैतान के शर से और उस बात से के वो मेरे पास हाज़र

يَحْضُرُونِ اِنَّ اللهَ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

हो। ख़ुदा ही सुननेवाला है और जाननेवाला है।

आठ: बहुत मोतबर रिवायतों मे इमाम सादिक़ (अ.स.) से नक़ल है तुलू व गुरूबे आफ़ताब से पहले दस बार पढ़े:

وَاَعُوذُبِكَ رَبِّ اَنْ يَحْضُرُونِ

मैं पनाह चाहता हूँ समी व अलीम की शैताने रजीम से और उसके हाज़र होने से।

और बाज़ रिवायात मे इस तरह है:

اَسْتَعِيذُ بِاللهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَاَعُوذُ

मै पनाह चाहता हूँ अल्लाह की जो सब सुनने वाला और सब जानने वाला है शैतान के बुरे ख़यालात से और मै

بِاللهِ اَنْ يَحْضُرُونِ اِنَّ اللهَ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

पनाह चाहता हूँ अल्लाह की के वो मेरे साथ मौजूद हों बेशक अल्लाह सब सुनने वाला और सब देखने वाला है।

और बाज़ रिवायात में इस तरह है:

اَللّٰهُمَّ مُقَلِّبَ الْقُلُوبِ وَالاَبْصَارِ ثَبِّتْ قَلْبِى عَلٰى دِينِكَ وَلَا تُزِغْ

ऐ दिलों और आँखो को पलटनेवाले मेरे दिल को अपने दीन पर साबित रखना और हिदायत

फ़लाहुस साएल मे हज़रत सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के तुम्हारे लिए कया रूकावट है के हर सुबह व शाम इस दुआ को तीन मरतबा पढ़े:

قَلْبِی بَعْدَ اِذْ هَدَیْتَنِی وَهَبْ لِی مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ

के बाद उसमें कजी पैदा नहीं होने देना। अपनी बारगाह से मुझे रहमत इनायत फ़र्मा, तू बेहतरीन

وَاَجِرْنِی مِنَ النَّارِ بِرَحْمَتِكَ اَللّٰهُمَّ امْدُدْ لِی فِی عُمْرِی وَاَوْسِعْ عَلَیَّ

इनायत करनेवाला है। अपनी रहमत से मुझे जहन्नुम से पनाह देदे। ख़ुदाया मेरी क़ब्र में वुसअत

مِنْ رِزْقِی وَانْشُرْ عَلَیَّ مِنْ رَحْمَتِكَ وَاِنْ كُنْتُ عِنْدَكَ فِی اُمِّ الْكِتَابِ

इनायत फ़र्मा। मेरी रोज़ी को वसी फ़र्मादे, अपनी रहमत को मुझ पर शामिल कर दे। अगर मैं तेरी

شَقِیًّا فَاجْعَلْنِی سَعِیدًا فَاِنَّكَ تَمْحُو مَا تَشَاءُ وَتُثْبِتُ وَعِنْدَكَ اُمُّ

बारगाह में बदबख़्त हूँ तो मुझे नेक बनादे इसलिए के सारा इख़्तेयार तेरे हाथ में है तू जिस चीज़

الْكِتَابِ

को चाहता है बाक़ी रखता है और जिस चीज़ को चाहता है मिटा देता है।???

दस: शेख़ तूसी और सय्यद बिन ताऊस ने हज़रत रसूले ख़ुदा (स) से रिवायत की है के जो सुबह और शाम को एक बार ये पढ़े, तो ख़ुदा वन्दे आलम एक फ़रिशते को बेहिश्त की तरफ़ चाँदी का बेलचा हाथ मे दे कर भेजता है के उस की ज़मीन मूशक है ताके वो उसके लिए दरख़्त लगाए और दिवारें तय्यार करे उस पर दरवाज़ा लगाए और उस दरवाज़े पर लिखे के ये बाग़ फ़ुलाँ बिन फ़ुलाँ का है।

سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيمِ

पाक है अल्लाह और उसी की तारिफ़ है पाक है ख़ुदाए बुज़ुर्ग

सय्यद ने दूसरी मोतबर सनद से हज़रत सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के जो शख़्स इस तसबीह को पढ़े बग़ैर ताज्जुब के तो ख़ुदा वन्दे आलम उस के हज़ार गुन्हा मिटा देता है और हज़ार नेकियाँ उस के लिए लिखता है और हज़ार शिफ़ाअत उस के लिए लिखता है और हज़ार दरजा बुलंद करता है और उस के लिए उस कलमे से एक सफ़ेद मुर्ग पैदा करेगा ताके रोज़े क़यामत उस तसबीह को पढ़े और उसका सवाब उस के लिए लिखा जाएगा।
क़ुतुब रावन्दी ने हज़रत अमीरल मोमिनीन (अ.स.) से रिवायत की है के रसूले ख़ुदा ने इर्शाद फ़रमाया है के जो शख़्स सुबह करे और ख़ुदा की चार नेमतों को याद न करे तो मै डरता हूँ के ख़ुदा उस से ज़ाएल कर दे:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ عَرَّفَنِى نَفْسَهُ وَلَمْ يَتْرُكْنِى عَمْيَانَ الْقَلْبِ

सारी हम्द उस ही अल्लाह के लिए है जिस ने मुझे अपनी मारेफ़त इनायत फ़र्माई और दिल का अंधा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ جَعَلَنِى مِنْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ

नहीं बनाया। सारी हम्द उस ही अल्लाह के लिए है जिस ने मुझ को पैग़म्बर (स.अ.व.व.) की उम्मत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ جَعَلَ رِزْقِى فِى يَدَيْهِ وَلَمْ يَجْعَلْ رِزْقِى فِى اَيْدِى

में बनाया और हम्द उस ही अल्लाह के लिए जिस ने मेरी रोज़ी अपने हाथ में रखी और लोगों के

النَّاسِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ سَتَرَ عُيُوبِى وَلَمْ يَفْضَحْنِى بَيْنَ

हाथों में नहीं क़रार दी। सारी हम्द उस अल्लाह के लिए है जिसने मेरे गुनाहों पर परदा डाला, मेरी

الْخَلَائِقِ

ग़लतियों को छुपा दिया और मुझे लोगों के दरमियान रूस्वा होने नहीं कर दिया।

बारह: बलदुलअमीन मे सलमान फ़ारसी से रिवायत है के जो शख़्स सुबह मे दाख़ल हो तीन बार ये पढ़े, ख़ुदा उस से सत्तर क़िस्म की बला को दूर करेगा इसमे सब से कम ग़म व अनदूह है।

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا

सारी तारिफ़ अल्लाह के लिए जो आलमीन का रब है। सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए ज़्यादा पाक

فِيهِ

व मुबारक तारिफ़ जिसमे हो।

तेरह: शेख कुलैनी ने इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.स.) से रिवायत की है के जब सुबह करो तो पढ़ो:

أَصْبَحْتُ بِاللّٰهِ مُؤْمِنًا عَلَىٰ دِينِ مُحَمَّدٍ وَسُنَّتِهِ وَدِينِ عَلِيٍّ وَسُنَّتِهِ

मैं ने ख़ुदा के करम से सुबह की इसलिए पैग़म्बर (स.अ.व.व.) और उन की सुन्नत पर ईमान

وَدِينِ الْأَوْصِيَاءِ وَسُنَّتِهِمْ آمَنْتُ بِسِرِّهِمْ وَعَلَانِيَتِهِمْ

रखते हुए और दीने अली (अ.स.) पर और दीने औसीया पर ईमान रखते हुए। मैं उनके ज़ाहिर

وَشَاهِدِهِمْ وَغَائِبِهِمْ وَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِمَّا اسْتَعَاذَ مِنْهُ رَسُولُ اللّٰهِ

व बातिन, हाज़र व ग़ायब पर ईमान रखता हूँ ख़ुदा से और उस चीज़ से पनाह चाहता हूँ जिस से

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَعَلِيٌّ عَلَيْهِ السَّلاَمُ وَالاَوْصِيَاءُ عَلَيْهِمُ

रसूल अल्लाह ने और अली (अ.स.) और उनकी औलाद ने पनाह चाही है। और हर उस चीज़ की

السَّلاَمُ وَاَرْغَبُ اِلَى اللهِ فِيمَا رَغِبُوا اِلَيْهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا

रग़बत रखता हूँ जिस की रग़बत उन हज़रात ने की है इसलिए के सारी क़ुव्वत व ताक़त अल्लाह

بِاللهِ

के हाथ में है।

चौदह: शेख़ कुलैनी ने हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.स.) से बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत इस दुआ के पढ़ने की नक़ल की है सुबह के बाद तुलूए आफ़ताब से क़ब्ल पढ़े:

اللهُ اَكْبَرُ اللهُ اَكْبَرُ كَبِيرًا وَسُبْحَانَ اللهِ بُكْرَةً وَاَصِيلًا وَالْحَمْدُ

अल्लाह सबसे बड़ा है अल्लाह सबसे बड़ा है कुल बड़ाई के साथ। और अल्लाह पाक है सुबह मे और

لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ كَثِيرًا لَا شَرِيكَ لَهُ وَصَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

शाम को। सारी तारिफ़ अल्लाह के लिए है जो आलमीन का रब है कसीर हम्द के साथ। उसका

وَآلِهِ

कोई शरीक नही है। ऐ ख़ुदा मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़ल कर।

पंद्रह: बलदुल अमीन मे हज़रत सादिक़ (अ.स.) से रिवायत है के जो शख्स सूबह मे तीन बार इस दुआ को पढ़े शाम तक उसको कोई मुसीबत न पहुचेगी और अगर शाम को पढ़े तो सूबह तक।

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ

उस अल्लाह के नाम से जिस के नाम के साथ ज़मीन व आसमान में कोई शै नुक़सान नहीं पहुँचा

السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

सकती है वो ख़ुदाए समी व अलीम है

सोलह: कुलैनी और ईब्ने बाबवए और दूसरों ने मौसिक़ और मोतबर सनदां के साथ हज़रत मोहम्मद बाक़र (अ.स.) से नक़ल किया है के खुदा वन्दे आलम ने हज़रत नूह (अ.स.) को बहुत शुक्र करने वाला बंदा कहा इस लिए के वो हर सुबह व शाम ये दुआ पढ़ते थे:

اَللّٰهُمَّ إِنِّي اُشْهِدُكَ اَنَّهُ مَا اَمْسٰى وَاَصْبَحَ بِي مِنْ نِعْمَةٍ اَوْ عَافِيَةٍ فِي

ख़ुदाया मैं तुझे गवाह बनाता हूँ के सुबह व शाम मुझे जो भी नेमत या दीन व दुनीया की आाफ़ियत

دِينٍ اَوْ دُنْيَا فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ بِهَا

मिली है वो तेरे ही तुफ़ैल में है, तू ख़ुदा ए वहदहू ला शरीक है। हम्द तेरे लिए और शुक्र तेरे लिए

عَلَيَّ حَتّٰى تَرْضٰى اِلٰهَنَا

है यहाँ तक तू हम से राज़ी हो जाए।

दस मरतबह पढ़ें:

اَللّٰهُمَّ اِنَّهُ مَا اَصْبَحَ بِي مِنْ نِعْمَةٍ اَوْ عَافِيَةٍ فِي دِينٍ اَوْ دُنْيَا فَمِنْكَ

ऐ अल्लाह उस सुबह की जो नेमत या दीन व दुनीया की आाफ़ियत मेरे पास है वो सब तेरा ही

وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ بِهَا عَلَيَّ حَتّٰى تَرْضٰى

कर्म है तू वहदहू ला शरीक है। तेरे लिए हम्द और शुक्र तेरे लिए है यहाँ तक तू हम से राज़ी

وَبَعْدَ الرِّضَا

हो।

और दोनो बेहतर हैं:

सत्तरह: कुलैनी व बरक़ी ने मोतबर सनदों के साथ हज़रत इमाम सादिक़ (अ.स.) व काज़म (अ.स.) से रिवायत की है के जब गुरूबे आफ़ताब का वक़्त क़रीब हो तो ये दुआ पढ़े ता के हर दरिंदे के शर से महफ़ूज़ रहे वो खुद और उस के बच्चे और हर तकलीफ देने वाले, जहेर वाले चोरों और डाकुओं से महफ़ूज़ रहे।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ

सारी हम्द उस अल्लाह के लिए जिस ने कसी को अपना बेटा नहीं बनाया। कोई उसके मुल्क

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي يَصِفُ وَلَا يُوصَفُ وَيَعْلَمُ وَلَا يُعْلَمُ يَعْلَمُ

में शरीक़ नहीं। सारी हम्द उस ही अल्लाह के लिए है। उस की कोई सिफ़त ब्यान नहीं कर

خَائِنَةَ الاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ اَعُوذُ بِوَجْهِ اللهِ الْكَرِيمِ وَبِاسْمِ

सकता वो हर चीज़ को जानता है उसे कोई नहीं जानता। वो निगाहों की ख़यानत और दिलों

اللهِ الْعَظِيمِ مِنْ شَرِّ مَا ذَرَاَ وَبَرَاَ وَمِنْ شَرِّ مَا تَحْتَ الثَّرٰى وَمِنْ شَرِّ

के राज़ों को जानता है। मैं उस ही ख़ुदाए रहीम की पनाह और उस ही के अज़ीम नाम की

مَا ظَهَرَ وَمَا بَطَنَ وَمِنْ شَرِّ مَا كَانَ فِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمِنْ شَرِّ اَبِي

पनाह चाहता हूँ तमाम मख़लूकात जो ज़मीन के नीचे हैं या ऊपर में जिन का शर ज़ाहिर है

قِتْرَةَ وَمَا وَلَدَ وَمِنْ شَرِّ الرَّسِيسِ وَمِنْ شَرِّ مَا وَصَفْتُ وَمَا لَمْ

और जो बातिन हैं। जो रात व सुबह में हो रहा है और हर तरह के शैतान के शर से मैं पनाह

اَصِفْ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

मांगता हूँ।???

अÇारह: कुलैनी ने मोतबर सनद के साथ हज़रत इमाम बाक़र (अ.स.) से रिवायत की है के जो शख़्स सुबह मे इस दुआ को पढ़े तो उस दिन कोई चा॰rज उसको जरर न पहूचाएगी और जो शख़्स शाम को पढ़े तो उस रात मे

اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَصْبَحْتُ فِي ذِمَّتِكَ وَجِوَارِكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسْتَوْدِعُكَ

ख़ुदाया मैं ने सुबह करी है तेरे ज़िम्मे में तेरी पनाह में। मैं अपने दीन, अपने नफ़्स और

دِينِي وَنَفْسِي وَدُنْيَايَ وَآخِرَتِي وَاَهْلِي وَمَالِي وَاَعُوذُ بِكَ يَا عَظِيمُ

अपनी दीन व दुनीया व आख़ेरत और अहल व माल सब को तेरे अमान में देता हूँ। मैं तेरी

مِنْ شَرِّ خَلْقِكَ جَمِيعًا وَاَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا يُبْلِسُ بِهِ اِبْلِيسُ

पनाह चाहता हूँ ऐ ख़ुदा ए अज़ीम मख़लूकात के शर से और शैतान और उसके लश्करों

وَجُنُودُهُ

के शर से।

कोई चा॰rज नुक़सान न पहुचाएगी ईन्शा अल्लह ताला।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ وَلَا يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ غَيْرُهُ اَلْحَمْدُ

सारी हम्द उस अल्लाह के लिए है। वो जो चाहता है कर सकता है। उसके अलावा कोई ऐसा साहिबे इख़तियार

لِلّٰهِ كَمَا يُحِبُّ اللّٰهُ اَنْ يُحْمَدَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ كَمَا هُوَ اَهْلُهُ اَللّٰهُمَّ اَدْخِلْنِي

नहीं । सारी हम्द उस अल्लाह के लिए है जिस तरह वो हम्द चाहता है। सारी हम्द उस अल्लाह के लिए है जैसा

فِي كُلِّ خَيْرٍ اَدْخَلْتَ فِيهِ مُحَمَّدًا وَآلَ مُحَمَّدٍ وَاَخْرِجْنِي مِنْ كُلِّ

वो हम्द चाहे। ख़ुदाया मुझे हर उस चीज़ में दाख़ल करदे जिस में मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद

سُوءٍ اَخْرَجْتَ مِنْهُ مُحَمَّدًا وَآلَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ

(अ.स.) को दाख़ल किया है। और हर उस बुराई से निकाल दे जिस से मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद

مُحَمَّدٍ

(अ.स.) को निकाल दिया है और मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फर्मा।

उनदनीस: कुलैनी ने साही जैसी सनद से रिवायत की है के एक शख़्स ने हज़रत सादिक़ (अ.स.) की ख़िदमत मे अर्ज़ किया के मुझको ऐसी दुआ तालीम फ़रमाएं जिसको मै सुबह व शाम पढ़ूं आप ने फ़रमाया के इस दुआ को पढ़ो:

فَاللهُ خَيْرٌ حَافِظًا وَهُوَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ اِنَّ وَلِيِّيَ اللهُ الَّذِىْ نَزَّلَ

अल्लाह बेहतरीन हाफिज़ है और वो बेहतरीन रहम करनेवाला है। मेरा सरपरस्त वो ख़ुदा है जिस ने किताब को नाज़ल

الْكِتَابَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِيْنَ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا

किया और वो ही तमाम नेक बंदों का सरपरस्त है। उसके बाद अगर लोग उस से मुँह फ़िराते हैं तो मेरा ख़ुदा मेरे लिए

هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

काफ़ी है। उसके अलावा कोई ख़ुदा नहीं। मेरा एतेमाद उस ही पर है और वो ही अर्शे अज़ीम का मालिक है।

बीस: बलदुल अमीन मे हज़रत रसूले ख़ुदा से रिवायत है के जो शख़्स सुबह को सात मरतबा इस दुआ को पढ़े तो वो महफूज रहेगा उस दिन बलाओं से।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ فِى الْاَوَّلِيْنَ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ

ख़ुदाया मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फर्मा अव्वलीन व

مُحَمَّدٍ فِى الْآخِرِيْنَ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ فِى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَصَلِّ

आख़ेरीन में मल्ले आला में और मुरसलीन के दरमियान। ख़ुदाया हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.व.)

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ فِي الْمُرْسَلِيْنَ اَللّٰهُمَّ اَعْطِ مُحَمَّدًا الْوَسِيلَةَ

को वसीलए शर्फ फज़ीलत और अज़ीम दरजा इनायत फर्मा। ख़ुदाया मैं मुहम्मद (स.अ.व.व.)

وَالشَّرَفَ وَالْفَضِيلَةَ وَالدَّرَجَةَ الْكَبِيرَةَ اَللّٰهُمَّ اِنِّي آمَنْتُ بِمُحَمَّدٍ

व आले मुहम्मद (अ.स.) पर ईमान लाया हूँ अगर के मैं ने उनको नहीं देखा इसलिए क़यामत

وَآلِهِ وَلَمْ اَرَهُ فَلَا تَحْرِمْنِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ رُؤْيَتَهُ وَارْزُقْنِي صُحْبَتَهُ

के दिन उनकी ज़ियारत से महरूम नही करना, उनकी सोबत में जगह देना, उनकी मिल्लत

وَتَوَفَّنِي عَلٰى مِلَّتِهِ وَاسْقِنِي مِنْ حَوْضِهِ مَشْرَبًا رَوِيًّا سَائِغًا هَنِيئًا لَا

पर दुनीया से उठाना और उनके हौज़े क़ौसर से यूँ सेराब करना जिस के बाद फिर तश्नगी का

اَظْمَأُ بَعْدَهُ اَبَدًا اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ اَللّٰهُمَّ كَمَا آمَنْتُ بِمُحَمَّدٍ

अहसास नही पैदा हो के तू हर शै पर क़ादिर है। परवरदिगार जिस तरह मैं हज़रत मुहम्मद

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَلَمْ اَرَهُ فَاَرِنِي فِي الْجِنَانِ وَجْهَهُ اَللّٰهُمَّ بَلِّغْ رُوحَ

(स.अ.व.व.) पर ईमान लाया और उन्हें नहीं देखा अब जन्नत में देख लूँ। ख़ुदाया तू ही पैग़म्बर

مُحَمَّدٍ عَنِّي تَحِيَّةً كَثِيرَةً وَسَلَامًا

(स) को मेरी तरफ से सलाम पहुँचादे।

इक्कीrस: बाज मोतबर किताबां मे मरवी है के जो शख़्स तीन मरतबा सुबह और तीन मरतबा दिन के आख़री हिस्से मे इस सलवात को पढ़े उसके गुन्हा बखशे जाएगें और हमेशा खुश रहेगा उस की दुआ क़ुबूल होगी और उसकी

रोज़ी मे ज़्यादती होगी दुश्मन के म§काबले मे मदद होगी और जन्नत मे मोहम्मद के रफीक़ों मे से होगा; वो सलवात ये है:

اَصْبَحْتُ اَللّٰهُمَّ مُعْتَصِمًا بِذِمَامِكَ وَجِوَارِكَ الْمَنِيعِ...

ऐ अल्लाह मैने सुबह की तेरी हिफ़ाज़त मे और तेरे पड़ोस मे पनाह माँगते हुए...

लेखक कहता है के ये सलवात वही है जिसको कफ़मी ने इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से नकल किया हे के जो शख़्स इस को पढ़ेगा वो मोहम्मद व आले मोहम्मद को मसरूर करेगा सलवात पढ़ने मे और मै ने इसको मफ़ातीह मे आमाले रोज़े अर्फ़ा मे जिक्र किया है।

जान लो के वो दुआएं जो सुबह व शाम के लिए वारिद हुई हैं वो बहोत ज़्यादा हैं इस मुख़तसर रिसाले मे इस से ज़्यादा की गुनजाईश नही है और चौथे वर्ग मे दस दुआओं का तज़केरा आएगा जो सुबह व शाम मे पढ़ी जती हैं।

अगर समय रखते हो दुआए अशरात पढ़ो और दुआए यसतसीर और दुआए नूर और दुआए अहेद पढो, और उन दुआओं को हम ने मफातीह मे ज़िक्र किया है और आदाबे तुरबत मे भी ाज़िक्र किया है। ये दुआ को ख़ाके पाक की तसबीह हाथ मे ले कर हर सुबह व शाम ख़ौफ से महफ़ूज रहने के लिए पढ़ीए:

वर्ग-६

दिन के हर घंटे की और रोज़ाना की समानय दुआएं

शेख तूसी (र.अ.), सैय्यद बिन बाकी और शेख कफ़मी ने हर दिन को बारह साअतों मे तक़सीम किया है और हर साअत को बारह इमामो मे से एक इमाम की जानिब मनसूब किया है और फिर हर साअत के लिए दुआ जो उस इमाम के तवससूल पर मूशतमिल है ज़िक्र किया है अगरचे उन लोगों ने इस के लिए कोई मख़सूस रिवायत नही ।ज़िक्र की है मगर ये मालूम है के इस ।क़िस्म की बात बग़ैर रिवायत के वो ज़िक्र नही कर सकते हैं और हम इस रसाले मे इस के तज़केरे पर इकतिफ़ा करते हैं जो मिसबाहुल मुतहज्जिद मे है; शेख ने फरमाया है:

पहला घंटा

पहली साअत तुलूए फ़ज्र से तुलूए आफ़ताब तक है जो अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से मनसूब है और उस समय की दुआ ये है:

اَللّٰهُمَّ رَبَّ الْبَهَاءِ وَالْعَظَمَةِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالسُّلْطَانِ اَظْهَرْتَ

परवरदिगार ऐ अज़मत व किब्रिया और सलतनत के मालिक तू ने अपनी क़ुद्रत को जिस तरह

الْقُدْرَةَ كَيْفَ شِئْتَ وَمَنَنْتَ عَلٰى عِبَادِكَ بِمَغْفِرَتِكَ

चाहा ज़ाहिर किया अपने बन्दों पर अपनी मारेफ़त और मग़फ़ेरत से महरबानी की, अपनी ताक़त

وَتَسَلَّطْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَرُوتِكَ وَعَلَّمْتَهُمْ شُكْرَ نِعْمَتِكَ

से उन पर ग़ालिब आया उन्हें शुक्र व नेमत की तालीम दी। ख़ुदाया अलीए मुर्तज़ा के हक का

اَللّٰهُمَّ فَبِحَقِّ عَلِيٍّ الْمُرْتَضٰى لِلدِّينِ وَالْعَالِمِ بِالْحُكْمِ

वास्ता जो तेरे दीन के मुहाफ़ज़ और तेरे हुक्म के जाननेवाले हैं, इमामुल मुत्तक़ीन हैं। ख़ुदाया

وَمُجَارِى التُّقٰى اِمَامِ الْمُتَّقِيْنَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ فِى

मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फर्मा अव्वलीन व आख़ेरीन में

الاَوَّلِيْنَ وَالاٰخِرِيْنَ وَاُقَدِّمُهُ بَيْنَ يَدَىْ حَوَائِجِى اَنْ تُصَلِّىَ

रहमत नाज़ल फर्मा अगर के अली मुरतज़ा (अ.स.) को अपनी हाजतों के सामने पेश कर रहा हूँ।

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ...

तू मेरे साथ वो बरताव करना जिस का तू अहल है, वो बरताव नहीं करना जिसका मैं अहल हूँ।

फिर अपनी हाजत तलब करे:

दुसरे घंटे की दुआ

दुसरी साअत सूरज के निकलने के बाद से सुरख़ी दूर होने तक है जो मनसूब है इमामे हसन मुजतबा (अ.स.) की तरफ़ और दुआ ये है:

اَللّٰهُمَّ لَبِسْتَ بَهَاءَكَ فِى اَعْظَمِ قُدْرَتِكَ وَصَفَا نُورُكَ فِى اَنْوَرِ

ख़ुदाया तेरा लिबास बहा व अज़मत है, नूर नूर ए अनवर है। तेरा इल्म हिजाबात पर हावी है। तूने

ضَوْئِكَ وَفَاضَ عِلْمُكَ حِجَابَكَ وَخَلَّصْتَ فِيْهِ اَهْلَ الثِّقَةِ بِكَ عِنْدَ

अपने एतेमाद करनेवालों को जूद व कर्म से नवाज़ा है। तू अपनी किब्रयाई में बुलंद व बरतर है।

جُودِكَ فَتَعَالَيْتَ فِي كِبْرِيَائِكَ عُلُوًّا عَظُمَتْ فِيهِ مِنَّتُكَ عَلَىٰ اَهْلِ

तेरा एहसान तेरे इताअत गुज़ारों पर अज़ीम है जिसकी बिना पर वो तमाम अहले आसमान से

طَاعَتِكَ فَبَاهَيْتَ بِهِمْ اَهْلَ سَمَاوَاتِكَ بِمِنَّتِكَ عَلَيْهِمْ اَللّٰهُمَّ

फ़ख़्र व मुबाहत करते हैं। ख़ुदाया तुझे अली (अ.स.) के हक़ का वास्ता मैं तुझ से पनाह चाहता हूँ।

فَبِحَقِّ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ عَلَيْكَ اَسْاَلُكَ وَبِهِ اَسْتَغِيثُ اِلَيْكَ وَاُقَدِّمُهُ

मैं तुझ से दरियाफ़्त करता हूँ और उन्हें अपनी हाजतों के सामने मुकद्दम करता हूँ ताके तू हमारी

بَيْنَ يَدَيْ حَوَائِجِي اَنْ تُصَلِّيَ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ...

हाजतों को पूरा फर्मा दे।

फिर अपनी हाजत तलब करे:

तीसरे घंटे की दुआ

तीसरी साअत मनसुब है इमाम हुसैन इब्ने अली (अ.स.) की जानिब और वो दिन के बुलंद होने से ले कर दिन के ढ़लने तक है और दुआ ये है:

يَا مَنْ تَجَبَّرَ فَلَا عَيْنٌ تَرَاهُ يَا مَنْ تَعَظَّمَ فَلَا تَخْطُرُ الْقُلُوبُ بِكُنْهِهِ يَا

ऐ ख़ुदा साहिबे जबरूत तुझे कोई आँख देख नहीं सकती। तू इतना अज़ीम है के उसकी हक़ीक़त का

حَسَنَ الْمَنِّ يَا حَسَنَ التَّجَاوُزِ يَا حَسَنَ الْعَفْوِ يَا جَوَادُ يَا كَرِيمُ يَا

तसव्वुर भी नहीं हो सकता। बेहतरीन एहसान करनेवाला बेहतरीन माफ़ करनेवाला बेहतरीन जवाद

مَنْ لَا يُشْبِهُهُ شَیْءٌ مِنْ خَلْقِهِ يَا مَنْ مَنَّ عَلٰی خَلْقِهِ بِاَوْلِيَائِهِ اِذِ

व करीम, उसकी शबाह दुनीया की कोई शै नहीं। ऐ वो ख़ुदा जिस ने अपनी मख़लूकात पर अपने

ارْتَضَاهُمْ لِدِينِهِ وَاَدَّبَ بِهِمْ عِبَادَهُ وَجَعَلَهُمْ حُجَجًا مَنًّا مِنْهُ

औलिया के ज़रिए एहसान किया जिस में दीन के लिए मुन्तिख़ब किया, उनके ज़रिए बन्दों की तादीब

عَلٰی خَلْقِهِ اَسْاَلُكَ بِحَقِّ الْحُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ السِّبْطِ

करी और उन्हें अपनी हुज्जत क़रार दिया। मैं हुसैन बिन अली (अ.स.) के वास्ते से जो तेरी मर्ज़ी के

التَّابِعِ لِمَرْضَاتِكَ وَالنَّاصِحِ فِي دِينِكَ وَالدَّلِيلِ عَلٰی ذَاتِكَ

ताबे और तेरे दीन के लिए नफ़ा और तेरी ज़ात के लिए दलील मैं उनके वास्ते से और उनके हक़ के

اَسْاَلُكَ بِحَقِّهِ وَاُقَدِّمُهُ بَيْنَ يَدَيْ حَوَائِجِي اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَآلِ

वास्ते से सवाल करता हूँ और अपनी हाजतों में उन्हें मुकद्दम करता हूँ तू मुहम्मद (स.अ.व.व.) व

مُحَمَّدٍ...

आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फर्मा और मेरी हाजत को पूरा फर्मा।

फिर अपनी हाजत तलब करे:

चौथे घंटे की दुआ

चौथी साअत मनसुब है इमाम अली इब्नुल हुसैन (अ.स.) की जानिब और वो दिन के ऋनिलने से ले कर ज़ोहर तक है और दुआ ये है:

اَللّٰهُمَّ صَفَا نُورُكَ فِي اَتَمِّ عَظَمَتِكَ وَعَلَا ضِيَاؤُكَ فِي اَبْهٰى ضَوْئِكَ

ख़ुदाया तेरा नूर वाज़े है, तेरी अज़मत तमाम है तेरी रौशनी बुलुंद व बरतर है। ख़ुदाया मैं तेरे उस

اَسْاَلُكَ بِنُورِكَ الَّذِي نَوَّرْتَ بِهِ السَّمَاوَاتِ وَ الْاَرَضِينَ وَقَصَمْتَ

नूर के वास्ते से सवाल करता हूँ जिस से आसमान व ज़मीन रौशन हैं और तू ने ज़ालिमों की कमर

بِهِ الْجَبَابِرَةَ وَاَحْيَيْتَ بِهِ الْاَمْوَاتَ وَاَمَتَّ بِهِ الْاَحْيَاءَ وَجَمَعْتَ بِهِ

तोड़दी, मुर्दों को ज़िंदा किया, ज़िंदों को मुर्दा बनाया, मुतफ़र्रेक़ात को जमा किया, मुजतेमात को

الْمُتَفَرِّقَ وَفَرَّقْتَ بِهِ الْمُجْتَمِعَ وَاَتْمَمْتَ بِهِ الْكَلِمَاتِ وَاَقَمْتَ بِهِ

अलग अलग किया, कलेमात को तमाम किया, आसमानों को क़ाएम किया और तेरे वली अला

السَّمَاوَاتِ اَسْاَلُكَ بِحَقِّ وَلِيِّكَ عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ

बिन हुसैन (अ.स.) से सवाल कर रहा हूँ जिन्होंने तेरे दीन से दफ़ा किया, तेरी राह में जिहाद किया

الذَّابِّ عَنْ دِينِكَ وَالْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِكَ وَاُقَدِّمُهُ بَيْنَ يَدَيْ

और उन्हीं को अपनी दुआओं में मुकद्दम करता हूँ। तू मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद

حَوَائِجِي اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ...

(अ.स.) पर रहमत नाज़ल फर्मा और मेरे मक़ासिद को पूरा कर।

फिर अपनी हाजत तलब करे:

पांचवे घंटे की दुआ

पांचवी साअत मनसूब है इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ.स.) की तरफ और वो जवाले आफ़ताब से ले कर चार रकत नमाज़ अदा करने की मिकदार तक है और दुआ ये है:

اَللّٰهُمَّ رَبَّ الضِّيَاءِ وَالْعَظَمَةِ وَالنُّوْرِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالسُّلْطَانِ

ख़ुदाया जो ज़िया व अज़मत और नूरे किब्रयाई और सलतनत का मालिक है। अपनी अज़्मत की

تَجَبَّرْتَ بِعَظَمَةِ بَهَائِكَ وَمَنَنْتَ عَلٰى عِبَادِكَ بِرَافَتِكَ وَرَحْمَتِكَ

बना पर तू हर शै पर ग़ालिब है। तू ने अपने बंदों पर अपनी राफत व रहमत से एहसान किया है और

وَدَلَلْتَهُمْ عَلٰى مَوجُودِ رِضَاكَ وَجَعَلْتَ لَهُمْ دَلِيلًا يَدُلُّهُمْ عَلٰى

उन्हें अपनी रिज़ा का रास्ता बताया है उन के लिए वो दलील क़रार दी है जो तेरी हुज्जत की तरफ़

مَحَبَّتِكَ وَيُعَلِّمُهُمْ مَحَابَّكَ وَيَدُلُّهُمْ عَلٰى مَشِيئَتِكَ اَللّٰهُمَّ فَبِحَقِّ

रहनुमाई कर सके, महबूब चीज़ों को बता सके, तेरी मशिय्यत की रहनुमाई कर सकें। ख़ुदाया हज़रत

مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ عَلَيْكَ وَاُقَدِّمُهُ بَيْنَ يَدَىْ حَوَائِجِي

मुहम्मद इब्ने अली (अ.स.) के वास्ते से, मैं उन्हें अपनी हाजतों के लिए मुक़द्दम कर रहा हूँ। तू मुहम्मद

اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ...

(स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फर्मा और मेरे मक़ासिद को पूरा कर।

फिर अपनी हाजत तलब करे:

छटे घंटे की दुआ

छटी साअत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) की तरफ मनसूब है और वो ज़वाल से चार रकअत नमाज की मिकदार के बाद से ले कर नमाज़े ज़ोहर पढ़ने तक है:

يَا مَنْ لَطُفَ عَنْ إِدْرَاكِ الْأَوْهَامِ يَا مَنْ كَبُرَ عَنْ مَوْجُودِ الْبَصَرِ يَا

ऐ वो ख़ुदा जो औहाम की रसाई से लतीफ़तर है और जो निगाहों की रसाई से बुज़ुर्गतर है। उस

مَنْ تَعَالَىٰ عَنِ الصِّفَاتِ كُلِّهَا يَا مَنْ جَلَّ عَنْ مَعَانِي اللُّطْفِ وَلَطُفَ

की सिफ़ात बुलंद व बाला हैं। वो लुत्फ़ से अज़ीमतर है और जलाल से लता०rफतर है। ख़ुदाया

عَنْ مَعَانِي الْجَلَالِ أَسْأَلُكَ بِنُورِ وَجْهِكَ وَضِيَاءِ كِبْرِيَائِكَ

मैं तेरे नूरे अक़्दस और तेरे किब्रियाई की ज़िया और तेरे अज़्मत के वास्ते से सवाल कर रहा हूँ

وَأَسْأَلُكَ بِحَقِّ عَظَمَتِكَ الْعَافِيَةَ مِنْ نَارِكَ وَأَسْأَلُكَ بِحَقِّ جَعْفَرِ بْنِ

के मुझे जहन्नम से नजात इनायत फर्मा। मैं हज़रत जाफर इब्ने मुहम्मद (अ.स.) के वसीले से और

مُحَمَّدٍ عَلَيْكَ وَأُقَدِّمُهُ بَيْنَ يَدَيْ حَوَائِجِي أَنْ تُصَلِّيَ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَآلِ

उन्हें मुक़द्दम कर के ये सवाल करता हूँ के मेरी हाजतों को पूरा कर के मुहम्मद (स.अ.व.व.) व

مُحَمَّدٍ...

आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल कर।

फिर अपनी हाजत तलब करे:

सातवें घंटे की दुआ

सातवांr साअत मनसूब है हज़रत मूसा बिन जाफ़र (अ.स.) की जानिब और वो बाद नमाज़े ज़ोहर से ले कर अñì से चार रकअत नमाज़ की मिक़दार तक के लिए:

يَا مَنْ تَكَبَّرَ عَنِ الْاَوْهَامِ صُورَتُهُ يَا مَنْ تَعَالٰى عَنِ الصِّفَاتِ نُورُهُ يَا

ऐ वो ख़ुदा जिस की सूरत औहाम से बुज़ुर्गतर जिस के सिफात का नूर बुलंदतर और जो मख़लूक़ात

مَنْ قَرُبَ عِنْدَ دُعَاءِ خَلْقِهِ يَا مَنْ دَعَاهُ الْمُضْطَرُّوْنَ وَلَجَاَ اِلَيْهِ

की दुआ में उन के क़रीबतर है। ऐ वो ख़ुदा जिस से मुज़तर लोग दुआ करते हैं और सदा उस की

الْخَائِفُونَ وَسَاَلَهُ الْمُؤْمِنُونَ وَعَبَدَهُ الشَّاكِرُونَ وَحَمِدَهُ

पनाह में आते हैं। उस से सवाल करते हैं। उस के शाकिर बंदे, और मुख़लिस बंदे उस की इबादत

الْمُخْلِصُونَ اَسْاَلُكَ بِحَقِّ نُورِكَ الْمُضِيءِ وَبِحَقِّ مُوسٰى بْنِ جَعْفَرٍ

करते हैं। ख़ुदाया तेरे रोशन नूर हज़रत मूसा बिन जाफ़र (अ.स.) के हक का वास्ता के जिन के

عَلَيْكَ وَاَتَقَرَّبُ بِهِ اِلَيْكَ وَاُقَدِّمُهُ بَيْنَ يَدَيْ حَوَائِجِي اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى

ज़रिए से मैं तुझ से क़रीब होना चाहता हूँ और उन्हें अपनी इबादतों में मुक़द्दम करता हूँ, तू मुहम्मद

مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ...

(स.अ.व.व.) व आले मुहम्म (स) पर रहमत नाज़ल फर्मा और मेरी हाजतों को पूरा कर।

फिर अपनी हाजत तलब करे:

आठवें घंटे की दुआ

आठवीं साअत मनसूब है अली मूसा अर-रजा (अ.स.) की तरफ़ और वो ज़ोहर के बाद चार रकअत नमाज़ की मिक़दार से ले कर अस्र की नमाज़ तक है:

يَا خَيْرَ مَدْعُوٍّ يَا خَيْرَ مَنْ اَعْطٰى يَا خَيْرَ مَنْ سُئِلَ يَا مَنْ اَضَاءَ بِاسْمِهٖ

ऐ बेहतरीन वो ज़ात जिस से दुआ करी जाती है, ऐ बेहतरीन अता करनेवाले, ऐ बेहतरीन मसऊल, ऐ

ضَوْءُ النَّهَارِ وَاَظْلَمَ بِهٖ ظُلْمَةُ اللَّيْلِ وَسَالَ بِاسْمِهٖ وَابِلُ السَّيْلِ

वो के जिस के नाम से दिन की रौशनी और रात का अंधेरा है और जिस के नाम से सेलाब आते हैं और

وَرَزَقَ اَوْلِيَاءَهُ كُلَّ خَيْرٍ يَا مَنْ عَلَا السَّمَاوَاتِ نُوْرُهُ وَ الْاَرْضَ

जिसने अपने औलिया को हर नेकी का रिज़्क अता फ़रमाया है और ऐ वो जिसका नूर आसमानों से

ضَوْؤُهُ وَالشَّرْقَ وَالْغَرْبَ رَحْمَتُهُ يَا وَاسِعَ الْجُوْدِ اَسْاَلُكَ بِحَقِّ عَلِيِّ بْنِ

बुलंद और ज़मीनों से बालातर है। शर्क व ग़र्ब को उसकी रहमत हावी है। ऐ बेहतरीन कर्म करनेवाले

مُوسٰى الرِّضَا عَلَيْهِمَا السَّلَامُ وَاُقَدِّمُهُ بَيْنَ يَدَيْ حَوَائِجِيْ اَنْ تُصَلِّيَ

मैं तुझ से हज़रत अली बिन मूसा रज़ा (अ.स.) के वास्ते से और उन्हें मुक़द्दम करके सवाल करता हूँ के

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ...

मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फर्मा और हमारी हाजतों को पूरा कर।

फिर अपनी हाजत तलब करे:

नवें घंटे की दुआ

नवीं साअत मनसूब है हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.स.) की जानिब और वो नमाज़े अñा से ले कर दो साअत बाद तक है और दुआ ये है:

يَا مَنْ دَعَاهُ الْمُضْطَرُّونَ فَأَجَابَهُمْ وَالْتَجَأَ إِلَيْهِ الْخَائِفُونَ فَآمَنَهُمْ

ऐ वो ख़ुदा जिस से परेशान हालों ने दुआ करी तो उसने क़ुबूल कर ली। ख़ौफज़दा लोगों ने उसकी पनाह चाही तो

وَعَبَدَهُ الطَّائِعُونَ فَشَكَرَهُمْ وَشَكَرَهُ الْمُؤْمِنُونَ فَحَبَاهُمْ

उसने अम्न दे दिया, इताअत गुजारों ने की इबादतों को क़ुबूल कर लिया। मोमिनीन ने शुक्र किया तो उन्हें अता कर

وَأَطَاعُوهُ فَعَصَمَهُمْ وَسَأَلُوهُ فَأَعْطَاهُمْ وَنَسُوا نِعْمَتَهُ فَلَمْ يُخْلِ

दिया, इताअत करी तो उन्हें महफ़ूज़ कर दिया, सवाल किया तो उन्हें अता कर दिया और जो उसकी नेमत को भूल

شُكْرَهُ مِنْ قُلُوبِهِمْ وَامْتَنَّ عَلَيْهِمْ فَلَمْ يَجْعَلِ اسْمَهُ مَنْسِيًّا

गए उनके दिलों को शुक्र से ख़ाली नहीं किया बल्के उन पर एहसान किया और अपने नाम को उनकी निगाहों में

عِنْدَهُمْ أَسْأَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ عَلَيْهِمَا السَّلامُ حُجَّتِكَ الْبَالِغَةِ

क़ाबिले फरामोश नहीं बनाया। ख़ुदाया हज़रत मुहम्मद बिन अली (अ.स.) का वास्ता देते हुए जो तेरी हुज्जते बालेग़ा

وَنِعْمَتِكَ السَّابِغَةِ وَمَحَجَّتِكَ الْوَاضِحَةِ وَأُقَدِّمُهُ بَيْنَ يَدَيْ حَوَائِجِي

और तेरी नेमते कामेला में तेरा वाज़ेह और रौशन रास्ता हैं और उन्हीं को मुकद्दम कर के मैं ये सवाल करता हूँ के

اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ...

मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फर्मा और मेरी हाजतों को पूरा फर्मा।

फिर अपनी हाजत तलब करे:

दसवें घंटे की दुआ

दसवांr साअत मनसूब हे इमाम अली नक़ी (अ.स.) की तरफ़ और वो अñा के दो साअत बाद से ले कर सूरज की ज़रदी माएल होने के पहले तक है।

يَا مَنْ عَلَا فَعَظُمَ يَا مَنْ تَسَلَّطَ فَتَجَبَّرَ وَتَجَبَّرَ فَتَسَلَّطَ يَا مَنْ عَزَّ

ऐ वो ख़ुदा जो बुलंदी में अज़ीम है, हर शै पर ग़ालिब है, हर शै पर क़ुद्रत रखता है, साहिबे इज़्ज़त है और अपनी

فَاسْتَكْبَرَ فِي عِزِّهِ يَا مَنْ مَدَّ الظِّلَّ عَلٰى خَلْقِهِ يَا مَنِ امْتَنَّ بِالْمَعْرُوفِ

इज़्ज़त में बुज़ुर्ग तर है। ऐ वो ख़ुदा जिस का सायाए रहमत सारी मख़लूक़ात पर है। जिस ने अपने बन्दों पर नेकियों

عَلٰى عِبَادِهِ يَا عَزِيزًا ذَا انْتِقَامٍ يَا مُنْتَقِمًا بِعِزَّتِهِ مِنْ اَهْلِ الشِّرْكِ

का एहसान फर्माया है। वो अज़ीम साहिबे इन्तेक़ाम है, इन्तेक़ाम का लेनेवाला है अहले शिर्क से। मैं तुझ से अली

اَسْاَلُكَ بِحَقِّ عَلِيِّ بْنِ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ وَاُقَدِّمُهُ بَيْنَ يَدَيْ

बिन मुहम्मद (अ.स.) के वास्ते और उन्हीं को मुकद्दम कर के मैं ये सवाल करता हूँ के मुहम्मद (स.अ.व.व.) व

حَوَائِجِي اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ...

आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फर्मा और हमारे साथ वो बरताव करना जिसका तू अहल है।

फिर अपनी हाजत तलब करे:

ग्हारहवें घंटे की दुआ

ग्यारहवीं साअत मनसूब है हज़रत इमाम हसन असकरी (अ.स.) की तरफ़ और वो आफ़ताब की ज़रदी माएल होने के पहले से ले कर ज़रद होने तक है और दुआ ये है:

يَا اَوَّلًا بِلَا اَوَّلِيَّةٍ وَيَا آخِرًا بِلَا آخِرِيَّةٍ يَا قَيُّومًا بِلَا مُنْتَهىٰ لِقِدَمِهِ يَا

ऐ वो ख़ुदा जो ऐसा अव्वल है जिसके पहले कुछ नहीं। वो ख़ुदाए क्ययूम है, किसी का मोहताज नहीं

عَزِيزًا بِلَا انْقِطَاعٍ لِعِزَّتِهِ يَا مُتَسَلِّطًا بِلَا ضَعْفٍ مِنْ سُلْطَانِهِ يَا

है। वो अज़ीज़ है उसकी इज़्ज़त ख़त्म होनेवाली नहीं, वो ताक़तवाला है कमज़ोर नहीं, वो करीम है

كَرِيمًا بِدَوَامِ نِعْمَتِهِ يَا جَبَّارًا وَمُعِزًّا لِاَوْلِيَائِهِ يَا خَبِيرًا بِعِلْمِهِ يَا

के उसकी नेमतें दायमी हैं। वो जब्बार है और अपने औलिया को इज़्ज़त देनेवाला है। वो अपने इल्म

عَلِيمًا بِقُدْرَتِهِ يَا قَدِيرًا بِذَاتِهِ اَسْاَلُكَ بِحَقِّ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ عَلَيْهِمَا

की बिना पर हर चीज़ को जानता है अपनी क़ुद्रत की बिना पर हर चीज़ पर ताक़त रखता है। ख़ुदाया

السَّلَامُ وَاُقَدِّمُهُ بَيْنَ يَدَيْ حَوَائِجِي اَنْ تُصَلِّيَ عَلىٰ مُحَمَّدٍ وَآلِ

हसन बिन अली (अ.स.) का वास्ता और उन्हीं को मुकद्दम करके ये गुज़ारिश करता हूँ के मुहम्मद

مُحَمَّدٍ...

(स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फर्मा और हमारी हाजतों को पूरा फर्मा।

फिर अपनी हाजत तलब करे:

बारहवें घंटे की दुआ

बारहवां घंटा मनसूब है इमामे अñï (अ.स.) की जानिब और वो सूरज के ज़रद होने से ले कर ग़ुरूब तक है और दुआ ये है:

يَا مَنْ تَوَحَّدَ بِنَفْسِهِ عَنْ خَلْقِهِ يَا مَنْ غَنِيَ عَنْ خَلْقِهِ بِصُنْعِهِ يَا

ऐ वो ख़ुदा जो अपनी ज़ात की बिना पर अपनी मख़लूक़ात से अलग है, अपनी तख़ली क़ियात से बेनियाज़

مَنْ عَرَّفَ نَفْسَهُ خَلْقَهُ بِلُطْفِهِ يَا مَنْ سَلَكَ بِأَهْلِ طَاعَتِهِ

है उसने अपने लूत्फ़ व कर्म से अपने मख़लूक़ात से अपनी तारीफ़ कराई है। ऐ वो ख़ुदा जो अहले

مَرْضَاتَهُ يَا مَنْ اَعَانَ اَهْلَ مَحَبَّتِهِ عَلٰى شُكْرِهِمْ يَا مَنْ مَنَّ

इताअत को मर्ज़ा के रास्ते चलाता है अहले मुहब्बत की शुक्र में मद्द करता है। ऐ वो ख़ुदा जिस ने उन पर

عَلَيْهِمْ بِدِينِهِ وَلَطَفَ لَهُمْ بِنَائِلِهِ اَسْأَلُكَ بِحَقِّ الْخَلَفِ الصَّالِحِ

अपने दीन से एहसान किया है अपने अताया इनायत फ़र्माए हैं। तुझे हज़रत ख़ल्फे सालेह (अ.स.) का

عَلَيْهِ السَّلاَمُ عَلَيْكَ وَاَتَضَرَّعُ اِلَيْكَ بِهِ وَاُقَدِّمُهُ بَيْنَ يَدَىْ

वास्ता उन्हीं के ज़रिए मैं तेरी बारगाह में फ़रयाद करता हूँ और उन्हीं को अपनी हाजतों के लिए मुक़द्दम

حَوَائِجِى اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ... اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

करता हूँ के मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फर्मा, हमारी हाजतों को

وَآلِ مُحَمَّدٍ اُولِی الاَمْرِ الَّذِیْنَ اَمَرْتَ بِطَاعَتِهِمْ وَاُولِی الاَرْحَامِ

पूरा फर्मा। ख़ुदाया मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फर्मा जो साहिबाने

الَّذِیْنَ اَمَرْتَ بِصِلَتِهِمْ وَذَوِی الْقُرْبٰی الَّذِیْنَ اَمَرْتَ بِمَوَدَّتِهِمْ

अम्र हैं, जिनकी इताअत का तूने हुक्म दिया है। वो ही ऊलुल अरहाम हैं जिन से वसीलए रहम का हुक्म

وَالْمَوَالِی الَّذِیْنَ اَمَرْتَ بِعِرْفَانِ حَقِّهِمْ وَاَهْلِ الْبَیْتِ الَّذِیْنَ

दिया है, वो ही अक़्रबा हैं जिन की मवद्दत वाजिब है, वो ही मवाली हैं जिन की मारेफ़त का हुक्म दिया है

اَذْهَبْتَ عَنْهُمُ الرِّجْسَ وَطَهَّرْتَهُمْ تَطْهِیْرًا اَنْ تُصَلِّیَ عَلٰی مُحَمَّدٍ

वो ही अहलेबैत हैं जिन से हर रिज्स को दूर रखा है और उन्हें हक़ ए तहारत इनायत किया है तू मुहम्मद

وَآلِ مُحَمَّدٍ...

(स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फर्मा और हमारी हाजतों को पूरा फर्मा।

फिर अपनी हाजत तलब करे:

अल्लामा मजलिसी ने मिकबासउल मसाबीह मे फ़रमाया है और मोतबर सनदां से हज़रत जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के ख़ुदा वन्दे आलम दिन और रात तीन तीन साअतो अपने को बूज़ुर्गा और बड़ाई से याद करता है दिन की तीन साअतें चाशत की ईबतेदा से ज़ोहर की ईबतेदा तक है और रात की तीन साअतें आख़री तेहाई रात से सूबह सादिक़ तक है तो जो बन्दे मोमिन अल्लाह की इस तमजीद को पढ़ेगा और उसका दिल ख़ुदा के साथ हो तो ख़ुदा उस की हाजतों को पूरा करेगा और अगर वो बद बखत व बद आक़ेबत हो तो उम्मीद है के सईद और नेकूकार हो जाए और अंजाम बख़ैर हो लेखक कहता है के अगर रोज़ व शब की उन्ही साअतों मे पढ़े तो ज़्यादा मुनासिब होगा।

दुआ ये है:

اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

ख़ुदाया तू अल्लाह है व तेरे अलावा कोई ख़ुदा नहीं। तू आलमीन का परवरदिगार है, तेरे अलावा कोई

الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ اَنْتَ اللّٰهُ لَا

ख़ुदा नहीं तू रहमान व रहीम है। खुदाया तू अल्लाह है व तेरे अलावा कोई ख़ुदा नहीं। तू अली व अज़ीम है।

اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ مَلِكُ يَوْمِ الدِّيْنِ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْغَفُوْرُ

ख़ुदाया तू अल्लाह है व तेरे अलावा कोई ख़ुदा नहीं। तू हिसाब के दिन का मालिक है। ख़ुदाया तू अल्लाह

الرَّحِيْمُ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا

है व तेरे अलावा कोई ख़ुदा नहीं। तू रहमान व रहेम करनेवाला है। तू ख़ुदाए बुलंद व बरतर है। तू रोज़े

اَنْتَ مِنْكَ بَدْءُ كُلِّ شَيْءٍ وَاِلَيْكَ يَعُوْدُ كُلُّ شَيْءٍ اَنْتَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَا

क़यामत का मालिक है। तू ही ग़फ़ूर व रहीम है और तू ही अज़ीज़ व हकीम है। तुझ ही से हर शै की इबतेदा

اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ لَمْ تَزَلْ وَلَا تَزَالُ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَالِقُ الْخَيْرِ

है और तेरी ही तरफ़ हर चीज़ की बाज़गश्त है। तू ख़ुदाए वहदहू ला शरीक है। हमेशा से है और हमेशा

وَالشَّرِّ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَالِقُ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ

रहनेवाला है। क़ायनात की हर शै का तू ही ख़ालिक़ है। जन्नत व जहन्नुम का तू ही पैदा करनेवाला है। तू

إِلَّا أَنْتَ الْأَحَدُ الصَّمَدُ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ

ख़ुदाए अहद है, समद व बेनियाज़ है। ना तेरा कोई बाप है ना बेटा ना हमसर है। तू ख़ुदा है तेरे अलावा

أَنْتَ اللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ

कोई ख़ुदा नहीं, तू बादशाह है, तू पाकीज़ा सिफ़ात है, सलाम है, मोमिन है, महीन और मुहाफ़िज़ है, अज़ीज़

الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَانَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ أَنْتَ اللّٰهُ

है, जब्बार है, किब्रयाई तेरे लिए है, तू हर चीज़ से पाकीज़ा है जिस को तेरा शरीक़ बनाया जाता है। तू वो

الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَكَ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنٰى يُسَبِّحُ لَكَ مَا فِي

ख़ुदा है जो पैदा करनेवाला, इजाद करनेवाला और सुरतें बनानेवाला है। तेरे लिए बेहतरीन नाम हैं। ज़मीन

السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضِ وَأَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ أَنْتَ اللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ

व आसमान की हर शै तेरी तस्बीह करती है। तू ख़ुदाए अज़ीज़ व हकीम है, तू ख़ुदा ए कबीर व बुलंद है।

الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِي وَالْكِبْرِيَاءُ رِدَاؤُكَ

किब्रयाई तेरी ही रिदा है।

रोज़ाना की दुआएं

इब्ने बाबूया ने सही सनद के साथ हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के जो बन्दा हर रोज़ सात मरतबा ये पढ़े तो जहन्नम कहेगी के ख़ुदा उसको मुझ से पन्हा दे।

اَسْاَلُ اللهَ الْجَنَّةَ وَاَعُوذُ بِاللهِ مِنَ النَّارِ

मै अल्लाह से जन्नत माँगता हूँ और जहन्नम से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ।

मोतबर सनद के साथ इमाम सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के अगर मोमिन एक दिन मे चालीस गुन्हाए कबीरा करे फिर मज़म्मत और पशेमानी के साथ ये इसतेग़फ़ार पढ़े तो ख़ुदा उस के गुनाहों को बख़्श देगा।

اَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ بَدِیْعُ السَّمَاوَاتِ وَ

मै अल्लाह से मग़ाफ़िरत मांगता हूँ जिसके अलावा कोई माबूद नही है वो ज़िन्दा व पाईंदा है आसमानों और

الْاَرْضِ ذُو الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ وَاَسْاَلُهُ اَنْ یَتُوبَ عَلَیَّ

ज़मीन का पैदा करने वाला है। जलालत व इक्राम वाला है और मै उस से चहता हूँ के वो मुझे माफ़ करदे।

मोतबर सनद से आँहजरत से रिवायत की है के जो शख़्स रोज़ाना सात मरतबा पढ़े, उसने पिछले और अगले की नेमतां का शुक्र अदा किया है:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی كُلِّ نِعْمَةٍ كَانَتْ اَوْ هِیَ كَائِنَةٌ

सारी तारिफ़ अल्लाह के लिए सारी नेमतों के लिए जो थीं और जो हैं।

मोतबर सनद से आँहजरत से रिवायत है के जो शख़्स रोज़ाना पच्चीस मरतबा पढ़े तो ख़ुदा वन्दे आलम हर गुदश्ता और आईनदा मोमिनीान के अदद के बराबर रोज़े क़यामत तक नेकी उस के नामए आमाल मे लिखेगा और उसी अदद के बराबर उस के गुन्हा ख़त्म करेगा और जन्नत मे दरजा बुलंद करेगा।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ

ऐ अल्लाह मोमिनीन व मोमिनात व वल मुस्लेमीन वल मुस्लेमात को बख़्श दे।

नेज मोतबर सनद से आँहजरत से रिवायत की है के जो शख़्स रोज़ाना सौ मरतबा ये पढ़े तो ख़ुदा उस से सत्तर क़िस्म की बलाएं दूर करेगा जिस मे सब से कमतर ग़म व अलम होगी:

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

कोई ताक़ात व क़ुव्वत नही सिवाय अल्लाह के।

दूसरी रिवायत के मुताबिक़ हरगिज़ परेशान न होगा और कुलैनी, शेख़ तूसी और दूसरों ने हसन व मोतबर सनदों के साथ हज़रत सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के हज़रत रसूले ख़ुदा (स) राज़ाना सत्तर मरतबा पढ़ते थे:

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ اَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ

मै अल्लाह से मग़ाफ़िरत मांगता हूँ और उस से तौबा करता हूँ।

कशफ़ुल गुम्मह और अमाली शेख तूसी मे मोतबर सनद से रिवायत हुई है के हज़रत रसूल (स) ने फ़रमाया है के जो शख़्स रोज़ाना सौ मरतबा कहे तो वो अमान पाएगा, फ़क़ीरी वहशते क़ब्र से और मालदारी हासिल होगी और बेहिश्त के दर उस पर खोल दिए जाएगें

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही जो बादशाह नुमायाँ सच है।

???

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही जो नुमायाँ सच है।

अमाली मे है और सवाबुल अमाल व मजालिसे बरकी मे तीस मरतबा रिवायत की है।
क़ुतुब रावन्दी ने अपनी दअवात मे रिवायत की है इमाम रजा (अ.स.) से के हज़रत रसूले खुदा (स) ने फ़रमाया के जो शख़्स ये चाहता है के उस की तारिफ़ मल्लए आला मे मोजाहेदीन से ज़्यादा हो तो उसे राज़ाना ये दुआ पढ़ना चाहिए अगर हाजत होगी पूरी होगी और अगर कोई दुश्मन होगा तो उस पर ग़ालिब होगा और अगर कर्ज़ रखता होगा तो अदा हो जाएगा और अगर ग़म व अलम रखता होगा दूर होगा और ये दुआ सात आसमान से ऊपर जाएगी यहाँ तक के लौहे महफ़ूज़ मे उस के लिए लिखी जाएगी: दुआ ये है:

سُبْحَانَ اللهِ كَمَا يَنْبَغِي لِلّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَمَا يَنْبَغِي لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ

अल्लाह की तस्बीह उस ही तरह जिसका सज़ावार है उसकी हम्द उस ही शान से जो उसके लाएक़

كَمَا يَنْبَغِي لِلّٰهِ وَاللهُ اَكْبَرُ كَمَا يَنْبَغِي لِلّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ

है। उसकी वहदानियत का इक़रार उस ही तरह है जिस तरह सज़ावार है। उसके अलावा किसी के

وَصَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ وَعَلٰى اَهْلِ بَيْتِهِ وَجَمِيعِ الْمُرْسَلِيْنَ

पास कोई ताक़त नहीं है। अल्लाह मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़िल

وَالنَّبِيِّيْنَ حَتّٰى يَرْضَى اللهُ

करे और तमाम मुरसलीन व अंबिया पर रहमत नाज़ल करे यहाँ तक के अल्लाह राज़ी हो जाए।

मोतबर सनद से हज़रत इमाम अली रजा (अ.स.) से मनक़ूल है के असहाबे रसूल मे से एक आदमी ने ख़त पाया और उसे आँहजरत (स) की ख़िदमत मे लाया तो आप ने तमाम असहाब को जमा करने का हुक्म दिया लोगों के जमा होने के बाद बिसतर पर तशरीफ लाए और फ़रमाया के ये वो ख़त है जिसे यूशा बिन नून, वसीए जनाबे मूसा ने लिखा है और ख़त का मज़मून ये था: तुम्हारा परवरदिगार तुम से मोहब्बत करता है और तुम पर महेरबान है, बेहतरीन बन्दा गुमनाम मुत्तक़ी है और बदतरीन मख़लुक़ वो है जो लोगों के दरमियान रियासत व हुकूमत चाहने वाला मशहूर हो। पस जो शख़्स चाहता हो के उसे सवाब दिया जाए और नेमतों का शुक्र अदा करने वाला बने उसे राज़ाना यह दुआ पढ़नी चाहिए:

سُبْحَانَ اللهِ كَمَا يَنْبَغِي لِلّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَمَا يَنْبَغِي لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ

अल्लाह तआला पाक है जैसे अल्लाह के लिए होना चाहिए है। और सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जैसे

كَمَا يَنْبَغِي لِلّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ وَصَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَاَهْلِ

अल्लाह के लिए होना चाहिए है। और नही है कोई माबूग सिवा अल्लाह के जैसे अल्लाह के लिए होना चाहिए

بَيْتِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى جَمِيعِ الْمُرْسَلِيْنَ وَالنَّبِيِّيْنَ حَتّٰى يَرْضَى

है। और नही है कोई ताक़त व क़ुव्वत सिवा अल्लाह के और अल्लाह रहमत नाज़ल करे मुहम्मद और

اللهُ

नबिय्ये उम्मी के अहले बैत पर और सब मुरसलीन व नबीय्यों पर यहाँ तक के अल्लाह राज़ी हो।

बलदुल अमीन मे हज़रत रसूले ख़ुदा से रिवायत की है के जो शख़्स रोज़ाना दस मरतबा पढ़े ख़ुदा वन्दे आलम उस के सब गुनाह माफ़ करेगा जैसे वो उस दिन पैदा हुआ हो। और ख़ुदा उस से सत्तर बीमारियाँ दूर करेगा, जैसे पागलपन, कोढ़ और फ़ालिज और सत्तर मलाएका उसके लिए दुआ करेंगे:

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيمِ لَا حَوۡلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الۡعَلِيِّ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है। कोई ताक़ात व क़ुव्वत नही सिवाय

الۡعَظِيمِ

अल्लाहे बुज़ुर्ग व बाला के।

बलदुल अमीन मे हज़रत रसूले ख़ुदा से रिवायत की है के जो शख़्स रोज़ाना सौ मरतबा पढ़े ख़ुदा वन्दे आलम उस से ग़रीबी दूर करेगा:

لَا حَوۡلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

कोई ताकात व कुव्वत नही सिवाय अल्लाहे के।

जो शख़्स रोज़ाना सौ मरतबा पढ़े ख़ुदा वन्दे आलम उस के जिसम को जहन्नम की आग पर हराम करेगा:

سُبۡحَانَ اللّٰهِ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكۡبَرُ

अल्लाह तआला पाक है व सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है व नही है कोई माबूद सिवाए अल्लाह के व अल्लाह सबसे बड़ा है।

बलदुल अमीन मे हज़रत रसूले ख़ुदा (स) से रिवायत है के जो शख़्स रोज़ाना दस मरतबा ये दुआ पढ़े ख़ुदा वन्दे आलम उस के चार हज़ार गुन्हाए कबीरा को बख़्श देगा और उसको सकराते मौत, फिशारे क़ब्र और एक लाख क़यामत

के ख़ौफ से नजात देगा और शैतान के शर से और उस के लश्कर से महफ़ूज़ करेगा और उसका क़र्ज़ अदा होगा और उसका ग़म व अलम ज़ाएल होगा।

اَعْدَدْتُ لِكُلِّ هَوْلٍ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلِكُلِّ هَمٍّ وَغَمٍّ مَا شَاءَ اللّٰهُ

मैं ने हर मुसीबत के लिए ला इला-ह इल्लल्लाहो को मोअय्यन किया है और हर हम व ग़म के लिए माशा अल्लाह

وَلِكُلِّ نِعْمَةٍ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلِكُلِّ رَخَاءٍ اَلشُّكْرُ لِلّٰهِ وَلِكُلِّ اُعْجُوبَةٍ سُبْحَانَ

का इन्तेज़ाम किया है। हर नेमत पर अलहम्दो लिल्लाह है और हर सहूलत पर शुक्र ए ख़ुदा है। हर अजीब चीज़

اللّٰهِ وَلِكُلِّ ذَنْبٍ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَلِكُلِّ مُصِيبَةٍ اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ

पर सुबहान अल्लाह कहता हूँ और हर गुनाह पर इस्तिग़फ़ार करता हूँ। हर मुसीबत में इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे

رَاجِعُونَ وَلِكُلِّ ضِيقٍ حَسْبِيَ اللّٰهُ وَلِكُلِّ قَضَاءٍ وَقَدَرٍ تَوَكَّلْتُ عَلَى

राजेऊन कहता हूँ, हर तंगी में हस्बि अल्लाहो और हर क़ज़ा न कद्र में मेरा एतेमाद अल्लाह पर है। हर दुश्मन के

اللّٰهِ وَلِكُلِّ عَدُوٍّ اعْتَصَمْتُ بِاللّٰهِ وَلِكُلِّ طَاعَةٍ وَمَعْصِيَةٍ لَا حَوْلَ وَلَا

मुक़ाबले में अल्लाह से वाब्सता हूँ और हर इताअत या मासीयत के मौक़े पर ये क़रार रखता हूँ के सारी ताक़त व

قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

क़ुव्वत परवरदिगार में है। वो ही इताअत की ताक़त देता है और वो ही मासियत से बचाता है।

कुलैनी, इब्ने बाबूया और बरक़ी ने मोतबर सनदों से हज़रत सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के जो शख़्स राज़ाना दस मरतबा ये दुआ पढ़े ख़ुदा वन्दे आलम पैयंतालीस हज़ार नेकियाँ लिखेगा और पैयंतालीस हज़ार दरजे बेहिश्त

मे बुलंद करेगा और उसके लिए शैतानो और ज़ालिमो के शर से अमान होगी और गुन्हाए कबीरा उसका अहाता न करेगा और दूसरी रिवायत के अनुसार वो ऐसा होगा जैसे बारह मरतबा क़ुरआन ख़त्म किये हो और ख़ुदा जन्नत मे इस के लिए घर बनाएगा और इब्ने बाबुया की रिवायत मे दस बार है और वो दुआ ये है:

اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ اِلٰهًا وَاحِدًا اَحَدًا صَمَدًا

मै गवाही देता हूँ के नही है कोई माबूद सिवाए अल्लाह के। वो एक है उसका कोई शरीक नही है

لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا

यकता व अकेला ख़ुदा है उसने न तो किसी को अपना साथी न बेटा बनाया है।

सवाबुल आमाल, महासीन और काफ़ी मे हज़रत सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के हज़रत रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) ने फ़रमाया के रोज़ाना पनद्रह मरतबा पढ़े तो ख़ुदा निगाहे रहमत उस से न फेरेगा यहाँ तक के दाख़ले बेहिश्त करेगा:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ حَقًّا حَقًّا لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ اِيمَانًا وَتَصْدِيقًا لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ

कोई माबूद नही अल्लाह के सिवा बेशक बेशक कोई माबूद नही अल्लाह के सिवा ईमान के साथ व

عُبُودِيَّةً وَرِقًّا

उसकी तसदीक़ करते हुए। कोई माबूद नही अल्लाह के सिवा उसकी इबादत और परस्तिश करते।

महासिन मे रसूले ख़ुदा से रिवायत की है के जो रोज़ाना सौ मरतबा सुबहान अल्लाह कहे तो बेहतर होगा काबे के लिए सौ ऊँटो की क़ुरबानी से।

سُبْحَانَ اللهِ

अल्लाह तआला पाक है।

और जो सौ मरतबा कहे तो बेहतर होगा सौ ग़ुलाम आज़ाद करने से।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए।

जो शख़्स सौ मरतबा कहे अल्लाहो अकबर तो बेहतर होगा उस से के सौ घोड़े ज़ीन व लगाम समेत राहे ख़ुदा मे भेजे:

اللهُ اَكْبَرُ

अल्लाह सबसे बड़ा है।

जो शख़्स सौ मरतबा कहे तो किसी का अमल उस से बेहतर न होगा मगर ये के कोई ज़्यादा कहे।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ

कोई माबूद नही अल्लाह के सिवा

क़ुतुब रावन्दी ने रिवायत की है के:
बनी इस्राईल मे एक आबिद था जिस ने सालहा साल ख़ुदा की इबादत की थी एक दिन उसने दुआ की के परवरदिगार मै चाहता हूँ के अपना हाल तेरी नज़र

मे जान लूँ अगर तू ने मेरे अमल को पसंद किया हो तो मै इस से ज़्यादा अमल करूँगा वरना मरने से क़ब्ल तौबा करूँगा ख़ुदा ने एक मलक को उस के पास भेजा और फ़रमाया के ख़ुदा के नज़दीक तुम्हारा कोई अमले ख़ैर नही है। उसने कहा के खुदाया मेरी इबादतें क्या हुईं तो मलक ने कहा के जो भी नेक काम तूम करते थे उसकी खबर दूसरे को देते थे और चाहते थे के लोग तूम को अच्छा समझें और नेकी के साथ याद करें अब तुम्हारा सवाब यही है के ख़ुद अपने अमल पर राज़ी हो। ये बात आबिद के ऊपर बहुत गेराँ गुज़री और उदास हुआ फिर दोबारा मलक आया और कहा के ख़ुदा वन्दे आलम फ़रमाता है के तू अपने को मुझ से ख़रीद ले और हर रोज़ अपनी रगों मो से एक रग सदका मे दे आबिद ने कहा के ये काम मै क्योंकर कर सकता हूँ तो मलक ने कहा के रोज़ाना तीन सौ साठ मरतबा बदन की रगों के अदद के बराबर ये दुआ पढ़े:

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا

अल्लाह तआला पाक है और सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है व नही है कोई माबूद सिवाए अल्लाह

بِاللهِ

के व अल्लाह सबसे बड़ा है। कोई ताक़ात व क़ुव्वत नही सिवाय अल्लाहे बुज़ुर्ग व बाला के।

आबिद ने कहा के ख़ुदा ज़्यादा का हुकूम दे फ़रमाया के अगर ज़्यादा पढ़ोगें तो सवाब ज़्यादा होगा।

कुलैनी ने मोतबर सनद से इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से रिवायत की है के हज़रत रसूले ख़ुदा राज़ाना तीन सौ साठ मरतबा बदन की रगों के अदद के बराबर पढ़ते थे:

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ كَثِيْرًا عَلٰى كُلِّ حَالٍ

हर साल मे कसरत से सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए जो काएनात का रब है।

दूसरी रिवायत मे आँहज़रत से मनक़ूल है के जो शख़्स दो माह मुसलसल रोज़ाना चार सौ मरतबा ये दुआ पढ़े तो ख़ुदा उसे ज़्यादा इल्म या ज़्यादा माल अता फ़रमाएगा। दुआ ये है:

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ

मैं उस ख़ुदा से इस्तेग़फ़ार करता हूँ जिसके अलावा कोई ख़ुदा नहीं। वो ही क़य्यूम है, रहमान

بَدِيْعُ السَّمَاوَاتِ وَ الْاَرْضِ مِنْ جَمِيْعِ ظُلْمِىْ وَجُرْمِىْ وَاِسْرَافِىْ عَلٰى

व रहीम है ज़मीन व आसमान का इजाद करनेवाला है और मेरा इस्तेग़फ़ार हर जुर्म और अपने

نَفْسِىْ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ

नफ़्स पर ज़्यादती के मुक़ाबले में है और ख़ुदा की बारगाह में तौबा करता हूँ।

शेख़ तूसी और दूसरों ने रिवायत की है रोज़ाना इस दुआ का पढ़ना सून्नत है:

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الْمُشْرِقِ الْحَىِّ الْبَاقِى الْكَرِيْمِ

ख़ुदाया मैं तुझ से सवाल करता हूँ तेरे चेहरे के नूर के तुफ़ैल में, दुनिया को रौशन करनेवाला,

وَاَسْاَلُكَ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الْقُدُّوْسِ الَّذِىْ اَشْرَقَتْ بِهٖ

ज़िंदा बाक़ी रहनेवाला और करीम है। मैं तेरे उस नूरे अक़दस के वास्ते से सवाल करता हूँ जो

السَّمَاوَاتُ وَانْكَشَفَتْ بِهِ الظُّلُمَاتُ وَصَلُحَ عَلَيْهِ اَمْرُ

पाक व पाकीज़ा है और जिस से ज़मीन व आसमान रौशन हुए, अंधेरे दूर हुए और अव्वलीन

الاَوَّلِيْنَ وَالآخِرِيْنَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَاَنْ تُصْلِحَ لِي

व आख़ेरीन के अम्र की सलाह हुई। मेरा सवाल है के मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद

شَانِيْ كُلَّهُ

(अ.स.) पर रहमत नाज़ल फर्मा। मेरे तमाम हलात की इसलाह फर्मा।

कफ़मी ने हज़रत इमाम मोहम्मद बाकिर (अ.स.) से रिवायत की है के जो शख़्स रोज़ाना ये दुआ पढ़े तो ख़ुदा वन्दे आलम उस के उमूरेदीन व दुनिया के लिए किफ़ालत करेगा।

بِسْمِ اللهِ حَسْبِيَ اللهُ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ خَيْرَ اُمُوْرِيْ

अल्लाह के नाम से। वो ही हमारे लिए काफ़ी है और उस ही पर हमारा भरोसा है। ख़ुदाया हमारा सवाल बेहतरीन

كُلِّهَا وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ خِزْيِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الآخِرَةِ

उमूर के बारे में है और हम तेरी पनाह चाहते हैं, दुनीया की ज़िल्लत और आाख़िरत के अज़ाब से।

रिवायत है के जो शख़्स रोज़ाना इस दुआ को सात मरतबा पढ़े तो उस के दुनिया और आाख़िरत के उमूर के लिए किफ़ालत करेगी:

حَسْبِيَ اللهُ رَبِّيَ اللهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ

मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है अल्लाह मेरा रब है उसके अलावा कोई माबूद नही उसी पर मै भरोसा

रिवायत है के जो शख़्स पूरे साल मे रोज़ाना एक मरतबा ये दुआ पढ़ेगा तो उसे मौत नही आएगी मगर ये के वो अपना मक़ाम बहिश्त मे देख लेगा।

الْعَظِيمِ

करता हूँ और वो बुज़ुर्ग अर्श का रब है।

سُبْحَانَ الدَّائِمِ الْقَائِمِ سُبْحَانَ الْقَائِمِ الدَّائِمِ سُبْحَانَ الْوَاحِدِ

बेनियाज़ है वो ख़ुदा जो दाएम भी है और क़ाएम भी है, क़ाएम भी है और दाएम भी है। वो वाहिद

الْاَحَدِ سُبْحَانَ الْفَرْدِ الصَّمَدِ سُبْحَانَ الْحَيِّ الْقَيُّوْمِ سُبْحَانَ اللّٰهِ

है अहद व ऐक्ता है। वो अकेला है, बेनियाज़ है। हई है क़य्युम है। उस ही की तस्बीह और उस

وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ الْحَيِّ الَّذِیْ لَا يَمُوتُ سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ

ही की हम्द बेपनाह है। वो ख़ुदा जो ज़िंदा है उसके लिए मौत नहीं है। बेनियाज़ है। वो ख़ुदा जो

سُبْحَانَ رَبِّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوْحِ سُبْحَانَ الْعَلِيِّ الْاَعْلٰى سُبْحَانَهُ

बादशाह है, पाकीज़ा सिफ़ात है। मलायका और रूहुल आलमीन का परवरदिगार है। बुलंद व

وَتَعَالٰى

बाला है, बेनियाज़ और बुज़ुर्ग है।

भाग-२

अमुख मुसतहब्बी नमाजें

मुसतहब नमाज़ो के ज़िक्र मे जो मफ़ातेहुल जिनान मे जिक्र नही हुई हैं:

नमाज़े एराबी

सैय्यद बिन ताऊस ने जमालुल उसबू मे शेख तलकबरी से नक्ल किया है उन्होने ज़ैद बिन साबित से रिवायत की है के:
देहात का रहने वाला एक शख़्स हज़रत रसूले खुदा (स.अ.व.व.) की ख़िदमत मे आया और कहा:
ऐ रसूले खुदा मेरे माँ बाप आप पर क़ूर्बान हो जाएँ हम गाँव मे रहते हैं और मदीने से दूर हैं और हर जुमअ को नमाज़े जुमअ मे हाज़र नही हो सकते तो हम को ऐसे अमल की जानिब रहनूमाई फ़रमाईए के हम उसे बजा लाएँ तो नमाज़े जुमअ की फ़ज़ीलत हासिल हो जाए और जब घर और क़बीले वालों के पास वापस हों तो उनको भी बताएँ हज़रत ने फ़रमाया:
जब दिन बुलंद हो जाए तो दो रकत नमाज़ पढ़ो पहली रकत मे हम्द के बाद सात मरतबा कुल अवूज़ो बे रब्बिल फ़लक़ और दूसरी रकत मे हम्द के बाद सात मरतबा कुल अवूज़ो बे रब्बिन नास पढ़ो और सलाम के बाद सात मरतबा आयतल कुर्सा पढ़ो, फिर खडे हो कर दूसरी आठ रकत पढ़ो दो सलाम के साथ और हर दो रकत मे बाद तशहुद पढ़ो और सलाम न पढ़ो और जब चार रकत कर लो तो सलाम पढ़ो और दूसरी रकत भी इसी तरह बजा लाओ और हर रकत मे ह़म्द एक मरतबा और इज़ा जआ नसरूल्लाह एक मरतबा और क़ुलहो अल्लाह पच्चीस मरतबा और जब तशहुद व सलाम से फ़ारिग हो जाए तो सात बार ये दुआ पढ़े:

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ يَا إِلٰهَ الْأَوَّلِيْنَ

ऐ ख़ुदा जो जिंदा है और सब उस ही से क़ायम हैं। ऐ साहिबे जलाल व कराम ऐ अव्वलीन व

وَالْآخِرِيْنَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا رَحْمٰنَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ

आाख़िरीन के माबूद, सब से ज़्यादा रहम करनेवाले, ऐ दुनिया व आख़िरत के रहमान व रहीम

وَرَحِيْمَهُمَا يَا رَبِّ يَا رَبِّ يَا رَبِّ يَا رَبِّ يَا رَبِّ يَا رَبِّ يَا رَبِّ يَا

ऐ परवरदिगार, ऐ परवरदिगार, ऐ परवरदिगार, ऐ परवरदिगार, ऐ परवरदिगार, ऐ परवरदिगार, ऐ

اللّٰهُ يَا اللّٰهُ يَا اللّٰهُ يَا اللّٰهُ يَا اللّٰهُ يَا اللّٰهُ يَا اللّٰهُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ

परवरदिगार, ऐ अल्लाह, ऐ अल्लाह, ऐ अल्लाह, ऐ अल्लाह, ऐ अल्लाह, ऐ अल्लाह, ऐ अल्लाह, मुहम्मद

مُحَمَّدٍ وَاغْفِرْ لِي...

(स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और मुझे माफ़ करदे।

हाजत ज़िक्र करे और सत्तर मरतबा पढ़े:

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

कोई ताक़त और कोई क़ुव्वत अल्लाह के बग़ैर नहीं है।

फिर कहे:

سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ

पाक है अल्लाह जो करम वाले अर्श का रब है।

पस हज़रत (स.अ.व.व.) ने फ़रमाया क़सम है उस ख़ुदा की जिस ने मुझको हक़ के साथ भेजा है जो शख़्स मोमिन व मोमिना इस नमाज़ को पढ़ेगा रोज़े जुमअ तो मै ज़ामिन हूँ के उस के लिए जन्नत का और अपनी जगह से नही उठेगा मगर ये के उस के और उसके वालेदैन के गुनाह बख़्श दिए जाएंगे और ख़ुदा उसको सवाब अता करेगा हर उस शख़्स का जिस ने उस दिन नमाज़ पढ़ी होगी मुसलमान के शहरों मे और उस के लिए अज्र लिखेगा उस शख़्स का जिस ने राज़ा रखा नमाज़ पढ़ी उस दिन दुनिया के मशरिक व मग़रिब मे और ख़ुदा उस को वो सवाब अता करेगा जिसे किसी निगाह ने देखा न होगा और किसी कान ने सूना न होगा।
लेखक कहता है के शेख़ तूसी (र.अ.) ने मिसबाह मे भी इस नमाज़ का ज़िक्र किया है लेकिन उनकी रिवायत मे दुआ नही है बल्कि फ़रमाया है के जब फ़ारिग हो जाए तो सत्तर बार ये दुआ पढ़े:

سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ

पाक है अल्लाह जो करम वाले अर्श का रब है और कोई ताक़ात व क़ुव्वत नही सिवाय

الْعَظِيمِ

अल्लाह के।

नमाज़े हदया

मासूमीन (अ.स.) से रिवायत हूई है के जो शख़्स जुमअ को आठ रकत नमाज़

पढ़े यानी हर दो रकत के बाद सलाम पढ़े और इसमे से चार रकत जनाबे रसूले ख़ुदा को हदया करे और दूसरी चार रकत को जनाबे फ़ातिमा ज़हरा (स.अ.) को हदया करे और शंबे के राज़ चार रकत नमाज़ पढ़े और जनाबे अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) को हदया करे और इसी तरह हफ़ते के हर रोज़ चार रकत नमाज़ पढ़े और इमाम को हदया करे तरतीब के साथ यहाँ तक के रोजे पंजशम्बा चार रकत नमाज़ पढ़े और इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) को हदया करे और फिर रोजे जुमअ आठ रकत नमाज़ पढ़े चार रकत को रसूले खुदा को हदया और दूसरी चार रकत को जनाबे फ़ातिमा ज़हरा (स.अ.) को हदया करे और शंबे के रोज़ चार रकत नमाज़ इमाम मूसा (अ.स.) को हदया करे और इसी तरह रोज़ाना चार रकत नमाज़ पढ़े और इमाम को तरतीब वार हदया करे यहाँ तक के रोज़े पंजशंबा चार रकत नमाज़े इमामे अñा (अ.स.) को हदया करे और दो रकतों के दरमियान मे यानी हर दो रकत के बाद ये दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلاَمُ وَمِنْكَ السَّلاَمُ وَاِلَيْكَ يَعُودُ السَّلاَمُ حَيِّنَا

ख़ुदाया तू सलाम है और सलामती है और इसकी बाज़गश्त भी तेरी तरफ़ से है। ख़ुदाया मुझे

رَبَّنَا مِنْكَ بِالسَّلاَمِ اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذِهِ الرَّكَعَاتِ هَدِيَّةٌ مِنَّا اِلٰى

सलामती के साथ ज़िंदा रख। ये चंद रकतें हैं तेरी वली की बारगाह में तू मुहम्मद (स.अ.व.व.) व

وَلِيِّكَ...

आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा

और फुलाँ की जगह उस इमाम का नाम लें के नमाज़ को उन के लिए बजा लाया है।

فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَبَلِّغْهُ اِيَّاهَا وَاَعْطِنِى اَفْضَلَ اَمَلِى وَرَجَائِى

और इन रकतों को उनकी बारगाह तक पहुँचादे और मुझे वो कुछ इनायत फ़र्मा जो मेरी उम्मीद

فِيكَ وَفِى رَسُولِكَ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَآلِهِ

और मेरी ख़्वाहिश तेरे और तेरे रसूल के बारे में है।

पस जो दुआ चाहे करे।

दफ़्न की रात की नमाज़

दो रकत है पहली रकत मे हम्द और आयतल कुर्सा और दूसरी रकत मे हम्द और दस बार इन्ना अनज़लना और जब सलाम पढ़े तो कहे: और फ़ुलाँ की जगह मैय्यत का नाम ले।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَابْعَثْ ثَوَابَهَا اِلٰى قَبْرِ...

ख़ुदाया मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल कर। और इस नमाज़ का सवाब फ़ुलाँ को भेज...

दफ़्न की रात की एक और नमाज़

सैय्यद बिन ताउस ने हज़रत रसूल अल्लाह (स.अ.व.व.) से रिवायत की है उन्होने फ़रमाया के मय्यत पर पहली रात से ज़्यादा सख़्त कोई घड़ी नही गुज़रती अपने मुर्दों पर रहेम करो व सदक़े के ज़ारिए और अगर सदक़े वाली कोई चीज़ न पाओ तो तुम मे से कोई दो रकत नमाज़ पढ़े और पहली रकत मे हम्द एक मरतबा और क़ुल हो अल्लाह दो मरतबा और दूसरी रकत मे हम्द एक बार और सूरह तकासुर दस बार और सलाम और कहे:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَابْعَثْ ثَوَابَهَا اِلٰى قَبْرِ ذٰلِكَ

ख़ुदाया मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल कर। और इस नमाज़ का सवाब फ़ुलाँ

الْمَيِّتِ...

मय्यत को भेज...

तो ख़ुदा वन्दे आलम इस घड़ी हज़ार मलक को उस मय्यत की क़ब्र की जानिब भेजेगा हर मलक के हाथ मे जामए हुल्ला होगा और तंगी कब्र से वुसअत का परवाना देगा सूर फूंके जाने के समय तक के लिए और अता करेगा उन नमाज़ गुजार लागों के अदद के बराबर जिन पर सूरज तुलू हो नेकियों को और उसके चालीस दरजे बुलंद किए जाएगें:

नमाजे हदया मय्य्त

कफ़मी (र.अ.) ने भी इस नमाज़ को इसी कैफ़ियत के साथ नक़्ल किया है इस के बाद फ़रमाया बाज किताबां मे देखा है के पहली रकत मे हम्द के बाद आयतल कुर्सा और तौहीद दस मरतबा पढ़े।

अल्लामा मजलिसी (र.अ.) ने ज़ादुल माद मे कहा है के मुरदां को फ़रामोश नही करना चाहिए क्योंके उन के हाथ आमाल से कोताह को गए और वो औलाद, आइज़्ज़ा और बिरादराने ईमानी की जानिब से उम्मीदवार हैं और उन के एहसान के लिए चश्म बराह हैं खास तौर पर नमाजे शब मे दुआ करना और वाजिब नमाज़ के बाद दुआ करना और मशाहिदे मुशरफ़ा मे माँ बाप के लिए दुसरो से ज़्यादा दुआ करे और उन के लिए अमले ख़ैर बजा लाए।

हदीस मे आया है के बहुत से ऐसे फ़रज़न्द हैं जो माँ बाप की ।ज़िन्दगी मे आक़ हो जाते हैं और उन के मरने के बाद नेकूकार हो जाते हैं उन आमाले ख़ैर की वज्ह से जो वे उन के लिए करते हैं और बहुत से फ़रज़न्द माँ बाप की ज़िन्दगी मे नेकूकार रहते हैं लेकिन उनके मरने के बाद आक हो जाते हैं इस वज्ह से के जो आमाले ख़ैर उनको बजा लाना चाहिए थे वो कम बजा

लाऐ और माँ बाप और तमाम अइज़्ज़ा के लिए बेहतरीन ख़ैरात ये है के उनके कर्ज़ को अदा कर दे और उनको ख़ुदा और बन्दे के हुक़ूक़ से बरी कर दे और हज और तमाम दूसरी इबादतें जो उनसे फ़ोत हो गई हों वो इजारे पर या बेग़ैर इजारे पूरी करादें।

हदीसे सहीह मे मनक़ूल है के हज़रत सादिक़ (अ.स.) हर रात अपने फ़रज़न्द के लिए और हर राज़ अपने वालेदैन के लिए दो रकत नमाज़ पढ़ते थे पहली रकत मे इन्ना अनज़लना और दूसरी रकत मे इन्ना आतैयना पढ़ते थे।

सहीह सनद के साथ इमाम सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के अकसर ऐसा होता है के मय्यत तनगी और सख़्ती मे होती है ख़ुदा उसको वुसअत देता है और उसकी तंगी को दूर करता है तो उस से कहते हैं के ये कूशादगी जो तुझे मिली है इस नमाज़ की वजह से है जो फ़ुलाँ बरादरे मोमिन ने तेरे लिए पढ़ी है रावी ने पूछा के दो तनों को दो रकअत मे शरीक कर सकते है फ़रमाया हाँ।

फिर फ़रमाया के मय्यत ख़ुश होती है और कूशादगी पाती है इस दुआ और इसतिग़फ़ार से जो इस के लिए किया जाए जैसे के ज़िन्दा ख़ुश होता है इस हदया से जो उसे दिया जाए।

फ़रमाया के मय्यत कब्र मे नमाज, रोजा, हज व सदका और तमाम आमाले ख़ैर और दुआ दाख़िल होता है और उन आमाल का सवाब करने वाले और मुरद। दोनो को मिलता है।

दूसरी हदीस मे फ़रमाया जो कोई मुसलमान मय्यत के लिए अमले सालेह करे ख़ुदा उस के सवाब को कई गुन्ह करता है और मय्यत को इस अमल का फ़ाएदा मिलता है।

रिवायत मे वारिद हुआ है के अगर कोई शख़्स मय्यत की नियत से सदका दे तो खुदा जिब्रईल को हुक्म देता है के सत्तर हज़ार मलाएका के साथ उसकी कबर के पास जाए हर मलक के हाथ मे एक तबक़ रहता है जिस मे नेमते इलाही होती है और हर एक इस से सलामो अलैकूम कहता है। ऐ खुदा के दोस्त ये फ़ुलाँ मोमिन का हदया है तेरे लिए पस उसकी कब्र रौशन होती है और ख़ुदा हज़ार शहर बेहिश्त मे उसे अता करता है और हज़ार हूरों से शादी करता है और हज़ार हुल्ले पिनहाता है, उसकी हज़ार हाजतें पूरी करता है।

नमाज़ बराए वालेदैन

ये नमाज़ दो रकत है। पहली रकत मे सुरह फ़ातेहा और दस मरतबा:

رَبِّ اغْفِرْ لِی وَلِوَالِدَیَّ وَلِلْمُؤْمِنِینَ یَوْمَ یَقُومُ الْحِسَابُ

ऐ मेरे मालिक मुझे माफ करदे और मेरे माता पिता को और मोमिनीन को जिस दिन हिसाब लिया जाए।

दुसरी रकत मे फ़ातेहा और दस मरतबा:

رَبِّ اغْفِرْ لِی وَلِوَالِدَیَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَیْتِیَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِینَ

ऐ मेरे मालिक मुझे माफ़ करदे और मेरे माता पिता को और जो मेरे घर मे दाख़िल हो ईमान के

وَالْمُؤْمِنَاتِ

साथ और मोअ्मेनी-न व मोअ्मेनात को।

और सलाम के बाद दस मरतबा:

رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّیَانِی صَغِیرًا

मेरे रब उनपर रहम कर जिस तरह उनहों ने बचपन मे मेरी परवरिश की

नमाज़े गुरसनह (भूके की नमाज़)

इमाम सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के जो शख़्स भूका हो वज़ू करे और दो रकत नमाज़ पढ़े और ये पढ़े:

يَا رَبِّ اِنِّي جَائِعٌ فَاَطْعِمْنِي

ऐ मेरे रब मै भूका हूँ तो मुझे खाना खिला दे।

एक और रिवायत के अनुसार, दुआ ये है:

رَبِّ اَطْعِمْنِي فَاِنِّي جَائِعٌ

ऐ मेरे रब मुझे खाना खिला दे मै भूका हूँ।

पस ख़ुदा उसको उसी समय खाना अता करेगा:

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

कोई ताक़ात व क़ुव्वत नही सिवाय अल्लाह के।

नमाज़े हदीस नफ़्स

इमाम सादिक़ (अ.स.) से रिवायत है के किसी मोमीन पर चालीस दिन नही गुज़रते मगर उसको वसवसे आते हैं और जब भी उसे ये आरिज़ हें तो दो रकत नमाज़ पढ़नी चाहिए और उसके ज़ारिए अल्लाह की पनहा लेनी चाहिए। नेज हज़रत से मनकूल है के हज़रत आदम (अ.स.) ने अल्लाह ताला से वसवसे की शिकायत की पस जिब्रईल नाज़ल हुए और फ़रमाया के कहो:
हज़रत आदम (अ.स.) ने ज़िक्र किया तो उन से हदीसे नफ़्स बरतरफ़ हो गई। फिर हज़रत बाक़र ने फ़रमाया के एक शख़्स हज़रत रसूले खुदा की ।ख़िदमत मे आया और उन से शिकायत की वसवसे हदीसे नफ़्स की और उस कर्ज़ो की जो उस के लिए भारी था और कफिरों की तो हज़रत रसूल (स.अ.व.व.) ने

उस से फ़रमाया के ये पढ़ो और उसको मुकर्रर पढ़ो:

تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا

मेरा एतेमाद उस ख़ुदाए ज़िंदा पर है जिस के लिए मौत नहीं। सारी हम्द उस अल्लाह के लिए है जिस

وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ وَلِيٌّ مِنَ الذُّلِّ وَ كَبِّرْهُ

ने किसी को ना बेटा बनाया ना उसके मुल्क में कोई शरीक है और ना कोई उसकी कमज़ोरी का

تَكْبِيرًا

वली है। सारी किब्रयाई उस ही के लिए है।

तो बहुत थोडा ज़माना गुज़रा था के वो शख़्स आया और कहा या रसूल अल्लाह ख़ुदा वन्दे आलम ने मेरा वसवसा ख़त्म कर दिया मेरा कर्ज़ा अदा कर दिया और मुझको फ़कीरी से निकाल कर मालदार कर दिया।
दूसरी रिवायत मे है के शैतान के वसवसे को दूर करने के लिए पढ़ो:

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

वो पहला है और आख़िर है और ज़ाहिर है व बातिन है और हर चा०rज का जानने वाला है।

इमाम सादिक़ ने फ़रमाया के तुम्हारे सीने मे शक पैदा हो, और दफा ए वसवसे शैतान के लिए हाथ अपने सीने पर रखे और पढ़े:

بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ

अल्लाह के नाम से अल्लाह के सहारे से। मुहम्मद (स) अल्लाह के रसूल हैं और कोई ताक़त ख़ुदा ए बुज़ुर्ग

الْعَظِيمِ اَللّٰهُمَّ امْسَحْ عَنِّي مَا اَحْذَرُ

व बरतर के बग़ैर नहीं है। ख़ुदाया मुझ से हर उस चीज़ को दूर कर देना जिसका मुझे शक है।

इस के बाद हाथ अपने शिकम पर फेरे और तीन मरतबा इसको पढ़े इनशा अल्लाह दूर हो जाएगा।
वसवसे को दूर करने के लिए मुफीद है सरका बेरी से धोना, मिसवाक करना और अनार खाना और आबे निसयाँ का पीना और हर माह मे तीन रोज़े: पहला और आख़री गुरूवार और दरमियान का बुद्धवार और ये दुआ पढ़े:

اَعُوذُ بِاللّٰهِ الْقَوِيِّ مِنَ الشَّيْطَانِ الْغَوِيِّ وَاَعُوذُ بِمُحَمَّدٍ الرَّضِيِّ مِنْ

मैं ख़ुदा ए क़वी की पनाह चाहता हूँ शैतान ए गुमराह से और हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (स) की पनाह

شَرِّ مَا قُدِّرَ وَقُضِيَ وَاَعُوذُ بِاِلٰهِ النَّاسِ مِنْ شَرِّ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

चाहता हूँ क़ज़ा व क़द्र के शर से। मैं कायनात के परवरदिगार की पनाह चाहता हूँ तमाम इन्सान व जिन्नात

اَجْمَعِينَ

के शर से।

चिठ्ठी के इस्तेख़ारे की नमाज़

और इस का तरीक़ा ये है के जब किसी मामले का इरादा करे तो छः कागज़

के टुकडे ले और उस मे से तीन टुकड़ों पर लिखे:
بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيمِ خِيرَةٌ مِنَ اللّٰهِ الۡعَزِيزِ الۡحَكِيمِ لِـ... اِفۡعَلۡ
और तीन टुकड़ों पर लिख:
بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيمِ خِيرَةٌ مِنَ اللّٰهِ الۡعَزِيزِ الۡحَكِيمِ لِـ... لَا تَفۡعَلۡ
चिठ्ठीयों को मुसल्ले के नीचे रखे और दो रकत नमाज़ पढ़े और जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो सजदा करे और सौ मरतबा सजदे मे कहे:

أَسۡتَخِيرُ اللّٰهَ بِرَحۡمَتِهِ خِيرَةً فِي عَافِيَةٍ

मै अल्लाह की रहमत से राय मांगता हूँ जिससे मुझे ख़ैरियत हासिल हो।

फिर बैठे और कहे:

اَللّٰهُمَّ خِرۡ لِي وَاخۡتَرۡ لِي فِي جَمِيعِ أُمُورِي فِي يُسۡرٍ مِنۡكَ وَعَافِيَةٍ

ऐ अल्लाह मुझे रास्ता बता और हर मामले मे मेरे लिए रास्ता चुन आसानी और ख़ैरियत से।

फिर परचों को हाथ मे ले कर एक दुसरे मे मिला दे और एक एक कर के उठाए तो अगर तीन इफ़अल मुसलसल निकलें तो उस काम को बजा लाए जिस का इरादा किया है और अगर तीन ला तफ़अल निकलें तो उस को न बजा लाए जिस की नियत है और अगर एक इफ़अल निकले और दूसरा ला तफ़अल तो पाँच टुकड़े निकाले और उन मे देखे अगर तीन इफ़अल हैं और दो ला तफ़अल तो उसको बजा लाए और उस के बरअक्स है तो न बजा लाए।

इस्तेख़ारा

इस्तेख़ारा के मानी तलबे ख़ैर करना है लेहाज़ा जिस काम को करना चाहिए तो उस के ख़ैर को ख़ुदा से तलब करे और रिवायत मे है के नमाज़े शब के आिख़र सजदे मे तलबे ख़ैर करे और एक सौ एक बार पढ़े:

اَسْتَخِيرُ اللّٰهَ بِرَحْمَتِهِ

अल्लाह की रहमत से मै बेहतरी चाहता हूँ।

नाफ़ेला सुबह के आख़री सजदे मे और नाफ़ेला जवाल की हर रकत मे भी इस्तेख़ारा मुसतहब है।
अल्लामा मजलिसी (र.अ.) ने अपने वालिदे माजिद से नक़्ल किया है के उन्होंने अपने उसताद शेख़ बहाई (र.अ.) से रिवायत की है के हम ने सूना है मशएख़ से के वो हज़रत क़ाएम (अ.स.) से मुज़ाकेरा करते थे और तसबीह से इस्तेख़ारा करते थे इस तरह के तसबीह हाथ मे लेते थे और तीन बार सलवात पढ़ते थे मोहम्मद व आले मोहम्मद पर।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ

ख़ुदाया मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल कर।

और एक मठ्ठी तसबीह के दाने की लेते थे और दो दो कर के शुमार करते थे तो अगर एक बाकी रह जाता तो बजा लाते और अगर दो बाकी रहते तो न बजा लाते थे।
शेख़ फ़क़ीह फ़ाज़ल साहबे जवाहर ने फ़रमाया है के हमारे ज़माने मे एक इस्तेख़ारा राएज है जिसे साहेबुज़ ज़मान इमामे क़ाएम (अ.स.) की तरफ़ मनसूब किया जाता है और वो ये है के दुआ पढ़ने के बाद एक मुठ्ठी तसबीह के दानो की हाथ मे ले और आठ आठ शुमार करे अगर आाख़िर मे एक दाना बचे तो वो नेक है और अगर दो बाकी रहें तो मना है और अगर तीन बचें तो इख़्तेयार है इस का करना और न करना बराबर है और अगर चार बाकी रह जाएं तो उस से दोबारा मना है और अगर पाँच बाकी रह जाएं तो बाज

कहते हैं के इस मे रंज व तकला॰ाफ है और बाज कहते हैं के इस मे अलालत है और अगर छः बचें तो बहुत अच्छा है और इस काम मे जलदी करना चाहिए और अगर सात बचें तो इस का हुक्म पॉच वाला है और अगर आठ रहें तो चार बार मना है और जान लो के हम छटे बाब मे बाज दूसरे इस्तेख़ारों का तज़किरा करेंगे।

मरहूम मोहद्दिस काशानी (र.अ.) ने तक़वीम अल मोहसिनीन मे कुआर्न से इस्तेख़ारे के लिए हफते के दिनो मे साअतें बयान की हैं और कहा है के इस को मशहूर की बिना पर इख़्तियार किया है अगरचे इस के बारे मे कोई हदीस अहलेबैत (स.अ.व.व.) से नही मिली है फिर फ़रमाया के:

इतवार का दिन नेक है जोहर तक और अर्स से मग़रिब तक।

सोमवार का दिन नेक है सूरज निकलने तक और फिर नहार से ज़ोहर तक और अर्स से इशा आाख़िर तक।

मंगल का दिन नेक है नहार के समय से ले कर ज़ोहर तक और अर्स के बाद से इशा आख़िर तक।

बुध का दिन नेक है ज़ोहर तक और अर्स के बाद से इशा आाख़िर तक।

जुमेरात का दिन नेक है तुलूए आफ़ताब तक फिर ज़ोहर से इशा आाख़िर तक।

जुमे का दिन नेक है तुलूए आफ़ताब तक फिर ज़वाल से अर्स तक।

सनीचर का दिन नेक है नहार के समय तक फिर जवाल से अर्स तक।

और ये मतलब माख़ूज है शेख़ तूसी की मुदख़ल से।

अदाएगी क़र्ज़ और ज़ुल्मे ज़ालिम से हिफ़ाज़त की नमाज़

शेख तूसी ने रिवायत की है के एक शख़्स इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) की ाख़िदमत मे आया और अर्ज की ऐ मेरे आक़ा मै आप से इस क़र्ज़ की शिकायत करता हूँ जो मेरे ऊपर है और उस बादशाह की जो मुझ पर ज़ुल्म करता है आप मुझे कोई ऐसी दुआ तालीम फ़रमाईए जिस के बाद मै क़र्ज़ अदा करने पर क़ादिर हो सकूँ और बादशाह को ज़ुल्म करने से रोक सकूँ। इमाम (अ.स.) ने फ़रमाया के जब रात की तारीकी छा जाए तो दो रकत नमाज़ पढ़ो। पहली रकत मे सुरह हम्द और आयतल कुर्सा पव्व्ढ़ो और दूसरी रकत मे हम्द और आाख़िर सुरह हश्र आख़िर सुरह तक।

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْآنَ عَلٰى جَبَلٍ...

अगर हमने इस क़ुरआन को पहाड़ पर नाज़ल किया होता ...

फिर क़ुआर्न को अपने सर पर रखो और पढ़ें:

اَللّٰهُمَّ بِحَقِّ هٰذَا الْقُرْآنِ وَبِحَقِّ مَنْ اَرْسَلْتَهُ بِهِ وَبِحَقِّ كُلِّ

ऐ अल्लाह इस कुरआन के वास्ते से और उसके वास्ते से जिसके ज़रिए इसे भेजा और सब

مُؤْمِنٍ مَدَحْتَهُ فِيهِ وَبِحَقِّكَ عَلَيْهِمْ فَلاَ اَحَدَ اَعْرَفُ بِحَقِّكَ

मोमिनीन के वास्ते से जिनकी तारीफ़ तूने उसमे की। और तेरी तरफ़ उनकी ज़िम्मे दारी के वास्ते

مِنْكَ

से क्योंकि तुझसे ज़्यादा कोई तेरे हक़ के बारे मे नही जानता।

दस मरतबा पढ़ें:

بِكَ يَا اللهُ

तेरे वास्ते से या अल्लाह

يَا مُحَمَّدُ

ऐ मुहम्मद

يَا عَلِيُّ

ऐ अली

يَا فَاطِمَةُ

ऐ फ़ातेमा

يَا حَسَنُ

ऐ ह़सन

يَا حُسَيْنُ

ऐ हुसैन

يَا عَلِيُّ بْنَ الْحُسَيْنِ

ऐ अली इबने हुसैन

يَا مُحَمَّدُ بْنَ عَلِيٍّ

ऐ मुहम्मद इबने अली

يَا جَعْفَرُ بْنَ مُحَمَّدٍ

ऐ जाफ़र इबने मुहम्मद

يَا مُوسَىٰ بْنَ جَعْفَرٍ

ऐ मूसा इबने जाफ़र

يَا عَلِيُّ بْنَ مُوسَى

ऐ अली इबने मूसा

يَا مُحَمَّدُ بْنَ عَلِيٍّ

ऐ मुहम्मद इबने अली

يَا عَلِيُّ بْنَ مُحَمَّدٍ

ऐ अली इबने मुहम्मद

يَا حَسَنُ بْنَ عَلِيٍّ

ऐ हसन इबने अली

اَيُّهَا الْحُجَّةِ

ऐ हुज्जत

फिर अपनी हाजत तलब करे।
रावी ने के वो शख़्स चला गया और कुछ मुद्दत के बाद आया इस तरह के क़र्ज़ अदा हो चुका था और बादशाह के मामले मे इसलाह हो गई थी और उस का माल ज़्यादा हो गया था।
लेखक कहता है के ज़ाहिर ये है के ये अमल नमाज़ के बाद बजा लाना चाहिए।

नमाज़े हाजत

दावाते रावन्दी से मनक़ूल हे के हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) एक शख़्स के पास से गुज़रे जो किसी दूसरे आदमी के दरवाज़े पर बैठा हुआ था। उस से फ़रमाया के किस वजह से इस ज़ालिम व जाबिर के घर के दरवाज़े

पर बैठा है?
उसने कहा के परेशानी और बदहाली ने मजबूर किया है।
इमाम ने फ़रमाया के उठो मै तुम्हारी रहनुमाई इस दरवाज़े की तरफ़ करू जो इस से बेहतर है फिर उस का हाथ पकड़ा और उसे मस्जिदे नबवी मे लाए और फ़रमाया रू बाक़िबला हो कर दो रकत नमाज़ पढ़ो ख़ुदा की बारगाह मे फिर ख़ुदा की हम्द व सना करो और रसूले ख़ुदा पर सलवात भेजो और सूरह हर्श के आाख़िर को पढ़ो और सूरह हदीद की पहली छ: आयतां को और आले इम्रान की दो आयतों को फिर ख़ुदा से अपनी हाजत तलब करो। ख़ुदा तुम्हें अता फ़रमाएगा।
जनाब रावन्दी ने कहा है के शायद दो आयात आले इम्रान हो यानी बेगैरे हिसाब तक और अल्लामह मजलिसी ने फ़रमाया है के शायद कुल अल्लाहुम्मा हो या आयत शहेदल्लाह हो और जान लो के रिवायत है अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से के जब तुममे से कोई हाजत का इरादा करे तो जुमेरात की सुबह उसकी तलब मे निकले और घर से निकलते समय आख़िर सूरह आले इम्रान और आयतल कुर्सा, इन्ना अनज़लना और सूरह हम्द को पढ़े क्योंके उन मे दुनिया व आाख़िरत की हाजतें हैं।

नमाज़े मोहिम्मात

चार रकत नमाज़ पढ़े और कुनूत और इस के अरकान को अच्छी तरह अदा करे और पहली रकत मे हम्द एक बार पढ़े, और सत्तर बार:

حَسْبُنَا اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ.

अल्लाह हमारे काफ़ी है और सबसे बेहतर हिफ़ाजत करने वाला है।

दूसरी रकत मे हम्द एक बार और सात बार:

مَا شَاءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ إِنْ تَرَنِ أَنَا أَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَوَلَدًا.

जो अल्लाहने चाहा वाही हुआ कोई ताकत नही सिवा अल्लाह के अगर माल व औलाद मे तुम मुझको कमतर समझते हो।

तीसरी रकत मे हम्द एक बार और सात बार:

لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ.

कोई माबूग नही तेरे सिवा पाक है तू बेशक मै ज़ालिमों मे से था।

चौथी रकत मे हम्द एक मरतबा और सात मरतबा:

وَأُفَوِّضُ أَمْرِي إِلَى اللّٰهِ إِنَّ اللّٰهَ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ.

व मैने अपना मामला अल्लाह के सिपुर्द किया बेशक अल्लाह बंदों को देखता है।

फिर हाजत तलब करे।

तंगी व सख़्ती दूर करने की नमाज़

हज़रत इमाम सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के जब तुम पर कोई काम दुश्वार हो तो दो रकत नमाज़ ज़वाल के समय पढ़ो। पहली रकत मे फ़ातेहा और कुलहुवल्लाह और इन्ना फ़तहाना:

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا. لِيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا

हमने हक़ीक़तन तुमको खुल्लम खुल्ला फ़तेह अता की। ताकी ख़ुदा तुम्हारी उम्मत के अगले और

تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا. وَيَنْصُرَكَ اللهُ

पिछले गुनाह माफ़ कर दे और तुम पर अपनी नेमत पूरी करे और तुम्हे सीधी राह पर साबित क़दम

نَصْرًا عَزِيزًا.

रखे। और ख़ुदा तुम्हारी ज़बरदस्त मदद करे।

दुसरी रकत मे फ़ातेहा, क़ुलहो वल्लाह और अलम नशरा पढ़े। ये नमाज़ मुजर्रब है।

रोज़ी बढ़ाने की नमाज़

रिवायत है के एक शख़्स रसुले ख़ुदा के पास आया और कहा: ऐ रसूले ख़ुदा मै साहेबे अयाल हूँ कर्ज़दार हूँ और परेशान हाल हूँ मुझको दुआ तालीम फ़रमाईए जिसको मै पढ़ूँ ताके ख़ुदा मुझे इतनी रोज़ी दे के मै अपने क़र्ज़ को अदा कर सकूँ और इस के ज़ारिए अपनी अयाल पर मदद हासिल करूं। फ़रमाया के ऐ बनदए ख़ुदा मुकम्मल वज़ू करो फिर दो रकत नमाज़ पढ़ो और रूकू व सुजूद बजा लाने के बाद पढ़ो:

يَا مَاجِدُ يَا وَاحِدُ يَا كَرِيمُ اَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ بِمُحَمَّدٍ نَبِيِّكَ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ

ऐ ख़ुदाए बुज़ुर्ग, ऐ ख़ुदाए अहद, ऐ करीम, मैं तेरी तरफ़ मुतवज्ज़े हूँ हज़रत मुहम्मद (स) के वसीले से

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ يَا مُحَمَّدُ يَا رَسُولَ اللهِ اِنِّي اَتَوَجَّهُ بِكَ اِلَى اللهِ

जो नबी ए रहमत हैं, ख़ुदा की रहमत उनके ऊपर और उनकी आल पर। या रसूल अल्लाह मैं आप के

رَبِّي وَرَبِّكَ وَرَبِّ كُلِّ شَيْءٍ وَاَسْاَلُكَ اَللّٰهُمَّ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ

वसीले से ख़ुदा की तरफ़ मुतवज्ज़े हूँ जो मेरा भी ख़ुदा है और आपका भी ख़ुदा है। हर शै का मालिक है।

وَاَهْلِ بَيْتِهٖ وَاَسْاَلُكَ نَفْحَةً كَرِيمَةً مِنْ نَفَحَاتِكَ وَفَتْحًا يَسِيرًا

ख़ुदाया मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फर्मा और मुझे अपनी तरफ़ से

وَرِزْقًا وَاسِعًا اَلُمُّ بِهٖ شَعَثِي وَاَقْضِي بِهٖ دَيْنِي وَاَسْتَعِينُ بِهٖ عَلٰى

बेहतरीन तोहफ़ा इनायत फर्मा, कामियाबी इनायत फ़र्मा, वो रिज़्क़े वासे इनायत फ़र्मा जिस से मेरी गंदगी

عِيَالِي

दूर हो और मेरा क़र्ज अदा हो और मैं अपने अहल व अयाल की हिफ़ाज़त कर सकूं।

ज़्यादती रोज़ी के लिए दूसरी नमाज़

जब अपनी दुकान मे जाना चाहो तो मस्जिद से इबतेदा करो और दो रकत नमाज़ या चार रकत नमाज़ पढ़ो और दुआ पढ़ो:

غَدَوْتُ بِحَوْلِ اللهِ وَقُوَّتِهٖ وَغَدَوْتُ بِلَا حَوْلٍ مِنِّي وَلَا قُوَّةٍ وَلٰكِنْ

मैं ने सुबह करी अल्लाह की क़ुव्वत और उसकी ताक़त के सहारे। मैं ने सुबह करी है जिस में न कोई ताक़त है और न कोई

بِحَوْلِكَ وَقُوَّتِكَ يَا رَبِّ اَللّٰهُمَّ اِنِّي عَبْدُكَ اَلْتَمِسُ مِنْ فَضْلِكَ كَمَا

क़ुव्वत है। जो कुछ है ख़ुदाया तेरी क़ुव्वत है। ख़ुदाया मैं तेरा बन्दए नाचीज़ हूँ तेरे फ़ज़्ल का सवाल करता हूँ जिस का तूने

اَمَرْتَنِي فَيَسِّرْ لِي ذٰلِكَ وَاَنَا خَافِضٌ فِي عَافِيَتِكَ

हुक्म दिया है इसलिए मेरे फ़ज़्ल के रास्तों को आसान करदे और मुझे आफ़ियत इनायत फ़र्मा।

एक और नमाज़

दो रकत है पहली रकत मे सुरह हम्द एक मरतबा और सूरह कौसर तीन मरतबा और दूसरी रकत मे हम्द एक मरतबा और दोनो कुल औवज़तैन तीन मरतबा पढ़े।

नमज़े हाजत

मकरिमउल अख़लाक़ मे है के जब आधी रात हो जाए तो गुस्ल करे। दो रकत नमज़ बजा लाए और दोनो रकतों मे हम्द और पाँच सौ मरतबा सूरह तौहीद पढ़े लेकिन दूसरी रकत मे जब तौहीद पढ़ने से फ़ारिग़ हो तो आख़िर सूरह हश्र लौ अनज़लना को आाख़िर सूरह तक:

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْآنَ عَلٰى جَبَلٍ...

अगर हम इस क़ुरआन को पहाड़ पर नाज़िल करते...

और सूरह हदीद की पहली छः आयतें पढ़े और इस हाल मे खड़े हो कर हज़ार मरतबा पढ़े:

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِينُ.

हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं

फिर नमाज़ तमाम कर दे और ख़ुदा की हम्द करे। पस अगर हाजत पूरी हो जाए तो ठिक है वरना दो बारा बजा लाए और दूसरी दफ़ा मे पूरी न हो तो तीसरी बार ये अमल करे इन्शाअल्ला हाजत पूरी होगी।

एक और नमाज़

कुलैनी ने काफ़ी मे मोतबर सनद के साथ रिवायत की है अब्दुर रहीम क़सीर से उन्होंने कहा के मै इमाम सादीक़ (अ.स.) की ख़िदमत मे हाज़र हुआ और अर्ज़ किया मै आप पर क़ुर्बान हूँ मैने ख़ुद से दुआ इजाद की है।
तो इमाम ने फ़रमाया के मुझको अपनी इख़्तेरा व इजाद से दूर रखो। अगर तुम को कोई हाजत पेश आए तो रसूले ख़ुदा की पनह तलब करो और दो रकत नमाज़ पढ़ो और उसको रसूले ख़ुदा की ख़िदमत मे हदया करो।
मै ने अर्ज किया के उस को किस तरह पढ़ूँ?
फ़रमाया के ग़ुस्ल कर के दो रकत नमाज़ पढ़ो। फ़रीजा नमाज़ की तरह इख़्तेताम व आग़ाज मे और जब सलाम पढ़ो तो ये दुआ पढ़ो। फिर सजदे मे जाए और चालीस मरतबा फिर दाहेने रूख़सार को ज़मीन पर रखे और इस दुआ को चालीस मरतबा पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلاَمُ وَمِنْكَ السَّلاَمُ وَاِلَيْكَ يَرْجِعُ السَّلاَمُ اَللّٰهُمَّ

ख़ुदाया तू सलाम है तुझ ही से सलामती है और तेरी ही तरफ़ सलामती की बाज़गश्त है। ख़ुदाया

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَبَلِّغْ رُوحَ مُحَمَّدٍ مِنِّى السَّلاَمَ وَاَرْوَاحَ

मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और उनकी रूह तक

الاَئِمَّةِ الصَّادِقِيْنَ سَلاَمِى وَارْدُدْ عَلَيَّ مِنْهُمُ السَّلاَمَ وَالسَّلاَمُ

मेरी तरफ़ से सलाम पहुँचादे और तमाम अरवाहे अईम्मा तक मेरा सलाम पहुँचादे और उनकी

عَلَيْهِمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ اَللّٰهُمَّ اِنَّ هَاتَيْنِ الرَّكْعَتَيْنِ هَدِيَّةٌ مِنِّى

तरफ़ से सलाम मेरे लिए वापस आए। सलाम हो उनपर और तमाम रहमातें व बरकतें उनके

اِلٰی رَسُولِ اللهِ صَلَّی اللهُ عَلَیۡهِ وَآلِهٖ وَسَلَّمَ فَاَثِبۡنِی عَلَیۡهِمَا مَا اَمَّلۡتُ

लिए। ख़ुदाया ये दो रकतें हैं हदिऐ में रहूले अक्रम (स.अ.व.व.) के लिए। मुझे उनका सवाब अता

وَرَجَوۡتُ فِیكَ وَفِی رَسُولِكَ یَا وَلِیَّ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ

फ़र्मा जिसकी मैं उम्मीद रखता हूँ तेरे बारे में और तेरे रसूल के बारे में। ऐ मोमिनीन के मालिक।

फिर सदजे मे जाऐ और ये दुआ पढ़े:

یَا حَیُّ یَا قَیُّوۡمُ یَا حَیًّا لَا یَمُوۡتُ یَا حَیًّا لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنۡتَ یَا ذَا الۡجَلَالِ

ऐ हई, ऐ क़य्यूम, ऐ वो ख़ुदा जिस के लिए मौत नहीं। ऐ वो ज़िंदा जिस के अलावा कोई ख़ुदा नहीं।

وَالۡاِکۡرَامِ یَا اَرۡحَمَ الرَّاحِمِیۡنَ

ऐ साहिबे जलाल व इक्राम। ऐ सब से ज़्यादा रहम करनेवाले।

फिर बाएं रूख़सार को ज़मीन पर रखे और फिर चालीत मरतबा वही दुआ पढ़े। फिर सजदे से सर उठाए और हाथ को बुलंद करे और चालीस मरतबा पढ़े। फिर हाथों को अपनी गरदन पर रखे और इलतेजा करे अनगुशते शहादत से और चालीस मरतबा पढ़े फिर अपनी दाड़ी को अपने बांए हाथ मे ले और गिरया करे या रोने वाले की सूरत बनाए अगर रोना न आता हो और कहे:

یَا مُحَمَّدُ یَا رَسُوۡلَ اللهِ اَشۡکُوۡ اِلَی اللهِ وَاِلَیۡكَ حَاجَتِی وَاِلٰی اَهۡلِ بَیۡتِكَ

ऐ मुहम्मद, या रसूल अल्लाह मैं ख़ुदा की बारगाह में और आप के सामने और आपके अहलेबैत की बारगाह में अपनी

الرَّاشِدِينَ حَاجَتِي وَبِكُمْ أَتَوَجَّهُ إِلَى اللهِ فِي حَاجَتِي

हाजतों की फ़रयाद करता हूँ और आप ही हज़रात को उन हाजतों के लिए ख़ुदाई बारगाह में वसीला क़रार देता हूँ।

फिर सजदे मे जा कर कहे या अल्लाहो इतना के साँस टूट जाए:

يَا اللهُ يَا اللهُ

ऐ अल्लाह ऐ अल्लाह

फिर पढ़े:

صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ...

मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल कर।

और बजाए वफअल बी कज़ा अपनी हाजत बयान करे।
इमाम सादिक़ (अ.स.) ने फ़रमाया है के मै ज़ामिन हूँ ख़ुदा से के तू अपनी जगह से हरकत नही करेगा मगर ये के तेरी हाजत पूरी होगी।
लेखक कहता है के बाब चाहरूम मे बहुत सी दुआएं दुनिया और आखेरत की हाजतों के लिए ज़िक्र हैं।
शेख़ कफ़अमी ने बलदुल अमीन मे अहेम हाजतों के लिए ज़िक्र किया है के इन कलेमात को काग़ज पर लिखे और दरया मे डाले।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ مِنَ الْعَبْدِ الذَّلِيلِ إِلَى الْمَوْلَى الْجَلِيلِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान और निहायत रहमवाला है। ये ख़त एक बन्दा ए ज़लील का

رَبِّ اِنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَآلِهٖ صَلِّ عَلٰى

मौला ए जलील के नाम है। ख़ुदाया मुसीबतों ने मुझ को छुपा लिया है और तू सब से ज़्यादा रहम

مُحَمَّدٍ وَآلِهٖ وَاكْشِفْ هَمِّي وَفَرِّجْ عَنِّي غَمِّي بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ

करनेवाला है। मुहम्मद (अ.स.) व आले मुहम्मद (अ.स.) के वास्ते से उन पर रहमत नाज़ल फ़र्मा,

الرَّاحِمِيْنَ

मेरे हम व ग़म को दूर फ़र्मा अपनी रहमत के वसीले से के तू सब से ज़्यादा रहम करनेवाला है।

नमाज़े हाजत

सय्यद बिन ताऊस (र.अ.) ने मज़ार मे बाब आमाले मस्जिदे कूफ़ा मे आमाल मेहराबे अमीरूल मामिनीन (अ.स.) के ज़ेल मे नमाज़े हाजत का तज़केरा किया है जिसको इस मख़सूस मक़ाम पर बजा लाना चाहिए और वो चार रकत है दो सलाम के साथ पहली रकत मे हम्द और दस मरतबा कुल होअल्लाह दूसरी रकत मे हम्द और एक्कीस मरतबा तौहीद तीसरी रकत मे हम्द और एक्कीस मरतबा तौहीद चौथी मे हम्द और एकतालीस मरतबा तौहीद और सलामे नमाज़ के बाद तसबीह पढ़े।

(१) फिर एकयावन बार सूरह तौहीद।

(२) पचास बार इस्तेग़फ़ार।

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

मै अल्लाह से मगिफ़रत चाहता हूँ।

(३) पचास बार सलवात पैग़मबर व आले पैग़मबर पर भेजे।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ

ख़ुदाया मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल कर।

(४) और पच्चास मरतबा पढ़े:

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

कोई ताक़ात व क़ुव्वत नही सिवाय अल्लाहे बुज़ुर्ग व बाला के।

फिर ये दुआ पढ़े:

يَا اللهُ الْمَانِعُ قُدْرَتَهُ خَلْقَهُ وَالْمَالِكُ بِهَا سُلْطَانَهُ وَالْمُتَسَلِّطُ

ऐ वो ख़ुदा जो अपनी क़ुद्रत के ज़रिऐ बन्दों के नुक़सान को राकता है और दुनीया की सलतनत का

بِمَا فِي يَدَيْهِ عَلٰى كُلِّ مَوْجُودٍ وَغَيْرُكَ يَخِيبُ رَجَاءُ رَاجِيهِ

मालिक है। हर मौजूद पर उस ही का ग़ल्बा है। तेरे अलावा किसी से भी उम्मीद को चाहे तो सिवाए

وَرَاجِيكَ مَسْرُورٌ لَا يَخِيبُ اَسْاَلُكَ بِكُلِّ رِضًى لَكَ وَبِكُلِّ

नाउम्मीदी के कुछ नहीं है। फ़क़त तेरा उम्मीदवार ख़ुश रहता है और मायूस नहीं होता। मैं तुझ से

شَيْءٍ اَنْتَ فِيهِ وَبِكُلِّ شَيْءٍ تُحِبُّ اَنْ تُذْكَرَ بِهِ وَبِكَ يَا اللهُ

सवाल करता हूँ तेरी ही रेज़ा का और हर उस चीज़ का जिस में तेरा जलवा हो, हर उस चीज़ का जो

فَلَيْسَ يَعْدِلُكَ شَيْءٌ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَ تَحْفَظَنِي

तेरी याद दिलाए और तेरे सहारे से ऐ ख़ुदा। मैं जानता हूँ के तेरे बराबर कोई नहीं है। मेरा सवाल ये

وَوَلَدِي وَاَهْلِي وَمَالِي وَ تَحْفَظَنِي بِحِفْظِكَ وَاَنْ تَقْضِيَ حَاجَتِي

है के मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (स) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा। मुझे, मेरी औलाद को,

فِي...

मेरे अहल को, मेरे माल को महफ़ूज़ फ़र्मा और मेरी हाजतों के पूरा फ़र्मा।

और अपनी हाजत का ज़िक्र करे।

एक और नमाज़े हाजत

रिवायत है के जिस शख़्स की ख़ुदा से कोई हाजत हो और चाहे के पूरी हो जाए तो चार रकत नमाज़ पढ़े और हर रकत मे सूरह हम्द और सूरह अनआम पढ़े और नमाज़ के बाद ये दुआ पढ़े:

يَا كَرِيمُ يَا كَرِيمُ يَا كَرِيمُ يَا عَظِيمُ يَا عَظِيمُ يَا عَظِيمُ يَا اَعْظَمَ

ऐ करीम, ऐ करीम, ऐ करीम! ऐ अज़ीम, ऐ अज़ीम, ऐ अज़ीम से बालातर अज़ीम, ऐ दुआओं के

مِنْ كُلِّ عَظِيمٍ يَا سَمِيعَ الدُّعَاءِ يَا مَنْ لَا تُغَيِّرُهُ اللَّيَالِي وَ الْاَيَّامُ

सुननेवाले ऐ वो जिस पर रात व दिन के तग़ैरात का असर नहीं है। मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَارْحَمْ ضَعْفِي وَفَقْرِي وَفَاقَتِي وَمَسْكَنَتِي فَاِنَّكَ

मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और हमारी कमज़ोरी, हमारे फ़क्र व फ़ाक़े और हमारी ग़ुरबत

اَعْلَمُ بِهَا مِنِّى وَاَنْتَ اَعْلَمُ بِحَاجَتِى يَا مَنْ رَحِمَ الشَّيْخَ يَعْقُوبَ حِيْنَ

पर रहम फ़र्मा इसलिए के तू हमारे हाल को हम से बेहतर जानता है। हमारी हाजतों को जानता है। ऐ

رَدَّ عَلَيْهِ يُوسُفَ قُرَّةَ عَيْنِهِ يَا مَنْ رَحِمَ اَيُّوبَ بَعْدَ طُولِ بَلاَئِهِ يَا مَنْ

वो ख़ुदा जिस ने याक़ूब पर रहम करके यूसुफ़ को वापस कर दिया जो उनकी आँखों की ठंडक थे। ऐ

رَحِمَ مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ وَمِنَ الْيُتْمِ آوَاهُ وَنَصَرَهُ عَلَى

वो ख़ुदा जिसने तवील इमतेहान के बाद अय्यूब पर रहम किया। ऐ वो ख़ुदा जिस ने पैग़म्बर पर रहम

جَبَابِرَةِ قُرَيْشٍ وَطَوَاغِيتِهَا وَاَمْكَنَهُ مِنْهُمْ يَا مُغِيثُ يَا مُغِيثُ يَا

किया। यतीमी में उन्हें पनाह दी और क़ुरैश के ज़ालिमों के मुक़ाबले में उनकी मदद करी और उनको

مُغِيثُ...

इक़्तेदार इनायत फ़र्माया। ऐ मेरे फ़रयाद रस, ऐ मेरे फ़रयाद रस, ऐ मेरे फ़रयाद रस।

इस को मुकरर्र पढ़े। फिर ख़ुदा से अपनी हाजत तलब करे। ख़ुदा उसको अता फ़ारमाएगा।

दूसरी नमाज़े हाजत

सय्यद बिन ताऊस (र.अ.) ने रिवायत की है के शबे जुमअ और शबे ईदुज़्ज़ोहा दो रकत नमाज़ पढ़े और हर रकत मे सूरह फ़ातेह पढ़े और सौ मरतबा पढ़े:

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِينُ.

हम तेरी इबादत करते हैं और तेरी ही इताअत करते हैं।

फिर सूरह हम्द को तामाम करे और हम्द के बाद दो सौ मरतबा सूरह तौहीद पढ़े और जब सलाम पढ़ ले तो सत्तर मरतबा पढ़े:

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ العَلِيِّ العَظِيمِ

कोई ताक़ात व क़ुव्वत नही सिवाय अल्लाहे बुज़ुर्ग व बाला के।

फिर सजदे मे जा कर दो सौ मरतबा पढ़े:

يَارَبِّ

ऐ मेरे मालिक

फिर जो हाजत रखता हो तलब करे इनशा अल्लाह पूरी होगी।
एक और नमाज़े हाजत
जिसे बहुत से ओलमा मसलन शेख मुफ़ीद, तूसी और सय्यद बिन ताऊस और दुसरां ने नक़ल किया है इमाम सादीक़ (अ.स.) से और इस का तारीक़ा सय्यद की रिवायत के मुताबिक़ इस तरह है:
जिस को कोई अहम हाजत दरपेश हो ख़ुदा की तरफ़ तो तीन दिन मुसलसल बुध ज़ुमेरात और ज़ुमअ रोज़ा रखे और जब रोज़े ज़ुमअ हो तो ग़ुस्ल करे और नया व पाकीज़ा लिबास पहने उस के बाद सब से बुलंद तरीन छत पर जाए अपने घर की और दो रकत नमाज़ पढ़े फिर हाथां को आसमान की जानिब बुलंद कर के ये दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّي حَلَلْتُ بِسَاحَتِكَ لِمَعْرِفَتِي بِوَحْدَانِيَّتِكَ وَصَمَدَانِيَّتِكَ

ख़ुदाया मैं तेरी बरगाह में हाज़र हूँ इसलिए के तेरी वहदानियत और बेनियाज़ी को मानता हूँ और

وَاَنَّهُ لَا قَادِرًا عَلٰى قَضَاءِ حَاجَتِى غَيْرُكَ وَقَدْ عَلِمْتُ يَا رَبِّ اَنَّهُ

ये जानता हूँ के कोई तेरे अलावा मेरी हाजत को पूरा नहीं कर सकता है। मैं जानता हूँ के जब

كُلَّمَا تَظَاهَرَتْ نِعْمَتُكَ عَلَىَّ اشْتَدَّتْ فَاقَتِى اِلَيْكَ وَقَدْ طَرَقَنِى

नेमतों का इज़ाफा और ग़ल्बा होता है तो हाजत और बढ़ जाती है। अब इस समय फिर एक नई

هَمٌّ...

मुसीबत में मुबतेला हो गया।

फिर अपनी हाजत बयान करे फिर पढ़े:

وَاَنْتَ بِكَشْفِهِ عَالِمٌ غَيْرُ مُعَلَّمٍ وَاسِعٌ غَيْرُ مُتَكَلِّفٍ فَاَسْاَلُكَ

उस मुश्किल से नजात दे। तू जानता है के इस मुसीबत को कैसे दूर किया जा सकता है। तेरे पास

بِاسْمِكَ الَّذِى وَضَعْتَهُ عَلَى الْجِبَالِ فَنُسِفَتْ وَوَضَعْتَهُ عَلٰى

ताक़त है। मैं तेरे उस नाम के सहारे से सवाल करता हूँ जिस को पहाड़ पर रख दिया जाए तो रेज़ा-

السَّمَاوَاتِ فَانْشَقَّتْ وَعَلَى النُّجُومِ فَانْتَشَرَتْ وَعَلَى الْاَرْضِ

रेज़ा हो जाए, आसमानों पर रख दिया जाए तो शक़ हो जाए, सितारों पर रख दिया जाए तो बिखर

فَسُطِحَتْ وَاَسْاَلُكَ بِالْحَقِّ الَّذِى جَعَلْتَهُ عِنْدَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ

जाऐं, ज़मीन पर रख दिया जाए तो बराबर हो जाए। ख़ुदाया उस हक मे वास्ते से सवाल करता

وَآلِهِ وَعِنْدَ عَلِيٍّ وَالْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ وَعَلِيٍّ وَمُحَمَّدٍ وَجَعْفَرٍ وَمُوسٰى

हूँ जिस को तूने मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.), अली (अ.स.), हसन (अ.स.),

وَعَلِيٍّ وَمُحَمَّدٍ وَعَلِيٍّ وَالْحَسَنِ وَالْحُجَّةِ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى

हुसैन (अ.स.), अली (अ.स.), मुहम्मद (अ.स.), जाफ़र (अ.स.), मूसा (अ.स.), अली (अ.स.),

مُحَمَّدٍ وَاَهْلِ بَيْتِهِ وَاَنْ تَقْضِيَ لِي حَاجَتِي وَتُيَسِّرَ لِي عَسِيرَهَا

मुहम्मद (अ.स.), अली (अ.स.), हसन (अ.स.) और अपनी हुज्जत के पास रखा है के तू आले

وَتَكْفِيَنِي مُهِمَّهَا فَاِنْ فَعَلْتَ فَلَكَ الْحَمْدُ وَاِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَلَكَ

मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फर्मा मेरी हाजत पूरी कर मश्किलात आसान कर, मुहिम्मात

الْحَمْدُ غَيْرَ جَائِرٍ فِي حُكْمِكَ وَلَا مُتَّهَمٍ فِي قَضَائِكَ وَلَا حَائِفٍ فِي

में काफ़ी हो। अगर तू ऐसा करे तब भी तेरी हम्द और न किया तब भी। इसलिए के तेरे फैस्लो में

عَدْلِكَ

कोई ज़ुल्म नहीं, कोई ग़लती नहीं और तेरे इन्साफ़ में किसी तरह ज़यादती नहीं।

फिर अपने रूख़सार को ज़मीन पर रखे और कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنَّ يُونُسَ بْنَ مَتّٰى عَبْدَكَ دَعَاكَ فِي بَطْنِ الْحُوتِ وَهُوَ عَبْدُكَ

ख़ुदाया यूनुस तेरा बन्दा था जिसने शिक्मे माही मे दुआ की और तूने क़ुबूल किया। मैं भी तेरा

فَاسْتَجَبْتَ لَهُ وَاَنَا عَبْدُكَ اَدْعُوكَ فَاسْتَجِبْ لِى

बन्दा हूँ। तुझसे दुआ करता हूँ, दुआ क़ुबूल कर।

इमाम सादिक़ (अ.स.) ने फ़रमाया के अक्सर जब मुझको कोई हाजत होती थी तो मै इस दुआ को पढ़ता था तो मेरी हाजत पूरी हो जाती थी।

तलबे हाजत की नमाज़ के आदाब

लेखक कहता है के सय्यद बिन ताऊस ने जमालुल उसबूअ मे ज़िक्र किया है जिस का हासिल ये है:

जब ख़ुदा से कोई हाजत तलब करे तो कम से कम हाजत वैसी होनी चाहिए के जैसे कोई अहेम हाजत तलब करता हो दुनिया के बादशाहों मे से किसी एक से के जब उन से कोई हाजत तलब करता है तो उसकी रज़ा व ख़ुशनूदी चाहता है जितना भी मुमकिन हो तो उसी तरह ख़ुदा से हाजत तलब करने मे कोशिश करे उसकी रज़ा हासिल करने की और ऐसा ना हो के ख़ुदा की जानिब इक़बाल बादशाह दुनिया के इक़बाल से कम हो के अगर ऐसा हाल होगा तो इसतेहज़ा करने वालां और हलाक होने वालों मे होगा और ये क्यों कर सही हो सकता है के रज़ाए ख़ुदा के लिए कम एहतेमाम हो रज़ाए मख़लूक़ के एहतेमाम से तो अगर ख़ुदा की मनिज़लत तेरी निगाह मे कम होगी दुनिया के बादशाहों से जो बंदगाने ख़ुदा मे से हैं तो ख़ुदा का इसतेख़फ़ाफ़ और इसतेहज़ा करने वाला होगा और हक़ीर समझेगा ख़ुदा की इज़्ज़त व जलालत को और उस से एअराज़ करेगा और अफ़सोस है के इस सूरत मे अपनी हाजत पर कामयाब हो अपनी नमाज़ या राज़े के ज़ारिए।

वो नमाज़ व राज़ा जो हाजत के लिए बजा लाए तजरूबे के तौर पर न होना चाहिए क्योंके इनसान तजरूब नही करता है मगर उस शख़्स का जिस के बारे मे गुमान बद रखता है और ख़ुदा ने उस की मज़म्मत की है जो उस के बारे मे बुरा गुमान करे।

बल्कि मुकम्मल इतमेनान व एतेमाद रखे और ख़ुदा की रहमत और उस के

वादे पर और तेरी उम्मीद हाजत के तलब करने मे ज़्यादा होना चाहिए उस से के क़सद करे हातिम से एक क़िरात का क्योंके अगर एक क़िरात के लिए हातिम से क़सद किया है तो यिक़्न रखो के वा तुम्हें अता करेगा जिस तरह भी हो।

तो जान लो के तुम्हारी हाजत ख़ुदा के नज़दीक एक क़ेरात से कम है हातिम के नज़दीक तो ऐसा न होना चाहिए के तुम्हारा एतेमाद कम हो जाए और ये भी तुम्हारे लिए मुनासिब है के जब हाजत के लिए नमाज़ या राज़ा बजा लाओ तो नियत करो इस अमल की अहेम तर दीनी हाजतों के लिए और जान लो के उन मे से अहम तरीन उस शख़्स की हाजत है के जिस की पनाह और हिमायत मे तुम हो और तुम्हारे इमामे ज़माना (अ.स.) हैं तो चाहिए के तुम्हारी नमाज़ व रोज़ा पहले उन की हाजत बर आवरी के लिए हो।

और उस के बाद अपनी दीनी हाजतां के लिए और फिर उस हाजत के लिए जो आरिज़ हो और उस को इरादा रखता हो मसलन अगर ज़ालिम तुम्हारी हलाकत के दरपै हो और तुम रोज़ा हाजत रखते हो उस के शर से नजात के लिए तो जान लो के उस से अहम दिनी हाजत है और वो रज़ाए ख़ुदा और माफ़ी है और ये के वो तेरे आमाल को क़ुबूल करे क्योंके तुम्हारे क़त्ल होने मे तुम्हारी दुनिया बिगड़ेगी और अगर तुम्हारा दीन सालिम रह गया तो क़त्ल न होने के अलावा मौत बहरहाल आएगी लेकिन अगर ख़ुदा की रज़ा और बख़शिश तुम को आख़िरत मे हासिल न हो हलाक होगे और ऐसा ख़ौफ व होल होगा जिस का तू ख़्याल भी न कर सकेगा।

लेकिन ये जो हम ने कहा के इमामे ज़माना (अ.स.) की हाजत को मुक़द्दम रखो तो इस वजह से है के दुनिया और दुनिया वालों की बक़ा का सबब उन का वजूद है तो अगर तुम्हारा वजूद महफ़ूज़ हो दुसरे के वजूद की वजह से तो अपनी हाजतो को उसकी हाजतों पर क्योंकर मुक़द्दम कर सकते हो और अपनी मुराद को उसकी मुराद पर?

ये वाज़ेह रहे के वो अपनी हाजतों मे तुम्हारे नमाज़ व रोज़े से मुसतग़ना है और तुम्हारी कोई ज़रूरत नही रखते लेकिन बन्दगी का तकाज़ा ये है के तुम ऐसा करो जैसा के तुम अपनी दुआओं को उन पर सलवात पढ़ने से शुरू करते हो

नमाज़ इसतेग़ासह

मकारिम मे है के जब रात मे ख़्वाब से जागना चाहो तो अपने सरहाने पाकीजा बरतन पानी से भरा हुआ रखो और उसको पाक कपड़े से ढ़ाक दो और जब आाख़िर शब मे नमाज़े शेब के लिए बेदार हो तो उस पानी के तीन घूँठ पियो और बाक़ी पानी से वज़ू करो और रू बिक़बला आज़ान व इक़ामत कहो और दो रकत नमाज़ पढ़ो और उस मे जो सूरह चाहो पढ़ो और जब क़िरअत से फ़ारिग़ हो जाओ तो रूकू मे जा कर पच्चीस मरतबा पढ़ो और फिर रूकू से सर उठाकर उसी को पच्चीस बार पढ़ो:

يَا غِيَاثَ الْمُسْتَغِيثِيْنَ

ऐ पनाह माँगने वालौं की पनाह गाह।

और इसी तरह पहले सजदे और उस से सर उठाने और दूसरे सजदे और उस से सर उठाने के बाद पच्चीस पच्चीस मरतबा पढ़े फिर उठकर इसी तरह दूसरी रकत का मजमूअ तीन सौ मरतबा होगा फिर तशहुद और सलाम पढ़े और नमाज़ के बाद सर आसमान की जानिब बुलंद करे और तीस मरतबा कहे:

مِنَ الْعَبْدِ الذَّلِيلِ اِلَى الْمَوْلَى الْجَلِيلِ

ज़लील बंदे की तरफ़ से जलालत वाले मौला की तरफ़

और हाजत तलब करे तो जल्दी पूरी होगी इनशा अल्लाहो ताला।

नमाज़े इस्तेग़ासा बेफ़ातेमा (स.अ.)

रिवायत है के जब तुमको कोई हाजत पेश आए ख़ुदा की तरफ़ और तुम्हारा सीना तंगी करता हो तो दो रकत नमाज़ पढ़े और जब सलामे नमाज़ पढ़ ले तो तीन मरतबा अल्लाह हो अकबर कहे और तसबीहे ज़हरा (स.अ.) पढ़े, फिर सजदे मे जाए और सौ बार पढ़े:

يَامَوْلَاتِيْ يَافَاطِمَةُ أَغِيْثِيْنِيْ

ऐ मेरी मालकिन ऐ फ़ातिमा मुझे पनाह दीजिए।

फिर दाहिने रूख़सार को ख़ाक पर रखे और सौ मरतबा वही पढ़े। फिर सजदे मे इसको सौ बार पढ़े फिर बाए रूख़सार को ज़मीन पर रखे और सौ बार पढ़े फिर दूसरे सजदे मे जाए और एक सौ दस बार पढ़े और अपनी हाजत को याद करे ख़ुदा उसकी हाजत को पूरा करेगा इनशा अल्लाह।

नमाज़े इस्तेग़ासा हज़रत फ़ातेमा ज़हेरा (स)

लेखक कहता है के शेख हसन बिन फ़ज्ल तबरसी ने मकारिमुल अख़लाक़ मे फ़रमाया है के नमाज़े इस्तेग़ासा हज़रत फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.) दो रकत है। जब नमाज़ पढ़ ले तो सजदे मे जा कर या फ़ातेमा सौ बार पढ़े:

يَافَاطِمَةُ

ऐ फ़ातेमा

फिर दाहिने रूख़सार को ज़मीन पर रखे और सौ मरतबा पढ़े फिर बाएं रूख़सारे को रखे और सौ मरतबा पढ़े। फिर दोबारा सजदे मे जाए और एक सौ बार पढ़े फिर इस के बाद ये दुआ पढ़े:

يَا آمِنًا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَكُلُّ شَيْءٍ مِنْكَ خَائِفٌ حَذِرٌ اَسْاَلُكَ بِاَمْنِكَ

ऐ हर शै से अमान देनेवाले और जिस से हर शै ख़ौफ ज़दा है। मैं तेरे अमन के सहारे हर चीज़

مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَخَوْفِ كُلِّ شَيْءٍ مِنْكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَاَنْ

से अमन और दुनीया के ख़ौफ के सहारे में तुझ से सवाल करता हूँ के मुहम्मद (स.अ.व.व.) व

تُعْطِيَنِي اَمَانًا لِنَفْسِي وَاَهْلِي وَمَالِي وَوَلَدِي حَتّٰى لَا اَخَافَ اَحَدًا

आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा। मुझे मेरे नफ़्स, मेरे अहल, मेरे माल, मेरे औलाद

وَلَا اَحْذَرَ مِنْ شَيْءٍ اَبَدًا اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

में अमान अता फ़र्मा ताके मुझे किसी क़िस्म का ख़ौफ व ख़तरा ना रह जाए।

नमाज़े इस्तेग़ासा रसूले ख़ुदा और अली (अ.स.)

इसी किताब मे इमाम सादिक़ (अ.स.) से रिवायत हुई है के जब तुम मे से कोई ख़ुदा वन्दे आलम की जानिब इस्तेग़ासा करना चाहे तो दो रकत नमाज़ पढ़े फिर सजदे मे जा कर पढ़े:

يَا مُحَمَّدُ يَا رَسُولَ اللهِ يَا عَلِيُّ يَا سَيِّدَيِ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِكُمَا

ऐ ०मोहम्मद ऐ अल्लाह के रसूल ऐ अली मोमिनों के सरदार आप दोनो के नाम से मै अल्लाह तआला

اَسْتَغِيثُ اِلَى اللهِ تَعَالٰى يَا مُحَمَّدُ يَا عَلِيُّ اَسْتَغِيثُ بِكُمَا يَا غَوْثَاهُ بِاللهِ

से पनाह माँगता हूँ ऐ ०मोहम्मद ऐ अल्लाह के रसूल ऐ अली मोमिनों के सरदार आप दोनो के नाम से

وَبِمُحَمَّدٍ وَعَلِيٍّ وَفَاطِمَةَ

मै अल्लाह तआला से पनाह माँगता हूँ ऐ मेरी पनाह अल्लाह ०मोहम्मद अली व फ़ातिमा के नाम से।

फिर इमाम का नाम ले फिर यह कहे:

بِكُمْ اَتَوَسَّلُ اِلَى اللهِ تَعَالَى

आप के नामसे मै अल्लाह तआ ला से सिफ़ारिश करता हूँ।

अल्लाह आपकी दुआ ज़रूर कुबूल करेगा, इनशा अल्लाह।

मस्जिदे जमकरान मे नमाज़े हुज्जत (अ.स.)

मस्जिदे जमकरान मे जो शहरे कुम से एक फ़रसख़ के फ़ासले पर है शेख़ मरहूम ने नज्मुस साक़ब मे इस मस्जिदे शरीफ़ की तामीर को हुक्मे इमामे ज़माना से नक़्ल किया है। इस किताब के बाबे हफ़्तुम की पहली हिकायत मे और वो हिकायत ये है के उन्होंने फ़रमाया हसन मसलह जमकरानी से के लोगों से कहो के रग़बत करें इस मक़ाम की तरफ़ और उस जगह चार रकत नमाज़ को अज़ा॰rज रखें दो तहैये मस्जिद के तौर पर: हर रकअत मे एक बार अलहम्द और सात बार क़ुल हुवल्लाह और तसबीह रूकू व सुजूद मे सात मरतबा कहे और दो रकत नमाज़ इमामे जमाना (अ.स.) पढ़े इस तरीके पर के जब:

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِينُ.

हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझही से मदद माँगते हैं।

पर पहुचे तो सौ बार इसे कहे और उस के बाद फ़ातेहा को आख़िर तक पढ़े और दूसरी रकत मे भी इसी तरिक़े पर पढ़े और तसबीहे रूकुअ व सुजुद सात बार पढ़े और जब नमाज तमाम करे तो तहलील कहे और तसबीह फ़ातेमा जहरा (स) कहे और जब तसबीह से फ़ारिग हो जाए तो सर सजदे मे रखे और सौ बार सलवात पैग़मबर और उन की आल पर पढ़े और ये इमाम (अ.स.) के ल॰प॰ॉजे मुबारक से मनकूल है के जो शख़्स ये दो रकत नमाज़ पढ़े वो ऐसा हे जैसे उस ने काबे मे दो रकत नमाज़ पढ़ी हो।

दूसरी नमाज़ आँहजरत से नज्मुस साक़ब, कनूज नजाह शेख तबरेसी से मनकुल है के नाहिया मुक़द्देसा इमाम जमाना (अ.स.) से ये तौक़ी आई के जिस शख़्स की ख़ुदा की जानिब कोई हाजत हो तो चाहिए के शबे जुमअ आधी रात के बाद ग़ुस्ल करे और जा नमाज़ पर जाए और दो रकत नमाज़ पढ़े, पहली रकत मे हम्द को पढ़े और जब: ईयाका नअबुदो व ईयाका नसतईन तक पहुचे तो उसे सौ बार पढ़े:

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ.

हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझही से मदद माँगते हैं।

उस के बाद बाक़ी सूरह को मुकम्मल होने के बाद कुलहोवल्लाह को एक मरतबा पढ़े। और रूकू मे सात बार पढ़े:

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ

पाक है मेरा रब अज़मत वाला और उसकी तारीफ़ है।

सजदे मे सत बार पढ़े:

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى وَبِحَمْدِهٖ

पाक है मेरा रब सबसे आला मक़ाम और उसकी तारीफ़ है।

दूसरी रकत को भी पहली रकत की तरह पढ़े:
नमाज़ पूरी होने के बाद ये दुआ पढ़े, खुदा वन्दे आलम उस की हाजत को पूरा करेगा चाहे जो हाजत हो सिवाए इस के के उसकी हाजत क़ते रहम की हो और दुआ ये है:

اَللّٰهُمَّ اِنْ اَطَعْتُكَ فَالْمَحْمَدَةُ لَكَ وَاِنْ عَصَيْتُكَ فَالْحُجَّةُ لَكَ

ख़ुदाया अगर मैं तेरी इताअत करता हूँ तो भी हम्द तेरे लिए है और अगर मासियत करता हूँ तो तेरी हुज्जत

مِنْكَ الرَّوْحُ وَمِنْكَ الْفَرَجُ سُبْحَانَ مَنْ اَنْعَمَ وَشَكَرَ سُبْحَانَ

मुझ पर तमाम होती है। सहूलत, आसानी, आसायश तेरे ही तरफ़ से है। बेनियाज़ है वो जो नेमत भी देता है

مَنْ قَدَّرَ وَغَفَرَ اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتُ عَصَيْتُكَ فَاِنِّي قَدْ اَطَعْتُكَ فِي

और शुक्रिया भी अदा करता है। बेनियाज़ है वो जो हुक्म भी देता है और माफ़ भी करता है। ख़ुदाया अगर

اَحَبِّ الْاَشْيَاءِ اِلَيْكَ وَهُوَ الْاِيمَانُ بِكَ لَمْ اَتَّخِذْ لَكَ وَلَدًا

मैं ने तेरी नाफ़र्मानी करी है तो मैं ने बेहतरीन शै में तेरी इताअत भी करी है जिस का नाम ईमान है के मैं ने

وَلَمْ اَدْعُ لَكَ شَرِيكًا مَنًّا مِنْكَ بِهٖ عَلَيَّ لَا مَنًّا مِنِّي بِهٖ عَلَيْكَ

किसी को तेरा बेटा नहीं बनाया और ना किसी को तेरा शरीक क़रार दिया। ये भी तेरा एहसान मेरे ऊपर

وَقَدْ عَصَيْتُكَ يَا اِلٰهِى عَلٰى غَيْرِ وَجْهِ الْمُكَابَرَةِ وَلَا الْخُرُوجِ عَنْ

है मेरा कोई एहसान तेरे ऊपर नहीं है मगर अफ़सोस के मैं ने तेरी नाफ़र्मानी करी। मगर ये नाफ़र्मानी ग़ुरूर

عُبُودِيَّتِكَ وَلَا الْجُحُودِ لِرُبُوبِيَّتِكَ وَلٰكِنْ اَطَعْتُ هَوَاىَ

की बिना पर या बंदगी छोड़ देने की बिना पर या ख़ुदा के इनकार की बिना पर नहीं है। बात सिर्फ़ ये है के मैं

وَاَزَلَّنِى الشَّيْطَانُ فَلَكَ الْحُجَّةُ عَلَىَّ وَالْبَيَانُ فَاِنْ تُعَذِّبْنِى

ने ख़वा हिशात का इत्तेबा किया और शैतान ने मुझे बहका दिया और तेरी हुज्जत मेरे ऊपर तमाम है। अगर

فَبِذُنُوبِى غَيْرُ ظَالِمٍ لِى وَاِنْ تَغْفِرْ لِى وَتَرْحَمْنِى فَاِنَّكَ جَوَادٌ

तू अज़ाब करेगा तो मेरे गुनाहों का नतीजा होगा, तेरा ज़ुल्म न होगा और अगर तू माफ़ करदेगा और रहम

كَرِيمٌ

करेगा तो तू बेहतरीन करम करनेवाला और बख़्शने वाला है।

और इस के बाद जब तक उसकी साँस वफा करे, पढ़े:

يَا كَرِيمُ يَا كَرِيمُ

ऐ करम करनेवाले, ऐ करम करनेवाले

उस के बाद पढ़े:

يَا آمِنًا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَكُلُّ شَيْءٍ مِنْكَ خَائِفٌ حَذِرٌ اَسْأَلُكَ بِاَمْنِكَ

ऐ वो ख़ुदा जो हर शै से महफ़ूज़ है और हर शै उस से ख़ौफ़ज़दा है। मैं उस ही अमन का वास्ता दे कर और

مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَخَوْفِ كُلِّ شَيْءٍ مِنْكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ

हर चीज़ के ख़ौफ का वास्ता दे कर तुझ से सवाल करता हूँ के मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद

وَاَنْ تُعْطِيَنِي اَمَانًا لِنَفْسِي وَاَهْلِي وَمَالِي وَوَلَدِي وَسَائِرِ مَا اَنْعَمْتَ

(अ.स.) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और मुझ को मेरे नफ़्स, मेरे अहल व औलाद में अमान अता फ़र्मा ताके

بِهِ عَلَيَّ حَتّٰى لَا اَخَافَ وَلَا اَحْذَرَ مِنْ شَيْءٍ اَبَدًا اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

मुझ में भी किसी चीज़ का ख़ौफ व ख़तरा ना रह जाए। तू हर शै पर क़ादिर है और तू ही मेरे लिए काफ़ी

قَدِيرٌ وَحَسْبُنَا اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ يَا كَافِيَ اِبْرَاهِيمَ نُمْرُودَ وَيَا كَافِيَ

है। तू बेहतरीन क़ाबिले एतेमाद है ऐ इब्राहीम को नम्रूद के मुक़ाबले काम आनेवाले और मूसा के लिए

مُوسٰى فِرْعَوْنَ اَسْأَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاَنْ تَكْفِيَنِي

फ़िरऔन के मुक़ाबले में काफ़ी हो जानेवाले। मैं तुझ से सवाल करता हूँ के मुहम्मद (स.अ.व.व.) व

شَرَّ...

आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और मेरे लिए दुश्मन के शर के मुकाबले में काफ़ी होजा।

फुलाँ बिन फुलाँ और फुलाँ बिन फुलाँ की उस शख़्स का नाम ले जिस के शर से डरता है और उसके बाप का नाम ले और ख़ुदा से तलब करे के उस के शर को दूर करे और किफ़ालत करे तो बतहक़ीक़ के ख़ुदा उस के शर से

किफ़ालत करेगा इनशा अल्लाह ताला।
उसके बाद सजदे मे जाए और अपनी हाजत का सवाल और तज़र्रा व ज़ारी करे ख़ुदा वन्दे आलम की जानिब तहक़ीक़ के कोई मर्दे मोमिन और ज़ने मोमिनह नही है जो इस नमाज़ को पढ़े और इस दुआ को ख़ुलूस से पढ़े मगर ये के उस के लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाएंगे उस की हाजत बर आरी के लिए और उस की दुआ क़ुबूल होगी उसी वक़्त और उसी शब मे जो भी उसकी हाजत हो और ये ख़ुदा वन्दे आलम के फ़ज़्ल व इनआम की वजह से होगा हम पर और लोगों पर। लेखक कहता है के शेख़े जलील शेख़ तबरसी रिज़उद्दीन हसन बिन फ़ज़्ल ने भी इस नमाज़ को मकारिमुल अख़लाक़ मे नक़ल किया है और दुआ के शुरू मे कुन्तो के बाद क़द ज़िक्र किया है और अख़ाफ़ा के बाद अहदन है और ।फ़िरऔन अस-अलोका के बाद का इजाफ़ा किया है और बाक़ी उसी तरह है।

ज़ालिम से ख़ौफ की नमाज़

मकारिमुल अख़लाक़ से मनक़ूल है के ग़ुस्ल करे और दो रकत नमाज़ पढ़े और अपने ज़ानु को बरहना करे जा नमाज़ के पास और ख़ुद सौ बार पढ़े:

يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ يَا حَيًّا لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيثُ فَصَلِّ عَلٰى

ऐ हमेशा क़ायम रहनेवाले, ऐ वो ज़ी हयात के जिस के अलावा कोई ख़ुदा नहीं है मैं तेरी रहमत की फ़रयाद करता हूँ इसलिए

مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَأَغِثْنِي السَّاعَةَ السَّاعَةَ

मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा। और इस ही आन मेरी फ़रयाद को पहुंच।

जब इस से फ़ारिग हो तो ये पढ़े:

اَسْأَلُكَ اَللّٰهُمَّ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاَنْ تَلْطُفَ لِي وَاَنْ

ख़ुदाया मेरा सवाल है के मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (स) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा,

تَغْلِبَ لِي وَاَنْ تَمْكُرَ لِي وَاَنْ تَخْدَعَ لِي وَاَنْ تَكِيدَ لِي وَاَنْ تَكْفِيَنِي

मुझ पर महरबानी फ़र्मा, मुझे ग़ल्बा इनायत फ़र्मा, मेरे लिए ख़ामोशी से इंतेज़ाम फ़र्मादे और दुश्मन

مَؤُونَةَ...

से बदला ले ले और मेरे लिए काफ़ी हो जा।

फ़ुलाँ बिन फ़ुलाँ और ये दुआ हज़रत रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) है रोज़े ओहद।

ज़ेहेन की तेज़ी और क़ुव्वते हाफ़ेज़ा के लिए

मकारिमुल अख़लाक़ मे रिवायत हुई है इमाम सा॰दिक और इमाम बाक़र (अ.स.) से के जाफ़रान से पाक तरीन बर्तन पर हम्द, आयत अल कुर्सा, इन्ना अनज़लना, यासीन, वाकेअ, सुरह हश्र व तबारक व कुलहो अल्लाह और दोनो क़ुल औज़ो को लिखे और फिर उन सुरों को आबे ज़मज़म या बारिश के पानी या पाका॰rजा पानी से धोए और उसमें दो मिस्क़ाल कुनदर और दस मिस्क़ाल शकर और दस मिस्क़ाल शहेद डाले और फिर इस को रात भर जेरे आसमान रखे और इस पर लोहा रखे और जब आख़िर शब हो जाए तो दो रकत नमाज़ पढ़े। हर रकत मे हम्द और पच्चास बार क़ुलहो अल्लाह पढ़े और जब फ़ारिग़ हो नमाज़ से तो उस पानी को पिए। ये बेहद मुजर्रब है हाफ़ज़े के लिए इनशाअल्लाह और छटे बाब के आख़िर मे इन्‌ा चीज़ों का बयान आ रहा है जो कसरते हाफ़जा का सबब होती हैं।

गुनाहों की बख़शिश के लिए नमाज़

दो रकत नमाज़ पढ़े। हर रकत मे साठ मरतबा क़ुलहो अल्ला पढ़े और जब

नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाए तो उस के गुन्हा बखशे जाएंगे।

एक और नमाज़

शेख़ तूसी ने मिसबाह मे जुमा के दिन के आमाल मे कहा के रिवायत हुई है अब्दुल्लाह इब्ने मसूद से उन्होने कहा के रसूले ख़ुदा ने इरशाद फ़रमाया के जो शख़्स रोज़े जुमा बाद नमाज़े अस्र दो रकत नमाज़ पढ़े और पहली रकत मे फ़ातेहा, आयत अल कुर्सी, क़ुल औज़ो बे रब्बिल फ़लक़ पच्चीस मरतबा पढ़े और दूसरी रकत मे फ़ातेहा, क़ुलहो अल्लाह और क़ुल औज़ो बे रब्बिन्नास पच्चीस मरतबा पढ़े और जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाए तो पच्चीस मरतबा पढ़े: तो वो दुनिया से न जाएगा मगर ये के ख़ुदा उसे ख़्वाब मे जन्नत को दिखाएगा और वो अपनी जगह जन्नत मे देखेगा।

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

कोई ताक़ात व क़ुव्वत नही सिवाय अल्लाह के बुज़ुर्ग व बाला के।

लेखक कहता है के सय्यद बिन ताऊस ने जमालुल उसबूअ की तेंतीसवी फ़स्ल मे गुनाहों की बख़शिश के लिए नमाज़ नक़्ल की है और फ़रमाया है के ये जलीलुल क़द्र नमाज़ है और अज़ीमुश्शान हामिले इसरारे इलाही जानते हैं और उस के हक़ मे काहेली न होना चाहिए।
जो शख़्स इस का तालिब हो के उसे बजा लाए वो इस किताब की तरफ़ रूजू करे।

नमाज़े वसीयत

हज़रत रसुले खुदा ने इस की वसीयत की है के ये दो रकत है मग़रिब और इशा के दरमियान। पहली रकत मे हम्द और तेराह मरतबा इजा ज़ुलज़ेलत

और दूसरी रकत मे हम्द और पंद्रह मरतबा क़ुल हो अल्लाह पढ़े अगर हर रात बजा लाए तो इस के सवाब को ख़ुदा के अलावा कोई शुमार नही कर सकता।

नमाज़े अफ़ू

दो रकत है हर रकत मे हम्द और एक बार इन्ना अनज़लना पढ़े और क़िरआत के बाद पदंरह बार:

رَبِّ عَفْوَكَ عَفْوَكَ

ऐ मेरे रब मै तुझसे माफ़ी माँगता हूँ तुझसे माफ़ी माँगता हूँ

और रूकू मे दस मरतबा तमाम करे नमाज़ जाफ़र की तरह।
लेखक कहता है के नमाज़े इस्तेग़ासा नमाज़े अफ़ू की तरह है मगर ये के रब्बे अफ़वुक के बजाए असतगफ़ेरूल्लाह कहे:

رَبِّ عَفْوَكَ اَسْتَغْفِرُ اللهَ

ऐ मेरे रब तुझसे माफ़ी माँगता हूँ अल्लाह से माफी मँगता हूँ।

ये नमाज़ रोज़ी मे वुसअत के लिए मुफ़ीद है इनशा अल्लाह।

हफ़्ते के दिनों की नमाज़ें

सनीचर की नमाज़

सय्यद बिन ताऊस ने हज़रत इमाम हसन असकरी (अ.स.) से रिवायत की है फ़रमाया के मै ने अपने आबा की किताबों मे पढ़ा है के जो शख़्स शंबे के दिन चार रकत नमाज़ पढ़े और हर रकत मे हम्द और क़ुलहो अल्लाह और आयत अल कुर्सा पढ़े तो ख़ुदा उस के लिए पैग़मबरों, शहीदां और सालेहीन का दरजा लिखता है और वो बेहतरीन रफ़ीक है।

रविवार की नमाज़

आँहजरत से ये भी मर्वी है के फ़रमाया के जो शख़्स रविवार को चार रकत नमाज़ पढ़े हर रकत मे हम्द के बाद सुरह तबारकल्लज़ी पढ़े तो ख़ुदा उसको जन्नत मे जगह अता करेगा जहाँ भी चाहता होगा। ख़ुदा वन्दे आलम रोज़े क़यामत उस के लिए नूर क़रार देगा जो मौक़ूफ़ को रौशन करेगा के तमाम मख़लूक़ उस पर रश्क करेंगे उस राज़।

सोमवार की नमाज़

उन्ही हज़रत (अ.स.) से मर्वी है जो शख़्स सोमवार को दस रकत नमाज़ पढ़े और हर रकत मे सूरह हम्द एक बार और सूरह अहद दस बार पढ़े तो ख़ुदा वन्दे आलम उसको ऐसी रौशनी देगा जो मैदाने हश्र को रौशन कर देगी।

मंगलवार की नमाज़

उन्ही हज़रत (अ.स.) से मर्वी है जो शख़्स मंगलवार को छ: रकत नमाज़ पढ़े और हर रकत मे हम्द के बाद सुरह बक़रह की आख़री दो आयतें और सूरह ाज़िलज़ाल एक मरतबा पढ़े तो ख़ुदा वन्दे आलम उसके गुनाहों को बख़्श देगा और वो गुनाहों से इसी तरह बाहर आएगा जैसे उसी दिन पैदा हुआ हो।

बुद्धवार की नमाज़

उन्ही हज़रत से मर्वी है के जो शख़्स बुध के दिन चार रकत नमाज़ पढ़े और हर रकत मे हम्द के बाद दस बार सूरह अहद और सूरह इन्ना अनज़लना पढ़े तोæ ख़ुदा क़ुबूल करेगा उसकी तौबा को तमाम गुनाहों से और उसकी शादी करेगा हुरूल अैन से बेहिश्त मे।

गुरूवार की नमाज़

फ़रमाया उन्ही हज़रत ने के जो शख़्स गुरूवार को दस रकत नमाज़ पढ़े और हर रकत मे सूरह हम्द और क़ुलहो वल्लाह दस मरतबा पढ़े तो मलाएका उस से कहते हैं के जो हाजत भी रखते हो मांगो के वो पूरी होगी।

जुमे की नमाज़

ये भी फ़रमाया के जो शख़्स जुमा के दिन चार रकत नमाज़ पढ़े और हर रकत मे हम्द और तबारकल्लज़ी और हा मीम सजदा पढ़े ख़ुदा वन्दे आलम उसको जन्नत मे दाख़िल करेगा और उसकी शिफ़ाअत को उस के धरवालों के हक़ मे क़ुबूल करेगा और उसको फ़िशारे क़ब्र और हौले क़यामत से महफ़ूज़ रखेगा।

रावी ने सवाल किया इमाम से के किस समय इन नमाज़ों को बजा लाया जाए तो फ़रमाया के तुलूए आफ़ताब से ज़वाल के वक़्त के दौरान।

भाग-३

विशेष दुआएं

अमुख दुआओं, तअविज़ात, आलाम व इसतेक़ाम इल्ले आज़ा और बुख़र वग़ैरा के बारे मे

सय्यद बिन ताऊस ने मोहजुद्दावात मे नक़्ल किया है सय्यद बिन अबुल फ़तेह कुम्मी से जो वासित मे थे के मुझको बड़ी बीमारी थी जिसके इलाज से तबीब आजिज़ थे और मेरे वालिद मुझको दारूश शिफ़ा ले गए जहाँ तबीबों को मेरे इलाज के जमा किया उन्होंने ग़ौरो ।फ़िक्र कर के जवाब दिया के इस मर्ज़ का इलाज सिवाए ख़ुदा के किसी के पास नही है मै उनकी बातों से शिकस्ता दिल और ग़म ज़दा हुआ और अपने पिता की किताबों मे से एक किताब उठाई के उसमे से कुछ का पढ़ूँ एक कितान की पुश्त पर लिखा हुआ देखा:

इमाम सादिक़ (अ.स.) से मर्वी है के पैग़मबरे इसलाम ने फ़रमाया जिस शख़्स को मर्ज़ हो तो नमाज़ सुबह के बाद चालीस बार पढ़े। हाथ मर्ज़ की जगह पर मले तो उस से सेहत पाएगा और ख़ुदा उसको शिफ़ा देगा।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ حَسْبُنَا اللهُ

सारी हम्द उस अल्लाह के लिए है जो रब्बुल आलमीन है। वो ही हमारे लिए काफ़ी है और वो ही

وَنِعْمَ الْوَكِيلُ تَبَارَكَ اللهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا

बेहतरीन मुहाफ़ज़ है। बा बरकत है वो ख़ुदा जो बेहतरीन ख़ालिक़ है और ख़ुदा ए आला उल

بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

अज़ीम के अलावा कोई ताक़त और क़ूव्वत नहीं है।

तो मै ने सब्र किया। जब सुबह को नमाज़े वाजिब बजा लाया और चालीस बार इस दुआ को पढ़ा और हाथ उस जगह पर मला तो ख़ुदा ने उस बीमारी को मुझ से दूर कर दिया और मै बैठा था और डरता था के फिर लौट न आए। तीन दिन इस हाल मे था वापस न हुआ इस के बाद वालिद को ख़बर दी इस वाक़े की वो शुक्रे ख़ुदा बाजा लाए और बाज तबीबों से उसको बयान किया। वो तबीब मेरे पास आए और बीमारी को देखा के ख़त्म हो गई थी उसी समय वे मुसलमान हो गए और बेहतरीन इसलाम के मालिक रहे।
शेख़ कफअमी ने मिसबाह मे फ़रमाया है के जब तुम्हे कोई बीमारी हो तो अपने सजदे के मक़ाम पर हाथ मलो और उस को बिमारी की जग्ह पर मलो और सात मरतबा हर वाजिब नमाज़ के बाद पढ़ो:

يَا مَنْ كَبَسَ الْاَرْضَ عَلَى الْمَاءِ وَسَدَّ الْهَوَاءَ بِالسَّمَاءِ وَاخْتَارَ

ऐ वो ख़ुदा जिसने ज़मीन को पानी पर रोका, और आसमानों के ज़रिए हवा को रोक दिया अपने

لِنَفْسِهِ اَحْسَنَ الْاَسْمَاءِ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَافْعَلْ بِي...

लिए बेहतरीन नामों का इन्तेख़ाब किया अब मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर

وَارْزُقْنِي وَعَافِنِي مِنْ...

रहमत नाज़ल फ़र्मा और मेरे मक़ासिद को पूरा फ़र्मा।

फिर अपनी उस जगह का नाम ले जहाँ तकलीफ़ है और सेहेत के लिए दुआ करे।

दुआए आिफ़यत

कफअमी ने मुतहज्जिद से नक़्ल किया है के जो शख़्स तलबे आिफ़यत करे किसी दर्द से तो नमाज़े शब की पहली दो रकत के दूसरे सजदा मे पढ़े:

يَا عَلِيُّ يَا عَظِيمُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيمُ يَا سَمِيعَ الدَّعَوَاتِ يَا مُعْطِيَ

ऐ ख़ुदा ए अली व अज़ीम ऐ रहमान व रहीम, ऐ दुआओं के सुननेवाले नेकियों के अता करनेवाले

الْخَيْرَاتِ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَأَعْطِنِي مِنْ خَيْرِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ مَا

मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और दुनिया व आख़ेरत की

أَنْتَ أَهْلُهُ وَاصْرِفْ عَنِّي مِنْ شَرِّ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ مَا أَنْتَ أَهْلُهُ

वो तमाम नेकियाँ मुझे अता फ़र्मा जिसका तू अहल है और उन तमाम बुराईयों को मुझ से दूर करदे

وَأَذْهِبْ عَنِّي هٰذَا الْوَجَعَ...

जिस तरह तू दूर करने का अहल है। ख़ुसूसियत के साथ मेरी इस बीमारी से मुझे नजात अता फ़र्मा।

फिर बीमारी का नाम ले, फिर कहे।

فَإِنَّهُ قَدْ غَاظَنِي وَأَحْزَنَنِي

तो उसने मुझे ग़ुस्सा दिलाया है और ग़मगीन किया है।

इस दुआ मे लजाजत करे ताके जलदी क़ुबूल हो जाए इन्शाअल्लाह ताला। अद्दतुद्दाई मे इमाम सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के बीमारी मे अपने को जेरे आसमान रख कर हाथ को बुलंद कर के पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَيَّرْتَ اَقْوَامًا فِي كِتَابِكَ فَقُلْتَ: ﴿قُلِ ادْعُوا

ख़ुदाया तू ने अपनी किताब में बहुत ही क़ौमों की सरज़निश करी है के ये कहकर बुलाओ- मेरे

الَّذِينَ زَعَمْتُمْ مِنْ دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ

अलावा जो तुम्हारे औलिया हों के तुम से किसी मुसीबत को दूर नहीं कर सकते न तुम्हारे हालात

عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا﴾ فَيَا مَنْ لَا يَمْلِكُ كَشْفَ ضُرِّي وَلَا

को बदल सकते हैं। ऐ वो ख़ुदा के जिस के अलावा कोई न बुराईयों को दूर कर सकता है और न

تَحْوِيلَهُ عَنِّي اَحَدٌ غَيْرُهُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَاكْشِفْ

हालात बदल सकता है मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा।,

ضُرِّي وَحَوِّلْهُ اِلٰى مَنْ يَدْعُو مَعَكَ اِلٰهًا آخَرَ فَاِنِّي اَشْهَدُ اَنْ

मेरे रंज व ग़म को दूर फ़र्मा और मेरे हालात को बेहतरीन हालात की तरफ़ मोड़ दे इसलिए के मै

لَا اِلٰهَ غَيْرُكَ

इस बात की गवाही देता हूँ के तेरे अलावा कोई दूसरा ख़ुदा नहीं है।

रिवायत है के जिस मोमीन को जो बिमारी हो जाए तो दर्द की जगह हाथ मले और ख़ुलूसे नियत के साथ पढ़े तो हर तरह की बीमारी से नजात पाएगा।

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ

और हम तो क़ुरआन मे वही चीज़ नाज़िल करते हैं जो मोमिनों के लिए शिफ़ा और रहमत है।

الظَّالِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا.

(मगर) नाफ़रमानों को तो घाटे के सिवा कुछ बढ़ाता ही नहीं।

और इसका मिसदाक़ ख़ुद आयत मे है।
नेज मर्ज़ के दूर करने के लिए एक साअ गेहूँ ख़रीदे और पुश्त के बल लेटे और गेहूँ को सीने पर गिराए और पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِیْ اِذَا سَاَلَكَ بِهٖ الْمُضْطَرُّ كَشَفْتَ

ख़ुदाया मैं उस नाम के वसीले से सवाल कर रहा हूँ जिस के वसीले से कोई भी मुज़तर सवाल करता

مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَمَكَّنْتَ لَهٗ فِی الْاَرْضِ وَجَعَلْتَهٗ خَلِيفَتَكَ عَلٰى

है तो तू उस के रंज व ग़म को कम करदेता है, उसे दुनिया में क़ुव्वत व ताक़त अता करता है और

خَلْقِكَ اَنْ تُصَلِّیَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اَهْلِ بَيْتِهٖ وَاَنْ تُعَافِيَنِیْ مِنْ

मख़लूक़ात पर अपना ख़ला०rफा बना देता है। मेरा सवाल ये है के मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले

عِلَّتِی

मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और मुझे इस बीमारी से नजात अता फ़र्मा।

फिर उठे और गेहूँ को अपने अतराफ़ से जमा करे और इस दुआ को पढ़े फिर इस के चार हिस्से करे और हर एक हिस्से को जो एक मद होता है मिसकीन को दे दे और ये दुआ पढ़े इनशा अल्लाह इस मर्ज़ से नजात पाएगा।
अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से मनक़ूल है के मकामे दर्द पर हाथ रखे और तीन बार पढ़े:

اَللّٰهُ اَللّٰهُ رَبِّیْ حَقًّا لَا اُشْرِکُ بِهٖ شَیْئًا اَللّٰهُمَّ اَنْتَ لَهَا وَلِكُلِّ

वो परवरदिगार जो खुदा ए बर हक़ है। मैं किसी को उसका शरीक नहीं क़रार देता। ख़ुदाया तू इस

عَظِيمَةٍ فَفَرِّجْهَا

मुसीबत व आफ़त के लिए काफ़ी है, मुझ से इस मुसीबत को दूर फ़र्मादे।

इमाम सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के हाथ दर्द की जगह पर रखे और बिसमिल्लाह कह कर हाथ उस पर खींचे और सात मरतबा पढ़े:

بِسْمِ اللّٰهِ

अल्लाह के नाम से

हाथ दर्द की जगह रखे और पढ़े:

اَعُوذُ بِعِزَّةِ اللّٰهِ وَاَعُوذُ بِقُدْرَةِ اللّٰهِ وَاَعُوذُ بِجَلَالِ اللّٰهِ وَاَعُوذُ

मैं पनाह मांगता हूँ अल्लाह की इज़्जत अल्लाह की क़ुद्रत और अल्लाह के जलाल और उसकी

بِعَظَمَةِ اللّٰهِ وَاَعُوذُ بِجَمْعِ اللّٰهِ وَاَعُوذُ بِرَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ

अज़मत और उसकी ताक़त की और रसूले अक्रम (स.अ.व.व.) की पनाह और अल्लाह के तमाम

وَآلِهِ وَاَعُوذُ بِاَسْمَاءِ اللّٰهِ مِنْ شَرِّ مَا اَحْذَرُ وَمِنْ شَرِّ مَا اَخَافُ عَلٰى

अस्मा ए हुस्ना की पनाह उन तमाम चीज़ों से जिन का मुझे ख़ौफ है या अपने नफ़्स के लिए कोई

نَفۡسِی

ख़तरा है।

रिवायत हुई है के जब लड़का मरीज़ हो उस की माँ छत पर जाए और मकना सर से उठाले के बाल जेरे आसमान खुल जाएं फिर सजदे मे जाकर पढ़े:

اَللّٰهُمَّ رَبِّ اَنْتَ اَعْطَيْتَنِيهِ وَاَنْتَ وَهَبْتَهُ لِى اَللّٰهُمَّ فَاجْعَلْ

परवरदिगार तू वो है जिस ने ये फर्ज़ंद मुझे इनायत फ़र्माया है और तेरा अतिया है। ख़ुदाया अब एक और

هِبَتَكَ الْيَوْمَ جَدِيدَةً اِنَّكَ قَادِرٌ مُقْتَدِرٌ

अतिया इनायत फ़र्मा दे के इसको सेहत व शिफ़ा अता कर दे इसलिए के तू हर चीज़ पर क़ादिर है।

फिर सजदे से सर उठाए यहाँ तक के लड़का ठीक हो जाए।
शेख़ शहीद ने नक़्ल किया है के जिस को शदीद दर्द हो तो पानी के पयाले पर चालीस मरतबा सूरह हम्द पढ़े फिर उस पानी को गिराए अपने ऊपर और मरा॰rज अपने नज़दीक जमबील रखे जिसमे गेहूँ हों फिर अपने हाथ से वो गेहूँ भिकारी को दे दे और उस से कहे के उस के लिए दुआ करे ताके वो शिफ़ा पाए इनशा अल्लाह।
और मोतबर सनदों के साथ वारिद हुआ है के अपने बिमारों की सदके के ज़ारिए दवा करो।
शेख़ शहीद ने मर्ज़ के दूर करने के लिए नक़्ल किया है के मरा॰rज के दाहिने बाज़ू पर हाथ रखे और सात मरतबा हम्द पढ़े और ये दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اَزِلْ عَنْهُ الْعِلَلَ وَالدَّاءَ وَاَعِدْهُ اِلَى الصِّحَّةِ وَالشِّفَاءِ وَاَمِدَّهُ

परवरदिगार इस मरीज़ की बिमारी को दूर फ़र्मा दे और इस की सेहत व शिफ़ा को पलटा दे और इस की

بِحُسْنِ الْوِقَايَةِ وَرُدَّهُ إِلىٰ حُسْنِ الْعَافِيَةِ وَاجْعَلْ مَا نَالَهُ فِي مَرَضِهِ

इमदाद फ़र्मा बेहतरीन हिफ़ाज़त के ज़रिए और इस को हुस्ने आाफ़ियत अता फ़र्मा उस मर्ज़ में जो इसे

هٰذَا مَادَّةً لِحَيَاتِهِ وَكَفَّارَةً لِسَيِّئَاتِهِ اَللّٰهُمَّ وَصَلِّ عَلىٰ مُحَمَّدٍ وَآلِ

ला-हक़ हो गया है उस मर्ज़ में इसकी ज़िंदगी का सामान क़रार दे दे और उसे उसकी बुराई का कफ़्फ़ारा

مُحَمَّدٍ

बनादे और मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा।

पस अगर अच्छा होने मे असर न करे तो मुकर्रर करे हम्द को सत्तर मरतबा इनशाअल्लाह असर होगा

इमाम बाक़िर (अ.स.) से रिवायत है के जिस शख़्स को सूरह हम्द और कुलहो अल्लाह अच्छा न कर सके कोई दूसरी चीज़ उसको अच्छा न करेगी और ये दोनो सूरे हर बीमारी को दूर करते हैं।

इमाम सादिक़ (अ.स.) से मनक़ूल है के जो मोमिन कोई बीमारी रखता हो वो खुलूस से पढ़े और बीमारी की जगह हाथ फेरे तो ख़ुदा उसको शिफ़ा देगा:

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ

और हम तो क़ुरआन मे वही चीज़ नाज़ल करते हैं जो मोमिनों के लिए शिफ़ा और रहमत है।

इमाम रज़ा (अ.स.) से मर्वी है के तमाम बीमारियों को दूर करने के लिए पढ़े:

يَا مُنْزِلَ الشِّفَاءِ وَمُذْهِبَ الدَّاءِ صَلِّ عَلىٰ مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَأَنْزِلْ عَلىٰ

ऐ शिफ़ा भेजने वाले और दर्द दूर करने वाले रहमत नाज़िल कर मुहम्मद और उनकी आल पर

وَجَعِى الشِّفَاءَ

और मेरे दर्द पर शिफ़ा भेज।

सैय्यद बिन ताऊस ने महेज मे इब्ने अब्बास से रिवायत की है के:
मै अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के पास बैठा था तो एक शख़्स आया जिस का रंग अड़ा हुआ था और कहा ऐ अमीरल मोमिनीन (अ.स.) मै हमेशाँ बीमार रहता हूँ और बराबर दर्द रहता है। ऐसी दुआ तालीम फ़रमाईए के मै उस से मदद हासिल करूँ। हज़रत ने फ़रमाया के मै तुम को वो दुआ बताता हूँ जिसे जिब्रईले अमीन ने पैग़मबरे इसलाम को बताया था जब इमाम हसन व हुसैन (अ.स.) बिमार थे और वो दुआ ये है:
सैय्यद बिन ताऊस ने महेज मे इब्ने अब्बास से रिवायत की है के:
मै अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) के पास बैठा था तो एक शख़्स आया जिस का रंग अड़ा हुआ था और कहा ऐ अमीरल मोमिनीन (अ.स.) मै हमेशाँ बीमार रहता हूँ और बराबर दर्द रहता है। ऐसी दुआ तालीम फ़रमाईए के मै उस से मदद हासिल करूँ। हज़रत ने फ़रमाया के मै तुम को वो दुआ बताता हूँ जिसे जिब्रईले अमीन ने पैग़मबरे इसलाम को बताया था जब इमाम हसन व हुसैन (अ.स.) बिमार थे और वो दुआ ये है:

اِلٰهِى كُلَّمَا اَنْعَمْتَ عَلَىَّ نِعْمَةً قَلَّ لَكَ عِنْدَهَا شُكْرِى وَكُلَّمَا

ख़ुदाया जब भी तू कोई नेमत अता फ़र्माता है तो मेरा शुक्र कम हो जाता है और जब तू किसी बला में

ابْتَلَيْتَنِى بِبَلِيَّةٍ قَلَّ لَكَ عِنْدَهَا صَبْرِى فَيَا مَنْ قَلَّ شُكْرِى عِنْدَ

मुबतेला करता है तो मेरा सब्र कम हो जाता है। ऐ वो परवरदिगार जिस की नेमत के मुक़ाबले में मेरा

نِعَمِهِ فَلَمْ يَحْرِمْنِى وَيَا مَنْ قَلَّ صَبْرِى عِنْدَ بَلاۤئِهِ فَلَمْ يَخْذُلْنِى وَيَا

शुक्र कम था मगर उसने महरूम नहीं किया। जिसकी बलाओं में मेरा सब्र कम था मगर उसने मुझे

مَنْ رَآنِي عَلَى الْمَعَاصِي فَلَمْ يَفْضَحْنِي وَيَا مَنْ رَآنِي عَلَى الْخَطَايَا فَلَمْ

नज़र अंदाज़ नहीं किया। उसने मुझे बुराई करते देखा मगर रूस्वा नहीं किया। ख़ता-ओं में मुबतेला

يُعَاقِبْنِي عَلَيْهَا صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاغْفِرْ لِي ذَنْبِي وَاشْفِنِي

पाया मगर इताब नहीं किया। ख़ुदाया मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल

مِنْ مَرَضِي إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

फ़र्मा। मेरे गुनाहों को माफ़ फ़र्मा और मुझे इस मर्ज़ से शिफ़ा अता फ़र्मा के तू हर शै पर क़ादिर है।

इब्ने अब्बास ने कहा के मै ने उस शख़्स को एक साल के बाद देखा के उस का रूख ठिक और लाल है और कहा के मै ने किसी दर्द मे नही पढ़ा इस दुआ को मगर ये के शिफ़ा मिली और मै दाख़ल नही हुआ किसी बादशाह के पास मगर ये के ख़ुदा ने उस के शर को मुझ से दूर किया।
मनक़ूल है के नज्जाशी को इस के बाप से मीरास मे एक टोपी मिली थी। चार सौ सल से वो टोपी जिस दर्द मे उस पर रखी जाती थी वो ख़त्म हो जाता था तो उस टोपी को फाडा ताके देखे के उस मे क्या है। उस मे ये दुआ लिखी थी:

بِسْمِ اللهِ الْمَلِكِ الْحَقِّ الْمُبِينِ شَهِدَ اللهُ أَنَّهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ

उस ख़ुदा के नाम जो बादशाहे बरहक़ है और ख़ुद इस बात की गवाही देता है के उसके अलावा

وَالْمَلَائِكَةُ وَأُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ

कोई ख़ुदा नहीं है। मलायका भी गवाह हैं और साहिबाने इल्म भी उसके अद्ल के गवाह हैं।

الْحَكِيمُ اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللهِ الاِسْلاَمُ لِلّٰهِ نُورٌ وَحِكْمَةٌ وَحَوْلٌ

उसके अलावा कोई ख़ुदा नहीं। दीन अल्लाह के नज़दीक सिर्फ़ इसलाम है। अल्लाह ही के लिए नूर

وَقُوَّةٌوَقُدْرَةٌوَسُلْطَانٌ وَبُرْهَانٌ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ آدَمُ صَفِيُّ اللهِ لَا اِلٰهَ

है, हिकमत है, क़ुव्वत है, ताक़त है, क़ुद्रत है, सलतनत है और हर बात है। उसके अलावा कोई

اِلَّا اللهُ اِبْرَاهِيمُ خَلِيلُ اللهِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مُوسٰى كَلِيمُ اللهِ لَا اِلٰهَ

ख़ुदा नहीं। आदम उसके मुंतिख़ब हैं। वो ख़ुदाए वहदहू लाशरीक है। इब्राहीम उसके ख़लील हैं।

اِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ الْعَرَبِيُّ رَسُولُ اللهِ وَحَبِيبُهُ وَخِيَرَتُهُ مِنْ خَلْقِهِ

वो अकेला ख़ुदा है और मूसा उसके कलीम हैं। वो ख़ुदा ए ला शरीक़ है और मुहम्मदे अरबी (स)

اُسْكُنْ يَا جَمِيعَ الاَوْجَاعِ وَالْاَسْقَامِ وَالْاَمْرَاضِ وَجَمِيعَ الْعِلَلِ

उसके रसूल, हबीब और उस की मख़लूकात में मुंतिख़ब हैं। ऐ बीमारियों! ऐ दर्द व रंज व हम अब

وَجَمِيعَ الْحُمَيَّاتِ سَكَّنْتُكَ بِالَّذِى سَكَنَ لَهُ مَا فِى اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ

सब साकिन हो जाओ इसलिए के हम ने उसको सहारा बनाया जिस के लिए ज़मीन व आसमान का

وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ وَصَلَّى اللهُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهِ مُحَمَّدٍ وَآلِهِ

सुकून है। जो हर एक की सुननेवाला है और हर एक के हाले दिल को जाननेवाल है। अल्लाह की

اَجْمَعِيْنَ

बेहतरीन मख़लूकात मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल हो।

मकारिमुल अख़लाक़ मे है के नज्जाशी बादशाह को सद्दाअ (सरदर्द) का मर्ज़ था। उसने अपनी बीमारी के बारे मे रसूले ख़ुदा को लिखा तो आँहज़रत ने ये हिर्ज़ उस के लिए भेजा। उसने उसको अपनी टोपी मे रख लिया तो उस का दर्द ख़त्म हो गया।
वो हिर्ज़ ये है:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِينُ شَهِدَ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही जो

اللّٰهُ اَنَّهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَالْمَلَائِكَةُ وَاُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ لَا اِلٰهَ

बादशाह नुमायाँ सच है अल्लाह गवाही देता है के उसके अलावा कोई ख़ुदा नही है और गवाही देते

اِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ لِلّٰهِ نُورٌ وَحِكْمَةٌ وَعِزٌّ وَقُوَّةٌ وَبُرْهَانٌ وَقُدْرَةٌ

हैं मलाएका और जिसके पास इल्म है। जिसने अद्ल क़ायम किया है। नही है कोई माबूद सिवाए

وَسُلْطَانٌ وَرَحْمَةٌ يَا مَنْ لَا يَنَامُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اِبْرَاهِيمُ خَلِيلُ اللّٰهِ لَا

उसके जो ताक़तवर और दाना है अल्लाह ही के लिए नूर व हिकमत है, इज़्ज़त व क़ूव्वत, बुरहान व

اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُوسٰى كَلِيمُ اللّٰهِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ عِيسٰى رُوحُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهُ

क़ुद्रत, सलतनत व रहमत है। ऐ वो ख़ुदा जिसे नींद नहीं आती है। वो अकेला है। इब्राहीम उसका

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللّٰهِ وَصَفِيُّهُ وَصِفْوَتُهُ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ

ख़लील, मूसा उसका कलीम, ईसा उसका कलेमा और मुहम्मदे मुस्तफ़ा (स) उसके मुंतिख़ब बन्दे

وَسَلَّمَ اُسْكُنْ سَكَّنْتُكَ بِمَنْ يَسْكُنُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوَاتِ وَ الْاَرْضِ

हैं। ऐ बीमारी ठहर जा के मैं ने उसका सहारा लिया है जिस के लिए आसमान व ज़मीन का इख़्तेयार

وَبِمَنْ سَكَنَ لَهٗ مَا فِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ فَسَخَّرْنَا

और जिस के हुक्म से रात व दिन का क़रार है। वो ख़ुदा ए समी व अलीम है हवा को मुसख़्ख़र कर

لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِاَمْرِهِ رُخَاءً حَيْثُ اَصَابَ وَالشَّيَاطِيْنَ كُلَّ بَنَّاءٍ

दिया है सुलैमान के लिए जिधर चाहें उसका रूख़ मोड़ दें और सारे शयातीन उनके लिए मुसख़्ख़र

وَغَوَّاصٍ اَلَا اِلَى اللهِ تَصِيرُ الْاُمُورُ

कर दिए गए। हर अम्र की बाज़गशत ख़ुदा की तरफ़ है।

सरदर्द की दुआ

हज़रत बाक़िरूल उलूम (अ.स.) से मर्वी है के सर के दर्द से सुकून के लिए सर का मसह करे और सात मरतबा कहे:

اَعُوذُ بِاللهِ الَّذِىْ سَكَنَ لَهٗ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَا فِي السَّمَاوَاتِ وَ

मै पनाह चाहता हूँ अल्लाह की जिसकी वजह से ठहरे हुए हैं जो भी दरया मे या ख़ुशकी मे हैं और

الْاَرْضِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

जो भी आसमानो और ज़मीन पर हैं और वो सब कुछ सुननेवाला सब जानने वाला है।

दुआ कान के दर्द के लिए

ये दुआ भी हज़रत सादिक़ (अ.स.) से मर्वी है सात मरतबा पढ़ना। उन्ही हज़रत से वारिद है के बहुत पुराने पनीर को थड़ा सा ले ले और घोंट कर दूध मिला दे और आग पर गरम कर के पिघला दे और चन्द क़तरे कान मे डाले जिस मे दर्द होता हो।

सर के दर्द के लिए

नेज़ सर के दर्द के लिए पानी वाले पयाले पर पढ़े, फिर पी ले उसको:

اَوَلَمْ يَرَ الَّذِينَ كَفَرُوا اَنَّ السَّمَاوَاتِ وَ الْاَرْضَ كَانَتَا

जो लोग काफ़र हो बैठे क्या उन लोगों ने इस बात पर ग़ौर नही किया के आसमान और ज़मीन

رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ اَفَلَا

दोनो बंद थे तो हमने दोनो को खोल दिया और हम ही ने हर जानदार चीज़ को पानी से पैदा किया

يُؤْمِنُونَ.

तो क्या इस पर भी ये लोग ईमान न लाएँगे?

रिवायत है के जब कसालत या सरदर्द रसूले ख़ुदा को आरिज़ होता था तो वो हाथ को खोलते थे और फ़ातेहा और मअवज़तैन पढ़ते थे और चेहरे पर हाथ फेरते थे तो वो दर्द ख़त्म हो जाता था और सरदर्द दूर करने के लिए जिसे दर्द हो उसके सर पर हाथ फैरे और पढ़े:

إِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمَاوَاتِ وَ الْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ

बेशक ख़ुदा ही सारे आसमान और ज़मीन अपनी जगह से हट जाने से रोके हुए है और अगर यह अपनी

أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِنْ بَعْدِهِ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا

जगह से हट जाएँ तो फिर उसके सिवा उन्हें कोई रोक नही सकता। बेशक वो बड़ा बुर्दबार बख़्शनेवाला है।

रबीऊल अबरार से मनक़ूल है के:
मामून को तरतुस मे सरदर्द का मर्ज़ हुआ और किसी तरह इलाज न हो पा रहा था तो कैसरे रूम ने एक टोपी उस के लिए भेजी और लिखा के मुझे तुम्हारे सरदर्द का पता चला ये टोपी मै भेज रहा हूँ। इस को सर पर रखो ताके दर्द ख़त्म हो जाए। मामुन डरा के कहांr इस मे जहेर न हो तो
उस्ने हुक्म दिया के इस के लाने वाले के सर पर रख जाए, लोगो ने रखा और कोई नूक़सान नही हुआ फिर उसने हुकुम दिया के किसी दूसरे सरदर्द वाले के सर पर रखा जाए लोगो ने रखा। दर्द ख़त्म होगया तब मामून ने उस टोपी को अपने सर पर रखा, दर्द ख़त्म हो गया। उसे ताज्जुब हुआ। उसको फाड कर देखा तो उस मे लिख था:
रबीऊल अबरार से मनक़ूल है के:
मामून को तरतुस मे सरदर्द का मर्ज़ हुआ और किसी तरह इलाज न हो पा रहा था तो कैसरे रूम ने एक टोपी उस के लिए भेजी और लिखा के मुझे तुम्हारे सरदर्द का पता चला ये टोपी मै भेज रहा हूँ। इस को सर पर रखो ताके दर्द ख़त्म हो जाए। मामुन डरा के कहांr इस मे जहेर न हो तो
उस्ने हुक्म दिया के इस के लाने वाले के सर पर रख जाए, लोगो ने रखा और कोई नूक़सान नही हुआ फिर उसने हुकुम दिया के किसी दूसरे सरदर्द वाले के सर पर रखा जाए लोगो ने रखा। दर्द ख़त्म होगया तब मामून ने उस टोपी को अपने सर पर रखा, दर्द ख़त्म हो गया। उसे ताज्जुब हुआ। उसको फाड कर देखा तो उस मे लिख था:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ كَمْ مِنْ نِعْمَةٍ لِلّٰهِ فِي عِرْقٍ سَاكِنٍ حم

ख़ुदा के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है। कितनी नेमतें हैं अल्लाह की जो साकिन

عسق لَا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُونَ مِنْ كَلَامِ الرَّحْمٰنِ خَمَدَتِ

रगां मे पाई जाती हैं। हा-मीम-ऐन-सीन क़ाफ ये अल्लाह के कलाम हैं जिसके तुफ़ैल में आग बुझ

النِّيرَانُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ وَجَالَ نَفْعُ الدَّوَاءِ فِيكَ كَمَا

गई। और कोई ताक़त अल्लाह के अलावा नहीं है। दवा का फ़ायदा उस अंदाज़ से होगा जिस तरह

يَجُولُ مَاءُ الرَّبِيعِ فِي الْغُصْنِ

बहार का पानी शाख़ों पर असर अंदाज़ होता है।

दर्दे शक़ीक़ा का तावीज़

हाथ दर्द की जगह रखे और तीन बार पढ़े:

يَا ظَاهِرًا مَوْجُودًا وَيَا بَاطِنًا غَيْرَ مَفْقُودٍ اُرْدُدْ عَلٰى عَبْدِكَ الضَّعِيفِ

ऐ वो ख़ुदा जिस का वजूद ज़ाहिर है और वो बातिन हो कर भी गुम नहीं होता। अपने बन्दा ए

اَيَادِيكَ الْجَمِيلَةَ عِنْدَهُ وَاَذْهِبْ عَنْهُ مَا بِهِ مِنْ اَذًى اِنَّكَ رَحِيمٌ

ज़ईफ पर अपनी नेमतें पल्टा दे और इस अज़ीयत को उस से दूर करदे तू साहिबे रहम और साहिबे

قَدِيرٌ

क़ुद्रत है।

बहरे पन का तावीज़

हज़रत बाक़िरूल उलूम (अ.स.) से वारिद हुआ है के हाथ उस पर रखे और पढ़े, आख़िर सुरह तक।

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْآنَ عَلٰى جَبَلٍ...

अगर हमने इस क़ुरआन को पहाड़ पर उतारा होता...

मूँह मे दर्द का तावीज़

हज़रत सादिक़ (अ.स.) से मर्वी है के हाथ उस पर रखे और पढ़े, इनशा अल्लाह शिफ़ा पाएगा:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ

ख़ुदा के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है। उस ख़ुदा के नाम का सहारा जिस ख़ुदा के नाम से

دَاءٌ اَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ الَّتِى لَا يَضُرُّ مَعَهَا شَىْءٌ قُدُّوسٌ

कोई दर्द व तकला◌ाfफ नहीं पहुँचा सकता। मैं खुदा के उन कलेमात की पनाह चाहता हूँ जिन के साथ कोई

قُدُّوسٌ قُدُّوسٌ اَسْاَلُكَ يَا رَبِّ بِاسْمِكَ الطَّاهِرِ الْمُقَدَّسِ

चीज़ नुक़सान नहीं पहुँचा सकती। वो ख़ुदाए पाकीज़ा सिफ़ात ख़ुदाए क़ुद्दूस है परवरदिगार मैं तेरे उस नाम

الْمُبَارَكِ الَّذِىْ مَنْ سَاَلَكَ بِهِ اَعْطَيْتَهُ وَمَنْ دَعَاكَ بِهِ

के सहारे सवाल करता हूँ जो पाकीज़ा है, मुक़द्दस है, मुबारक है। जिस के ज़रिए जब भी किसी ने सवाल

اَجَبْتَهُ اَسْاَلُكَ يَا اللّٰهُ يَا اللّٰهُ يَا اللّٰهُ اَنْ تُصَلِّىَ عَلٰى مُحَمَّدٍ النَّبِىِّ

किया तो उन्हें अता कर दिया और जब भी किसी ने दुआ करी तू ने क़ुबूल कर लिया। ऐ मेरे परवरदिगार

وَاَهْلِ بَيْتِهِ وَاَنْ تُعَافِيَنِى مِمَّا اَجِدُ فِى فَمِى وَفِى رَاسِى وَفِى سَمْعِى

मेरा सवाल ये है के मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और मुझे सेहत

وَفِى بَصَرِى وَفِى بَطْنِى وَفِى ظَهْرِى وَفِى يَدِى وَفِى رِجْلِى وَفِى

व आाफ़ियत अता फ़र्मा। इस तकलीफ़ से जो मेरे मूहँ में, सर में, कान में और मेरी आँख में, मेरे शिकम

جَوَارِحِى كُلِّهَا

में, मेरे पुश्त में, मेरे पैर में, मेरे हाथ में या मेरे आज़ा व ज्वार में पाई जाती है।

दॉत के दर्द का तावीज़

हज़रत सादिक़ (अ.स.) से मर्वी है के उस पर हाथ रखने के बाद हम्द व तौहीद और क़द्र और ये आयत पढ़े:

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَهِىَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ صُنْعَ اللهِ الَّذِى

और तुम पहाड़ों को देख कर उन्हें मज़बूत जमे हुए समझते हो हालाँकि यह क़यामत के दिन बादलों की तरह उड़े-उड़े फिरेंगे

اَتْقَنَ كُلَّ شَىْءٍ اِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ

(ये भी) खुदा की कारीगरी है जिसने हर चीज़ को ख़ूब मज़बूत बनाया है। बेशक जो तुम करते हो उससे वो ख़ूब वाक़िफ़ है।

अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से मर्वी है के हाथ सजदेगाह पर खींचे फिर दर्द वाले दाँत को छुए और पढ़े:

بِسْمِ اللهِ وَالشَّافِى اللهُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ الْعَلِىِّ الْعَظِيمِ

खुदा के नाम से। और शिफ़ा देनेवाला अल्लाह है। कोई ताक़ात व क़ुव्वत नही सिवाय अल्लाहे बुज़ुर्ग व बाला के।

मुजर्रब तावीज़ दाँत के दर्द के लिए

हम्द और अहद पढ़े और हर सूरह के साथ बिसमिल्लाह पढ़े:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है।

क़ुलहो वल्लाह के बाद पढ़े:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُوَ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है। अल्लाह ही के लिए शब व रोज़ साकिन हैं। वो

السَّمِيعُ الْعَلِيمُ قُلْنَا يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ

ख़ुदाए समी व अलीम है। उसका हुक्म है ऐ आग सर्द हो जा और इब्राहीम के लिए सलामती बन जा। लोगों

وَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَخْسَرِينَ نُودِيَ أَنْ بُورِكَ مَنْ فِي

ने उन के लिए मक्र करना चाहा अल्लाह ने उनको ख़सारेवाला बना दिया और आवाज़ दी: मुबारक है जो

النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا وَسُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

आग मे और उसके अतराफ़ में है। और अल्लाह तआला पाक है पूरी कायनात का मालिक।

फिर ये दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ يَا كَافِيًا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَلَا يَكْفِي مِنْكَ شَيْءٌ اِكْفِ عَبْدَكَ

ऐ अल्लाह ऐ हर चीज़ के लिए बचाने वाले, जब के तुझ से कोई बचा नही सकता अपने बंदे और

وَابْنَ اَمَتِكَ مِنْ شَرِّ مَا يَخَافُ وَيَحْذَرُ وَمِنْ شَرِّ الْوَجَعِ الَّذِيْ يَشْكُوهُ

अपनी कना◌rज के बेटे को बचा ले उस के शर से जिसका उसे ङर और अंदेशा है। और उस दर्द

اِلَيْكَ

के शर से जिकी तुझसे शिकायत कर रहा है।

रिवायत है के छुरी या खजूर की पत्ती ले और दर्द वाली जानिब मले और पढ़े सात बार:

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ بِسْمِ اللهِ وَبِاللهِ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللهِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है। अल्लाह के नाम से व अल्लाह से

وَاِبْرَاهِيمُ خَلِيلُ اللهِ اُسْكُنْ بِالَّذِي سَكَنَ لَهُ مَا فِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ

मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और इब्राहीम अल्लाह के मुख़लिस बंदे। रूक जा उसके नाम से जिस

بِاِذْنِهِ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

से रूके हैं जो रात और दिन मे उसकी आज्ञा से और वो हर चीज़ पर क़ादिर है।

ये भी रिवायत है के लकड़ी या लोहा दर्द वाले दाँत पर रखे और उस को अपनी तरफ़ खीचे सात बार और पढ़े:

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ الْعَجَبُ كُلُّ الْعَجَبِ دُودَةٌ تَكُونُ فِي

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है। अजब और मुकम्मल अजब कीड़ा दहन के अंदर

الْفَمِ تَاكُلُ الْعَظْمَ وَتُنْزِلُ الدَّمَ اَنَا الرَّاقِي وَاللهُ الشَّافِي وَالْكَافِي

पैदा हो जाए जो हड्डी खा जाए, ख़ून बहा दे जब के ख़ुदाए काफ़ी व शाफ़ी मौजूद है जिस के अलावा कोई ख़ुदा

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ (وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا

नहीं। सारी हम्द अल्लाह के लिए जो आलमीन का रब है। और जब तुमने एक शख़्स को मार डाला और तुम मे

فَادَّارَاتُمْ فِيهَا وَاللهُ مُخْرِجٌ مَا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ. فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ

उसकी बाबत फूट पड़ गई। कि एक दूसरे को क़ातिल बताने लगे और जो तुम छिपाते थे ख़ुदा को उसका ज़ाहिर

بِبَعْضِهَا كَذٰلِكَ يُحْيِي اللهُ الْمَوْتٰى وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ

करना मंज़ूर था। पस हमने कहा कि उस गाय का कोई टुकड़ा लेकर इस (की लाश) पर मारो यूँ ख़ुदा मुर्दे को

تَعْقِلُونَ)

ज़िन्दा करता है और तुमको अपनी क़ुदरत की निशानियाँ दिखा देता है ताकि तुम समझो।

सात मरतबा इसको बजा लाए:

दर्दे सिने का तावीज़

रिवायत है के आयत: और जब तुमने एक शख़्स को मार डाला... की तिलावत करे और हदीस मे है के क़ुआर्न से शिफ़ा तलब करे क्योंके ख़ुदा ने फ़रमाया है: लोगों तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से नसीहत (किताबे ख़ुदा)

आ चुकी और जो अमरज़ (शिर्क वग़ैरा) दिल मे हैं उनकी दवा, और ईमानदारों के लिए हिदायत और रहमत।

खाँसी के लिए जामेअ दुआ

वारिद हुई है, ये दुआ तुलानी है तालीब लोग इस के लिए उस के माखज बेहार से रूजू करें।

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ رَجَائِیْ وَاَنْتَ ثِقَتِیْ وَعِمَادِیْ...

ऐ अल्लाह तू मेरी उम्मीद, भरोसा व सहारा है...

पेट के दर्द का तावीज़

रसूले ख़ुदा से मर्वी है के आबे गर्म के साथ शहेद का शरबत पिए और तावीज़ करे उसको फ़ातेहल किताब के साथ सात मरतबा।
नेज़ अमीरल मोमिनीन (अ.स.) से मर्वी है के गर्म पानी पिए और कहे:

یَا اللّٰہُ یَا اللّٰہُ یَا اللّٰہُ یَا رَحْمٰنُ یَا رَحِیْمُ یَا رَبَّ الْاَرْبَابِ یَا اِلٰہَ الْاٰلِھَةِ یَا

ऐ अल्लाह, ऐ अल्लाह, ऐ अल्लाह ऐ रहमान ऐ रहीम ऐ रब्बुल अरबाब, ऐ तमाम माबूदों के माबूद,

مَلِكَ الْمُلُوْكِ یَا سَیِّدَ السَّادَةِ اِشْفِنِیْ بِشِفَائِكَ مِنْ كُلِّ دَاءٍ وَسُقْمٍ

तमाम बादशाहों के बादशाह, तमाम सरदारों के सरदार, मुझे शिफ़ा देदे हर मर्ज़ से हर बीमारी से

فَاِنِّیْ عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدَیْكَ اَتَقَلَّبُ فِیْ قَبْضَتِكَ

के मैं तेरा बन्दा और तेरे बन्दों का फ़र्जंद हूँ और हर हाल में तेरे ही क़ब्ज़े क़ुद्रत में हूँ।

नेज़ दर्दे शिकम वग़ैरह के लिए हाथ उस पर रखे और सात बार पढ़े:

أَعُوذُ بِعِزَّةِ اللهِ وَجَلَالِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ

मै अल्लाह की ताक़त और उसके जलाल मे पनाह लेता हूँ उसके शर से जो मै महसूस करता हूँ।

और दाहिने हाथ को दर्द की जगह पर रखे और तीन बार बिसमिल्लाह कहे:

بِسْمِ اللهِ

अल्लाह के नाम से

कौलंज के दर्द का तावीज़

लकड़ी के तख़्त या चमड़े पर हम्द, तौहीद और दोनों क़ुल औज़ो को लिखे और उन के नीचे लिखे:

أَعُوذُ بِوَجْهِ اللهِ الْعَظِيمِ وَبِعِزَّتِهِ الَّتِي لَا تُرَامُ وَبِقُدْرَتِهِ الَّتِي لَا

पनाह चाहता हूँ ख़ुदा की ज़ाते अज़ीम से और उसकी उस इज़्ज़त की जहाँ तक किसी की

يَمْتَنِعُ مِنْهَا شَيْءٌ مِنْ شَرِّ هٰذَا الْوَجَعِ وَمِنْ شَرِّ مَا فِيهِ وَمِنْ شَرِّ مَا

पहुँच नहीं है उस क़ुद्रत की जिस से कोई पहुँच नहीं सकता है उस मर्ज़ के मुक़ाबले में और उस

أَجِدُ مِنْهُ

तकलीफ़ के मुक़ाबले में और उसके तमाम असरातके मुक़ाबले में।

फिर उस को बारिश के पानी से धोकर नाशता और सोने के समय पी ले इनशाअल्लह बरकत वाला और मुफ़ीद है।
रिवायत है के एक शख़्स रसुले ख़ुदा की ख़िदमत मे आया और अपने भाई के लिए दर्दे शिकम की शिकायत की हज़रत ने फ़रमाया के अपने भाई को हुक्म दो शहेद का शरबत गर्म पानी के साथ पीए। वो शख़्स गया और दूसरे दिन आँहजरत की ख़िदमत मे आया और अर्ज़ किया के इस शरबत को उसे पिलाया और फ़ाएदा नही हुआ। हज़रत ने फ़रमाया जाओ उस को शहेद का शरबत दो और उसको तावीज़ करो सात बार सूरह हम्द से तो जब वो शख़्स गया तो फ़रमाया हज़रत ने अमीरल मामिनीन (अ.स.) से ऐ अली इस शख़्स का भाई मुनाफ़िक़ है इसी वजेह से इस शरबत ने इस को फ़ाएदा नही किया।

सालूल का तावीज़

ये एक क़िस्म की फुनसी है जो अक्सर हाथ मे होती है। वारिद हुआ है के हर एक के लिए सात दाने जव ले और हर एक दाने पर सूरह वाकेअ शुरू की छः अयतें और सात बार:

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا. فَيَذَرُهَا قَاعًا

और वो तुमसे पहाड़ के बारे मे पूछते हैं तो कह दो मेरा रब उनको उखाड़ के रेज़ा रेज़ा करदेगा।

صَفْصَفًا. لَا تَرَىٰ فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا.

उनको मैदानों की तरह छोड़ देगा। कोई भी ऊँच नीच दिखाई नही देगी।

फिर एक एक दाने को ले और फुनसी पर मले फिर उसको कपड़े मे बाँध कर पत्थर बाँधकर कूंवें मे डाल दे। और बाज ने कहा है के मुनासिब ये है के ये अमल महीने के आख़िर मे हो जिस मे चाँद छुपा हुआ हो। ये भी मनक़ूल है

के फुनसी वाला नमक का टुकडा ले कर इस मस्से की कील पर मले, और तीन मरतबा उस पर पढ़े आख़िर सुरह हश्र तक।

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْآنَ عَلٰى جَبَلٍ...

अगर हमने इस क़ुरआन को पहाड़ पर उतारा होता...

उसको तन्नूर मे डाले और जलदी से गुज़र जाए इन्शाअल्लाह दूर हो जाएगा। खज़ाएन मे है के नूराह का मिलना फुनसी पर उस को दूर करेगा।

हर तरह के फोड़ों का तावीज़

रिवायत है के जब वज़ू कर ले फ़रीजा नमाज़ के लिए तो वरम पर नमाज़ के पहले और बाद पढ़े आख़िर सूरह तक और तदब्बुर करे उस के पढ़ने के समय इनशाअल्लह वरम ख़त्म हो जाएगा।

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْآنَ عَلٰى جَبَلٍ...

अगर हमने इस क़ुरआन को पहाड़ पर उतारा होता...

पैदाईश की दुश्वारी को दूर करने के लिए

किसी चमड़े पर ये लिखे, उसको औरत की दाहेनी रान पर बाँध दे और जब बच्चा पैदा हो जाए उसको खोल दे।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है। जिस दिन ये लोग उस क़यामत को

لَمْ يَلْبَثُوْا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْا

देखेंगे जिसका उनसे वादा किया जाता है तो ऐसा होगा गोया ये सारे दिन मे एक घड़ी भर रहे जिस

اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحَاهَا اِذْ قَالَتِ امْرَاَةُ عِمْرَانَ رَبِّ اِنِّي نَذَرْتُ

दिन ये लोग उस क़यामत को देखेंगे तो समझेंगे कि दुनिया बस एक शाम या सुबह ठहरे थे। जब

لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيعُ

इम्रान की बीवी ने कहा: मेरे खुदा मरे पेट मे जो बच्चा है उसको मै तेरी नज़र करती हूँ तू मेरी तरफ़

الْعَلِيمُ

से क़ुबूल करना। तू बेशक बड़ा सुननेवाला और जानने वाला है।

और ये भी रिवायत है के उस पर पढ़े:

فَاَجَاءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ قَالَتْ يَا لَيْتَنِي مِتُّ قَبْلَ

तो हमल का दर्द उन्हें एक ख़जूर के जड़ मे ले आया और बेकसी मे शर्म से कहने लगीं काश मै

هٰذَا وَ كُنْتُ نَسْيًا مَنْسِيًّا فَنَادَاهَا مِنْ تَحْتِهَا اَلَا تَحْزَنِي قَدْ جَعَلَ

इससे पहले मर जाती और बिल्कुल भूली बिसरी हो जाती तब जिब्रईल ने मरयम के बाएँ तरफ़

رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا وَهُزِّي اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسَاقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا

से आवाज़ दी कि तुम कुड़ो नही देखो तो तुम्हारे रब ने तुम्हारे नीचे एक चश्मा जारी कर दिया?

جَنِيًّا

और खजूर की जड़ अपनी तरफ़ हिलाओ तुम पर पक्के ताज़ा खजूर गिरेंगे।

फिर बुलंद आवाज मे पढ़े:

(وَاللهُ اَخْرَجَكُمْ مِنْ بُطُونِ اُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُونَ شَيْئًا وَجَعَلَ

और ख़ुदा ही ने तुम्हें तुम्हारी माँओं के पेट से निकाला (जब) तुम बिल्कुल नासमझ थे और तुम

لَكُمُ السَّمْعَ وَ الْاَبْصَارَ وَ الْاَفْئِدَةَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ.) كَذٰلِكَ

को कान दिए और आँख (अता की) दिल (दिया) ताकि तुम शुक्र करो। तो बाहर आ जा ऐ दर्द।

اُخْرُجْ اَيُّهَا الطَّلْقُ اُخْرُجْ بِاِذْنِ اللهِ

बाहर आ जा अल्लाह की अज्ञा से।

हज़रत सादिक़ (अ.स.) से रिवायत है के विलादत की आसानी के लिए लिखे चमड़े या कागज़ पर:

اَللّٰهُمَّ فَارِجَ الْهَمِّ وَكَاشِفَ الْغَمِّ وَرَحْمٰنَ الدُّنْيَا وَالاٰخِرَةِ

ऐ हम व ग़म के दूर करनेवाले दुनिया व आख़ेरत में रहम व करम करनेवाले इस औरत पर

وَرَحِيمَهُمَا ارْحَمْ...

महरबानी फ़र्मा

यहाँ पर औरत और उसकी माँ का नाम ले:

رَحْمَةً تُغْنِيهَا بِهَا عَنْ رَحْمَةِ جَمِيعِ خَلْقِكَ تَفْرُجُ بِهَا كُرْبَتَهَا

ऐसी महरबानी जिस के ज़रिए वो तमाम मख़लूक़ात की महरबानियों से बेनियाज़ हो जाए। ख़ुदाया उसके रंज

وَتَكْشِفُ بِهَا غَمَّهَا وَتُيَسِّرُ وِلَادَتَهَا (وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا

को दूर फ़र्मा उसके ग़म का इज़ाला फ़र्मा और उसके लिए विलादत को आसान करदे अल्लाह का फ़ैसला बर

يُظْلَمُونَ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ)

हक़ है। वो किसी पर ज़ुल्म नहीं करता। सारी हम्द अल्लाह के लिए जो रब्बुल आलमीन है।

बाँधे हुए को खोलने के लिए

पहले लिखे सूरह और उन आयतों को, फिर उस तहरीर को उस के हमराह उस आवेजाँ करे:

तिब्बुल अईम्मा मे इमाम मूसा काज़म (अ.स.) की दुआ भी मनक़ूल है जो उन्होंने ने इसहाक सहाफ़ को तालीम की। चुँके तूलानी थी इस लिए ।ज़िक्र नही किया।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ.

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है।

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا. لِيَغْفِرَ لَكَ اللهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ

सुलह नही बल्कि हमने हक़ीक़तन तुमको खुल्लम खुल्ला फ़तेह अता की। ताकी ख़ुदा तुम्हारी उम्मत के अगले पिछले

وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا.

गुनाह माफ़ करदे और तुमपर अपनी नेमत पूरी करे और तुम्हें सीधी राह पर साबित क़दम रखे। अल्लाह के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ. اِذَا جَاءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ. وَرَاَيْتَ

जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है। जब ख़ुदा की मदद आ पहुँचेगी। और फ़तह (मक्का) हो जाएगी और तुम

النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا. فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ

लोगों को देखोगे के ग़ोल के ग़ोल ख़ुदा के दीन मे दाख़िल हो रहे हैं। तो अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तसबीह

وَاسْتَغْفِرْهُ اِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا. وَمِنْ آيَاتِهِ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ

करना। और उसी से मग़फिरत की दुआ माँगना। वह बेशक बड़ा माफ़ करनेवाला है। और उसी (की क़ुदरत) की

اَنفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِتَسْكُنُوا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً

निशानियों मे से एक यह (भी) है कि उसने तुम्हारे वास्ते तुम्हारी ही जिंस की बीवियाँ पैदा कीं ताकि तुम उनके साथ रह

اِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ. اُدْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ

कर चैन करो। और तुम्हारे दरमियान मोहब्बत व रहमत क़रार दी जिस मे साहिबाने ाफ़िक्र के लिए उसकी निशानीयाँ

فَاِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَاِنَّكُمْ غَالِبُونَ. فَفَتَحْنَا اَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ

पाई जाती हैं। उसने बनी इसराईल को हुक्म दिया तुम इस दरवाज़े से दाख़ल हो जाओ और इसके बाद तुम उस पर

مُنْهَمِرٍ. وَفَجَّرْنَا الاَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ

ग़ालिब हो जाओगे। नूह के ज़माने में आसमान से दरवाज़े खोल दिए और बारिश शुरू हो गई। ज़मीन से पानी उबलने

رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي. وَيَسِّرْ لِي اَمْرِي. وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ

लगा और जो उसने चाहा उसका फ़ैसला मुकम्मल हो गया। ख़ुदाया मेरे सीने को कुशादा कर दे, मेरे मसले को

لِسَانِي. يَفْقَهُوا قَوْلِي. وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ

आसमान करदे, मेरी ज़बान की गिरह खोल दे ताके लोग मेरी बात को समझने लगें। और हम उस दिन (उन्हें उनकी

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا كَذٰلِكَ حَلَلْتُ... ابْنَ... عَنْ

हालत पर) छोड़ देंगे कि एक दूसरे मे (टकरा के दरया की) लहरों की तरह गुड-मुड हो जाएँ और सूर फूँका जाएगा

بِنْتِ... لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ

तो हम सबको इक[illegible]ा करेंगे। इसी तरह मै अफसूँ को खोल फ़ेंकता हूँ जो फ़लाँ के बेटे फ़लाँ पर फ़लाँ की बेटी ने फ़ूंका

حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ. فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ

है... ख़ुदा का रसूल तुम्हारे पास आया। तुम्हारी तकलीफें उसके लिए सख़्त थीं। वो तुम्हारी हिदायत के लिए बेचैन

حَسْبِيَ اللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ

था और मोमिनीन पर मेहेरबानी करनेवाला था। अगर सब उसके मुख़ालिफ़ हो जाएँ तो कोई परवाह नहीं। अल्लाह

الْعَظِيمِ.

काफ़ी है उस ही पर एतेमाद और वो साहिबे अर्श ए अज़ीम है।

बुख़ार का तावीज़

इस तावीज़ को पढ़े जिसे रसूले ख़ुदा (स.अ.व.व.) ने अमीरूल मोमिनीन को तालीम किया था:

اَللّٰهُمَّ ارْحَمْ جِلْدِيَ الرَّقِيقَ وَعَظْمِيَ الدَّقِيقَ وَاَعُوذُ بِكَ مِنْ فَوْرَةِ

ख़ुदाया मेरी इस नर्म जिल्द बारीक़ ह[illegible]ियाँ उन पर रहम फ़र्मा। मैं तेरी पनाह चाहता हूँ इस बुखार

الْحَرِيقِ يَا أُمَّ مِلْدَمٍ إِنْ كُنْتِ آمَنْتِ بِاللهِ فَلَا تَأْكُلِي اللَّحْمَ وَلَا

की तपिश से। ऐ बीमारी अगर तेरा ईमान अल्लाह पर है तो मेरे गोश्त को मत खा, मेरे ख़ून को मत

تَشْرَبِي الدَّمَ وَلَا تَفُورِي مِنَ الْفَمِ وَانْتَقِلِي إِلَىٰ مَنْ يَزْعَمُ أَنَّ مَعَ

पी, और मुझे तकलीफ़ में मुबतेला नहीं कर अगर कोई तुझे ठिकाना चाहिए है तो उसके घर चली

اللهِ إِلٰهًا آخَرَ فَإِنِّي أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ

जा जो ख़ुदा के अलावा कोई ख़ुदा मानता हो इसलिए के मैं ख़ुदा को वहदहू ला-शरीक मानता हूँ

أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

और ये ईमान रखता हूँ के मुहम्मदे मुस्तफ़ा (स) उसके बन्दे और रसूल हैं।

रिवायत है के तहवील के समय ये दुआ ज़्यादा पढ़े और बाज ने तीन सौ छयासठ मरतबा कहा है। पाबंदी करे सुबह व शाम दुआए नूर के पढ़ने की जिसे सलमान ने जनाबे फ़ातेमा से नक़्ल किया है और मफ़ातीह मे ज़िक्र हुई है।

रिवायत मे है के अईम्मा (अ.स.) बेख़ार का ठंडा पानी से इलाज करते थे और बराबर एक कपडे को पानी से तर करते थे और जिस्म पर रखते थे।

इमाम रज़ा (अ.स.) की तहरीर मे देखा है के बुख़ार के लिए तीन काग़ज़ के टूकड़ों पर लिखे।

पहले पर:

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَىٰ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है। डरो नही तुम बुलंद मरतबे पर रहोगे।

दूसरे पर:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ لَا تَخَفْ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِيْنَ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है। डरो नही तुम ज़ालिम लोगों से महफ़ूज़ हो।

तीसरे पर:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَ الْاَمْرُ تَبَارَكَ اللّٰهُ رَبُّ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है। देखो हुकूमत और पैदा करना बस

الْعَالَمِيْنَ

ख़ास उसी के लिए है। वह ख़ुदा जो सारे जहान का परवरदिगार है बड़ा बरकत वाला है।

फिर तीन मरतबा हर टुकड़े पर तौहीद पढ़े और रोज़ाना एक टुकड़ा खा ले इनशा अल्लह अच्छा होगा।

(५) पैराहन के बटन खोल दे और सर पैराहन मे दाख़िल करे और अज़ान व इक़ामत कहे और सात मरतबा हम्द पढ़े इनशाअल्लह अच्छा होगा।

(६) आईम्मा (अ.स.) से रिवायत है के चमड़े पर लिखे और बुख़ार वाले की गर्दन पर उसको लटका दे तावीज़ ये है:

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَسْاَلُكَ بِعِزَّتِكَ وَقُدْرَتِكَ وَسُلْطَانِكَ وَمَا اَحَاطَ بِهٖ

परवरदिगार मैं तुझ से सवाल करता हूँ। तेरी इज़्जत, क़ुद्रत, सलतनत, और बड़े इल्म की वुसअत

عِلْمُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاَنْ لَا تُسَلِّطَ عَلٰى... شَيْئًا مِمَّا

के ज़रिए मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और अपने फ़लाँ

خَلَقْتَ بِسُوءٍ وَارْحَمْ جِلْدَهُ الرَّقِيقَ وَعَظْمَهُ الدَّقِيقَ مِنْ فَوْرَةِ

बन्दे पर किसी को मुसल्लत नहीं करना जो उसके साथ कोई बुराई कर सके। इसकी नर्म जिल्द

الْحَرِيقِ اُخْرُجِي يَا اُمَّ مِلْدَمٍ يَا آكِلَةَ اللَّحْمِ وَشَارِبَةَ الدَّمِ حَرُّهَا

बारीक़ ह॰ीयाँ पर इस बुख़ार की शिद्दत से रहम फ़र्मा। ऐ बीमारी, ऐ गोश्त को खानेवाली ऐ ख़ून

وَبَرْدُهَا مِنْ جَهَنَّمَ اِنْ كُنْتِ آمَنْتِ بِاللّٰهِ الْاَعْظَمِ اَنْ لَا تَاكُلِي لِـ...

को पीनेवाली अब उस से दूर हो जा अगर तेरा ईमान ख़ुदाए अज़ीम पर है। तू उस बन्दे के गोश्त

لَحْمًا وَلَا تَمُصِّي لَهُ دَمًا وَلَا تُنْهِكِي لَهُ عَظْمًا وَلَا تُثَوِّرِي عَلَيْهِ غَمًّا وَلَا

को मत खा, उसके ख़ून को पीने का इरादा मत कर उसकी हि॰यों को कमज़ोर मत कर, उसे किसी

تُهَيِّجِي عَلَيْهِ صُدَاعًا وَانْتَقِلِي عَنْ شَعْرِهِ وَبَشَرِهِ وَلَحْمِهِ وَدَمِهِ اِلٰى

ग़म में मुबतेला मत कर, उसमें दर्द पैदा मत कर और उसके बालों से, खाल से, ख़ून से, गोश्त से

مَنْ زَعَمَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا آخَرَ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ سُبْحَانَهُ وَتَعَالٰى عَمَّا

उस शख़्स की तरफ़ मुन्तिक़ल हो जा जो ख़ुदा के अलावा किसी औत को ख़ुदा मानता हो। हम तो

يُشْرِكُونَ

जान्ते हैं के ख़ुदा बेनियाज़ है और मुशरेकीन के ख़्याल से बुलंद तर है।

रिवायात मे मनक़ूल है के लिखे इसके बाद एक ाज़िम्मा का या एक दुशमन खुदा का नाम।
(७) बुख़ार के लिए लिखे दाहेने बाज़ू पर बाँधे बुख़ार वाले के।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ مَالِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ

सब तारीफ़ ख़ुदा ही के लिए है। जो सारे जहान का पालनेवाला बड़ा मेहेरबान रहमवाला, राज़े जज़ा

اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ اِھۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ

का हाकिम है। ख़ुदाया हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं। हम को सीधी राह

صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡھِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡھِمۡ وَلَا

पर साबित क़दम रख। उनकी राह जिन्हें तूने अपनी नेमत अता की हैं। न उनकी राह जिन पर तेरा

الضَّآلِّیۡنَ بِسۡمِ اللّٰہِ وَبِاللّٰہِ اَعُوۡذُ بِکَلِمَاتِ اللّٰہِ التَّآمَّاتِ کُلِّھَا

ग़ज़ब ढ़ाया है। और न गुमराहों की। अल्लाह के नाम से और अल्लाह के सहारे से मैं पनाह चाहता हूँ

الَّتِیۡ لَا یُجَاوِزُھُنَّ بَرٌّ وَّلَا فَاجِرٌ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ وَذَرَاَ وَبَرَاَ وَمِنۡ

अल्लाह के मुकम्मल कलेमात की। उस से कोई नेक व बद आगे नहीं बढ़ सकता है के मुझे पनाह

شَرِّ الۡھَامَّۃِ وَالسَّامَّۃِ وَالۡعَامَّۃِ وَاللَّآمَّۃِ وَمِنۡ شَرِّ طَوَارِقِ

दे तमाम मख़लूक़ात के शर से, हर दर्द से, हर ग़म से, हर मुसीबत से, हर आफ़त से, दिन व रात के

اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمِنْ شَرِّ فُسَّاقِ الْعَرَبِ وَالْعَجَمِ وَمِنْ شَرِّ

हवादिस से अजम व अरब के फ़ासिक़ों से, जिन्न व इन्स के फ़ासिक़ों के शर से शैतान और उसके

فَسَقَةِ الْجِنِّ وَالاِنْسِ وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهِ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ

शोरका के शर से और हर शरीर के शर से और हर उस मख़लूक के शर से जो ज़मीन पर चलने वाली

ذِي شَرٍّ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا اِنَّ رَبِّي عَلٰى صِرَاطٍ

है और उसका इख़तेयार परवरदिगार के हाथ में है। मेरा ख़ुदा सिराते मुस्तक़ीम पर है। ख़ुदाया मैं ने

مُسْتَقِيمٍ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيرُ

तुझ पर एतेमाद किया और मैं तेरी तरफ़ मुतवज्ञे हूँ। मेरी बाज़गश्त तेरी तरफ है और तू मेरे लिए वैसा

يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلاَمًا عَلٰى اِبْرَاهِيمَ وَاَرَادُوا بِهِ كَيْدًا

ही हुक्म देना के आग इब्राहीम के लिए ०सर्द हो जा। जब लोगों ने मक्कारी करी तो लोगों ने उनको

فَجَعَلْنَاهُمُ الاَخْسَرِينَ بَرْدًا وَسَلاَمًا عَلٰى ... بْنِ... رَبَّنَا لاَ

पस्त बना दिया। हो जा ठंड और सलामत फ़लाँ बिन फ़लाँ के लिए... हमारी ख़ताओं और ग़लतीयों

تُؤَاخِذْنَا اِنْ نَسِينَا اَوْ اَخْطَانَا رَبَّنَا وَلاَ تَحْمِلْ عَلَيْنَا اِصْرًا كَمَا

पर हमारा मवाख़ेज़ा नहीं करना। खुदाया हमपर ऐसा बोझ न डालना जो तूने हमसे पहलों पर डाला

حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلاَ تُحَمِّلْنَا مَا لاَ طَاقَةَ لَنَا

था। खुदाया हमपर ऐसा बोझ न डालना जो हम उठा न सकें। हमे माफ़ कर और बख़्श दे और हमपर

بِهِ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا اَنْتَ مَوْلَانَا فَانْصُرْنَا عَلَى

रहम कर। तो काफ़िर लोगों के ख़िलाफ हमारी मदद कर अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है। उसके अलावा

الْقَوْمِ الْكَافِرِيْنَ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا

कोई ख़ुदा नहीं। उस ही पर हमारा एतेमाद है। उसका हुक्म है, ख़ुदा पर भरोसा करो, जो हमेशा ज़िंदा

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ وَكَفٰى بِهٖ

रहनेवाला है। उस के हम्द की तस्बीह करो और वो अपने बन्दों के गुनाहों को ख़ूब जानता है। उसके

بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ

अलावा कोई ख़ुदा नहीं है। उसने अपने वादे को पूरा किया है, अपने बन्दों की मद्द करी है और तमाम

صَدَقَ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ مَا شَاءَ اللّٰهُ

दुश्मनों की जमात को हर दिया। जो ख़ुदा ने काहा वो हो गया। उसके अलावा किसी के पास ताक़त

لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ

नहीं है और उसने तै कर लिया है के वो, उसका रसूल हर हाल में ग़ालिब आनेवाले हैं इसलिए के

اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغَالِبُوْنَ وَمَنْ يَعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى

ख़ुदा क़वी भी है, अज़ीज़ भी है। उसकी जमात ग़ालिब आने वाली है और जो उस से वाबसता हो जाए

صِرَاطٍ مُسْتَقِيْمٍ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ الطَّيِّبِيْنَ

वो सिराते मुस्तक़ीम की हिदायत पा गया। अल्लाह मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.)

الطَّاهِرِيْنَ

पर रहमत नाज़ल फर्मा।

(८) तीन शक्कर के टुकडो पर लिखे और हर टुकडे को सुबह नाश्ते मे खाए तीन दिन पहले टुकडे पर लिखे:

عَقَدْتُ بِإِذْنِ اللهِ

मै खुदा की आज्ञा से बांधा गया।

और दुसरे पर:

نَدَدْتُ بِإِذْنِ اللهِ

मै खुदा की आज्ञा से भाग गया।

तीसरे पर:

سَكَنْتُ بِإِذْنِ اللهِ

मै खुदा आज्ञा से ख़ामोश हो गया।

पेचीस की दुआ

रिवायत मे हे के एक शख़्स ने इमाम मुसा काज़म (अ.स.) से शिकायत की

के मुझको पेचीस है जो ख़त्म नही होती। फरमाया जब नमाज़े शब से फ़ारिग़ हो तो पढ़ो:

اَللّٰهُمَّ مَا كَانَ مِنْ خَيْرٍ فَمِنْكَ لَا حَمْدَ لِي فِيهِ وَمَا عَمِلْتُ مِنْ سُوءٍ

ख़ुदाया मेरे पास जो भी ख़ैर है वो तेरी तरफ़ से है। मेरी कोई तारीफ़ नहीं है और जो कुछ भी बुराई है उस से तू ने आगाह कर

فَقَدْ حَذَّرْتَنِيهِ لَا عُذْرَ لِي فِيهِ اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَعُوذُ بِكَ اَنْ اَتَّكِلَ عَلَى مَا

दिया था लेहाज़ा मेरे पास कोई उज़्र नहीं है। ख़ुदाया मैं तेरी पनाह चाहता हूँ इस बात से के उस बात पर भरोसा करूँ जिस में

لَا حَمْدَ لِي فِيهِ اَوْ آمَنَ مِمَّا لَا عُذْرَ لِي فِيهِ

मेरी कोई तारीफ़ नहीं है। या मै अमान का एहसास करूँ उन चीजों मे जिनको करने का मेरे पास उज़्र नही है।

रेयाह के उठने की दुआ

ये भी रिवायत मे है के एक शख़्स ने शिकयत की इमाम से के मेरा पेट बराबर बोलता है और मुझे लोगों से बात करने मे शर्म आती है क्योंके वो आवाज बाहर आती है और लोग सुनते हैं। लेहाजा मेरे लिए दुआ कीजिए शिफ़ा के लिए तो फ़रमाया के जब नमाज़े शब से फ़ारिग़ हो तो पढ़े: मुनासिब है ये अशार पढ़े, आख़िर तक जो गुजरी।
हज़रत सादिक़ (अ.स.) से वारिद हुआ है रियाह उठने के वासते सयाह दाना शहेद के साथ खा ले

बरस, सफ़ेद दाग़ की दुआ

यूनुस से रिवायत है कहा के मेरी आँखो के दरमियान सफ़ेदी आरिज़ हो गई है। मैने इस की शिकायत हज़रत सादिक़ (अ.स.) से की इमाम ने फ़रमाया के वज़ू कर के दो रकअत नमाज़ पढ़े और ये दुआ पढ़े:

يَا اللهُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيمُ يَا سَمِيعَ الدَّعَوَاتِ يَا مُعْطِيَ الْخَيْرَاتِ اَعْطِنِي

ऐ अल्लाह, ऐ रहमान, ऐ रहीम ऐ दुआओं के सुननेवाले, ऐ नेकियों के अता करनेवाले मुझे दुनीया

خَيْرَ الدُّنْيَا وَخَيْرَ الآخِرَةِ وَقِنِي شَرَّ الدُّنْيَا وَشَرَّ الآخِرَةِ وَاَذْهِبْ

व आख़ेरत की नेकी अता फर्मादे और दुनिया व आख़ेरत के शर से महफ़ूज़ फर्मा और मेरे इस

عَنِّي مَا اَجِدُ فَقَدْ غَاظَنِي الاَمْرُ وَاَحْزَنَنِي

दर्द व ग़म को ज़ायल फ़र्मा इसलिए के इसने मुझे रंजीदा और परेशान कर दिया है।

और अददतुददाई की रिवायत मे है के फ़रमाया के जब रात का आख़री हिस्सा हो तो उस के शुरू मे उठे और वज़ू कर के नमज़े शब मे मशग़ूल हो और पहली रकअत के आख़री सजदे मे पढ़े:

يَا عَلِيُّ يَا عَظِيمُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيمُ يَا سَامِعَ الدَّعَوَاتِ يَا مُعْطِيَ

ऐ ख़ुदा ऐ अली व अज़ीम, ऐ ख़ुदा ऐ रहमान व रहीम, ऐ आवाज़ों के सुननेवाले, ऐ नेकियों के

الْخَيْرَاتِ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاَعْطِنِي مِنْ خَيْرِ الدُّنْيَا

अता करनेवाले मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल फ़र्मा और

وَالآخِرَةِ مَا اَنْتَ اَهْلُهُ وَاصْرِفْ عَنِّي مِنْ شَرِّ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ مَا

दुनिया व आख़ेरत की नेकी मुझे वैसे अता फ़र्मा जिस का तू अहल है और दुनिया व आख़ेरत के

اَنْتَ اَهْلُهُ وَاَذْهِبْ عَنِّي هٰذَا الْوَجَعَ فَاِنَّهُ قَدْ غَاظَنِي وَاَحْزَنَنِي

शर को मुझ से दूर फ़र्मा और उस बीमारी को भी जिसने मुझे परेशान कर रखा है।

और अलहाह व मोबालग़ा करे।
यूनुस ने कहा के मै इस तरह जैसे फ़रमाया था बजा लाया। अभी कूफे नही पहुचा था के ठीक हो गया।
इस के लिए सुरह यासीन का शहेद से लिखना प्याले पर और उसको धो कर पीना वारिद हुआ है और इस तरह असीर के लिए भी और इसी तरह तुरबते इमाम हुसैन (अ.स.) बारिश के पानी से सफ़ेद दाग़ के लिए वारिद हुआ है और हिना को नूरा मे मिला कर इस पर मलना भी वारिद हुआ है।
ये बदन मे जोश है या ज्यादा ख़ारिश है इस को दाद कहते है। रिवायत हुई हे के इस पर पढ़े और लिख कर लगाए।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है।

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا

और गंदी बात की मिसाल गोया एक गंदे पेड़ की सी है के ज़मीन के ऊपर ही उखाड़ फेंका जाए क्योंकि उसको

لَهَا مِنْ قَرَارٍ مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً

कुछ ठहराओ तो है ही नही। हमने इसी ज़मीन से तुमको पैदा किया और (मरने के बाद) उसमे लौटा कर लाएँगे

اُخْرٰى اللّٰهُ اَكْبَرُ وَاَنْتَ لَا تُكَبِّرُ اللّٰهُ يَبْقٰى وَاَنْتَ لَا تَبْقٰى وَاللّٰهُ عَلٰى

और उसी से दूसरी बार तुमको निकाल खड़ा करेंगे। अल्लाह सबसे बड़ा है लेकिन तुम उसकी तकबीर नही

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

पढ़ते। अल्लाह हमेशँ बाक़ी रहने वाला है और तुम बाक़ी नही रहोगे। अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

मकअद के दरद के लिए

रिवायत हुई हे के अइम्मा (अ.स.) के असहाब मे से एक शख़्स अपनी शर्मगाह को बरैहना किए हुए उसके दरद मे मुबतेला था और उसकी शिकायत हज़रत सादिक़ (अ.स.) से की इमाम (अ.स.) ने इसको ये तावीज़ तालीम फ़रमाया और कहा के अपना बायाँ हाथ इस पर रखो और पढ़ो:
इस को तीन मरतबा पढ़े इनशाअल्लाह आफ़ियत पाएगा।

بِسْمِ اللهِ وَبِاللهِ بَلىٰ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُ اَجْرُهُ

अल्लाह के नाम से अल्लाह के सहारे से बेशक इसलिए के सब का सर झुका हुआ है। वो एहसान

عِنْدَ رَبِّهِ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسْلَمْتُ

करनेवाला है। बेशक जिसने अपने को उसके सामने झुका दिया वो नेक किरदार है उस के लिए

وَجْهِي اِلَيْكَ وَفَوَّضْتُ اَمْرِي اِلَيْكَ لَا مَلْجَاَ وَلَا مَنْجىٰ مِنْكَ اِلَّا

ख़ुदा की बारगाह में अज्र है और ना कोई ख़ौफ है, ना कोई हुज़्न है। ख़ुदाया मेरा रूख़ तेरी तरफ़

اِلَيْكَ

है। मैं ने मामेलात को तेरे हवाले कर दिया। तेरे अलावा कोई पनाहगाह नहीं।

ज़ानु के दर्द का तावीज़

तिब्बुल अईम्मा से मनक़ूल है जाबिर जोफ़ी ने इमाम बाक़र (अ.स.) से रिवायत की है के:
मै इमाम हुसैन (अ.स.) के पास था के बनी उमैया मे से एक शख़्स जो शिआ था उन के पास आया और अर्ज किया: ऐ फ़रज़न्दे रसूल मै आप की ख़िदमत मे नही आ पाता हूँ पैर के दरद की वजह से। हज़रत ने फ़रमाया के तुम क्यों

ग़ाफिल हो इमाम हसन (अ.स.) के तावीज़ से उन्हों ने कहा फ़रज़न्दे रसूले ख़ुदा वो क्या है? फ़रमाया ये पढ़े, फिर वो शख़्स उसको बजा लाया जो फ़रमाया था तो उसे दरद का एहसास नही रहा। वारिद हुआ है के जब नमाज़ पढ़े तो उस के बाद पढ़े:

يَا اَجْوَدَ مَنْ اَعْطٰى يَا خَيْرَ مَنْ سُئِلَ وَيَا اَرْحَمَ مَنِ اسْتُرْحِمَ اِرْحَمْ ضَعْفِى

ऐ अता करने वालों मे सबसे सख़ी ऐ उनमे बेहतरीन जिन से मँगा जाए। ऐ उनमे सबसे ज़्यादा रहमदिल

وَقِلَّةَ حِيلَتِى وَاَعْفِنِى مِنْ وَجَعِى

जिन से रहम माँगा जाए। मेरी कमज़ोरी पर और मेरे हीलों की कमी पर और मुझे दर्द से नजात दे।

और पिङलियों के दर्द के लिए वारिद हुआ है सात मरतबा ये आयते शरा॰रफ पढ़े:

وَاتْلُ مَا اُوحِىَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ وَلَنْ تَجِدَ

और जो किताब तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से वही के ज़रिए नाज़िल हुई है उसको पढ़ा करो उसकी

مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا

बातों को कोई बदल नही सकता। और तुम हरगिज़ उसके सिवा कोई कहीं पनह की जगह नही पाओगे।

आँख के दर्द के लिए

ज़्यादा रिवायात वारिद हुइ हैं के नमाज़े सुबह व मग़रिब के बाद पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسْاَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ عَلَيْكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ

ख़ुदाया मैं तुझ से मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) के हक का वास्ता दे कर

وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاَنْ تَجْعَلَ النُّورَ فِي بَصَرِي وَالْبَصِيرَةَ فِي دِينِي وَالْيَقِيْنَ

सवाल करता हूँ तू उन पर रहमत नाज़ल फर्मा। मेरी बसारत में नूर, मेरे दीन में बसीरत, मेरे दिल

فِي قَلْبِي وَالاِخْلاَصَ فِي عَمَلِي وَالسَّلاَمَةَ فِي نَفْسِي وَالسَّعَةَ فِي رِزْقِي

में यक़ीन और मेरे अमल में इख़लास मेरे नफ़्स में सलामती, मेरे रिज़्क में वुसअत अता फ़र्मा

وَالشُّكْرَ لَكَ اَبَدًا مَا اَبْقَيْتَنِي

और मुझे तमाम ज़िंदगी शुक्र की तौफ़ीक़ अता फर्मा।

बज़नती ने यूनुस बिन ज़बयान से रिवायत की है उन्होंने कहा के मै इमाम सादिक़ (अ.स.) के पास हाज़र हुआ, मैने इमाम की आँखों मे सख़्त दर्द देखा जिससे मै ग़मज़दा हुआ। दुसरे राज़ जब जाकर देखा तो इमाम की आँख मे बिल्कूल दर्द नही था। मैने कहा के मै फ़िदा हूँ आप ने अपनी आँख का इलाज किस चीज़ से किया है? फ़रमाया उस चीज़ से जो मालेजात मे से एक है। मैने पुछा वो क्या चीज़ थी? फ़रमाया के वो तावीज़ था। पस मैने वो तावीज़ लिख लिया और वो तावीज़ ये है:

اَعُوذُ بِعِزَّةِ اللّٰهِ وَاَعُوذُ بِقُوَّةِ اللّٰهِ وَاَعُوذُ بِقُدْرَةِ اللّٰهِ وَاَعُوذُ

मै अल्लाह की बुज़ुर्गा मे पनाह माँगता हूँ व मै अल्लाह की ताक़त मे पनाह माँगता हूँ व मै अल्लाह की क़ुदरत

بِنُورِ اللّٰهِ وَاَعُوذُ بِعَظَمَةِ اللّٰهِ وَاَعُوذُ بِجَلاَلِ اللّٰهِ وَاَعُوذُ بِجَمَالِ

मे पनाह माँगता हूँ व मै अल्लाह के नूर मे पनाह माँगता हूँ व मै अल्लाह की अज़मत मे पनाह माँगता हूँ

اللّٰهِ وَاَعُوذُ بِبَهَاءِ اللّٰهِ وَاَعُوذُ بِجَمْعِ اللّٰهِ وَاَعُوذُ بِعَفْوِ اللّٰهِ وَاَعُوذُ

व मै अल्लाह के जलाल मे पनाह माँगता हूँ व मै अल्लाह के जमाल मे पनाह माँगता हूँ व मै अल्लाह की

بِغُفْرَانِ اللّٰهِ وَاَعُوذُ بِرَسُولِ اللّٰهِ وَاَعُوذُ بِالاَئِمَّةِ: عَلِيِّ بْنِ اَبِي

शान व शौकत मे पनाह माँगता हूँ व मै अल्लाह की जमीय्यत मे पनाह माँगता हूँ व मै अल्लाह की माफ़ी

طَالِبٍ وَالْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ وَالْحُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ وَعَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ

मे पनाह माँगता हूँ व मै अल्लाह की मग़िफ़रत मे पनाह माँगता हूँ व मै अल्लाह के रसूल मे पनाह माँगता

وَمُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ وَجَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ وَمُوسَى بْنِ جَعْفَرٍ وَعَلِيِّ بْنِ

हूँ व मै इमामों मे पनाह माँगता हूँ अली इब्ने अबी तालिब व हसन इब्ने अली व हुसैन इब्ने अली व अली

مُوسَى وَمُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ وَعَلِيِّ بْنِ مُحَمَّدٍ وَالْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ وَالْحُجَّةِ

इब्निल हुसैन व मुहम्मद इब्ने अली व जाफ़र इब्ने मुहम्मद व मूसा इब्ने जाफ़र व अली इब्ने मूसा व मुहम्मद

بْنِ الْحَسَنِ عَلَى مَا نَشَاءُ مِنْ شَرِّ مَا اَجِدُ اَللّٰهُمَّ رَبَّ

इब्ने अली व अली इब्ने मुहम्मद व हसन इब्ने अली व हुज्ज़त इब्ने हसन उस पर जिस की हम आरज़ू करते

الْمُطِيعِينَ

हैं उसके शर से जो मै महसूस कर रहा हूँ ऐ अल्लाह ऐ कहना मानने वालों के रब।

मैं ने कहा के जमअल्लाह क्या है? फरमाया अल्लाह तअला का पूरा पन। फिर फरमाया दर्दे चश्म के लिए वारिद हुआ है इस पर आयत अल कुर्सी पढ़े और दिल मे इस के अच्छे होने का ख्याल करे

इस से क़ब्ल आँख पर हाथ रखे और पढ़े:

أُعِيذُ نُورَ بَصَرِى بِنُورِ اللهِ الَّذِى لَا يُطْفَأُ

अपनी नज़र की रौशनी के लिए मै पनाह माँगता हूँ अल्लाह के कभी न बुझने वाले नूर की।

आँख की कमज़ोरी के लिए

वारिद हुआ है के आँख की कमज़ोरी के लिए मुफ़ीद है और आँख की कमज़ोरी और तोनंदी के लिए वारिद हुआ है के आयते नूर को मुक़र्रर किसी प्याले मे लिखे और उसको शीशी मे रखे और उसको सलाई से आँख मे लगाए:

اللهُ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَ الْاَرْضِ مَثَلُ نُورِهِ كَمِشْكَاةٍ فِيهَا

ख़ुदा तो सारे आसमान व ज़मीन का नूर है उसके नूर की मिसाल ऐसी है जैसे एक ताक़ है जिसमे

مِصْبَاحٌ الْمِصْبَاحُ فِى زُجَاجَةٍ الزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّىٌّ

एक रौशन चिराग़ हो और चिराग़ एक शीशे की कंदील मे हो कंदील गोया एक जगमगाता हुआ

يُوقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُبَارَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ

रौशन सितारा ज़ैतून के ऐसे मुबारक दरख़्त से रौशन किया जाए जो न पूरब की तरफ हो और न

زَيْتُهَا يُضِىءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ نُورٌ عَلَى نُورٍ يَهْدِى اللهُ لِنُورِهِ

पश्चिम की तरप़ उसका तेल अगरचे आग उसे छुए भी नही तो ऐसा मालूम हो के आप ही आप

مَنْ يَشَاءُ وَيَضْرِبُ اللهُ الاَمْثَالَ لِلنَّاسِ وَاللهُ بِكُلِّ شَيْءٍ

रौशन हो जाएगा नूर पर नूर ख़ुदा अपने नूर की तरफ़ जिसे चाहता है हिदायत करता है और ख़ुदा

عَلِيمٌ

मिसालें बयान करता है और ख़ुदा तो हर चीज़ से ख़ूब वाक़फ़ है।

रिवायत है के जो शख़्स क़ुरआन को क़ुरआन की तरह पढ़ता है तो दर्दे चश्म से नजात पाता है।
ये भी वारिद हुआ है के जो शख़्स राज़ाना कहे तो उसकी आँखे आफ़तों से महफ़ूज रहेंगी।

فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا

तो हमने उसे देखने वाला सुनने वाला बना दिया।

शेख कफ़अमी ने फ़रमाया है के दर्दे चश्म और तमाम आजा के दर्द के लिए मुजर्रब वसीला बनाया गया है इमाम मूसा काज़िम (अ.स.) को।
नाक से ख़ून के लिए बर्फ़ का पानी सर और पेशानी पर गिराना।

बुतलाने सहर के लिए

अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से मर्वी है के हिरन की खाल पर लिखे और अपने साथ रखे:

بِسۡمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ بِسۡمِ اللّٰهِ وَمَا شَاءَ اللّٰهُ بِسۡمِ اللّٰهِ وَلَا حَوۡلَ وَلَا قُوَّةَ

अल्लाह के नाम से अल्लाह के सहारे से अल्लाह के नाम से और जो कुछ अल्लाह ने चाहा अल्लाह के नाम से

اِلَّا بِاللّٰهِ قَالَ مُوسٰى مَا جِئۡتُمۡ بِهِ السِّحۡرُ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبۡطِلُهٗ اِنَّ اللّٰهَ لَا

और कोई ताक़त अल्लाह के अलावा नहीं। मूसा (अ.स.) ने आवाज़ दी के तुम ने जादू किया है अल्लाह इस

يُصۡلِحُ عَمَلَ الۡمُفۡسِدِيۡنَ فَوَقَعَ الۡحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعۡمَلُونَ فَغُلِبُوا

जादू को बातिल कर देगा इसलिए के वो मुफ़सिदों के आमाल की इसलाह नहीं करता। नतीजा ये हुआ

هُنَالِكَ وَانۡقَلَبُوا صَاغِرِيۡنَ

के हक़ साबित हो गया और जादूगरों के आमाल बातिल हो गए। वो मग़लूब हो गए और ज़लील हो गए।

शैयातीन और जादूगरों को दूर करने के लिए

रसूले खुदा से रिवायत है के आयते सख़रा पढ़े और वो ये है:

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىۡ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالۡاَرۡضَ فِىۡ سِتَّةِ اَيَّامٍ

बोशक तुम्हारा ख़ुदा वो है जिस ने आसमान व ज़मीन को सात दिनों में पैदा किया है और इसका

ثُمَّ اسۡتَوٰى عَلَى الۡعَرۡشِ يُغۡشِى الَّيۡلَ النَّهَارَ يَطۡلُبُهٗ حَثِيۡثًا

इक़्तेदार अर्श पर है। रात को दिन पर ग़ालिब बना देता है और वो उसकी तलाश में रहता है। सूरज,

وَالشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِاَمۡرِهٖ اَلَا لَهُ الۡخَلۡقُ وَ

चाँद, सितारे उसके हुक्म के सामने मुसख़्ख़र हैं। ख़्लक़ व अम्र उसी के हैं। वो बा बरकत आलमीन का

الْاَمْرُ تَبَارَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ. اُدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً

परवर दिगार है। अपने ख़ुदा से दुआ मांगो ख़ामोशी से गिड़गिड़ा कर। वो ज़ुल्म करनेवालों को दोस्त

اِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ. وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا

नहीं रखता है। ख़बरदार इसलाह के बाद ज़मीन पर फ़साद नहीं करना। अपने ख़ुदा से मांगो ख़ौफ के

وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَطَمَعًا اِنَّ رَحْمَةَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ.

साथ, तमा के साथ के उसकी रहमत नेक बनदों से हमेशा क़रीब रहती है।

दूसरी रिवायत के अनुसार इस मे दूसरी आयत शामिल नही है।

असफंद

रसूले खुदा से मनकूल है के दरख़ते असफंद के हर दाने और पत्ते पर एक मलक मोअययन है और उसका रेशा और शाखें ग़म को बरतरफ करता है और उस दाना मे सत्तर दरदों से शिफा है तो पाबंदी करना चाहिए असफ़नद के इस्तेमाल की।

मिरगी

इमाम रजा (अ.स.) से मनकूल है के एक बेहोश को देखा तो एक प्याला पानी तलब किया और उस पर हम्द, मोअवज़तैन को पढ़ कर दम किया फिर हुकुम दिया के इस पानी को इस के सर और चेहरे पर डालें यहाँ तक के वो होश मे आ जाए और फ़रमाया के तेरी तरफ़ दोबारा न पलटेगा।

जिन का असर

रिवायत है रसूले ख़ुदा से अगर जिन कोई पत्थर फेंके तो उसको उसी तरफ

फैंक दो जिधर से आया है और पढ़ो:

حَسْبِيَ اللهُ وَ كَفٰى وَسَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ دَعَا لَيْسَ وَرَاءَ اللهِ

अल्लाह मेरे लिए काफ़ी है और कुछ बी नही व अल्लाह सुनता है जो उसकी तारीफ़ करता है व अल्लाह

مُنْتَهٰى

के बाद कोई इन्तेहा नही है।

जिनो के शर से बचने के लिए घर मे मुर्ग, चिड़ियाँ, कबूतर, बकरी का बच्चा रखना मुफ़ीद है।
जिनो के शर से बचने के लिए सफ़र मे और बयाबान व हौलनाक मक़ामात पर इमाम सादिक़ (अ.स.) से मर्वी है के हाथ सर पर रखे और बुलंद आवाज़ मे पढ़े:

اَفَغَيْرَ دِينِ اللهِ يَبْغُونَ وَلَهُ اَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا

तो क्या ये लोग ख़ुदा का दीन के सिवा ढूंड़ते हैं? हालाँकि जो आसमानो मे हैं और जो जमीन मे हैं सबने ख़ुशी

وَ كَرْهًا وَاِلَيْهِ يُرْجَعُونَ

ख़ुशी या ज़बर दस्ती उसके सामने अपनी गरदन डाल दी है और उसी की तरफ़ लौट कर जाएंगे।

और जंगल मे वहशतनाक मक़ाम मे वारिद हुआ है के बाआवाजे बुलंद आज़ान कहे:

हिर्जे निगाहे बद

वारिद हुआ है के आयह व ईन यकादु पढ़े:

وَاِنْ يَكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ

और कुफ़्फ़ार जब क़ुरआन को सुनते हैं तो मालूम होता है कि ये लोग तुम्हें घूर-घूर कर (सही राह) से जरूर

وَيَقُولُونَ اِنَّهُ لَمَجْنُونٌ. وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِيْنَ

फिसला देंगे। और कहते हैं कि यह तो पागल है। और यह (क़ुरआन) तो सारे जहान की नसीहत है।

हज़रत सादिक़ (अ.स.) से मर्वी है के जब इस से डरता हो के उसकी ऑख किसी के अनदर या दुसरे की आँख उस के अन्दर असर करेगी तो तीन मरतबा पढ़े:

مَا شَاءَ اللهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

अल्लाह ने जो चहा किया कोई ताक़ात व क़ुव्वत नही सिवाय अल्लाहे बुज़ुर्ग व बाला के।

वारिद हुआ है के जब कोई अपने को अच्छी सूरत से आरासता करे तो जिस वक़्त घर से बाहर निकले तो पढ़े कुल आवुजो ता के उसको कोई चीज़ नूक़सान न पहोचाए खुदा के हुकूम से।
निगाहे बद को दूर करने के लिए वारिद हुआ है के हाथों को चेहरे के बराबर करे और सुरए हम्द, तौहीद, दोनो कुल औवज़ों को पढ़े और हाथ को सर के अगले हिस्से पर खिचें।
तावीज़ बराए निगाहे बदः

اَللّٰهُمَّ رَبَّ مَطَرٍ حَابِسٍ وَحَجَرٍ يَابِسٍ وَلَيْلٍ دَامِسٍ وَرَطْبٍ وَيَابِسٍ

ऐ ख़ुदा जो बारिश का, पत्थर का, तारीक रात का और खुश्क व तर का परवरदिगार है। हर एक

رُدَّ عَيْنَ الْعَايِنِ عَلَيْهِ فِي كَبِدِهِ وَنَحْرِهِ وَمَالِهِ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرَىٰ

की नज़र को मुझ से उस ही की तरफ़ पलटा दे। तू ने हुक्म दिया है के नज़र पलटा कर देखो

مِنْ فُطُورٍ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا

आसमानों में कोई शिग़ाफ़ नहीं फिर देखो निगाह मायूस पलट आएगी और कोई ऐब नज़र नहीं

وَهُوَ حَسِيرٌ

आएगा।

दुसरा तअवीज ये पढ़े:

اَللّٰهُمَّ ذَا السُّلْطَانِ الْعَظِيمِ وَالْمَنِّ الْقَدِيمِ وَالْوَجْهِ الْكَرِيمِ ذَا

ऐ साहिब ऐ सुलतान ऐ अज़ीम ऐ साहिब ऐ एहसान ऐ क़दीम, ऐ साहिब ऐ मज्द ऐ करीम, ऐ ताम

الْكَلِمَاتِ التَّامَّاتِ وَالدَّعَوَاتِ الْمُسْتَجَابَاتِ عَافِ ... مِنْ أَنْفُسِ

व कामिल कलेमातवाले और मुस्तहब दुआओंवाले ख़ुदा इन्सान को जिन व इन्स के शर से

الْجِنِّ وَأَعْيُنِ الْإِنْسِ

नजात देदे।

ये वो तावीज़ है जिसे रसूले ख़ुदा ने हसनैन (अ.स.) के लिए पढ़ा और अपने असहाब को हुकुम दिया के अपनी औलाद को इन कलेमात से तावीज़ करो।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान निहायत रहमवाला है।

بِسْمِ اللهِ الْعَظِيمِ عَبَسَ عَابِسٌ وشِهَابٌ قَابِسٌ وَحَجَرٌ

ख़ुदाए अज़ीम के नाम से एक घूरनेवाले ने घूरा व एक उधार का शोला, और एक सख़्त पत्थर। मै

يَابِسٌ رَدَدْتُ عَيْنَ الْعَايِنِ عَلَيْهِ مِنْ رَاسِهِ اِلٰى قَدَمَيْهِ آخِذٌ

देखने वाले की बुरी नज़र उसके सर से पाओं तक उस से दूर करता हूँ। ताके उस की बुरी नज़र

عَيْنَاهُ قَابِضٌ بِكَلَاهِ وَعَلٰى جَارِهِ وَاَقَارِبِهِ جِلْدُهُ دَقِيقٌ وَدَمُهُ

बेअसर हो जाए। व उसका क़ाबू उसपे से, उसके पड़ो सियों पे से व रिश्तेदारों से। उसकी खाल

رَقِيقٌ وَبَابُ الْمَكْرُوهِ تَلِيقُ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرىٰ مِنْ

बारीक है। उसका ख़ून पतला है। और वो मकरूह चीज़ का दरवाज़ा है। तो फिर आँख उठाकर

فُطُورٍ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا

देख भला तुझे कोई शिगाफ़ नज़र आता है? फिर दोबारा आँख उठाकर देख? तो (हर बार तेरी)

وَهُوَ حَسِيرٌ

नज़र नाकाम और थक कर तेरी तरफ़ पलट आएगी।

निगाहे बद का तावीज़

अमीरूल मोमिनीन (अ.स.) से मर्वी है, वसवसे शैतान को दूर करने के लिए

रिवायत हुई है के ख़ुदा की पनाह तलब करे फिर कहे:

آمَنتُ بِاللّٰهِ وَبِرَسُولِهِ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ

मै ईमान रखता हूँ अल्लाह पर और उसके रसूल पर। उसके लिए मेरा ख़ुलूस है।

शेख शहीद (र.अ.) ने रसूले ख़ुदा से नक़्ल किया है फ़रमाया के शैतान दो क़िस्म के हैं शैताने जिन्ना ये पढ़ने से दूर हो जाते हैं:

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

कोई ताक़ात व क़ुव्वत नही सिवा ख़ुदा बुज़ुर्ग व बाला के।

और शैताने इनसी दूर होते हैं मोहम्मद व आले मोहम्मद पर सलवात भेजने से:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ

ख़ुदा या मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल कर।

लेखक कहता है के नमाज़ां के बाब मे गुज़र चुका है हदीसे नफ़्स और बाज तावीज बराए दफ़ा वसवसह इस तरफ रूजु करना चाहिए।

चोर से महफ़ूज रहने के लिए

चोर से महफ़ूज रहने के लिए जनज़ीर और क़ुफ़्ल पर पढ़ीए:

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ اَيًّا مَا تَدْعُوا فَلَهُ الْاَسْمَاءُ

चाहे उसे अल्लाह पुकारो या रहमान पुकारो जिस नाम को भी पुकारो उसके तो सब नाम अच्छे हैं। और

الْحُسْنٰى وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ

(ऐ रसूल) न तो अपनी नमाज़ बहुत चिल्ला के पढ़ो, और न बिल्कुल चुपके से। बल्के उसके दरमियान

ذٰلِكَ سَبِيْلًا وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ

एक बीच का रास्ता लो। और कहो के हर तरह की तारीफ़ उसी ख़ुदा के लाएक़ है, जो न तो कोई

يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ وَلِيٌّ مِنَ الذُّلِّ

औलाद रखता है और न जहान की सलतनत मे उसका कोई साझेदार है और न उसे किसी तरह की

وَ كَبِّرْهُ تَكْبِيرًا

कमज़ोरी है के कोई उसका सरपरस्त हो। और उसी की बड़ाई भी अच्छी तरह करते रहा करो।

तावीज़ बिच्छू से हिफ़ाज़त के लिए

रिवायत हुई है के सितारा सहआ को गौर से देखिए और ये छोटा सितारा है, नबातुन्नअर्श के दरमियान सितारा के करीब और तीन बार पढ़े:

اَللّٰهُمَّ رَبَّ اَسْلَمَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَعَجِّلْ فَرَجَهُمْ وَسَلِّمْنَا

ऐ अल्लाह ऐ असलम के रब मुहम्मद (स.अ.व.व.) व आले मुहम्मद (अ.स.) पर रहमत नाज़ल

مِنْ شَرِّ كُلِّ ذِی شَرٍّ

कर। और उनका ज़हूर जल्द कर और हमको हर शरीर चीज़ के शर से महफ़ूज़ रख।

और ये भी रिवायत हुई है के इस पर नज़र डाले और तीन बार पढ़े: जिस रात ये पढ़े तो साँप और बीच्छू के शर से बचेगा।

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هُودِ بْنِ اُسَيَّةَ آمِنِّي شَرَّ كُلِّ عَقْرَبٍ وَحَيَّةٍ

ऐ अल्लाह, ऐ हूद इब्ने उसय्य-इह के रब मझको बिच्छू और सापों के शर से महफ़ूज़ रख।

बराए दफा शर्रे साँप बीच्छु हजरत इमाम सादिक (अ.स.) से मर्वी है के रात के करीब पढ़े:

بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ اَخَذْتُ الْعَقَارِبَ

अल्लाह के नाम से और अल्लाह से और मुहम्मद व उनकी आल पर अल्लाह रहमत नाज़ल करे

وَالْحَيَّاتِ كُلَّهَا بِاِذْنِ اللّٰهِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى بِاَ فْوَاهِهَا وَاَذْنَابِهَا

मै सारे बिच्छू व साँपों के मूहों और दुमों से बाधंता हूँ अल्लाह की आज्ञा से, जो बरकत वाल और

وَاَسْمَاعِهَا وَاَبْصَارِهَا وَقُوَاهَا عَنِّي وَعَمَّنْ اَحْبَبْتُ اِلٰى ضَحْوَةِ النَّهَارِ

बुलंद है। और उनके नामों से और उनकी अँखों से और ताक़तों को अपने आप से और जिनसे

اِنْ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالٰى

मै प्यार करता हूँ दिन की रौशनी तक, अगर अल्लाह ताला की मरज़ी हो।

बीच्छू के शर के लिए पढ़िएः

سَلاَمٌ عَلٰى نُوحٍ فِي الْعَالَمِينَ إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ إِنَّهُ مِنْ

सारी ख़ुदाई मे नूह पर सलाम ही सलाम है। हम नेकी करने वालों को यूँ अच्छा बदला देते हैं।

عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ

इसमे शक नही के नूह हमारे ईमानदार बंदे थे।

रिवायत हुई है के जिस समय जनाबे नुह (अ.स.) कश्ती पर सवार हुए तो आप ने बीच्छू को सवार होने से रोका। बीच्छू ने कहा मैं आप से अहद करता हूँ के किसी को न काटूंगा जो पढ़े:

سَلاَمٌ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَعَلٰى نُوحٍ فِي الْعَالَمِينَ

मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल हो और सारी कायनात मे नूह पर।

और कई हदीसों मे वारिद हुआ है के नमक मलना बीच्छू और काटनेवाली चीज़ां के ज़हेर को दूर करता है।